शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता का विकास

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

दामोदर लाल मीना

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. अरविन्द कुमार दीक्षित

सह आचार्य

हिन्दी विभाग

राजकीय महाविद्यालय गंगापुर सिटी (राज.)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

2019

CERTIFICATE

I feel great pleasure in certifying that the thesis entitled **''शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता का विकास''** by Damodar lal meena under my guidance. He has completed the following requirements as per ph.D. regulations of the University.

a) Course work as per the university rules.

b) Residential requirements of the university. (200 days)

c) Regularly submitted annual progress report.

d) Presented her work in the departmental committee.

e) Publised research papers in a referred research journal.

I recommend the submission of the thesis

Place : Gangapur city

Date :

Dr. Aravind kumar Dixit
Research Supervisor

शोध सार

यह विडंबना रही है कि आधुनिक हिन्दी कविता की काव्यधाराओं के नाम, काम और सांकेतिक अर्थ में कोई साम्यता नहीं दिखाई देती है। उत्तरछायावाद के बाद विकसित हिन्दी कविता की धाराओं में प्रयोगवाद, नई कविता और समकालीन कविता आदि नाम की परिचायक काव्य–प्रवृत्तियाँ है। नई कविता की कईयों लोगों ने काल के हिसाब से गणना की है, तो कईयों ने नई कविता का अर्थ नयेपन से लगाया है। परन्तु नई कविता हिन्दी कविता की सर्वाधिक ख्यातवान एवं शक्तिशाली कविता है। इसके रचेता कवियों ने इसे पाठक केन्द्रित बनाया है अर्थात् यह कविता व्यक्ति की वैयक्तिकता और सामाजिकता को सूँघकर–सूँघकर अभिव्यक्त करने की क्षमता रखती है। अथवा जिस कविता में वस्तु–छवि और रूप–छवि दोनों का लीक से हटकर नये भावबोध में, पूरी सच्चाई के साथ संप्रेषण हुआ है वही नई कविता कहीं जा सकती है।

शमशेर बहादुर सिंह की कविता छायावाद से लेकर समकालीन कविता तक की यात्रा करती रही है। सबसे पहले उनकी कविता में छायावाद के सुन्दर और परिमार्जित भावबोध की प्रचुरता रही है। उसके बाद वह प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता के घेरे को पार करती हुई आगे बढ़ती रही है। वे मूल रूप से सौन्दर्यवादी कवि के रूप में जाने जाते है। उनकी चाक्षुष दृष्टि की अनुभूति मानवीय संवेदना की पर्याय बनी है। शमशेर जी की कविताएँ उत्तरोत्तर रूप में विकसित होती हुई प्रगतिशील चेतना की ओर बढ़ती रही है। उनको एक प्रगतिशील उदारवादी कवि भी माना गया है।

शमशेर की कविताओं के ऊपर 'दुरूह' होने के आरोप भी लगे है परन्तु जैसे–जैसे उनकी कविताओं को पढ़ने वाला पाठक उनके भीतर प्रवेश करता है वे उनके लिए सहज से होते जाते है। उनकी कविताएँ पाठक को आत्मीयता का बोध कराती है। वे रक्तिम आँखों के परिवेश को भी मंजिष्ठ वर्ण में दिखा देती है।

शमशेर ने नई कविता में भी प्रचुर मात्रा में लिखा है। उनका नई कविता के विकास में महत्ता योगदान रहा है। नई कविता ने अपने परिवेश के सभी महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर बोला है। शमशेर की कविताओं में भी सामाजिक स्तर पर विषमताओं के विविध रूप, सामंतवाद के शोषण, मध्य वर्ग व निम्न वर्ग की जरूरतों और समस्याओं के वृहद चित्र उपस्थित किए है। उन्होंने इन वर्गों को संघठित होने का आह्वान भी किया है अर्थात् उनकी कविताएँ सामाजिक अभिमुख से ओत–प्रोत रही है।

शमशेर के ऊपर विविध प्रभावों की प्रतिंछाया भी रही है। वे शिल्प के क्षेत्र में निराला और एजरा पाउण्ड से प्रभावित रहे है। उनकी कविताएँ मूर्त से अमूर्त की स्थिति में भी बौद्धिकता की प्रतिष्ठा करती है। उन्होंने अपने शिल्प को अर्थात् भाषा, प्रतीक, बिम्ब, शब्द–चयन आदि सभी उपकरणों को कविता के अनुकूल बनाया है।

उनकी नई कविताओं का सन् साठ के बाद की काव्यधाराओं के ऊपर भी प्रभाव पड़ा है। समकालीन कविता ने उनकी स्वच्छंद शैली को अपनाया है। विचार कविता के ऊपर उनकी बौद्धिकता सम्बन्धित विचार हावी दिखाई पड़ते है।

शमशेर की कविताओं में देश प्रेम और राष्ट्रीय भाव भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। उन्होंने नई कविता के विकास में पर्याप्त योगदान किया है।

CANDIDATE'S DECLARATION

I, hereby, certify that the work which is being presented in the thesis entitled. **''शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता का विकास''** in partial fulfillment of the requirement for the award of the Degree of Doctor Of Philosophy. Carried out under the supervision of Dr. Aravind kumar and submitted to university of Kota. Kota represents my idea in my own words and where other ideas or words have been included, I have adequately cited and referenced the original sources. Ths work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any other degree or diploma from any institutions.

I also declare that I have adhered to all principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/ source in my submission. I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date :

Damodar lal Meena

This is to certify that the above statements made by Damodar lal meena (Regd. No. RS/1075/13) is correct to the best of my knowledge.

Date :

Dr. Aravind kumar Dixit
Research Supervisor

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that Ph.D. Thesis Titled ''**शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता का विकास**'' by Damodar lal meena has been examined by us with the following anti-plagiarism tools. We undertake the follows:

a. Thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b. The work presented is original and own work of the author (i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or works of others have been presented as author's own work.

c. There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

d. There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

e. The thesis has been checked using **ACADEMIC HELP software** and found within limits as per HEC plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

Damodar lal meena
Research Sholar
Place :
Date :

Dr. Aravind kumar Dixit
Research Supervisor
Place :
Date :

प्राक्कथन

शमशेर बहादुर सिंह की नई कविताओं पर आधारित इस शोध–प्रबन्ध को प्रस्तुत करने से पहले मैं कवि के प्रति असीम श्रद्धा अर्पित करता हूँ।

शमशेर जी के विषय में अल्प जानकारी शिक्षा के विविध पाठ्यक्रमों की सामग्री के माध्यम से मुझे थी। मैं उनकी सौन्दर्य दृष्टि में भी मानवता व देश प्रेम के भावबोध से बहुत प्रभावित हुआ। उनकी कविताओं की जटिल संरचना में अपनत्व भरे मधुरस ने मुझे इस शोध कार्य की ओर प्रेरित किया है। मैंने इस शोध कार्य में निरन्तरता बनाए रखते हुए डॉ॰ अरविन्द कुमार दीक्षित के निर्देशन में इसे छः वर्षों में पूरा किया है।

शमशेर जी के काव्य पर अभी तक अल्प शोध कार्य ही प्रस्तुत किए गए हैं। वे आधुनिक हिन्दी कविता के एक ऐसे कवि है जिन्होंने बिना किसी यश प्राप्ति के अबाध गति से मानव जीवन की सच्ची अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी है। यद्यपि हिन्दी कविता में उनकों जीवित रहते हुए कोई उच्च पद प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हुई, लेकिन उनके जटिल संवेदनशील काव्य में आधुनिक भावबोध के दिग्दर्शन बड़े रूप में मिलते हैं। विशेष रूप से उनकी नई कविताएँ व्यक्ति की सामाजिक तथा वैयक्तिकता को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रण करती रही है।

शमशेर की कविताओं को किसी एक प्रवृत्ति में बाँधकर देखना उनके लेखकीय कार्य के प्रति अन्याय जैसा प्रतीत होता है। वे प्रगतिशील कविता से समकालीन कविता तक लिखने वाले कवि रहे है। उनकी कविताएँ उदारवादी भावबोध से ओत–प्रोत रही है। हिन्दी की प्रगतिशील कविता में उनकों एक उदारवादी कवि माना गया है। नई कविता भी आधुनिक हिन्दी काव्य की एक ऐसी प्रवृत्ति रही है जिसे किसी काल खण्ड में बाँधकर नहीं देखा जा सकता। शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं के साथ भी यह प्रश्न जुड़ा हुआ है परन्तु उनकी कविताएँ उत्तरोत्तर नवीन चेतना की ओर बढ़ती गई है। उनकी कविताओं की यह विशेषताएँ रही है। उनकी ये कविताएँ मानवीय जीवन के संघर्ष की प्रस्तुति के साथ–साथ नवजीवन मूल्यों की प्रस्थापना की ओर अग्रसर रही है।

उनकी नई कविताएँ सामाजिक चेतना, प्रकृति चित्रण, सौन्दर्य बोध तथा आधुनिक भावबोध को वहन करने वाली है। उनके शिल्प की नवीनता नई कविता के भावबोध को वहन करने में समर्थ रहा है।

मैंने इस शोधकार्य में उनकी नई कविताओं के विविध पक्षों को गहराई से देखने का कार्य किया है। उनकी नई कविताओं का सम्यक् आंकलन प्रस्तुत किया जा रहा है।

शमशेर बहादुर सिंह की नई कविताओं पर आधारित इस शोध–प्रबन्ध को प्रस्तुत करने से पहले मैं कवि के प्रति असीम श्रद्धा अर्पित करता हूँ।

शमशेर जी के विषय में मुझे जानकारी पाठ्यक्रमों की पुस्तकों के माध्यम से मिली। मैं उनकी सौन्दर्य दृष्टि में भी मानवता व देश प्रेम के भावबोध से बहुत प्रभावित हुआ। उनकी कविताओं की जटिल संरचना में अपनत्व भरे मधुरस ने मुझे इस शोध कार्य की ओर प्रेरित किया है। मैंने इस शोध कार्य में निरन्तरता बनाए रखते हुए डॉ॰ अरविन्द कुमार दीक्षित के निर्देशन में इसे छः वर्षों में पूरा किया है।

शमशेर जी के काव्य पर अभी तक अल्प शोध कार्य ही प्रस्तुत किए गए हैं। वे आधुनिक हिन्दी कविता के एक ऐसे कवि है जिन्होंने बिना किसी यश प्राप्ति के अबाध गति से मानव जीवन की सच्ची अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी है। यद्यपि हिन्दी कविता में उनकों अपने जीवन काल में कोई उच्च पद प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हुई, लेकिन उनके जटिल संवेदनशील काव्य में आधुनिक भावबोध के दिग्दर्शन बड़े रूप में मिलते हैं। विशेष रूप से उनकी नई कविताएँ व्यक्ति की सामाजिक तथा वैयक्तिकता को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रण करती है।

शमशेर की कविताओं को किसी एक प्रवृत्ति में बाँधकर देखना उनके लेखकीय कार्य के प्रति अन्याय जैसा प्रतीत होता है। वे प्रगतिशील कविता से समकालीन कविता तक लिखने वाले कवि रहे है। उनकी कविताएँ उदारवादी भावबोध से ओत–प्रोत रही है। हिन्दी की प्रगतिशील कविता में उनकों एक उदारवादी कवि माना गया है। नई कविता आधुनिक हिन्दी काव्य की एक प्रवृत्ति रही है जिसे किसी काल–खण्ड में बाँधकर नहीं देखा जा सकता। शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं के साथ भी यह प्रश्न जुड़ा हुआ है। परन्तु उनकी कविताएँ उत्तरोत्तर नवीन चेतना की ओर बढ़ती गई है। उनकी कविताएँ मानवीय जीवन के संघर्ष की प्रस्तुति के साथ–साथ नवजीवन मूल्यों की प्रस्थापना की ओर अग्रसर होती रही है।

शोध–प्रबन्ध की प्रस्तुत योजना :–

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध "शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता का विकास" छः अध्यायों में विभक्त किया गया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है :–

इस शोध–प्रबन्ध को छः भागों में विभक्त किया गया है। शोध का प्रथम अध्याय नई कविता की अवधारणा एवं पूर्वपीठिका से सम्बन्धित है, जिसमें नई कविता की पृष्टभूमि और स्वरूप

की गणबेषणा की गई है इसमें नई कविता के नामकरण और परिभाषाओं, नया चिन्तन, परिस्थितियाँ और विकास पर खुलकर चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय शमशेर बहादुर सिंह के व्यक्तिव और कृतित्व पक्ष पर आधारित है। इसमें उनके जीवन और व्यक्तित्व निर्माण की यात्रा का जीवन्त चित्रण किया गया है। व्यक्तित्व के अर्थ को भी समझाया गया है। शमशेर जी के व्यक्तित्व के बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व का सांगोपांग वर्णन इस अध्याय में किया गया है। उनके कृतित्व पक्ष में पद्य भाग में उनके काव्य–संग्रहों की विवेचना की गई है तथा गद्य साहित्य में उनके द्वारा लिखे गए विविध निबंधों, कहानियों, आलोचना और समालोचना आदि पक्षों पर प्रकाश ड़ाला गया है।

तृतीय अध्याय शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता नाम से है जिसमें शमशेर जी की सामाजिक एवं यथार्थ चेतना, उनकी कविताओं में बौद्धिकता की प्रतिष्ठा, प्रकृति एवं प्रेम चित्रण, आधुनिक भावबोध, वर्ग संघर्ष और मानवतावाद एवं देश प्रेम आदि बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत शमशेर बहादुर के काव्य में शिल्पगत नवीनता को रूपायित किया गया है। उनकी कविताओं में भाषा एवं शब्दगत नवीनता, छंदगत नवीनता, उपमागत नवीनता, प्रतीकात्मक नवीनता, बिम्बात्मक नवीनता, व्यंग्यात्मक नवीनता और संगीतात्मक नवीनता की अभिव्यक्ति हुई है। कवि शमशेर ने अपने कथ्य को रूप देने के लिए शिल्प क्षेत्र में नूतन परिवर्तन किए है। उन परिवर्तनों में उनकी ईमानदारी भी मौजूद है।

पंचम अध्याय में शमशेर की कविताओं का परवर्ती काव्य पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। नई कविता के बाद साठोत्तरी कविता में आने वाली अकविता, समसामयिक कविता, विचार कविता आदि काव्य प्रवृत्तियों पर शमशेर की नई कविताओं के प्रभाव को इस अध्याय में रेखांकित किया गया है।

षष्टम अध्याय में शोध कार्य का उपसंहार दिया गया है।

अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची जोड़ी गई है।

शमशेर बहादुर सिंह की नई कविताएँ एक तात्कालिक समय को सच्चाई के साथ रखने वाली कविताएँ रही है, उनकी इन कविताओं ने मानवीय जीवन को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित करके मानव जीवन को तथा साहित्य को एक नया मार्ग प्रशस्त किया है। इस शोध कार्य में उनके नए चिन्तन को रखने वाली सभी कविताओं का शामिल किया गया है। की नई कविताएँ

सामाजिक चेतना, प्रकृति चित्रण, सौन्दर्य बोध तथा आधुनिक भावबोध को वहन करने वाली है। उनके शिल्प की नवीनता नई कविता के भावबोध को वहन करने में पूर्णतः समर्थ रहा है।

मैंने इस शोधकार्य में उनकी नई कविताओं के विविध पक्षों को गहराई से देखने का कार्य किया है –

अंत में मैं इस शोध कार्य के लिए पुनः डॉ॰ अरविन्द कुमार दीक्षित का ऋणी हूँ, जिन्होंने विषय चयन से लेकर शोधकार्य के पूर्ण होने तक मुझे प्रेरित व मार्गदर्शन दिया। उनके स्नेह से ही यह कार्य पूर्ण हो पाया है। उनकी धर्मपत्नी डॉ॰ मंजू शर्मा जी का मधुरतम व्यवहार व प्रेरणा भी इस कार्य में सहयोगी रहा है।

इस विशद् कार्य में मेरी धर्मपत्नी श्रीमती रामोली देवी का भी विशेष योग रहा है। जिन्होंने मेरे कठिन कार्य में आत्मीय भाव, त्याग, प्रेम और सहयोग प्रदर्शित कर कार्य को पूर्ण करने में सहयोग किया है।

मैं डॉ॰ जमुनालाल मीना, सह आचार्य (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, करौली का भी आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे समय–समय पर मार्गदर्शन दिया है। डॉ॰ हरिकेश मीना ने भी मुझे विशेष सहयोग देकर स्नेह दिया है। डॉ॰ अमृतलाल योगी जो मेरे विद्यार्थी भी रहे है के सहयोग के लिए शब्द–चयन कम पड़ते है। और मैं छात्र दिलखुश मीना का भी हृदय आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस कार्य में रूचि दिखाते हुए मेरे साथ हर बिन्दु पर सहयोग करके निष्ठा अर्पित की है। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। अतं में उन सभी विद्वानों तथा सहयोगीयों का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे सैद्वान्तिक और व्यवहारिक दोनों स्तरों पर सहयोग किया है। उनमें मेरे पुत्र कुलदीप सिंह नाम प्रमुख रूप में है। मेरी पुत्रीयाँ प्रिया, भारती, अर्चना और नेहा भी मेरे इस शोध कार्य के पूर्ण होने के लिए सदैव चिन्तित रही है।

शोधार्थी

दामोदर लाल मीना

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
1.	**प्रथम अध्याय** **नई कविता की अवधारणा–एक दृष्टि (पूर्वपीठिका)**	**1–38**
	1.1 नई कविता की पृष्ठभूमि और स्वरूप	1–11
	1.2 नई कविता का विचार पक्ष	11–17
	1.3 नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ	17–25
	1.4 नई कविता के 'कथ्य' और 'शिल्प'	25–29
	1.5 नई कविता पर पूर्ववर्ती काव्य का प्रभाव	29–34
2.	**द्वितीय अध्याय** **शमशेर बहादुर सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**	**39–62**
	2.1 शमशेर का जीवन एवं व्यक्तित्व	40–46
	2.2 व्यक्तित्व : बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व	46–50
	2.2.1 बाह्य व्यक्तित्व	46–47
	2.2.2 आंतरिक व्यक्तित्व	47–50
	2.3 शमशेर का कृतित्व	50–51
	2.3.1 पद्य साहित्य	51–56
	2.3.2 गद्य साहित्य	56–58
3.	**तृतीय अध्याय** **शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता**	**63–113**
	3.1 नई कविता में सामाजिक एवं यथार्थ चेतना	65–74
	3.2 नई कविता में बौद्धिकता की प्रतिष्ठा	74–79
	3.3 नई कविता में प्रकृति एवं प्रेम चित्रण	79–93
	3.4 नई कविता में आधुनिक भावबोध	93–98
	3.5 नयी कविता में वर्ग संघर्ष	98–103
	3.6 नई कविता में मानवतावाद एवं देश प्रेम	103–106
4.	**चतुर्थ अध्याय** **शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में शिल्पगत नवीनता**	**114–148**

	4.1 भाषा एवं शब्दगत नवीनता	116–124
	4.2 छन्दगत नवीनता	124–129
	4.3 प्रतीकात्मक नवीनता एवं उपमागत नवीनता	129–132
	4.4 व्यंग्यात्मक नवीनता	132–135
	4.5 संगीतात्मक नवीनता	135–137
	4.6 बिम्बात्मक नवीनता	137–142
5.	**पंचम अध्याय** **शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं का परवर्ती काव्य पर प्रभाव**	**149–166**
	5.1 साठोत्तरी पीढ़ी की कविता पर प्रभाव	150–161
	5.1.1 साठोतरी/अकविता	153–157
	5.1.2 विचार कविता	157–157
	5.1.3 समकालीन कविता	157–160
	5.1.4 और अन्य काव्यधाराएँ	160–161
	5.1.5 नई कविता सम्भावना और भविष्य	161–164
6.	**षष्ठम अध्याय** **उपसंहार**	**167–173**
	संदर्भ ग्रंथ सूची	**174–179**

प्रथम अध्याय

नई कविता की अवधारणा एवं पृष्ठभूमि

प्रथम अध्याय

नई कविता की अवधारणा एवं पृष्ठभूमि

साहित्य में कोई भी काव्य प्रवृत्ति या धारा सर्वप्रथम एक अवधारणा के रूप में ही प्रकट होती है। वह अपनी पूर्व काव्य प्रवृत्तियों से संस्कार प्राप्त कर अपने स्वरूप को धारण करती हैं। नई कविता भारतीय स्वतंत्रता के बाद लिखी गई एक काव्य प्रवृत्ति है। इसने मानव जीवन को नूतन मूल्य दिये है तथा साहित्य में एक नया दृष्टिकोण स्थापित किया है। विवेच्य कवि शमशेर बहादुर सिंह नई कविता के प्रतिष्ठित कवि है। उनके द्वारा लिखी गई नई कविताओं ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। परन्तु इनकी विवेचना करने से पहले नई कविता को एक दृष्टि से देख लेना भी अतिआवश्यक है।

1:1 नई कविता की पृष्ठभूमि और स्वरूप

नई कविता भारतीय आजादी के बाद लिखी गई प्रमुख हिन्दी कविता है। इसने काव्य के क्षेत्र में नये–नये प्रयोग कर साहित्यकारों के लिए एक अलग नया मार्ग प्रशस्त किया है। नई कविता के संस्थापक या आधार स्तम्भों में डॉ॰ जगदीश गुप्त, विजयदेव नारायण साही एवं रामस्वरूप चतुर्वेदी का नाम आता है। परन्तु आकाशवाणी के प्रसारण के द्वारा 'नये पत्ते' के एक फीचर में सर्वप्रथम 'अज्ञेय' के द्वारा सन् 1953 में हिन्दी कविता को नई कविता नाम दिया। परन्तु इसे विधिवत् नाम सन् 1954 में डॉ॰ जगदीश गुप्त के द्वारा मिला। वास्तव में हिन्दी कविता 'दुसरा सप्तक' के प्रकाशन से ही नये स्वरों को लेकर आगे बढ़ने वाली कविता है। इस सप्तक की भूमिका में इसके बीज रूप स्पष्ट दिखाई देते है। कवि अज्ञेय ने सन् 1951 में 'प्रतीक' में प्रकाशित एक परिसंवाद में लिखा है कि "मैं आग्रहपूर्वक यह कहना चाहता हूँ कि नयी कविता की–जिसके लिए मुझे 'प्रयोगवादी' शब्द अपूर्ण, अव्यक्त और पूर्वाग्रहयुक्त जान पड़ता है–मूल प्रवृत्तियाँ इस देश की हैं।"[1]

स्वतंत्रता के बाद आधुनिकता और समसामयिकता के दौर को ही नई कविता का प्रादुर्भाव काल माना गया है। फिर भी इसकी स्पष्ट व्याख्या के लिए विस्तार में जाना आवश्यक है। साहित्य में कोई भी काव्य प्रवृत्ति नई या पुरानी नहीं होती है। वह अपने समय या युग के लिए नूतन ही होती है। नई कविता के लिए 'नया' शब्द एक विशेषण है। एक काल विशेष की कविता को नई कविता नाम मिला है। नई कविता शब्द ही अपने आप में महत्त्वपूर्ण व नूतन है। वस्तुतः

नई कविता आज के युग की (1947–1960) की कुक्षि से उत्पन्न वह काव्यधारा है जिसने समाज के ढाँचे में पर्याप्त परिवर्तन किया है, और आज का नया कवि उसके साथ सम्बन्ध जोड़ता हुआ दिखाई देता है। सम्बन्धों के जोड़ने की इस प्रक्रिया में नये कवियों ने यथार्थ एवं स्थूल समस्याओं को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं दिखाया है। और कवि ने यह अनुभव किया है कि कविता के माध्यम से वह पाठक के लिए विश्वसनीय होता जाता है। परन्तु मानव को सही रूप में पहचाने और उसकी दैनन्दिन समस्याओं के प्रति सर्तक रहने से ही कवि ने काव्यगत कथ्य कों नयें ढंग से अपनाया तथा नयें विषय और नयें प्रश्नों एवं नयें कथन को जन्म दिया हैं। नई कविता के द्वारा यह एक महत्त्वपूर्ण काम किया गया है। गिरिजा कुमार के शब्दों में –नई कविता जो नई दिशाओं के अन्वेषण में रत हैं। इसके कवि परिपाटीबद्ध प्रतीक, उपमानों को छोड़कर नये उपमान बना रहे है अथवा उन्हें लोक जीवन, दैनिक नागरिक जीवन, पारिवारिक जीवन या गली के परिवेश जैसे विशिष्ट क्षेत्रों से खोज रहे हैं और इस प्रकार शैली में ताजगी पैदा करने का प्रयत्न कर रहे है।[2]

नामकरण और परिभाषा :–

नई कविता के लिए नया शब्द एक विशेषण है जिसमें कविता की ताजी होने की खुशबू आती है। इससे पूर्व की कविता प्रयोगवाद के 'प्रयोगों' के भार से दब गई थी। इस कविता में पहली बार व्यक्ति की वैयक्तिक एवं सामाजिकता को मुखर रूप दिया गया है। वास्तव में नई कविता की पहचान इसी रूप में होती है।

नई कविता के नामकरण के सम्बन्ध में पर्याप्त मतभेद रहे है। तार सप्तक की भूमिका में अज्ञेय ने कविता की प्रयोगशीलता पर विशेष बल दिया है। और प्रयोग को विकास का चरण माना है। उन्होंने ऐसे कवियों को राहों के अन्वेषी कवि कहा है। इन कवियों की भाव–भूमि मानव भूमि थी। तथा इसी आधार पर वे नवीन परिवर्तनों को तथा नवीन दृष्टिकोण को रूपायित करने के लिए नई कविता नाम प्रतिपादित करने में लगे हुए थे। जगदीश गुप्त के अनुसार "'नया कवि' और 'नयी कविता' शब्दों का प्रथम प्रयोग चाहे जब हुआ हो परंतु यह स्पष्ट है कि इधर कुछ ही वर्षों में यह शब्द व्यापक व्यवहार में आये। कदाचित् 'वाद' की सीमा से अनिबद्ध होने के कारण 'नयी कविता' शब्द 'प्रयोगवाद' की अपेक्षा अधिक लोक–ग्राह्य हुआ। इसके प्रभूत प्रमाण दिये जा सकते हैं कि 'नयी कविता' 'प्रयोगवाद' के विरोध में नहीं आयी वरन् उसको मुक्त भाव से आत्मसात करते हुए उसका आविर्भाव हुआ। तीसरे सप्तक की भूमिका स्वयं इसे प्रमाणित करती है। व्यक्तिगत रूप से आज भी मैं दोनों के बीच किसी विरोध की स्थिति नहीं देखता हूँ और यदि

किसी को दिखायी देती है तो मैं उसे, यानी स्थिति को, नयी कविता के लिए अहितकर ही मानूँगा।"[3]

नई कविता के नाम पर कईयों आलोचकों ने तर्क प्रस्तुत किए है कि –(1) नई कविता का नयापन विकसित नहीं हुआ, फादँता हुआ आया है। (2) नई कविता में नवीनता का विकास तीव्रता से हुआ है। (3) नई कविता में विषय की नवीनता है, शिल्प की नूतनता है और दृष्टि की ताजगी है। और सबसे बड़ी चीज यह है कि इसमें प्रयोगों की नवीनता है, अनेकों सम्भावनाओं की गुंजायश हैं। नयी कविता में शैली की नवीनता ही नहीं, बल्कि भावबोध की नूतनता भी है। वस्तुतः नई कविता सन् 1947 में अंकुरित होकर, 1953–54 में अपना नाम पाकर उत्तरोतर विकसित होने वाली आधुनिक हिन्दी कविता की एक सशक्त काव्य प्रवृत्ति रही है। 'नया' शब्द इस काल विशेष की हिन्दी कविताओं के लिए ही प्रयुक्ति प्राप्त है। डॉ॰ हरिचरण ने नई कविता के नामकरण को "विश्व की नवीन परिस्थितियों को रूपायित करने तथा नवीन दृष्टिकोण को प्रतिपादित करने के लिए 'नयी कविता' नाम चल पड़ा।"[4] कह कर रूपायित किया है।

नई कविता की परिभाषाएँ :–

नई कविता को एक निश्चित पारिभाषिक परिवृत्त में बाँधा नहीं जा सकता है। क्योंकि वह संकीर्ण परिधि से कहीं ऊपर व्यापक दृष्टि का बोध कराने वाली कविता हैं। "नयी कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की संवेदनात्मक प्रतिक्रिया है।... मुक्तिबोध के अनुसार "'नयी कविता' का एक स्वर ही विविध है।"[5]

नई कविता को कई विद्वानों ने निम्न प्रकार से परिभाषित किया है:–

1. डॉ॰ जगदीश गुप्त "नयी कविता प्रगतिवादी यथार्थ के आघात से उत्पन्न छायावाद के स्वप्नभंग के बाद की कविता है, जिसमें व्यक्त भावनाएँ कुहासे के बीच पनपने वाले तन्द्रालय से युक्त न होकर दिन की तेज रोशनी के बीच विषमताओं के घिरे जागृत मनुष्य की भावनाएँ हैं।"[6]

2. लक्ष्मीकान्त वर्मा "नई कविता आज की मानव विशिष्टता से उद्‌भूत उस लघू मानव के लघु परिवेश की अभिव्यक्ति है जो एक ओर समाज की समस्त तिक्तता और विषमता को तो भोग ही रहा है–साथ ही उन तिक्तताओं के बीच अपने व्यक्तित्व को भी सुरक्षित रखना चाहती है।"[7]

3. धर्मवीर भारती "नई कविता प्रथम बार समस्त मानव– जीवन को व्यक्ति या समाज इस प्रकार के तंग विभाजनों के आधार पर न मापकर मूल्यों की सापेक्ष स्थिति में व्यक्ति और समाज दोनों को मापने का प्रयास कर रही है।"[8]

4. डॉ॰ हरिचरण शर्मा "नयी कविता युगीन संदर्भों में आधुनिक भावबोध और सौन्दर्यबोध के स्तर पर खड़े मानवीय परिवेश को पूर्ण वैविध्य के साथ नये शिल्प में प्रस्तुत करने वाली काव्यधारा है। वह प्रत्येक क्षण लघु मानव और समकालीन जीवन से अनुप्रेरित अनुभूतियों को मुक्त पद की पीठ पर नये टेकनीक में पाठकों तक सम्प्रेषित कर आस्वाद्य बना रही है।"[9]

5. डॉ॰ हरिचरण शर्मा "सन् ४० के आसपास का समय वह समय था जो हिन्दी काव्य गगन में नयी–नयी अनुभूतियों के रंग उँडेल रहा था एवं पुरानी अनुभूतियों के सिरहाने से चुपके–चुपके नयी अनुभूतियाँ रख रहा था। कहने की आवश्यकता नहीं कि आधुनिक संवेदना वलियत अनुभूतियों का जन्म ऐतिहासिक अनिवार्यता का ही परिणाम था।"[10]

6. डॉ॰ हुकमचन्द राजपाल "समकालीन कविता में व्यक्त यथार्थ का यह अति स्पष्ट कथ्य है।... समकालीन कवि इसकी चिन्ता नहीं करता कि अमुक कथन कितना अश्लील है अथवा विद्रूप है। वह तो यर्थाथ और सपाट देखने और कहने का पक्षधर है। वह जिन्दगी की विसंगतियों को कुण्ठाओं, अन्तर्व्यथाओं को उसी रूप में सीधे में कहने में विश्वास रखता है।"[11]

अस्तु, उपरोक्त तथ्यों एवं परिभाषाओं से स्पष्ट है कि छायावादी कविता के बाद प्रगतिशील काव्य चेतना में नई कविता अपने से पूर्व काव्य प्रवृत्तियों से भाव एवं शिल्प दोनों पक्षों में नूतनता लेकर आई है। हिन्दी कविता का कवि परम्परागत भावबोध से हटकर यथार्थ की भूमि से पहली बार नई कविता के माध्यम से टकराता है। नयें कवि की मानवतावादी दृष्टि नूतन है। इस सब के लिए कवि ने नूतन शिल्प संधान किया है। नये कवियों की क्षणवादी भावना सौन्दर्य की नई दृष्टि आदि ही नई कविता की विशेषताएँ बनी है।

नया चिन्तन :–

प्रत्येक युग की अपनी दृष्टि होती है। छायावाद ने द्विवेदीयुगीन नीरसता को सरसता प्रदान की है, प्रगतिवाद ने छायावाद के अभावों की पूर्ति करने का प्रयास किया है, जब कविता

आदर्श से यथार्थ तथा व्यक्ति से समाज की समस्याओं की ओर बढ़ती गई है अर्थात् नये कवियों के हाथों में आई है, तो उसमें और भी परिवर्तन हुए है, कथ्य व शिल्प के क्षेत्रों में अनेक नये विषय आ गए है, इन्हीं नये विषयों को लेकर नई कविता में रचनाएँ लिखी जाने लगी। नई कविता यथार्थ से सम्पृक्त है। वह कल्पना के द्वारा बनाये गए रेत के महल को नहीं मानती है जिस प्रकार छायावादी कविता में मिलता है। नया कवि विगत के गीतों को छोड़कर भविष्य की कल्पना में निमग्न रहता है। वह समसामिक जीवन के परिवेश से वर्तमान के प्रत्येक जीवन क्षण को अपने भीतर लेकर चलता है उसका पूरा आनन्द लेता है। गिरिजा कुमार माथुर ने लिखा है कि आज परिवर्तन इतनी तेजी से होते जा रहे है कि नई कविता को समेटे रखना इतना आसान नहीं है। कुछ ही दिनों में कृत्रिम सीमाएँ चटकने लगी है और नई कविता के स्वर चारों तरफ फूटकर फैलने लगे है।[12] नया कवि आज के मनुष्य को देखता है। इस दृष्टि से नव काव्य को नई दृष्टि से अर्थात् लोकतान्त्रिक 'व्यक्ति' और परिवेशोन्मुख वस्तुवादिता के साथ नये संस्कारों में देखने की आवश्यकता है।[13]

प्रत्येक युग अपने अनुरूप मानव मूल्यों की सृष्टि करता है और पुरानी मान्यताओं को अपने पर कँसकर उसके खरेपन की जाँच करता है। इस प्रकार नई दृष्टि पनपती है। नई कविता आधुनिक हिन्दी काव्य का सबसे बड़ा उन्मेष है। आज तक हिन्दी काव्य में किसी भी धारा या प्रवृत्ति को लेकर इतना दीर्घ और तीव्र वाद–विवाद किसी धारा का नहीं हुआ है जितना नई कविता को लेकर हुआ है। नई कविता ने अपनी रचना प्रक्रिया के क्षेत्रों में सम्पूर्ण क्रान्ति की है। कविता के पुराने प्रतिमानों को बदल ड़ाला है और समीक्षकों, विचारकों को नये सिरे से सोचने को विवश किया है। रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार "नव शब्द लेखक अथवा युग का परिचायक न होकर नवीन परिप्रेक्ष्य का द्योतक है।"[14]

नई कविता युगीन संदर्भों में आधुनिक भावबोध और सौन्दर्यबोध के स्तर पर खड़े मानवीय परिवेश को पूर्णवैविध्य के साथ नये शिल्प में प्रस्तुत करने वाली काव्यधारा है। वह प्रत्येक लघु मानव और समकालीन जीवन से प्रेरित अनुभूतियों को मुक्त छन्द की पीठ पर नये 'टेकनीक' में पाठकों तक सम्प्रेषित कर आस्था बना रही है। इसमें तुच्छ से तुच्छ, महान से महान, बाह्य और आन्तरिक चेतन और अचेतन आदि सभी क्षेत्रों से अनुभूतियों को बटोरकर यथार्थ वाहिनी भाषा और शैली के खोल में लपेटकर खड़ा कर दिया है। मुक्तिबोध के अनुसार "नयी कविता की आत्मा है आधुनिक भाव–बोध। आज का सुशिक्षित मनुष्य अपने परिवेश, परिस्थितियों से जो संवेदनात्मक

प्रतिक्रियाएँ करता है, संवेदनात्मक प्रतिक्रियाएँ या उनका सामान्यीकरण नयी कविता से प्रकट होता है।"[15]

नई कविता में अधिकांश परम्परागत विषय नयी वस्तु और नवीन व्यवहारिक चेतना के साथ अभिव्यक्ति पा रहे है। प्रेम, सौन्दर्य, मानव, ईश्वर, धर्म, काम और प्रकृति के प्रति कवियों के इस दृष्टिकोण में परिवर्तनों को देखा जा सकता है। रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार "नव लेखन वस्तु, विधान, भाषा अथवा शैली–सम्बन्धी आन्दोलन नहीं है, वहीं तो समस्त साहित्यिक कृतित्व को नया परिप्रेक्ष्य, एक नवीन मर्यादा प्रदान करता है।"[16]

नयी कविता में प्रेम, काम और नारी के प्रति स्पष्टतः बदला हुआ दृष्टिकोण दिखाई देता है। यहाँ पर प्रेम न तो काम का पर्याय है और न काम रहित प्रेम को स्वीकृति ही प्रदान है। अज्ञेय ने 'बावरा अहेरी' में लिखा है कि अनेक स्थलों पर अहमं के विलय के साथ ही शक्ति का स्रोत भी फूटता दिखाई देता है। जब प्रेम अहमं की जयमाला को प्राप्त कर लेता है तो वह समर्थ और शक्ति सम्पन्न बन जाता है। परिणामतः प्रिया का 'सवेरे सवेरे नाम' लेना नयी प्रकाश चेतना को जन्म देता है और नये बीजवपन एवं नयी फसल उगाने की शक्ति का स्रोत बन कर आता है।[17]

वास्तव में नई कविता के विकास की संरचनात्मक प्रक्रिया थम सी गई है, उसमें भाव और शैली का विकास अवरूद्ध हुआ है। कवि अज्ञेय इसकी चिन्ता 'भादों की इमस' कविता में करते है–

"सहम कर थम से गये हैं बोल बुलबुल के

मुग्धा, अनझिप रह गये हैं नेत्र पाटल के,

इमस में बेकल, अचल हैं पात चलदल के

नियति मानों बंध गयी है व्यास में पल के।"[18]

आज नई कविता के मूल्यांकन के संदर्भ में यह आरोप बार–बार दोहराये जाते है कि यह परम्परा से विच्छेद होकर चलने वाली काव्य प्रवृत्ति है। यह आरोप परम्परा का अर्थ रूढ़ि मानने से और अधिक जटिल हो गया है। परम्परा और रूढ़ि में अन्तर है। परम्परा प्रगति को प्रोत्साहित करती है और रूढ़ियों को जो परम्परा नये के लिये उकसा नहीं सकती वह परम्परा नहीं होती है।

परम्परा हमारा दायित्त्व है, प्रगति विकास की प्रवृत्ति है तो प्रयोग भविष्य की दृष्टि, सम्भावनाओं तक का माध्यम होता है। नई कविता एक नया प्रयोग है। यही कारण है कि डॉ॰ धर्मवीर भारती ने लिखा है कि "यही संकट मनुष्य को और सर्वाधिक संवेदनशील कवि को आधुनिकता की और खींच रहा है। अतः यह कहना उचित ही है कि संकट का बोध और आधुनिकता का बोध बहुधा अभिन्न रहते है। यही संकट का बोध वर्तमान के प्रति जागरूक बनाता है।"[19]

नयी कविता में प्रेम और नारी के ऊपर कवियों ने अलग–अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। नयी कविता में प्राकृतिक चित्रण भी कवियों ने मुखरता के साथ उभारा है। प्रकृति अनादिकाल से ही मानव की क्रिया–प्रतिक्रियाओं में साथ देती रही है। प्रकृति की गोद में पला मानव सदैव से ही इसके प्रति आकर्षित रहा है। कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेग है। आधुनिक काल में प्रकृति का कोमल और मधुर रूप छायावादीयों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। छायावादियों की प्रकृति चेतना में यथार्थ जगत् का सौन्दर्य पक्ष नहीं आ सकता है। प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति से भी अधिक समाज को महत्त्व दिया है। उनकी दृष्टि में प्रकृति सौन्दर्य से न तो समाज के भूखे और कगांलों का पेट भर सकता है और न ही उसका तन ढका जा सकता है। नई कविता का वृहद अंश प्रकृति चेतना से परिख्यात है। यह यथार्थ की कविता है। उसने प्रकृति के कोमल और परूष दोनों छोरों का स्पर्श किया है। नई कविता की प्रकृति मानवेत्तर यथार्थ की वाहिका है। आज की कविता में प्रकृतिपरक अध्ययन दो रूपों में देखा जा सकता है। पारम्परिक प्रकृति विधान और नव्यत्तर प्रकृति विधान।

स्वतंत्रता के पश्चात् औद्योगिकीकरण और नगरीयकरण के कारण न केवल प्राकृतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है, बल्कि प्रकृति से मानव की पार्थक्य की स्थिति भी आ गई है। औद्योगिक विकास के कारण जहाँ प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तीव्रगामी हुआ है, वहीं प्रकृति के अवलोकन की दृष्टि भी समाप्त होने लगी, इसका परिणाम यह निकला की नई कविता के शुभारम्भ तक प्रकृति के साथ–साथ उसके सौन्दर्यबोध भी कविता में धीरे–धीरे कम होने लगे और कविता में मानव जीवन का चिन्तन अधिकाधिक रूप में बढ़ने लगा। प्रकृति अब आल्मबन और उद्दीपनों के रूप में प्रयुक्त नहीं होती, बल्कि जीवन सत्य के प्रतीकों के रूप में चित्रण होती है। श्री भवानी प्रसाद की कविता 'बूँद टपकी एक नभ से' में कामना करता है –

"बूँद टपकी एक नभ से/किसी ने झुककर झरोखे से

कि जैसे हँस दिया हो/हँस रही–सी आँख ने जैसे

किसी को कस दिया हो/ठगा–सा कोई किसी की आंख

देख रह गया हो/उस बहुत से रूप को, रोमांच रोके

सह गया हो।"[20]

आज के युग में मशीनीकरण अस्मिता का संघर्ष बन गया है। रमेश कुंतल 'मेघ' के अनुसार "विश्व इतिहास में पहली बार मनुष्य मशीनों का दास हुआ।"[21] नारी दास्ता का प्रतीक मानी जाती थी। नई कविता में नारी मुक्ति के स्वरों का चिन्तन हुआ है। अर्थात् नई कविता भारतीय नारीयों की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष और चिन्तन की कविता है। 'नारी जब पति के साथ रहती है वह अशुद्ध नहीं होती, लेकिन दुसरे के साथ काम करने पर अशुद्ध कहलाती है। अतः अवैज्ञानिक और जड़ विवेक को यौन योग नैतिक अशुद्धि नहीं देता।'[22]

वस्तुतः नई कविता एक नई भाव धारा या चिन्तन धारा को लेकर प्रयोगवादी कवियों की एक शाखा के कवियों ने लिखनी आरंभ की, उसका उत्तरोतर विकास होता गया। यह भारतीय स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कविता में लिखी गई एक प्रमुख काव्य प्रवृत्ति है जिसमें परम्परागत भावबोध से आगे बढ़कर नये भावबोध और शिल्प विधान का अन्वेषण किया है। प्रयोगवाद के बाद हिन्दी कविता में जो नवीन धारा विकसित हुई, वह नई कविता के नाम से चर्चित हुई है। इसका आरम्भ इलाहाबाद से निकलने वाली साहित्यिक पत्रिका 'परिमल' में लिखने वाले डॉ॰ जगदीश गुप्त, रामस्वरूप चतुर्वेदी एवं विजयदेव नारायण साही के सामुहिक प्रयासों से सन् 1954 में इसका प्रकाशन हुआ। इससे पहले भी 'दुसरा सप्तक' के कुछ कवियों ने इसकी भूमिका में अपनी कविताओं को नई कविता कहा है। इससे भी पूर्व नई कविता के स्वर मुखरित हुए है। रामविलास शर्मा ने नई कविता और अस्तित्ववाद पुस्तक में लिखा है कि "सन् '४३–'४४ में पन्त–नरेन्द्र–केदार–शमशेर कविता की जिस धारा के प्रतिनिधि है, 'तार सप्तक' उसमें प्रवाह ही एक लहर है, नदी का स्थिर द्वीप नहीं।"[23] ऐसा अज्ञेय का विचार भी था यही कारण है कि आगे इस प्रकार की कविताओं को नई कविता नाम मिला है।

परिस्थितियाँ और विकास :–

"साहित्य अतंतः साहित्य ही है – वह परिस्थितियों के सहित अथवा सम्मिलित प्रभाव की अभिव्यंजना है।"[24] परतंत्र भारत की परिस्थितियों के उपरान्त अथार्थ स्वाधीन भारत में पाश्चयात् शिक्षा पद्धति और वैज्ञानिक कारणों से देश के भीतर की सामाजिक, राजनीति, आर्थिक व

सांस्कृतिक परिस्थितियों में भारी बदलाब हुए। देश विभाजन और शरणार्थी समस्या ने देश की आर्थिक स्थिति को डावाडोल कर दिया। देश में दैनिक उपभोग की सामग्रीयों का आभाव हो गया। लोग अन्न, वस्त्र के अभाव और भीषण बेरोजगारी से पीड़ित जनता की मनोदशा ने कवि चेतना को मुखरित किया। स्वाधीनता की निष्फल उपलब्धियों की खीझ, अभाव–संतप्त जन समाज, धरना और प्रदर्शनों, तोड़–फोड़ तथा पूँजीवादी शिक्षा सभ्यता ने आम जनता और विद्यार्थी वर्ग को उद्दण्ड बनाया। इन सब की अभिव्यक्ति समसामयिक रूप में हुई। कवि भारतभूषण अग्रवाल ने स्वाधीनता के बाद की स्थिति का चित्रण करते हुए लिखा है कि स्वतंत्रता का आनन्द लाखों लोगों की हत्याओं और बेघर होने की परिस्थिति उत्पन्न करने वाले विभाजन के संत्रास में देश डूब गया।[25] वहीं सुमन कवि ने "भाई की गरदन पर भाई का दुधारा तन गया।"[26] कविता के माध्यम से देश की स्थिति से अवगत कराया है।

भारतीय समाज में नारी के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव भी आने लगा। धीरे–धीरे नारी का आत्मबल बढ़ने लगा। नारी पुरूष के समान सभी क्षेत्रों में काम करने लगी। इस स्थिति को नई कविता के कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाया।

स्वाधीनता के बाद जिन लोगों को राम राज के स्थापित होने की कल्पना थी। वे पूँजीवादी व्यवस्था के शिकंजे में फंसकर बरोजगार, भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता की ओर बढ़ने लगे। परिणामस्वरूप देश ग्रामीण संस्कृति से औद्योगिकरण और शहरीकरण संस्कृति की ओर बढ़ने लगा। इस स्थिति को रमेश कुंतल ने चित्रित किया है कि विश्व में मनुष्य पहली बार मशीनों का दास हुआ। कृषि वर्ग व्यापारी वर्ग में बदल गया। 'मानवतावाद' की परिणति 'व्यक्तिवाद' में हुई। फलस्वरूप पहली बार अकेले मनुष्य और अव्यवस्थित समाज के बीच 'परायापन' की भीषण समस्या खड़ी हुई। पुराने आदर्श और प्रारूप अनुपयोगी तथा अप्रमाणिक हो गये।[27] नई कविता ने इन सब को आत्मसात् करके अभिव्यक्ति दी है।

इस प्रकार नई कविता की समस्याओं का चित्र फलक बहुत विस्तार लिए हुए है। इन सब से प्रेरणा लेकर नवीन आदर्शों और मूल्यों को अपनाते हुए इसके रचियता कवियों ने कविताएँ लिखी है।

नई कविता एकाएक रूप में ही सामने नहीं आई है। उसका चरणबद्ध विकास हुआ है। आधुनिक हिन्दी कविता में सन् 1935 के बाद अर्थात् छायावादी कविता के बाद परिवर्तन के जो चिह्न उभरने लगे थे, प्रगतिशील चेतना सामने आने लगी थी, यह एक युगान्तकारी परिवर्तन था।

कविता कवि पंत और निराला जैसे कवियों के हाथ में पड़कर नई चेतना की ओर आगे बढ़ रही थी। कवि पंतजी ने 'रूपाभ' के सम्पादकीय में लिखा भी है कि "इस युग में जीवन की वास्तविकता ने जैसा उग्र रूप धारण कर लिया है, उससे प्राचीन विश्वासों में प्रतिष्ठत हमारे भाव और कल्पना–मूल हिल गए हैं–अतएव इस युग की कविता स्वप्नों में नहीं चल सकती। इसकी जड़ों को पोषण–सामग्री ग्रहण करने के लिए कठोर धरती का आश्रय लेना पड़ रहा है।"[28]

हिन्दी कविता अपने दूसरे चरण में हरिवंशराय बच्चन जैसे कवियों के हाथ में पड़कर स्वछंदतावादी शैली में व्यक्तिगत जीवन के उल्लास और विषाद को अभिव्यक्ति करके आगे बढ़ रही थी। इसके अन्य कवियों में दिनकर, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल आदि का नाम प्रमुख हैं। कुछ कवि राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा में कविता रचकर अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध विरोध की धारा अपनाकर कविता में रत थे। मैथिलीशरण गुप्त और हरिऔंध की कविता में यह स्वर दिखाई देता है।

तीसरी काव्यधारा में प्रगतिवादी कविता का नाम आता है। इस कविता में साम्यवादी विचारों को कविता में लाकर उनका प्रचार–प्रसार किया गया। कवि अशोक वाजपेयी के अनुसार "छायावादी कवियों को लोकोत्तर मिथों के माध्यम से एक आर्गेनिक संसार निरंतर उपलब्ध था। लेकिन सन् ४० के आस–पास यह संसार टूटने–बिखरने लगा... अब कवि का सामना एक बदली, जटिल, चकरा देने वाली और 'पुराण–च्युत' दुनिया से पड़ा...। असहनीय सामाजिक–आर्थिक स्थितियों और कविता के संसार को चौड़ा करने की इच्छा ने कवि को मार्क्सवाद की तरफ आकर्षित किया... पर प्रगतिवादी कवि ने छायावादी कवि की ही तरह मार्क्सवादी धारणाओं से एक दुसरा आर्गेनिक संसार रचने की चेष्टा की।... तार–सप्तक के नये कवि, इसीलिए 'राहों के अन्वेषी' बने।"[29] किन्तु कविता की इस धारा में पहली बार समाज की समस्याओं, वर्जनाओं पर विचार हुआ हैं।

नई कविता के विकास की अगली काव्यधारा प्रयोगवादी कविता है। यह धारा ही नई कविता की विकास की मुख्यधारा भी है। इस कविता में मानव जीवन को खुली अभिव्यक्ति मिली है। लेकिन कविता प्रयोगों के भार से इतनी दब–सी गई है कि वह दिखाई नहीं देती है। कविता में छन्द, शब्द, वाक्य, वर्ण, पंक्ति आदि अनेकों स्थलों पर नये प्रयोग कर उसके वास्तविक एवं व्यापक स्वरूप तक ये कवि नहीं पहुंच पांए। कवि मुक्तिबोध ने लिखा है कि प्रयोगवाद में नवीन यथार्थोन्मुख प्रतीक, उपमाएँ सामने आई। घिसी–घिसाई शब्दावली का त्याग हुआ।[30] व्यक्ति को

केन्द्र में रखकर कवियों ने उसकी जिन्दगी से जुड़ी अनुभूति को कविता में रखा है। प्रयोगों की ललक उनके भीतर अवश्य रही हैं।

प्रयोगवाद की भाव–भूमि को ही नई कविता का असली विकास चरण माना गया है। नई कविता ने यही से ऊर्जा प्राप्त कर नई दिशाओं को छुआ है। जिसमें नया भावबोध और नया शिल्पबोध उपलब्ध है।

1:2 नई कविता का वैचारिक स्वरूप

नई कविता के विचार पक्ष या वैचारिक पक्ष में नई कविता के ऊपर पड़ने वाले विविध पाश्चयात्य काव्यान्दोलनों का प्रभाव वर्णित है। नया कवि व कविता पाश्चयात्य वैचारिकता से काफी हद तक प्रभावित रही है। विवेच्य कवि शमशेर की कविताओं में भी इस विचार पक्ष का काफी हद तक रूप देखने को मिलता है।

अस्तित्ववाद :–

नई कविता में एक बात जो सबसे अधिक उभरकर सामने आई है, वह है सामाजिक चेतना की अपेक्षा व्यक्ति चेतना की प्रधानता। व्यक्ति चेतना की प्रमुख विशेषता व्यक्ति के स्वतंत्र अस्तित्व या सत्ता से है।

अस्तित्ववाद यूरोप जगत की एक अत्याधुनिक साहित्यिक प्रवृत्ति और दार्शनिक विचारधारा है। इसके आरंभिक स्रोत हमें जर्मन के दार्शनिक हसरेल और हैडेगर तथा डेनिश किर्कगार्ड (1813–1855) की चिन्तन धारा में दिखाई देते है। साहित्यिक क्षेत्र में सबसे पहले इसका अवतरण फ्रांस में ज्यां पाल सार्त्र ने किया। इसके पश्चात् यह सन् 1943 में एक आन्दोलन के रूप में प्रचलित हुआ। "किर्केगार्ड ने हेगल के चिन्तन की सीमाओं की आलोचना करके उसके क्रान्तिकारी तत्व को विकसित नहीं किया; यह कार्य मार्क्स और एंगेल्स ने किया। किर्केगार्ड ने वस्तुजगत् से ही मुँह मोड़ लिया, ज्ञान की वस्तुगत कसौटी से ही इन्कार किया, क्रान्ति और सामाजिक परिवर्तन जैसे कामों से उन्हें कोई सरोकार न था। हेगल ने विचारों की सत्ता सर्वोपरि मानी थी, किन्तु समाज की ठोस परिस्थितियों का विश्लेषण किया था; किर्केगार्ड भौतिकवाद की छाया से भी दूर थे, वह हेगल से भी बढ़कर 'आइडियलिस्ट' थे।"[31] इस प्रकार पाश्चात् जगत् में अस्तित्ववाद पर काफी विचार हुआ है।

सार्त्र तर्क और विवाद की भूमि पर इसे देखते है। उनके अनुसार "वह क्षण अपूर्व था। मैं खड़ा रह गया, शरीर गतिहीन, निस्पन्द, मन एक भयानक भाव–विहलता से आन्दोलन। उस विहलता के दौर में कुछ नया हो गया था। मैं समझ गया, उबकाई क्या है, मैं उस पर हावी हो गया। सच बात यह है कि जो नया हुआ, उसे मैंने अपने तईं शब्दों में व्यक्त नहीं किया। किन्तु लगता है कि अब मैं उसे सरलता से शब्दबद्ध कर सकूँगा।... कितनी देर यह दौर रहा? उस पेड़ की जड़ मैं स्वयं था। अथवा मैं उसके अस्तित्व की समग्र चेतना था।[32] हिन्दी कवियों नें इस प्रकार के विचारों को तब अपनाना शुरू किया जब वे लोग इसे छोड़ने लगे थे। अस्तित्ववादी दर्शन से सबसे ज्यादा प्रभावित रहने वाले हिन्दी कवियों में अज्ञेय थे। उनकी कविता 'हरि घास पर क्षण भर', 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वार', 'सागर–मुद्रा' आदि कविता संकलनों में अस्तित्ववादी चिन्तन गम्भीर रूप में प्रकट हुआ है। 'आँगन के पार द्वार' में कवि अज्ञेय ने आत्मदान की भावना, आत्म–उत्पीड़न और आत्मविसर्जन के घनिष्ठ सम्बन्ध को प्रस्तुत करते हुए कहा है–

"व्यथा सब की,

निबिड़तम एकान्त

मेरा... बलि मेरी"[33]

अस्तित्ववाद का मनुष्य जीवित मनुष्य है और वह मनुष्य हर क्षण में जीवित रहना चाहता है। प्रत्येक क्षण अपने को पुनःसर्जित करता है। उसके लिए प्रति 'क्षण' मूल्यवान होता है। इसीलिए इसमें 'क्षण' का महत्त्व है। लक्ष्मीकान्त वर्मा की यह अनुभूति कन्पना की अतिशयता जो अर्धविक्षेप का रूप भी ले लेती है–

"क्षण–भर बाद उठकर यह सड़क

उस रेत पर बैठेगी, तट पर खड़ी होगी,

जाने क्या सोचेगी, फिर डूब जायगी।"[34]

अज्ञेय का 'नदी का द्वीप' इसका सुन्दर उदाहरण है। यह सच्चाई है कि नई कविता लिखने वाले कवियों ने विक्षिप्त होकर कविता लिखी है। नई कतिवा में ऊब, ऊबकाई, अकेलापन, भयानक सपने, त्रास, आत्महत्या की इच्छा, भीड़ में अजनबीपन का अहसास आदि को

ईमानदारी से इजहार किया है। वह जीवन को विसंगी समझता है और जिन्दगी की निरर्थकता उसकी कविता के माध्यम से व्यक्त हुई है। राधाकान्त भारती की एक कविता का उदाहरण प्रस्तुत है :

"आह ; सारी रात

चाय रख दो कागजों पर,

या निशा सर्व भूतानां तस्यां जागर्ति संयमी,

ई ईश्वर, उ उल्लू

चल हट बेटा।"[35]

इस कविता में रोगी की दमित वासनाओं एवं ग्रन्थियों का पता चलता है।

शमशेर बहादुर सिंह अस्तित्ववादी दर्शन से काफी हद तक प्रभावित रहे है। उनका आत्मिय संघर्ष इस दर्शन से मेल खाता है। शमशेर ने खुद लिखा है कि 'मेरी कविताओं को/अगर वो उठा सकें और एक घूँट/पी सकें/अगर।' उनकी ये पंक्तियाँ अस्तित्ववाद के अधिक निकट है।

सारांशः नई कविता के ऊपर अस्तित्ववाद का प्रभाव रहा है। वह 20वीं सदी में वैज्ञानिक बुद्धिवाद नई चेतना, नई स्फुर्ति के रूप में प्रकटित हुआ है। श्यामसुन्दर मिश्र के अनुसार अनास्था, भय, संत्रास, अलगांव, घृणा, व्याकुलता आदि अस्तित्वबोध पर नई कविता में विचार हुआ है।[36] इसीलिए नई कविता के कवि मूर्त से अमूर्त की ओर जाने की चर्चा कविता में करते है।

लघुमानववाद :–

हिन्दी की नई कविता लघुमानववाद से प्रभावित रही है। पश्चिम में जो द्वितीय विश्व युद्ध के कारण मानवीय व्यक्तित्व का विघटन हुआ, उसके परिणामस्वरूप लघुमानव या खोखले मानव की अवधारणा ने जन्म लिया। इलियट ने अपनी कविता 'दि हॉलो मैन' में बंजर भूमि की व्यथा की गई है वह कुंठित और आस्थाहीन भावनाएँ ही तो है।

हिन्दी की नई कविता में एक ऐसे लघुमानव की स्थापना है, जो समाज की कुरूपताओं, कलुषताओं, रूढ़ियों, खोखली–परम्पराओं के प्रति तीव्र विरोध करके एक स्वस्थ समाजिक

जीवनदर्शन को तलाशने व उसके अनुरूप इतिहास निर्माण की चेष्ठा करता है। रामदरश मिश्र की कविता लघुमानववाद की स्थापना की ओर अग्रसर दिखाई पड़ती है –"व्यापक विध्वंस का सबसे गहरा प्रभाव मानवीय आस्था पर पड़ा। आदर्श छिन्न–भिन्न हो गये, ईश्वर की मानो मृत्यु हो गई। आदमी का आदमी पर से विश्वास जाता रहा। मानसिक संघर्ष ने उन्हीं दिनों नयी काव्य चेतना को जन्म दिया।"[37]

इस प्रकार नई कविता ने नये मानव की प्रतिष्ठा की, वह लघुमानव है। वह इस युग का यथार्थ है और अपने परिवेश के प्रति अत्यन्त सजग है। कवि अज्ञेय की कविता 'यह गीत अकेला' नूतन आशा और भावों से भरकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है और अकेले व्यक्ति को समाज में स्थान देने की बात करती है। इस प्रकार नई कविता में लघुमानववाद की प्रतिष्ठापना हुई है।

आधुनिकतावाद :–

आधुनिकतावाद एक वैश्विक प्रवृत्ति या दर्शन है। इसका जन्म कुछ विशेष परिस्थितियों में भौगोलिक स्थितियों के हिसाब से हुआ इसकी उत्पति का समय भी भिन्न–भिन्न है। भारत में इसका प्रवेश सन् 1960 के बाद होता है। एक भिन्न ऐतिहासिक परिस्थिति के जन्म लेने के कारण इसमें पश्चिमी आधुनिकतावाद की गंभीरता व तकनीकी नहीं है। यह दो महायुद्धों के बाद अस्तित्ववादी दर्शन, फाँसीवाद, पूँजीवाद के पदार्थीकरण की देन है। इसके किटाणु दुनिया में वायरस की तरह फैल कर हिन्दी तकनीकी में भी आए है। आचार्य नन्द किशोर वाजपेयी ने कहा भी है कि "आधुनिक बोध या आधुनिक चेतना के सम्बन्ध में कोई एक प्रतिमान स्थिर नहीं किया जा सकता। प्रत्येक देश का आधुनिक भावबोध उसके सामाजिक परिवेश और लक्ष्य तथा उद्देश्य के आधार पर बनाया जाता है।"[38]

यो तो प्रयोगवादी कविता आन्दोलन में ही इसके चिह्न दिखाई पड़ने लगे थे। विशेष तौर से अज्ञेय और शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं में। पर उनकी आधुनिकता उधार ली हुई थी। सन् 1964 में मूल्य आधारित नीति का ह्रास और सन् 1962 में भारत–चीन युद्ध ने इसकी कमर तोड़ दी थी। सन् 1964 में नेहरू जी की मृत्यु के बाद यह मरसा गया। लेकिन इसके बीच में कुछ नामी प्रगतिशील रचनाएँ हिन्दी में आई। मुक्तिबोध के अनुसार –

"तीव्र गति

अति दूर तारा

वह हमारा

शून्य के विस्तार नीले में चला है।

और नीचे लोग

उसको देखते हैं, नापते हैं गति

उदय हो अस्त का इतिहास।"[39]

कवि की कविता में इतिहास को मापने की बात अतिआधुनिकता को चरितार्थ करती है। भारत की विशाल सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होने के कारण आधुनिकीकरण के क्षेत्र में बहुत पीछे है। शिक्षा–दीक्षा और अन्यान्य पश्चिमी संम्पर्कों के कारण यहाँ पर आधुनिक वातावरण सृजित होने लगा हैं। आज का युवा स्वभाव से विद्रोही है। अतः वह पुरातनवादी विचारों को छोड़कर आधुनिक विचारों की और उन्मुख हो रहा है। वेशभूषा, भाषा में बदलाव तो हो रहा है लेकिन अभी तक पूरी तरह से मन नहीं बदल पाया है। यह आधुनिकोन्मुख भारतीय समाज की एक प्रमुख समस्या है।

मार्क्सवाद –

हिन्दी काव्य जगत् को मार्क्स के विचारों ने काफी दिनों तक प्रभावित करके रखा था। इस विचार की एक पृष्टभूमि भी रही है।

सन् 1857 में रूस में हुई क्रान्ति ने रूसी साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले देशों की जनता के जनमानस को एक संकेत दिया कि सुनहरे दिन आने वाले है। इस वैचारिक आंदोलन ने भारतीय जनमानस को भी आंदोलित किया जिसमें कवि, लेखक और राजनेता भी शामिल रहे हैं। यह विचारधारा जब हमारे देश में आती है तब देश के भीतर स्वाधीतना आंदोलन चल रहा था। हमारी सभी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि स्थितियाँ राजनीति से ही संचालित हो रही थी। कांग्रेसी नेताओं ने इस क्रान्ति से प्रेरणा लेकर स्वाधीनता आंदोलन को तीव्रतर किया। सन् 1927 में मद्रास–कांग्रेस में सर्वप्रथम देश के युवाओं ने खुलकर मार्क्सवादी विचार का समर्थन किया और उसे अपनाया भी। इस समय कांग्रेस का लक्ष्य पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना ही था। देश के भीतर नर्म सुधारवादी नेता भी इस कार्य में लगे हुए थे। वे भी इस विचारधारा से चौकन्ने और अभिभूत हुए। सरकार इस समाजवादी आंदोलन को पूरी ताकत से दबाने में लगी हुई थी।

हिन्दी साहित्य में मार्क्सवाद विचार का आगमन सन् 1934 वर्ष माना गया है। मार्क्सवाद ने महानदी का रूप धारण करके हिन्दी काव्य को अपने प्रभामण्डल में लपेट लिया था। छायावादी कवि पंत ने अपनी काल्पनिक दुनिया को छोड़कर प्रथम बार वास्तविक दुनिया की धरती पर पैर रखे। उन्होंने सन् 1935 में 'युगान्त' की रचनाकर के छायावादी कविता का अन्त और नवीन चेतना प्रगतिवाद की ओर कदम बढ़ाए। इसी वर्ष में निराला ने अपनी बहुत अधिक चर्चित कविता 'वह तोड़ती पत्थर' लिखकर प्रगतिशील आंदोलन का शुभारम्भ किया। मुंशीप्रेम चन्द ने 'जागरण' पत्र का प्रकाशन कर तथा उसमें लेख लिखकर साम्यवादी विचारों को फैलाया।

इस प्रकार सदियों से सामाजिक, राजनीतिक स्तर पर दुनिया के पिछड़े और शोषित लोगों को एक नई दृष्टि एवं प्रेरणा इसी विचारधारा ने सर्वप्रथम दी। हिन्दी साहित्यकारों ने इसे बढ़ चढ़ कर के अपनाया।

मार्क्स ने स्पष्ट शब्दों में कहा भी है कि 'चेतना मानव की सत्ता की प्रतिष्ठा नहीं करती, बल्कि मानव की सामाजिक सत्ता ही मानवीय चेतना का निर्माण करती है।'

नई कविता के कवि ने इस विचार को धारण किया है। नए कवियों ने सामाजिक व आर्थिक विषमता को खुलकर कविताओं में चित्रण दिया हैं। हिन्दी के तमाम कवि इस विचारधारा से प्रभावित नहीं रहे लेकिन उनकी तादात फाकी रही है। 'तार सप्तक द्वितीय' में शामिल अधिकतर कविगण इसके रचियता रहे है। मुक्तिबोध की कविताएँ तो खुलकर यथार्थ चेतना की व्यवस्था करती है। केदारनाथ अग्रवाल, अज्ञेय आदि कवि इस विचारधारा के पोषक रहे है।

नई कविता के कवियों में शामिल शमशेर बहादुर सिंह की कविताएँ भी मार्क्सवाद से प्रभावित है। उनकी प्रयोगवादी दृष्टि में भी प्रगतिशील संभाग की रही है। वे अपनी कविता में 'बुर्जुआ' भावों की जगह आधुनिकता अपनाकर साम्यवादी चेतना का प्रसार करना चाहते रहे है। उन्होंने किसानों की दुर्दशा का चित्रण करते हुए साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के सर्वनाश तथा मार्क्सवाद का समर्थ किया है। उनकी 'बैल' कविता इसका उदाहरण है।

शमशेर ने युग चेतना से प्रभावित होकर 'ओ युग आ मुझे और लिए चल, जरा सा' पंक्ति में शासन की घिनौनी व शौषक वृत्तियों पर करारा व्यंग्य किया है। उन्होंने अपनी कविताओं में किसी ना किसी रूप में मार्क्सवाद को शरण दी है।

नई कविता पर इन सब के अतिरिक्त और बहुत सारी भारतीय एवं पाश्चात्यात विचार धाराओं का प्रभाव पड़ा है। जिनमें प्रतीकवाद, क्षणवाद, सुररियलिज्म आदि प्रमुख है। विवेच्य कवि शमशेर बहादुर सिंह पाश्चात्य कविता से बहुत प्रभावित रहे थे। लगभग सभी विचाराधाराओं से उन्होंने कुछ ना कुछ ग्रहण करके उसे कविता में उतारा है। उनकी "सुररिलय कविता में मुख्य रूप से प्रेम, विद्रोह, अद्‌भूत स्वतन्त्रता, वासना का उन्नयनीकरण, 'काला मजाक' और अचेतन विचारों के विश्व की बात आती है। सुररियलों के लिए विद्रोह–मुख्य रूप से तार्किक, सामाजिक, नैतिक और बने–बनाये ढाँचों के प्रति है।"[40] वे अपने अन्तिम दिनों में इससे काफी प्रभावित रहे है।

मार्क्सवादी विचारधारा से पोशित कविताओं में उनकी प्रगतिवादी और प्रयोगवादी कविताएँ आती है। 'वाम वाम वाम दिशा' कविता उनकी पूरी तरह मार्क्सवादी विचार को आगे बढ़ाने वाली है। इस विचारधारा के अगुवा कवियों में भी उनका नाम शामिल है।

सारांशः में नये कवियों ने अनेकों विचारधाराओं, काव्यान्दोलनों से अक्श प्राप्त करके उसे हिन्दी कविताओं में उतारा है। इन्होनें भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के गुणों को आत्मसात् किया है।

1:3 नई कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

किसी भी काव्य प्रवृत्ति के स्वरूप विवेचन मे उसकी प्रवृत्तियों का विवेचन आवश्यक होता है। क्योंकि उसके स्वरूप की निर्धारक उसकी प्रवृत्तियाँ ही होती है। नई कविता भारतीय स्वाधीनता के बाद लिखी गई एक महत्त्वपूर्ण हिन्दी काव्य प्रवृत्ति है। जिसमें सही मायने में पहली बार मानव जीवन को तथा उसकी सच्चाई को, व्यक्ति की वैयक्तिक एवं सामाजिकता को नवीन शिल्प में अभिव्यक्ति किया है। डॉ॰ नगेन्द्र ने लिखा है कि "नई कविता नाम स्वतंत्रता के बाद लिखी गई उन कविताओं के लिए रूढ़ हो गया, जो अपनी वस्तु–छवि और रूप–छवि दोनों में पूर्ववर्ती प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का विकास होकर भी विशिष्ट है।"[41]

नई कविता पुरानी परम्पराओं के टकराव, टूट और विखराब, विद्रोह और अनास्था की कविता है। वस्तु स्थिति ये है कि नई कविता ने अपनी पूर्वगामी काव्य प्रवृत्तियों से कुछ बातों को ग्रहण कर नए भावबोध व नए शिल्पबोध के साथ आगे कदम बढ़ाया है। अपनी अनुभूतियाँ को अभिव्यक्त करने के लिए नई टेकनीक का सहारा लिया है। पुरातन पन्ति विचारों के लिए नए का सदा आग्रह रहा है। इसीलिए हिन्दी कविता में नई कविता नए के प्रति आग्रह ही है। दुसरी बात

ये भी है कि सभी तत्त्व स्थाई नहीं होते है, धीरे–धीरे लुप्त होते जाते है। तब नई काव्यधारा का मार्ग प्रशस्त होता है। नई कविता की कुछ महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ रही है जिनका उल्लेख निम्नानुसार है –

यथार्थ चित्रण :–

नई कविता के भाव पक्ष की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति यथार्थ का चित्रण रही है, चूँकि यह आज के युग–जीवन को वास्वविक चित्रण की अधिकारी रही है। आज के समय में मानवीय जीवन की परिस्थितियाँ, समस्याएँ पहले के बजाय कुछ अधिक बड़ गयी है। अर्थात् परिवेश बिल्कुल बदल गया है। आज की कविता में तुच्छ, सामान्य, निकृष्ट, त्याज्य और अश्लील विषयों को इसीलिए महत्त्व मिल रहा है। आज मानवीय जीवन में कठिनता, जटिलता, उलझाव महत्त्वपूर्ण अंग बन गए है। एक ओर से चाँद और सितारें अंतरिक्ष से उतरकर हमारे समीप आ रहे है तो दुसरी ओर व्यस्त जीवन आर्थिक समस्या से जुझ रहा है। जिसके कारण आदमी का आदमी से अलगाव हो रहा है अर्थात् दुरीयाँ बढ़ रही है। इसके कारण धार्मिक अनास्था, जीवन–मूल्यों का ह्रास हो रहा है। हम एक–दूसरे के बारे में नहीं सोचते है इसके कारण विद्रूपता और असंगति इतनी बढ़ गयी है कि आशा की कोई किरण नजर नहीं आती है। नई कविता जीवन के यर्थाथ को समग्र रूप में देखती है। लक्ष्मीकान्त वर्मा के अनुसार "नई कविता का भावबोध युग–सत्य के यथार्थ और कटु, शिव और अशिव, प्रकृति और विकृति से पलायन न करके उसका साक्षात्कार करता है। वह स्वर्णयुग से अधिक 'युग–सत्य' को स्वीकार करता है, स्वर्ण के बिना भी युग की कल्पना करता है। धुलि की सत्ता को स्वीकार करते हुए भी स्वर्ण की पलायनवादी मनोवृत्ति या संदेशवादी मनोग्रंथि नई कविता के भावबोध के परिवेश से पृथक् है।"[42]

नई कविता समसामयिक परिवेश से सीधी जुड़ी हुई है। इसमें यथार्थ का पूरा–पूरा चित्रण मिलता है। अज्ञेय, गजानन माधव मुक्तिबोध, कुँवर नारायण, रघुवीर सहाय और सर्वेश्वरदयाल सक्सेना आदि कवि यथार्थ से अनुप्रेरित है। आज के जीवन को डॉ॰ कुमार विमल ने 'राधा निवेदन' कविता में व्यक्त, कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

"कनु,

मुझे वही दिन बहूत अच्छा लगता था,

जब तुम मेरी मांग पर आम्र–मंजरी रखा करते थे,

फूलों के पराग से मुझे मह–मह कर देते थे।

किंतु, अब तो प्यार भी

तुम 'रुटिन' के मुताबिक करते हो।"[43]

कवि ने इस कविता में 'सौ अस्सी का गेहूँ', 'ब्राउस्टिक', 'लिपिस्टिक' जैसी वस्तुओं पर मंहगाई की मार को यथार्थ प्रतीकों के सहारे से व्यक्त किया है।

कुण्ठा :–

पिछले दो विश्वयुद्धों से कवि चेतना हतप्रभ हो उठी थी। जैसे–जैसे मानव–मूल्य विघटित हो रहे थे, वैसे–वैसे हमारे बीच असंतोष, अनास्था, वेदना और कुण्ठा के स्वर उभर रहे थे। आण्विक ऊर्जा और विभीषिका ने इन स्वरों को और अधिक प्रबल बनाया है। इस प्रकार नई कविता को युद्धोंपरान्त मानव कल्याण विरोधी मनोवृत्तियों का प्रकटीकरण भी कहा जा सकता है।

नये कवियों ने दमित और कुण्ठित भावनाओं को अभिव्यक्ति दी है। निसंदेह नये कवि कुण्ठाग्रस्त रहे है। इनकी अभिव्यक्ति से अतृप्त यौन भावना तृप्त होती है। कुण्ठा एक अनास्था मूलक प्रवृत्ति है, जो नई कविता में गहरी पैठ बनाकर सर्वत्र रूप में व्याप्त है। मनुष्य जीवन की पीड़ा निराशा जीवन के अभावों को उद्‌घटित करती है। नया कवि दर्द, निराशा और कुण्ठा में से प्रकाश प्राप्त करता है। अज्ञेय की कविता में दुःख सबकों माँजता है कि बात कही गई है। पंक्तियाँ द्रष्टव्य है –

"दूख सब को माँजता है,

और,

चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना न जाने, किन्तु–

जिसको माँजता है,

उन्हें यह सीख देता है कि,

सब को मुक्त रखें।"[44]

कुण्ठा और दर्द नई कविता की अभिव्यक्ति का एक नया संदर्भ है। कवि धर्मवीर भारती ने रोने वालों से आह्वान करते हुए कहा है–

"ओ मेजों की कोरों पर माथा रख रोने वाले–

हर एक दर्द को नए अर्थ तक जाने दो।"[45]

नई कविता के कवियों ने जीवन को सम्पूर्णता में देखा है। मनुष्य का जीवन जैसा भी है, सुख–दुःख, हार–जीत, राग–विराग, सृजन और संघर्ष आदि समस्त क्रियाएँ उसमें उभरती है। उनकी कविता में यथार्थ की अभिव्यक्ति इस आधार पर होती है। शमशेर की कविता "स्थिर है सब की बात" में जीवन के यथार्थ का एक चित्र इस प्रकार उभरता है–

"नत जीवन का भाल।

प्रेम पड़ा है ठंडा मानव–उर का।

निद्रा तम के शून्य शिविर में

अंधा पंगु बंधा है काल।"[46]

नया भावबोध :–

भावबोध की नवीनता नई कविता के कवियों ने ग्रहण की है। यो तो पश्चिमी संस्कृति के सम्पर्क में आने के कारण हिन्दी कवियों की कविताओं में नया भावबोध प्रगतिशील कविताओं के साथ ही आ जाता है लेकिन इसकी सम्पूर्णाहूति नई कविता में आकर होती है। रमेश कुंतल 'मेघ ने बोध शब्द का अर्थ 'सेन्स' के पर्याय के रूप में किया है। वे इसका सम्बन्ध विमर्श शक्ति से मानते है जो विवेक या बुद्धि से नियत है।[47]

नए कवियों ने नई परिस्थितियों की तीव्रता को तीव्रतर रूप में अनुभव किया है। जीवन वैसा ही नहीं रह गया है जैसा पहले था। नित्य नए वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण मानव जीवन में अनेकों परिवर्तनों का हिन्दी कविता पर प्रभाव पड़ा है। डॉ॰ नामवर सिंह ने लिखा है कि "अनुभूति एक रचनात्मक क्रिया है। अपने जीवन और परिस्थितियों को बदलने के क्रम में हमारी अनुभूतियाँ भी बदलती चलती है।"[48]

नया भावबोध यर्थाथ सम्पन्न है। नए कवियों ने भारतीय स्वतंत्रता के बाद मानव जीवन की विसंगतियों तथा अपने चारों तरफ के परिवेश के तथ्यों को सदैव अभिव्यक्त करने के लिए प्रयत्नशील रहे है। लक्ष्मीकांत वर्मा के शब्दों में नई कविता का भाषा–बोध युग–सत्य के यथार्थ और कटु शिव और अशिव प्रकृति और विकृति से पलायन न करके उसका साक्षात्कार करता है। वह स्वर्ण युग से अधिक युग–सत्य को स्वीकार करता है।[49]

आज का व्यक्ति या किशोर भावुक मन परिपक्ता की ओर अग्रसर हो रहा है। इसलिए उसके जीवन से बौद्धिकता को निकालना कठिन ही नहीं असंभव है। वास्तव में नई परिस्थितियों ने जिस सामाजिक चेतना को विकसित किया है। आज का विपन्न आदमी भी यह सोचने लगा है कि वह गरीब पुर्वजन्म के पापों के कारण नहीं बल्कि समाज में कहीं ना कहीं उसका शोषण हो रहा है। इसके कारण है। शमशेर की 'बात बोलेगी' कविता इसी आशय से भरी हुई है। व्यक्ति का जीवन दिन–ब–दिन चिन्तन प्रधान होता जा रहा है, क्योंकि भावनाओं से वह अपनी समस्याओं को नहीं सुलझा पाता। हृदय से अधिक उसे मस्तिष्क से काम लेना पड़ा है।

यह सच है कि, नई कविता में संवेदना को सभी कवियों ने महत्त्वपूर्ण तथ्य के रूप में स्वीकार किया है लेकिन आज कविता ने भाव और रस बोध का स्थान बौद्धिक चेतना और शिल्प की सजगता ने ले लिया है। डॉ॰ विमल प्रसाद ने लिखा है कि "नई कविता में चिंतन को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। आज का कवि भावना और कल्पना से अधिक चिन्तन का विश्वासी है। उसने कविता को सस्वर चिंतन (Thinking aloud) बना दिया है। x x x अतः चिंतन–प्रधान नई कविता जन–सभ्यता (Mass Civilization) की नहीं, विशिष्ट (Minority Culture) की वस्तु बन गई है।"[50]

नई कविता में मध्यम वर्ग की कुण्ठाओं, औद्योगिक नगरों की विसंगतियों को तीव्रता के साथ व्यक्त किया है साथ में प्रकृति और जिन्दगी का बौद्धिक मिश्रण भी यथार्थ रूप में चित्रण पाता है। लक्ष्मीकांत वर्मा की कविता के अंश द्रष्टव्य है –

"भर दो

इस त्वचा को मृतात्मा की, सूखी ठाठर में

यह घास–घास कूड़ा–कवाड़ सब कुछ भर दो

लगा दो इन नकली कौड़ियों की आँखें

कानों में सीपियाँ

पैरों में खपचियाँ

मेरी इस ह्रदयहीन, धमनीहीन स्नायुहीन काया में

सभी कुछ भर दो।"[51]

वर्जना और तनाव से मुक्ति :–

नई कविता का भावबोध वर्जनाओं से मुक्त है। इसके विपरित द्विवेदी युग वर्जनाओं का युग था। जिसमें कवि अपनी अभिव्यक्ति स्पष्ट नहीं कर पा रहा था। छायावाद में भी कविता पूर्णतः मुक्त नहीं थी। किन्तु नई कविता में आकर कवि यह मानकर चलता है सत्य कटु होता है और कटू सत्य कहना साहस का काम है। इसलिए वह निसंकोच होकर युग सत्य से टकराता है और इसकी अभिव्यक्ति करता है।

नई कविता का कवि स्पष्ट वक्ता है। वह सामाजिक वर्जनाओं को स्वीकारता है और चुनौति भी देता है। श्रीकांत वर्मा की 'सिंहद्वार' कविता में व्यंजना–मुक्त मन की अभिव्यक्ति हुई है–

"गुफा की देहरी पर बार–बार

आ–आ कर

दहाड़ता है सिंह

वाज् मारता है

एक के बाद एक

सैकड़ों झपट्टे

ले उड़ता है

कानों के फूल

नाक की नथ,

हाथ की चूड़ियाँ,

वक्ष की कंचुकी,

कमर का लहंगा,

और आँखों की शर्म!"[52]

कवि ने नाक की नथ, हाथ की चूड़िया, वक्ष की कंचुकी आदि प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक वर्जनाओं पर कराके प्रहार किये हैं।

नई कविता को मानवीय साक्षात्कार की कविता कहना उसकी अहमियत और अच्छाई को स्वीकार करना है। यह आस्था और विश्वास की कविता है जिसका सम्बन्ध मानवीय अनुभवों और स्थितियों से है। नई कविता का कवि वर्जनाओं से मुक्ति चाहता है।

वास्तव में नई कविता हमारे मध्यवर्गीय लोगों के जीवन की वास्तविक झाँकी है। इसमें कवि उन लोगों के बाह्य और आंतरिक द्वंद्वो से उत्पन्न तनाव कविता में व्यक्त करता है। आज का व्यक्ति इतना व्यस्त और तनाव भरी जिन्दगी जी रहा है कि वह उसे झेलते–झेलते निराशा और अवसाद में पहुंच गया है। जीवन की विसंगतियों से टकराकर आदमी भीतर ही भीतर टूटता जा रहा है। टी॰एस॰ इलियट ने मनुष्य के भीतर इस निराशा जनक स्थिति का मार्मिक चित्र अंकित किया है :

"A heap of broken images where the Sun beats

And the dead tree gives no shelter,

The cricket no relief.

And the dry stone no sound of water."[53]

नई कविता का कवि प्रत्येक क्षण को मुक्त भाव से जीना चाहता है वह वर्तमान तक ही सीमित है। अतः उसका क्षणवादी, निराशावादी और विनाशात्मक प्रवृत्तियों में लीन हो जाना स्वभाविक है। क्षणवाद की परिणति कई बार नए कवियों की कविताओं में भयानक स्थिति का रूप धारण कर लेती है। डॉ॰ जगदीश गुप्त की कविता आत्महत्या कैसे करते है –कविता में जिज्ञासा है–

"मानता हूँ खुदकुशी को कायरों का काम

आत्मघाती भावना से घृणा करता हूँ"[54]

नई कविता की और बहुत सारी प्रवृत्तियाँ है। जिनमें दुषित प्रवृत्तियाँ तथा उनका नग्न रूप नई कविता में चित्रित किया गया है। अन्नतकुमार 'पाषाण' की कविता में "अतृप्त आकांक्षा की वेश्या बुरी तरह खाँस रही है।"[55] श्रीमती शकुन्तला माथुर ने 'सुहाग–वेला' कविता में 'लपक–झपक' के दृश्य दर्शनीय है –'चली आई बेला सुहागिन पायल पहने' ऐसे अनेकों दृश्य है। नई कविता में भदेसपन का चित्रण खूब हुआ है। अज्ञेय, राजकिशोर की कविताओं में यह सब देखने को मिलता है। नई कविता में साधारण विषयों जैसे पंखा, चाय गार्डन, कुलर, आदि के ऊपर खूब कविता लिखी है। असम्बद्ध प्रलाप भी नए कवियों का विषय रहा है। उनके ऊपर फ्रायड़ का प्रभाव है। वे उन्मुख साहचरिय की पद्धति को स्वीकारते है। अन्त में नई कविता की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता व्यंग्य और कटूक्ति की है। अज्ञेय की पंक्तियाँ –

"साँप ! तुम सभ्य तो हुए नहीं,

नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया,

फिर कैसे सीखा डसना,

विष कहाँ पाया?"[56]

इस प्रकार नई कविता का भावपक्ष प्रबल है। नए कवियों ने अपनी अनुभूतियाँ को प्रबलतर रूप में अभिव्यक्त किया है।

नई कविता ने लोक जीवन की अनुभूति, सौन्दर्य बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया, साथ ही लोक जीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लोक जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया है; कविता के ऊपरी आयोजन नई कविता वहन नहीं कर सकती। वह अपनी अन्तर्मन, बिम्बात्मकता, नवीन प्रतीक योजना, नए विशेषणों के प्रयोग, नवीन उपमान में कविता के शिल्प की मान्यधारणाओं से अलग है। नई कविता की भाषा किसी एक पद्धति में बंधकर नहीं चलती। सशक्त अभिव्यक्ति के लिए बोलचाल की भाषा का प्रयोग प्रायः दिखाई देता है। इसमें केवल संस्कृत शब्दों को ही आधार नहीं बनाया है बल्कि अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी

स्वीकार किया है। तीसरा सप्तक की भूमिका में अज्ञेय ने खुद स्वीकार किया है कि "कोई शब्द दूसरे शब्दों का सम्पूर्ण अर्थ नहीं हो सकता; क्योंकि प्रत्येक शब्द के अपने वाच्यार्थ के अलावा अलग–अलग लक्षणाएँ और व्यंजनाएँ होती है– अलग संस्कार और ध्वनियाँ।[57]

नई कविता ने भाषा की किसी एक पद्धति को स्वीकार नहीं किया है। उसने विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दों को स्वीकार कर नए शब्द भी बनाए हैं। 'टोये', 'भभके', 'खिचा', 'सीटी', 'ठिठुरन', 'ठसकना', आदि अनेक शब्द नई कविता में देखे जाते है। इस कविता की भाषा में ताजगी और खुलापन भी दिखाई देता है। भाषा में लोक–भाषा के शब्द भी सर्वाधिक रूप में समाहित है। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है कि अज्ञेय की कविता की भाषा लोक प्रचलित नई अर्थवत्ता प्रदान करती है।[58]

नई कविता में प्रतीकों, ध्वनियों का विपुल मात्रा में प्रयोग हुआ है। इसकी विविध रचनओं में शब्द, अर्थ, तकनीकी, मुक्त, आसंग, साहर्चय, पैराणिक प्रकृति सम्बन्धि काव्य बिम्ब निर्मित हुए है।

नई कविता में छन्दों को अस्वीकृति ही मिली ऐसा नहीं है बल्कि नए प्रयोग भी मिलते है। नए कवियों में किसी भी माध्यम और शिल्प के प्रति न तो राग है न विराग। गतिशीलता के प्रभाव के लिए संगीत को त्यागकर नई कविता ध्वनि परिवर्तन की और बढ़ती गई है। नए कवियों ने लम्बी कविताएँ लिखकर कविताओं को लम्बी बनाया है। नई कविता के प्रत्येक कवि अपने शिल्प पक्ष के चित्रण में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रखता है। गणपतिचन्द्र गुप्त ने नई कविता की शैलीगत प्रवृत्तियों के बारे में स्पष्ट रूप से लिखा है कि "नये कवियों ने नूतन प्रयोगों को अपना लक्ष्य मानते हुए अपनी कविता में नये बिम्बों, नये प्रतीकों, नये उपमानों, मुक्त छंदों और नयी शब्दावली का प्रयोग किया है। परम्परागत प्रतीकों एवं उपमानों के स्थान पर उन्होंने आधुनिक युग के उपकरणों–विशेषतः वैज्ञानिक साधनों–की प्रतिष्ठा का प्रयास किया है।"[59]

इस प्रकार नई कविता में भाव एवं शैली दोनों पक्षों का नूत2नता के साथ प्रयोग हुआ है।

1:4 नई कविता 'कथ्य' और 'शिल्प'

साहित्य में किसी भी काव्य प्रवृत्ति का अपना खुद का एक शिल्प रहा होता है जो इसने अपने लम्बे संघर्ष काल में या तो अर्जित किया है या खुद उसने निर्मित किया है। नई कविता का संघर्ष काल काफी लम्बा रहा है। उसमें अपनी नजाफत के लिए अपने कथ्य और शिल्प दोनों को

विस्तार दिया है। निम्न बिन्दुओं के माध्यम से उनके कथ्य और शिल्प पर अलग से विचार किया जा रहा है –

कथ्य :–

नई कविता का कथ्य बहुत अधिक विस्तारित है। उसने अपनी प्रतिज्ञा अनुसार संसार का कोई भी विषय नहीं छोड़ा है जिसे अपनी कविता का विषय नहीं बनाया है। अर्थात् कोई भी विषय नई कविता का विषय क्षेत्र हो सकता है। नई कविता अपने विषय क्षेत्र का निर्वाह करने में काफी हद तक सफल भी रही है।

नई कविता का कथ्य संसार जीवन और जगत् के अनुभवों, परिस्थितियों और उसकी वस्तुओं से निर्मित होता है। इसका कवि किसी एक 'फ्रेम' में कथ्य को नहीं बांधता क्योंकि इसकी विषय–वस्तु में विविधता है। कवि गिरिजा कुमार माथुर ने आधुनिक हिन्दी काव्यधाराओं के बारे में नए अन्वेषण की प्यास के बारे में सत्य ही लिखा है। "नई कविता ने भी अपने कथ्य को विस्तार दिया है। उनके अनुसार विधा, शिल्प और शैली के क्षेत्र में इतना बढ़ा परिवर्तन हुआ है कि नई कविता और कुछ नहीं है, सिर्फ 'रूप–विहीनता' की एक पद्धति है, 'विधाहीनता' की विधा है।"[60] सम्प्रति, नये कवियों ने सम्पूर्ण जीवन–जगत् को और वस्तुओं को अपनी कविताओं में स्थान देकर कविता के कथ्य को विस्तार दिया है। कूछ बिन्दु विचारणिय है –

नई कविता सीधे–सीधे मानवीयता से साक्षात्कार करती है। कुछ विद्ववानों ने इसे अनास्था अन्धकार की कविता माना है लेकिन यह सच है कि इसमें जो कुछ भी है वह सीधा साक्षात्कार है। शमशेर बहादुर सिंह, रघुवीर सहाय, अशोक वाजपेयी आदि कवियों की कविताओं में यह देखा जा सकता है। कवि शम्भुनाथ सिंह ने मृत्यु और जीवन, वर्तमान के प्रति लगाव मानव की महत्त्वता, उसके क्रियाकलाप, देश–विदेश की पृष्टभूमि आदि किसी भी विषय को नहीं छोड़ा है जिसका जिक्र इनकी कविताओं में नहीं हुआ है –

"मुक्ति से संवार यह बन्दन।

तोड़ दे सीमा संकरी, बुझा बत्तियाँ लाल हरी

चुन तारे, कलियाँ कंकड़ी भी पथ पर बिखरी

उपजीव्य तेरा जीवन।"[61]

नई कविता ने लघुमानव की महत्त्वता को स्वीकार करके अपने कथ्य को व्यापक बनाया है। उसने अभिजात्य वर्ग को त्याज्य मानकर अदने व्यक्ति को स्वीकारा है। उसकी अनुभूतियों में उसके सुख–दुःख, राग–द्वेष, हर्ष–उल्लास, लोक–जीवन, के विविध रंगों को कविता का विषय बनाया है। शमशेर की एक कविता 'वह एक हिलोर उठी'।[62] लोक–जीवन के स्वरों से भरी हुई है। नई कविता के लघुमानव के प्रतिष्ठा के बारे में लक्ष्मीकांत वर्मा विचार करते हुए लिखते है कि "जब हम मनुष्य को मनुष्य रूप में ग्रहण करने की चेष्टा करेंगे तो निश्चय ही हमारी दृष्टि में सुपरमैन या अधिनायक का रूप नहीं आकर उस व्यक्ति का रूप आयेगा जो अपनी लघुता को लिए हुए अपने परिवेश में सत् गतिशीलता के साथ अपनी दृष्टि और वाणी में आज भी अपने प्रति आस्था जीवित रखे हुए है। आज इस मानव और इसकी आस्था के अन्वेषण की आवश्यकता इसलिए है कि इतिहास के सुपरमैन या जन सत्ता के अधिनायक अथवा देवदूत या मसीहा ने अपनी समस्त महत्ता को लघुमानव की बलि देकर ही अपनाया है।"[63] धर्मवीर भारती 'टुटे हुए पहिये' शीर्षक कविता में इतिहास की गति अवरूद्ध हो जाने पर टूटे पहिये का आश्रय खेजती है। इतना ही नहीं इस खोने–पाने में अपार साहस और धैर्य विद्यमान है। उन्हीं के अनुसार "अथाह शुन्य में एक वामन ने तीन पग से सम्पूर्ण धरती को नाप लिया था।"[64] नई कविता में मानव सभ्यता की बुनियादी स्थापनाओं का विकासरूप कथ्य यही है।

अधिकांश नई कविताएँ सामाजिक सरोकारों से सम्बद्ध है। अज्ञेय की 'मैं कहाँ हूँ', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की 'पोस्टर और आदमी' अनन्त कुमार पाषाण की 'बम्बई का क्लर्क' आदि कविताएँ सामाजिक दुःख दर्द की कथा कहती हैं। रघुवीर सहाय की कविता के रामलाल, मैकू, खुशीराम और बीस बरस का नरेन, लीलाधर जगूड़ी का 'बलदेव खटीक' और धूमिल का 'मोचीराम' नई कविता के सामाजिक सरोकारों के पात्र है। नई कविता के कथ्य में सामाजिक दायित्त्वों की जागरूकता को भी विषय–वस्तु बनाया है। लक्ष्मीकांत वर्मा ने नई कविता के कथ्य के सत्य के दृष्टिकोण को व्यक्त करते हुए लिखा है कि "नयी कविता की मूल भावना जहाँ इस व्यक्ति–मर्यादा को मानती है, वहीं वह व्यक्ति अनुभूति की पावनता और उसके गहन दायित्त्व को भी स्वीकार करती है।"[65] उसका यही स्वीकार भाव उसका सामाजिक सरोकार है।

नई कविता के कथ्य में प्रकृति और उसके विविध रूपों को भी शामिल किया गया है भले ही उनके उपादान छायावादी कवियों की तरह रोमांटिक नहीं रहे हो लेकिन उन्होंने उसका भरपूर आनन्द उठाया है। कवि बालकृष्ण की कविता 'अर्द्धशती;' में रात के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण इस प्रकार है–

"यह अँधेरी रात/कितना शान्त, शीतल!

कल्पना–सी मुक्त! कवि के/धर्म–सी गम्भीर! कवि के

कर्म–सी निष्काम! कवि के/मर्म–सी कोमल!

अकेली

विजन वन–पथ पर भटकती

सिंहनी–सी"[66]

नई कविता में प्रेम और वासना, वर्जनाओं, देश, धर्म, राजनीति व मानव जीवन के छोटे–छोटे विषयों को लेकर कथ्य निर्मित हुआ है। इस सब के लिए नए कवियों को अतिरिक्त शिल्प की आवश्यकता पड़ी है जो उन्होंने निर्मित किया है।

शिल्प :–

नई कविता का शिल्प अपनी पूर्ववर्ती काव्यधाराओं से पूर्णतः भिन्न है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण ये है कि नई कविता में मानव जीवन की जिस सच्चाई को पूरी ईमानदारी से अभिव्यक्ति दी है। उसके लिए उसे नूतन शिल्प गढ़ना पड़ा है। नई कविता ने लोक–जीवन की अनुभूति, सौन्दर्यबोध, प्रकृति और इसके प्रश्नों को सहज और उदार रूप में ग्रहण किया है। साथ में लोक–जीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को चुन–चुनकर के उन्हें सजीव बनाया है। नई कविता ऊपरी आवरण को ग्रहण नहीं करती, इसने भीतर से खुद को मजबूत बनाया है। इसलिए नई कविता में कईयों भाषाओं के शब्द आकर अपना रूप बदलते रहे हैं, कुछ शब्द हूबहू स्वीकार ही किए गए हैं। संस्कृतनिष्ठ शब्द– अंतस्तंद्रा, कंप्र, परिमृदित, क्रूर, नियति, प्रतिरोध, असंभाव्य, प्रतिवशी, परिधान, कालजयी, प्रकृति–पुरूष, अनथक, स्तब्ध, स्तवन, मिहिर, कवंगिनी, लावण्य, वक्ष, अभिसार, प्रिया, आलिंगन, संभावना, उत्सव, पृथ्वी, याचना, वसुधैव, धेनु, सैन्धव, कदली, पूर्वा, धरित्रि, नैवेदय, दिनान्त, अल्प, इत्यलम् आदि। अंग्रेजीनिष्ठ शब्द – फैन, ऑपरेशन, थियेटर, ड्राइंग रूम, क्लोरोफार्म, पिकनिक, पिक्चर, बोटिंग, फर्नीचर, कांशश, टैबलेट, फिलासफी, टेबल, ऑफिस, मिक्स्चर, टिकट, मार्फिया, सिगरेट, पेन्सलीन, होटल, डान्स, ड्यूटी, आयरन, पोस्टर, गाउन, माउथ, पियानो, नाइटेंगिल, लाइट हाउस, प्लास्टिक, रेडियो, टि.व्ही., आदि। उर्दूनिष्ठ शब्द – चिराग, रफ्तार, नाजुक, फर्श, बारिश, अन्दाज, दास्ताँ, सिरदर्द, खामोश, आमीन,

अमन, चमन, फिजाँ, कब्र, कफन, फरमान, गुलाम, बुर्ज, कीमती, उजाला, सलाखा, संगीन, वर्दिया, बारूद, आदि। नई कविता के शब्दों के बारे में कवि अज्ञेय ने लिखा है कि "नया कवि शब्द के साधारण अर्थ से बड़ा अर्थ उसमें भरना चाहता है। वह भाषा की क्रमशः संकुचित होती हुई केंचुल को फाड़कर इसमें नया, अधिक व्यापक और सारगर्भित अर्थ भरना चाहता है।"[67]

नई कविता ने खुलकर प्रतीकों, बिम्बों, उपमानों आदि को अपने हिसाब से तैयार किया है और कविता में उन्हें रखा है। इसमें छंदों की स्थिति मुक्तावस्था की रही है। शमशेर जैसे कवि ने लयात्मकता उत्पन्न करने की कोशिश अवश्य की है। लेकिन उनकी लयात्मकता केवल अर्थों में मिलेगी। कैलाश वाजपेयी ने लिखा है कि "काव्य के किसी भी अंग के प्रति कवि सर्वाधिक विद्रोही रहा है तो वह है छन्द, इस युग के अधिकांश कवियों ने पूर्व प्रचलित छन्द विधान को एकदम अस्वीकार कर मूक्त छंद में रचना की है, यद्यपि यह सत्य है कि इन रचनाओं का आधार लय है किन्तु सम्पूर्ण रचनाओं में एक ही पूर्व को लयाधार की आवृत्ति हुई हो ऐसी रचनायें बहुत थोड़ी हैं।"[68]

इस प्रकार नई कविता शब्द सम्पदा की दृष्टि से काफी सम्पन्न रही है। प्रतिकात्मकता में नए कवियों ने अर्जुन, युधिष्ठर, भीम, कुंती, राम, सीता जैसे नाम शब्दों को भी नई प्रयुक्ति दी हैं। इसमें बिम्बों को नवीन प्रतीमानों मे स्थापित किया है। इनके हजारों उदाहरण नई कविता में मिलते है। शब्दों के माध्यम से चित्र उपस्थित करना भी नई कविता मे विद्यमान है। अतः नई कविता का शिल्प पक्ष बेजोड़ है।

1:5 नई कविता पर पूर्ववर्ती काव्य का प्रभाव

प्रत्येक युग नई परिस्थितियाँ, नई मान्यताएँ और नए विचार लेकर आता है। उसके अपने आदर्श, सिद्धान्त और मापदण्ड होते है। ये सब नए साहित्य के जन्मदाता भी होते है। साहित्य में प्रतिक्रिया और परिवर्तन दोनों स्वभाविक है। लम्बे समय तक कोई भी काव्य प्रवृत्ति नहीं चलती उसमें परिवर्तन होता है। नई कविता भी प्रयोगवादी कविता के भीतर हो रही सुगबुगाहट की परिणति है। परन्तु हिन्दी काव्य साहित्य में एक नई कविता ही ऐसी कविता है जिसने अपनी पूर्वगामी प्रयोगवाद से ही नहीं अपितु उससे भी पूर्व की काव्यधाराओं से बहुत कुछ प्राप्त किया है। अर्थात् उनकी अच्छाईयों कों ग्रहण कर नए कवियों ने कविता में स्थान दिया है। इसलिए यह कविता व्यापक कथ्य और शिल्प की अधिकारी भी रही है। इससे पूर्व आधुनिक हिन्दी कविता में

छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी धाराएँ है जिनका नई कविता पर विशेष प्रभाव पड़ा है। विवरण उल्लेखनीय है –

छायावादी कविता :–

छायावादी कविता में प्रकृति को लेकर बहुत सारी कविताएँ लिखी है नई कविता में भी प्रकृति परख रचनाएँ मिलती है। छायावाद में रोमांटिकता भरपूर मात्रा में मौजूद है। नए कवियों ने इसका भी भरपूर आनन्द उठाया है। इस सबके पीछे कारण यह है कि छायावाद के कवियों ने विशेष तौर से सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (कुकुरमुत्ता, वह तोड़ती पत्थर) जैसी कविताएँ प्रगतिशील चेतना से भरपूर है। पंत ने भी 'रूपाभ' में कुछ ऐसे संकेत दिए है। चूँकि नई कविता के कवि प्रगतिशील कवि भी रहे है। अतः उनकी कविताओं में प्रकृति और सौन्दर्य का अशेष वर्णन हुआ है किन्तु छायावादी कविता में जो प्रतीक और बिम्ब काम में लिए जाते है वे यहाँ आकर बदल जाते है। विजयदेव नारायण साही ने लिखा है कि "छायावादी कलाकृति मूलतः एक विस्फोट करता हुआ कला–रूप है–जैसे केंद्रीय अर्थ फूटकर चारों ओर क्रमशः विलीन होता हुआ बिखर रहा हो। तीसरे दशक की कलाकृति उसे एक लहर की तरह निर्मित करती है, जिस प्रयास में महादेवी से लेकर बच्चन तक के गीत निर्मित होते है। नई कविता उस तंरग के रूप को एक 'स्ट्रक्चर' में बदल देती है। जैसे हीरे का क्रिस्टल हो।"[69] अतः यह स्पष्ट है कि छायावादी और नई कविता दोनों में प्रकृति चित्रण समान रूप से हुआ है।

छायावादी कविता में देश–प्रेम के भाव मुखरित हुए है। यद्यपि जन जीवन की पीड़ा स्पष्ट रूप में दिखाई नहीं देती लेकिन उसका स्पंदन कविता में मौजूद है। नई कविता ने इसे विस्तार दिया है। अज्ञेय ने कहा है कि "मैं मानता हूँ कि भावना–प्रधान कविता छोटी ही हो सकती है, नहीं तो अपने भावों का 'पैराफेज' होने लगता है। जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति–सी छाई वह एक आँसू बनकर आए यहाँ तक तो ठीक है; किन्तु जब वह बरसात की झड़ी–सी बरसने लगती है तब तक शायद वही पीड़ा नहीं रहती, और घनीभूत तो भला रह ही कैसे सकती है।"[70]

छायावादी कविता के और भी अनेक विषय है जिन्होंने नई कविता में विस्तार पाया है। इस कविता में निजी अनुभूतियाँ अधिक है जबकी नई कविता में समस्त मानवीय जीवन की अनुभूतियाँ मिलती है।

प्रगतिशील कविता :–

आधुनिक हिन्दी कविता में नई चेतना का असल स्वरूप प्रगतिशील कविता से ही बनना आरंभ होता है। नई कविता में आकर उसकी परिणति होती है। अतः नई कविता कोई पृथक् काव्य प्रवृत्ति नहीं है अपितु इस नई चेतना का ही विकासरूप है। हिन्दी में प्रगतिशील लेखन के अगुवा प्रेमचन्द रहे है। उन्होंने सन् 1936 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' के सम्मेलन में साहित्यकारों को आहवान भी किया कि "हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा अतरेगा जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो– जो सब में गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि अधिक सोना मृत्यु का लक्षण है।"[71] उनके विचार ही नई कविता के आधार स्तम्भ बने है। प्रगतिशील कविता तो प्रेमचन्द के इन विचारों की अगुवा रही है।

प्रगतिवादी कविता मूलतः हिन्दी कविता में पहली बार यथार्थ चित्रण की कविता है। इसमें सामाजिक व राजनीतिक चेतना को मुखरता मिली है। डॉ॰ शिवकुमार ने भी यही कहा है कि "प्रगतिवाद आधुनिक हिन्दी साहित्य की उस गौरवशाली सामाजिक परम्परा का एक क्रम–विकास है... युगीन गविविधियों को देखते हुए जितनी स्वभाविक कोई बात हो सकती थी। प्रगतिवाद का आविर्भाव उतना ही स्वाभाविक था।"[72]

नई कविता ने प्रगतिशील कविता से ही सामाजिकता को ग्रहण किया है। नई कविता में आकर यह प्रवृत्ति अधिक मुखरित हो गई है। इसका कारण उस समय का परिवेश है। लेकिन यह सत्य है कि नई कविता में जितनी सामाजिकता मिलती है वह प्रगतिशील कविता की ही देन है।

प्रगतिशील कविता मार्क्सवादी आन्दोलन से भी प्रभावित रही है। इस कविता ने मार्क्सवाद का काफी गुण–गान किया है। नई कविता के कवियों पर इसका प्रभाव लक्षित है। कवि केदारनाथ अग्रवाल, सुमन, रामविलास शर्मा आदि ने इस तरह का साहित्य लिखा है। और बहुत सारे कवियों ने मार्क्सवाद पर कविता लिखी है। डॉ॰ इन्द्रनाथ मदान के अनुसार "उत्तर छायावादी काल में हिन्दी काव्य दो विभिन्न काव्य धाराओं में प्रवाहित होने लगा था – एक सामाजिक यथार्थ और दुसरी वैयक्तिक यथार्थ को आत्मसात किये हुए थी।"[73] नई कविता ने प्रगतिवाद की इसी सामाजिकता को विस्तार दिया है।

प्रयोगवाद :–

प्रयोगवाद ही नई कविता की वास्तविक भाव भूमि है। प्रयोगवाद का अगला चरण नई कविता है। सन् 1943 में प्रयोगवाद का उदय हुआ, इसके रचेता कवियों को अज्ञेय ने 'नई राहों का अन्वेषी' कहा है। इस कविता में नए भावबोध और नए जीवन सत्यों को अभिव्यक्ति मिलती है। इस धारा ने ही नई कविता को जन्म दिया है। प्रयोगवादी कविता से नई कविता ने वैयक्तिक सोच को ग्रहण किया है जिसमे उसने एक व्यक्ति के निर्माण की इच्छा की है। जो अपरिचित न होकर अपना ही है। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है कि "नयी कविता का सम्बन्ध शुरू से ही जीवन की सामान्य–सी दीखने वाली घटनाओं और स्थितियों से रहा है। प्रगतिवाद जहाँ घोषित रूप से किसान–मजदूर का पक्षधर रहा है, नयी कविता वहाँ चुपचाप मामूली आदमी की आम–स्थिति का चित्रण करती है।"[74]

नई कविता में प्रयोगों की जो होड–सी मिलती है। भाषा, छन्द, प्रतीक, बिम्ब अर्थात् शिल्प के सभी उपकरणों में जो नवीनता है उसके पीछे प्रयोगवादी कविता का ही हाथ रहा है। वस्तु–स्थिति ये है कि प्रयोगवादी कविता करने वाले कवि ही नई कविता के कवि रहे हैं। युग विशेष की माँग के अनुरूप इन कवियों ने ही कविता को एक नया धरातल दिया हैं। डॉ॰ लक्ष्मीनारायण 'चातक' ने लिखा भी है कि "तार सप्तक के प्रकाशन के साथ ही प्रयोगवादी कवियों और आलोचकों में कविता के नाम, विषय, शिल्प, दिशा और परिणति को लेकर आरोप–प्रत्यारोप प्रारम्भ हो गए थे और प्रयोगवाद को स्वस्थ तथा जनाकाँक्षाओं के योग्य बनाने की छटपटाहट महसूस होने लगी थी।"[75] लक्ष्मीकांत वर्मा ने 'नए पत्ते' के अंक 2, 3 में वैयक्तिक यथार्थ और सामाजिक यथार्थ की कविताओं को छापकर के कविता को नई दृष्टि दी जो आगे चलकर नई कविता नाम से ही प्रचलित हुई।

अतः नई कविता के ऊपर प्रयोगवादी कविता का गहरा प्रभाव रहा है। अर्थात् प्रयोगवादी कविता का विकास रूप ही नई कविता है।

नई कविता की विकास यात्रा ने मानव जीवन को व्यापक रूप में रेखांकित किया है। नई कविता की अवधारणा का आभिर्वाभ भी भारतीय स्वाधीनता से पुर्व देश के भीतर भारी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक उथल–पुथल की देन रही है। देशवासी स्वाधीनता के लिए संर्घषरत स्थिति में अनेकों दुःख व यन्त्रणाओं को झेल रहे थे। नई कविता इन सभी का संश्लेषित विकास है। नई कविता अचानक रूप से नहीं प्रकटी है वह एक काव्यान्दोलन के रूप में विकसित

हुई है। छायावादी कविता से उसने प्रकृति और सौन्दर्य को ग्रहण किया है। तो प्रगतिवाद से उसने सामाजिक चेतना को लिया है। प्रयोगवाद से वैयक्तिक यथार्थ को ग्रहण करते हुए अपने भीतर वैयक्तिक व सामाजिक दोनों स्थितियों को लेकर आगे बढ़ी है।

नई कविता की इस विकास यात्रा में पश्चिम काव्यान्दोलनों का भी गहरा प्रभाव मिलता है। नई कविता अस्तित्ववाद, प्रतीकवाद, मार्क्सवाद, सुररियलिज्म आदि कई विचार धाराओं से प्रभावित रही है। इनके प्रभाव से ही नये कवि कुछ समय तक तो इन आन्दोलनों में डूबे रहे है लेकिन शमशेर बहादुर सिंह जैसे समर्थ कवि इनसे बचकर भी निकले है।

नई कविता आधुनिक हिन्दी काव्य की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति रही है। इसमें पहली बार मानव जीवन को वास्तविक वाणी दी है। नई कविता में जीवन का कोई भी विषय उपेक्षणिय नहीं है। इसमें मानव जीवन को अनुभूत चित्रण मिला है। जीवन के लघुतम क्षणों, बेहद सामान्य घटनाओं का भी अंकन इसमें हुआ है। नई कविता का सारा दृष्टिकोण आधुनिक है उसमें किसी एक मतवाद का आग्रह नहीं है। उसमें शहर और गाँव तथा विशिष्ट और सामान्य सभी का चित्रण पूरी जीवन्तता के साथ हुआ है। नई कविता में प्रेम को खुले रूप में चित्रण मिला है। आज के व्यक्ति के मानसिक तनाव को भी इसमें मापा गया है। कुल मिलाकर नई कविता में ऐसा कोई विषय नहीं छोड़ा जो उसके चित्रण में नहीं आया है।

नयी कविता युगीन संदर्भों में आधुनिक संवेदन के साथ मानवीय परिवेश के सम्पूर्ण वैविध्य को नए शिल्प में अभिव्यक्त करने वाली काव्य धारा है। नई कविता ने लोक–जीवन की अनुभूति, सौन्दर्य–बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदारता पर ग्रहण किया है। साथ ही लोक जीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को चुन–चुनकर के अधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया है। कविता के ऊपरी आयोजन को नई कविता ग्रहण नहीं करती वह शिल्प के विविध क्षेत्रों में नई धारणाओं को अपनाती है। भाषा पद्धति के रूप में बँधकर नहीं अपितु मुक्त बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें अधिक हुआ है। केवल संस्कृत शब्दों को ही आधार नहीं बनाया बल्कि विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी स्वीकार किया है। नए कवियों में शिल्प के प्रति न तो राग है न विराग। गतिशीलता के प्रभाव के लिए संगीतलय को त्यागकर नई कविता ध्वनि–परिवर्तन की ओर बढ़ी है। एक वर्णन विषय या भाव के सहारे सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करते हुए लम्बी कविता की पुरानी शैली को उसने त्यागा है। यद्यपि नए कवियों ने लम्बी कविताएँ लिखी है लेकिन वे प्रबन्ध काव्य के समानान्तर नहीं है।

नई कविता से साठोत्तरी काव्य की विविध धाराओं ने प्रेरणा ग्रहण कर नई चेतना को विकसित किया है। अकविता, समकालीन कविता, विचार कविता आदि ऐसी महत्त्वपूर्ण धाराएँ रही है। जिनके रचियताओं ने नई कविता के यथार्थ, सामाजिक स्वरूप को ग्रहण करने के साथ–साथ नई कविता के शिल्प को भी अपनाया है। इस प्रकार नई कविता उत्तरोत्तर विकसित होती गयी है। आधुनिक हिन्दी में नई कविता अपना एक निजी विशिष्ट स्थान भी रखती है। नए कवियों ने लिए कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों में नवीनता पसन्द है।

नई कविता के कुछ प्रमुख कवियों के नाम इस प्रकार है – अज्ञेय(1911–1987), शमशेर बहादुर सिंह (1911–1993), भवानी प्रसाद मिश्र (1914–1958), मुक्तिबोध (1917–1964), प्रभाकर माचवे (1917–1991), भारतभूषण अग्रवाल (1919–1975), गिरिजा कुमार माथुर (1919–1994), नरेश मेहता (1922–2000), लक्ष्मीकांत वर्मा (1922–2002), रघुवीर सहाय (1922–1992), रामदरश मिश्र (1924), विजयदेव नारायण साही (1924–1982), डॉ॰ जगदीश गुप्त (1926–2001), धर्मवीर भारती (1926–1997), सर्वेश्वर दयाल सक्सेना (1927–1983), कुँवर नारायण (1927), श्रीकांत वर्मा (1931–1986), केदारनाथ सिंह (1934), धूमिल (1936–1975) आदि है। शमशेर बहादुर सिंह नई कविता लिखने वाले कवियों में प्रमुख कवि है। इस शोध कार्य के अगले अध्याय में शमशेर बहादुर सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश ड़ाला जाएंगा।

निष्कर्ष :–

नई कविता की अवधारणा एवं पूर्वपीठिका अध्याय के विवेचन में स्पष्ट है कि नई कविता का उदय स्वाधीन भारत से पूर्व लगभग 15–20 वर्षों की परिवर्तित होती रही परिस्थितियों के कारण हुआ है। इस कविता की धारा का असली प्रादुर्भाव उत्तरछायावादी कविता के बाद विकसित नवीन चेतना जिसे प्रगतिशील चेतना के नाम से जाना जाता है मैं विकास पाकर होता हैं। इसकी पृष्टभूमि के रूप में भी प्रगतिवादी कविता और प्रयोगवादी कविता के परिवेश को ही माना गया है। इसने विशेष रूप से प्रयोगवादी कविता से संस्कार प्राप्त करके अपना स्वरूप पाया है। इसके विकास में विविध काव्यान्दोलनों की सक्रिय भूमिका भी रही है।

नई कविता का नामकरण विवादों के घेरों में रहा है। 'नया' शब्द नई कविता के लिए एक विशेषण के रूप में प्रयुक्ति प्राप्त है। विद्ववानों ने भी प्रयोगवादी कविता के भीतर पनप रही एक अलग काव्य प्रवृत्ति के अंकुरण और विकास होकर स्वरूप में आने वाली कविता को नई कविता माना है। इस कविता का काल सन् 1947 के आस–पास का रहा है लेकिन यह नया शब्द नई

कविता के लिए प्रचलन में मान्य कर लिया गया। वास्तव में प्रयोगवादी कविता के अवसान के साथ ही जो कविता नए कथ्य और नए शिल्प में सामने आई उसे नई कविता कहा गया है। कविता की इस धारा में मानव जीवन के छोटे–छोटे विषयों को भी कविता ने अपनाया है तथा उसके अनुरूप ही शिल्प संरचना भी की है।

नई कविता की प्रवृत्तियों में उसकी महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति यथार्थ चित्रण की रही है। उसने आधुनिक भाव्यबोध से युक्त मानवीय जीवन में व्याप्त कुण्ठा, भय, संत्रास, क्षणवादी अनुभूति, वैज्ञानिक सोच आदि का चित्रण किया है। नई कविता में प्रकृति और प्रेम को भी अपनाया है। नए कवियों ने नई कविता की भावभूमि के लिए नये शिल्प का भी आविष्कार किया है। नई कविता लिखने वाले कवियों में अज्ञेय, मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश महता, सर्वेश्वर आदि प्रमुख है। नए कवियों की इसी श्रृंखला में शमशेर बहादुर सिंह का नाम भी शामिल है। उनकी कविताएँ भी नई कविता की सभी विशेषताओं को अपनाते हुए आगे बढ़ने वाली रही है। नई कविता की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति वैयक्तिक एवं सामाजिकता की रही है। शमशेर की कविताएँ वैयक्तिक स्तर पर उनकी खुद की निजी अनुभूतियों को चित्रण देने वाली कविताएँ है तथा सामाजिकता का बोध कराने वाली कविताओं में उनके द्वारा लिखी गई उन कविताओं को शामिल किया जा सकता है जो दलितों, पीड़ितों, मध्य वर्ग आदि के ऊपर लिखी गई है। उनकी ये कविताएँ मार्क्सवाद से पोषित रही है।

शमशेर बहादुर सिंह ने नई कविता के विकास में भरपूर योगदान दिया है। उनकी कविताएँ नई कविता के भावबोध को वहन करने वाली रही है। नई कविता के ऊपर भारतीय एवं पाश्चात् काव्य प्रवृत्तियों का भी प्रभाव रहा है। नई कविता उत्तरोत्तर विकसित होती गई है। शमशेर की कविता में भी आस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, प्रतीकवाद, बिम्बवाद आदि का प्रभाव पड़ा है।

संदर्भ संकेत

1. उद्धृत, सं. हेतुभारद्वाज, आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास, पृ. 148
2. माथुर, गिरिजाकुमार, 'गिरिजाकुमार माथुर : (कवि की दृष्टि से)', सं. जगदीश गुप्त, विजयदेव नारायण साही, "नयी कविता", पृ. 47
3. गुप्त, जगदीश, 'नये कवि का व्यक्तित्व और अज्ञेय जी' (संम्पादकीय), सं. जगदीश गुप्त, देवनारायण साही, "नयी कविता", पृ. 8
4. उद्धृत, डॉ॰ उमाकान्त गुप्त, 'नयी कविता के प्रबन्ध काव्य शिल्प और जीवन दर्शन', पृ. 31
5. उद्धृत, डॉ॰ उमाकान्त गुप्त, 'नयी कविता के प्रबन्ध काव्य शिल्प और जीवन दर्शन', पृ. 29
6. उद्धृत, वहीं, पृ. 29
7. उद्धृत, डॉ॰ चातक, प्रो. राजकूमार शर्मा, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृ. 332
8. उद्धृत, वहीं, पृ. 332
9. उद्धृत, डॉ॰ उमाकान्त गुप्त, 'नयी कविता के प्रबन्ध काव्य शिल्प और जीवन दर्शन', पृ. 29,30
10. उद्धृत, वहीं पृ. 28
11. उद्धृत, डॉ॰ उमाकान्त गुप्त, 'नयी कविता के प्रबन्ध काव्य शिल्प और जीवन दर्शन', पृ. 30
12. माथुर, गिरिजा कुमार, 'नई कविता सीमाएँ और सम्भावनाएँ', पृ. 67
13. वहीं, पृ. 56,57
14. उद्धृत, डॉ॰ शशि सहगल, 'नयी कविता में मूल्यबोध', पृ. 55
15. मुक्तिबोध, 'नये साहित्य का सौन्दर्य बोध', पृ. 40
16. उद्धृत, डॉ॰ शशि सहगल, 'नयी कविता में मूल्यबोध', पृ. 55
17. अज्ञेय, 'बावरा अहेरी', पृ. 39
18. उद्धृत, डॉ॰ दीपिका विजयवर्गीय, 'डॉ॰ धर्मवीर भारती का काव्य : संवेदना के धरातल एवं शिल्प', पृ. 28
19. भारती, डॉ॰ धर्मवीर 'आधुनिक साहित्य बोध', पृ. 7
20. उद्धृत, डॉ॰ दीपिका विजयवर्गीय, 'डॉ॰ धर्मवीर भारती का काव्य : संवेदना के धरातल एवं शिल्प', पृ. 28
21. उद्धृत, डॉ॰ उषा कुमारी, 'नयी कविता की चिन्तन भूमि', पृ. 13

22. उद्धृत, दिनमान अंक 39, डॉ॰ उषा कुमारी, 'नयी कविता की चिन्तन भूमि', पृ. 18
23. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, 'नयी कविता और अस्तित्ववाद', पृ. 17
24. सिंह, डॉ॰ नामवर, 'छायावाद', पृ.71
25. उद्धृत, डॉ॰ कमलेश कमल, 'आधुनिक मानव और नयी कविता', पृ. 18
26. उद्धृत, डॉ॰ कमलेश कमल, 'आधुनिक मानव और नयी कविता', पृ. 18
27. उद्धृत, डॉ॰ कमलेश कमल, 'आधुनिक मानव और नयी कविता', पृ. 20
28. उद्धृत, डॉ॰ यश गुलाही, 'वृहद साहित्यिक निबंध', पृ. 491
29. उद्धृत, डॉ॰ यश गुलाही, 'वृहद साहित्यिक निबंध', पृ. 492,493
30. मुक्तिबोध, 'नये साहित्यिक का सौन्दर्य शास्त्र', पृ. 61,62
31. शर्मा, डॉ॰ रामविलास, 'नयी कविता और अस्तित्ववाद', पृ. 92,93
32. वहीं, पृ. 101
33. उद्धृत, वहीं पृ. 76
34. उद्धृत, वहीं, पृ. 107
35. उद्धृत, डॉ॰ गणपतिचन्द्र गुप्त, 'साहित्यिक निबंध', पृ. 524,525
36. मिश्र, श्याम कुमार, 'अस्त्विवाद और द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य', पृ. 48
37. मिश्र, रामदरश, 'नयी कविता के सर्जनात्मक संदर्भ', पृ. 136
38. वाजपेयी, आचार्य नन्ददुलारे, 'नई कविता', पृ. 43
39. उद्धृत, डॉ॰ लक्ष्मीनारायण चातक, 'आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहात', पृ. 140
40. अरगड़े, डॉ॰ रंजना, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 233
41. सिंह, डॉ॰ नगेन्द्र, 'हिन्दी साहित्यिक का इतिहास', पृ. 629
42. उद्धृत, डॉ॰ रामवचन राय, 'नयी कविता : उद्‌भव और विकास', पृ. 206
43. उद्धृत, वहीं, पृ. 206
44. उद्धृत, डॉ॰ लक्ष्मीनारायण चातक, 'आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहात', पृ. 158
45. वहीं, 158
46. सिंह, शमशेर, 'उदिता', पृ. 40
47. मेघ, रमेश कुंतल, 'आधुनिकता और आधुनिकरण', पृ. 245
48. सिंह, नामवर, 'इतिहास और आलोचना', पृ. 57,58

49. वर्मा, लक्ष्मीकांत, 'नयी कविता के प्रतिमान', पृ. 57,58
50. उद्धृत, रामवचन राय, 'नई कविता : उद्‌भव और विकास', पृ. 208
51. उद्धृत, डॉ॰ लक्ष्मीनारायण चातक, 'आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहात', पृ. 157,158
52. उद्धृत, रामवचन राय, 'नई कविता : उद्‌भव और विकास', पृ. 207
53. उद्धृत, वहीं, पृ. 210
54. उद्धृत, सं. हेतुभारद्वाज, आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास, पृ. 152
55. उद्धृत, डॉ॰ गणपतिचन्द्र गुप्त, 'साहित्यिक निबंध', पृ. 527
56. उद्धृत, वहीं, पृ. 531
57. उद्धृत, रामवचन राय, 'नई कविता : उद्‌भव और विकास', पृ. 215
58. उद्धृत, वहीं, पृ. 218
59. गुप्त, गणपतिचन्द्र, 'प्रयोगवाद और नई कविता', "साहित्यिक निबंध", पृ. 532
60. माथुर, गिरिजाकुमार, (गिरिजाकुमार माथुर, कवि की दृष्टि से), सं., डॉ॰ जगदीश गुप्त, विजयदेव नारायण साही, "नई कविता" पृ. 39
61. उद्धृत, डॉ॰ लक्ष्मीनारायण चातक, 'आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहात', पृ. 156
62. वर्मा, धंनजय, 'शमशेर जी', सापेक्ष, "शमशेर की सौन्दर्य दृष्टि", पृ. 88
63. वर्मा, लक्ष्मीकांत, 'नई कविता के प्रतिमान', पृ. 161
64. भारती, धर्मवीर, 'सात गीत', पृ. 93
65. वर्मा, लक्ष्मीकांत, 'कवि–सत्य : एक दृष्टिकोण', डॉ॰ जगदीश गुप्त, "नई कविता", पृ. 132
66. उद्धृत, डॉ॰ हरदयाल, 'आधुनिक हिन्दी कविता', पृ. 171
67. उद्धृत, बलभीमराग गोरे, 'हिंन्दी के बहुचर्चित काव्य : नये संदर्भ', पृ. 23
68. उद्धृत, वहीं, पृ. 22
69. सिंह, नामवर, कविता के नए प्रतिमान', पृ. 140
70. वहीं, पृ. 140
71. उद्धृत, राजनाथ शर्मा, 'साहित्यिक निबंध', पृ. 467
72. उद्धृत, शशि शर्मा, 'प्रगतिशील कविता में लोकतत्त्व', पृ. 17
73. उद्धृत, डॉ॰ कमलेश कमल, 'आधुनिक मानव और नयी कविता', पृ. 28
74. उद्धृत, देवराज, 'नयी कविता', पृ. 70
75. उद्धृत, डॉ॰ लक्ष्मीनारायण चातक, 'आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहात', पृ. 147

द्वितीय अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में पारस्परिक सम्बन्ध होता है। रचनाकार का व्यक्तित्व उसके कृतित्व में परिलक्षित होता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके सम्पूर्ण जीवन का घोल होता है। उस मिश्रण में उसके सम्पूर्ण जीवन की घटनाएँ तथा उसका समस्त परिवेश निहित होता है। अर्थात् उसके संस्कार, शिक्षा संस्कृति, रूचियाँ, उस पर पड़ने वाले विविध प्रभाव आदि भी उसके व्यक्तित्व में शामिल होते हैं। कोई भी कलाकार पहले एक व्यक्ति ही होता है। उसकी कला में उसके व्यक्तित्व का दृष्टिकोण निरूपित होता है। अतः किसी भी कलाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विवेचन करने से पूर्व उसके सम्पूर्ण जीवन को भी देख लेना अतिआवश्यक है। विवेच्य कवि शमशेर बहादुर सिंह के उपर भी यह बात लागू होती है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक कवि, कथाकार, आलोचक, समीक्षक आदि रूपों में सदैव उपस्थित रहे हैं। उन्होनें सन् 1932 से सन् 1992 तक निरन्तर साहित्य साधना की है। वे अपने जीवन की परिस्थितियों की भट्टी में तपकर खरा सोना बने है। अतः उनके कृतित्व विवेचन से पूर्व उनके व्यक्तित्व तथा उससे भी पूर्व उनके सम्पूर्ण जीवन को भी संक्षिप्त रूप में देख लेना जरूरी है। डॉ॰ वीरेन्द्र सिंह के अनुसार शमशेर जीवन संघर्ष और गतिशील संवेदना के कवि रहे हैं, उनके अचेतन में बालकाल के कुछ प्रसंग और स्मृतिचित्र इतने गहरे बैठ गए हैं कि वे बार–बार उनकी कविताओं में 'बिम्ब' के रूप में उभर कर आते है। उनकी कविता में 'मां' का बिम्ब एक 'अर्थवत्ता' प्रदान करता है। शमशेर ने अपने काव्य में गतिशील परंपरा को स्थान देकर वर्तमान सत्य को भी स्वीकार किया है।[1]

कवि शमशेर की सृजनात्मकता बेहद 'स्टायलिश' रूप की है। उनको एक 'दुरूह' कवि के रूप में भी माना जाता है परंतु उनकी कविताओं को पढ़ने वाला पाठक जैसे–जैसे उनमें भीतर जाता है वे उनके लिए सहज संवेद सी होती जाती हैं। अपने पाठकों को शमशेर अपनी कविताओं में अपनापन महसूस कराते है। उनकी कविताएँ अन्य कवि कलाकारों से अलग आस्वाद पाठकों को कराती है। कवि के व्यक्तित्व के विविध पक्षों की चर्चा करने से पूर्व उनके एक व्यक्ति से रचनाकार बनने तक के सफर को भी संक्षिप्त रूप में देख लेना अतिआवश्यक है।

2:1 शमशेर का जीवन एवं व्यक्तित्व

किसी भी व्यक्ति या रचनाकार के जन्म और परिवार के बारे में तथ्यात्मक आँकड़े उपलब्ध होने पर उनके जीवन को सहजता के साथ जाना जा सकता है। कवि शमशेर के बारे में नरेन्द्र वशिष्ट ने लिखा है कि शमशेर का जन्म 3 जनवरी, 1911 को देहरादून के एक जाट परिवार में हुआ है। उनके पिता का नाम बाबू तारीफ सिंह तथा माता उनकी श्रीमती प्रभूदेई हैं। शमशेर के पिता कलक्टरी में चीफ रीडर थे। उन्होंने अपनी सरकारी सेवाएँ गोंडा, देहरादून, बुलन्दशहर में दी हैं।[2] वे स्वभाव के क्रोधी व्यक्ति थे, परन्तु नियमों के पक्के थे। रामायण का रोज ऊँचे स्वर में पाठ करते थे, जिसे शमशेर भी कभी–कभी दोहराते थे। उनके पिता साहित्य प्रेमी रहे है। उन्होंने अपने जीवन में उर्दू भाषा में एक उपन्यास भी लिखा है। शमशेर के पिता को 'चन्द्रकान्ता सन्तति' आदि प्रसिद्ध रचनाएँ मुँह जवानी याद थी। वे उन्हें शमशेर को भी सुनाया करते थे। शमशेर को 'चन्द्रकान्ता सन्तति' सुनना बहुत अधिक रोचक व आकर्षक लगता था।

शमशेर की माता देहरादून के एक प्रसिद्ध परिवार से थी। रोज भागवत का पाठ करने का उनका नियम था। उनका मिजाज पूरा शहरी था। लेकिन वे कोमल तथा सात्विक विचारों वाली महिला थी। शमशेर के व्यक्तित्व में उनकी माता के जैसी कोमल पवित्रता और सात्विकता की झलक आजीवन प्रस्फुटित रही थी। शमशेर ने अपना रूप भी बिल्कुल अपनी मां की तरह का पाया था। अपनी मां से शमशेर को एक ओर गुण प्राप्त हुआ वह चित्रकारी का था। इस बात का उल्लेख नरेन्द्र वशिष्ट ने किया है। उनके अनुसार प्रभूदेई धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर दीवारों के ऊपर व घर के आँगन में तरह–तरह की आकृत्तियाँ बनाया करती थी, जिनमें देवी–देवताओं के तथा प्रकृति आदि के चित्र हुआ करते थे। शमशेर अपनी मां को चित्रकारी करते हुए बड़े चाव से देखा करते थे। उनका चित्रकारी से पहला साक्षात्कार इसी रूप में हुआ है।[3]

शमशेर के दूरस्थ परिवार के बारे में अर्थात् वंश परम्परा के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है। बस इतनी ही जानकारी मिलती है कि उनका पैतृक स्थान मुजफ्फरनगर जिले का **'एलम'** गाँव था। वे इस स्थान पर कभी भी नहीं गए है। उनके पिता श्री तारीफ सिंह कभी–कभी वहाँ जाया करते थे। शमशेर के मित्र मलयज ने लिखा भी है कि शमशेर का पैतृक स्थान मुजफ्फरनगर का 'एलम' गाँव है। इससे लगा हुआ केराना गाँव नरेन्द्र वशिष्ट का है।[4] यह स्थान उन दिनों संयुक्त उत्तर प्रदेश में आता था, वर्तमान में यह उत्तराखण्ड राज्य में आता है।

शमशेर के बचपन का नाम कुलदीप सिंह था, जो बदलकर शमशेर बहादुर सिंह कर दिया गया। यह काम उनके मामा श्री दर्शन सिंह एवं श्री लक्ष्मीचन्द के द्वारा किया गया था। उनके छोटे भाई का नाम तेजबहादुर सिंह था। तेजबहादुर सिंह के ही अनुसार हम दोनों भाईयों के नाम कुलदीप सिंह और रामप्रसाद रखे गए थे, जो बाद में मामा लोगों के द्वारा बदल दिए गए। भैया का नाम कुलदीप सिंह था। भैया मुझसे दो वर्ष बड़े है।[5]

शमशेर की आरम्भिक शिक्षा देहरादून में हुई है। उनको पहला अक्षर ज्ञान अपने घर पर उर्दू भाषा में मिला है। अपनी स्कूली शिक्षा में उन्होंने नवीं तक की शिक्षा देहरादून में रह कर ही प्राप्त की। पिता के स्थानांतरण हो जाने के कारण हाई स्कूल सन् 1928 में गोंडा से उनके साथ रहकर पास किया है। इंटर की परीक्षा इन्होंने देहरादून से सन् 1931 में पास की है। वे इंटर में एक बार फेल भी हुए है। इसका कारण भी रहा है– उनका विवाह सन् 1929 में देहरादून की रहने वाली धर्मदेवी के साथ सम्पन्न हुआ। उनकों परीक्षा की तैयारी के लिए समय नहीं मिला। शमशेर ने इंटर तक आते–आते टेनिसन, इकबाल, निराला, शौली और रवीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य का अच्छी तरह से अध्ययन कर लिया था।

उच्च शिक्षा में शमशेर ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन् 1933 में स्नातक की उपाधि ली है। सन् 1934 में उन्होंने बी.ए. ऑनर्स (अंग्रेजी) में करने के लिए पुनः विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। लेकिन वे कक्षा में कम उपस्थिति होने के कारण परीक्षा में नहीं बैठ पाए। नरेन्द्र वशिष्ट ने इस घटना के बारे में लिखा है कि नरेन्द्र शर्मा के पास परीक्षा फीस भरने के लिए पैसे नहीं थे। अतः शमशेर ने अपने जमा किए हुए पैसे नरेन्द्र को दे दिए और खुद परीक्षा में नहीं बैठ पाए।[6] परीक्षा नहीं दे पाने के कारण उनका मन पढ़ाई से विरक्त हो गया और वे बनारस में अपना साहित्यिक जीवन आरम्भ करने के लिए चले गए। किन्तु वहाँ पर भी उनका मन नहीं लगा और वे चौथे दिन ही इलाहाबाद वापस लौट आए, यहाँ पर भी वे नहीं टिक सके और देहरादून चले गए। शमशेर को बचपन से ही चित्रकारी से मोह था। वे अपनी इस इच्छा को पूरा करने के लिए देहरादून से दिल्ली चले गए और पहले दिल्ली में रहकर बाद में देहरादून से उन्होंने सन् 1935–36 में उकील–बन्धुओं की पाठशाला से विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया। उनके इस शौक के बारे में बच्चन ने लिखा है कि "चित्रकला के लिए भी उनके मन में ललक थी, और चोरी–छिपे कैनवस, कूची, कलर इकट्ठा कर उन्होंने चित्र बनाने के अभ्यास भी किए...।"[6] शमशेर देहरादून में कम्पाउण्डरी कर रहे थे उसी समय उनकी भेंट श्री बच्चन से होती है। उनकी प्रेरणा व सहयोग से ही शमशेर ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पुनः प्रवेश लेकर सन् 1938 में एम.ए. प्रीवियस

(अंग्रेजी) में पास किया। फाइनल की परीक्षा वे किन्हीं कारणों से नहीं दे पाए। उनके मित्र मलयज ने लिखा भी है कि उन दिनों शमशेर का खर्चा पंत के द्वारा दिलाए गए अनुवाद कार्य से चलता था और उनकी फीस व पढ़ाई के अन्य खर्चे बच्चन कर दिया करते थे।[7]

शमशेर की साहित्य में रूचि आरम्भ से ही रही है। उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा के दौरान ही हिन्दु छात्रावास में रहते हुए अपने मित्र नरेन्द्र शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, वीरेश्वर के साथ काव्य गोष्ठीयाँ की तथा इन्हीं दिनों में पंतजी के सभापतित्व में उनकी पहली बार कविता पुरस्कृत भी हुई। उन्होंने इसी समय पंत, महादेवी वर्मा, निराला, हालीफानी, इकबाल, रोली, रोजेटी आदि साहित्यकारों के साहित्य का काफी आस्वाद किया है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व के रहस्योद्घाटन के लिए व्यक्ति की परिस्थितियों, रूचियों, उसके ऊपर पड़ने वाले प्रभावों को भी जानना अतिआवश्यक है। शमशेर की शादी धर्मदेवी के साथ सम्पन्न हुई थी लेकिन ईश्वर को उनका यह प्रणय जीवन रास नहीं आया। उनकी पत्नी दो–तीन वर्षों के बाद ही टी.बी. रोग से ग्रसित हो गई। शमशेर ने अपनी पत्नी का कईयों चिकित्सालयों मे ले जाकर इलाज कराया। उनकी सेवा सुश्रीया भी की, लेकिन उनकी पत्नी ने मात्र छः वर्ष का साथ निभाकर उनका साथ छोड़ दिया। अर्थात् उनकी मृत्यु सन् 1935 में हो गई। उन्होनें 'रुगण पत्नी के प्रति', 'एक पीली शाम', 'आओ' जैसी कविताएँ अपनी पत्नी के प्रति आत्मीय लगाव को व्यक्त करने वाली इसी समय लिखी हैं।

शमशेर को अपने जीवन में विवाह करने का एक और अवसर मिला था परन्तु उन्होंने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। तेजबहादुर सिंह के अनुसार भाभी की मृत्यु के कुछ महिनों बाद पिताजी के सामने चौ. उमराव सिंह ने एक प्रस्ताव रखा था कि वे अपनी पुत्री का विवाह भैया के साथ करते और वे भैया को डिप्टी कलेक्टर बना देते क्योंकि उन दिनों उमराव सिंह के पास उ.प्र. में डिप्टी कलेक्टरों की भर्ती के अधिकार थे। भैया ने इस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया।[8] शमशेर का जीवन तो साहित्य के लिए बना था। वे बिना घर बसाए निरन्तर अपनी साहित्य साधना में रत रहे है।

शमशेर के व्यक्तित्व की बुनाबट में परिस्थितियों का विशेष हाथ रहा है। उनके जीवन में एक से बढ़कर एक परिस्थितियाँ आती और जाती रही हैं लेकिन वे बिना रूके, बिना थके निरन्तर आगे बढ़ते रहे हैं। बचपन में ही उनकी मां की मृत्यु सन् 1920 में हो गई थी। वे अपनी माता को बहुत स्नेह करते थे। अपनी माता की मृत्यु के दुःख में वे कुछ अशांत और एकाकी से हो गए थे।

इस बात का उल्लेख उनके छोटे भाई तेजबहादुर सिंह ने किया है कि मां की मृत्यु के बाद भैया का अधिकतर समय घर पर ही या लेखन कार्य में व्यतीत होता था। इसी समय भैया के भीतर कवित्वपन का भाव जाग्रत हुआ है।[9] शमशेर ने अपने निबन्ध 'मैं, मेरा समय और रचना प्रक्रिया' में एक विशेष बात लिखी है कि मेरी मां मेरी पिता की तीसरी पत्नी है। इससे पूर्व उनकी दो पत्नीयों की मृत्यु गाँव में ही हो चुकी थी। उनके पिता की मृत्यु भी सन् 1939 में हो गई। उनके सिर के उपर से एक मात्र सहारा भी ईश्वर ने हटा लिया। उनकी अनेकों कविताओं में उनकी मां के संघर्षमयी जीवन की प्रस्तुति मिलती है। शमशेर ने अपने जीवन में आए तूफान का चित्रण करते हुए लिखा है कि "कहाँ को, तृण–सा मुझको जान/उड़ा ले जाएगा दिन एक/किसी मरू का पवमान महान?"[10] कवि हरिवंश राय बच्चन के अनुसार भी "शमशेर के जीवन में जो आँधी आई थी। उसने उनका भी नीड़ ध्वस्त कर दिया था। उनकी पत्नी का भी देहावसान टी.बी. से बड़ी करुण परिस्थितियों में हुआ था। पढ़ाई छूट गई, प्रयाग के प्रिय संगी–साथी छूट गए, घर की बदली परिस्थितियों ने वहां टिकने न दिया, चित्रकार बनने की सनक ने दिल्ली की खाक छनवाई, जीवन अस्तव्यस्त हो गया, भविष्य अन्धकारपूर्ण; और शमशेर ने यह सारी विपदा एकाकी, मौन झेली।"[11] किन्तु वे कभी झुके नहीं उनसे संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते रहे है।

व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में उसकी रूचियाँ का भी महत्त्वपूर्ण हाथ रहा होता है। शमशेर की एक नहीं अनेकों रूचियाँ रही है। उनको पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था। वे बचपन में अपने घर पर आने वाली लगभग सभी पत्रिकाओं को बड़ी रूचि के साथ पढ़ा करते थे। पुस्तकें पढ़ने के उनके शौक के बारे में तेजबहादुर सिंह ने लिखा है कि भैया को पुस्तके पढ़ने का बहुत शौक था। उनको कुछ किताबें डी.ए.बी. कॉलेज की लाईब्रेरी से पढ़ने को मिल जाया करती थी, या फिर जो भी जेब खर्चा उनको मिलता था, उससे कबाड़ियों के यहाँ से अंग्रेजी कवियों की पुरानी पुस्तकें सस्ते दाम पर ले आते और उन्हे घर पर लाकर पढ़ा करते थे।[12] वे अपनी पढ़ाई की कक्षा में भी प्रथम या द्वितीय स्थान प्राप्त करते रहे है। खुद शमशेर ने स्वीकारा है कि "मुझे बचपन से ही कविता की चाट पड़ गई थी, मुझे एजरा पाउण्ड व शेक्सपीयर की कविता अच्छी लगती थी।"[13] यही कारण है कि उनकों बचपन से ही लिखने पढ़ने का शौक लग गया था।

शमशेर को प्रकृति और उससे जुड़ी हुई तमाम चीजों से बहुत स्नेह था। उन्हे वृक्षों और पत्तों से–फूलों से, पशु और पक्षीयों से, सभी से भरपूर स्नेह था। सूरज प्रकाश ने अपने एक संस्मरण में लिखा है कि "जब वे बल्लभ विद्यानगर में थे। पिछले दिनों तो उन्हें एक दिन यह पता चला कि असली अशोक का इकलौता दुर्लभ वृक्ष वहाँ किसी विद्यालय के प्रांगण में लगा

हुआ है तो सर्दी के मौसम में अपनी खराब सेहत की परवाह किये बिना वे उस वृक्ष को देखने के लिए गये।"[14] शमशेर का जन्म, ससुराल, ननिहाल सभी देहरादून जैसे प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्थान से ताल्लूकात रखते हैं। उनके बचपन का अधिकतर समय भी देहरादून में ही व्यतीत हुआ है। अतः उनको प्रकृति से बहुत लगाव रहा है। जब वे अपने मामाओं के साथ जंगल में जाया करते थे तब उन्होंने प्रकृति का भरपूर लूफ्त उठाया है। जिसका चित्रण कवि ने 'धारीदार जाँघिया पीला' कविता में किया है।

शमशेर के व्यक्तित्व निर्माण में परोक्ष या अपरोक्ष रूप से पारिवारिक संस्कार भी प्ररेणा स्रोत बने हैं। कवि ने स्वयं लिखा है कि "बचपन में भारतेन्दु का 'दशरथ–विलाप' पढ़ा था। 'एक ऋषि की कहानी, राजा दशरथ की जबानी' (श्रवण कुमार की कहानी) ने भी बहुत प्रभावित किया था।"[15] शमशेर की कविताओं में परम्परा के आधुनिक बोध को डॉ॰ वीरेन्द्र सिंह ने अपनी पुस्तक 'बिम्बों से झाँकता कवि शमशेर' में भी इसकी पुष्टि की है।

शमशेर सामान्य नहीं विशिष्ट कवि हैं, और इसी प्रकार उनके प्रेरणा स्रोत व प्रभाव भी सामान्य व विशिष्ट है। उनकी रचनाओं को पढ़ते समय यह स्वतः ही अनुभव हो जाता है कि उनकी रचनात्मकता पर पश्चिम के अनेक काव्यान्दोलनों का प्रभाव पडा हैं। ये सभी काव्यान्दोलन उनके व्यक्तित्व सृजन में महत्त्वपूर्ण रहे हैं। शमशेर को प्रतीकवादी काव्यान्दोलन ने काफी प्रभावित किया है। चुँकि यह आन्दोलन मूलतः रहस्यवादी था, जो शमशेर की सौन्दर्य दृष्टि को बहुत भाया है।

मार्क्सवाद ने भी उनकों कुछ समय के लिए प्रभावित किया है। परन्तु मार्क्सवाद उनके कवि व्यक्तित्व का अन्तिम और शाश्वत सत्य नहीं बन पाया। शमशेर के लिए मार्क्सवाद का सीधा सादा मतलब अपनी चारों तरफ की जिन्दगी में दिलचस्पी लेना है, उसी को ठीक–ठाक यानी वैज्ञानिक आधार पर समझना और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर स्पष्ट करके, पुष्ट करके अपनी कला भावना को जगाना रहा है।[16]

शमशेर का व्यक्तित्व सुररियलिज्म काव्यान्दोलन से भी प्रभावित रहा है। सुररियलिज्म के लिए हिन्दी ने अतियथार्थवाद संज्ञा प्रचलित है। यह वास्तविकता की भूमि में रहकर अचेतन में जाने की बात करता है। शमशेर की दृष्टि भी चेतन से अचेतन की ओर की रही है। इसलिए उनकों इस काव्यान्दोलन ने काफी प्रभावित किया है। इन तीनों काव्यान्दोलनों के शमशेर के ऊपर पड़ने वाले समन्वित प्रभाव के बारे में डॉ॰ रंजनाअरगड़े ने लिखा भी है कि प्रतीकवाद का प्रभाव

उन पर पड़ा है। मार्क्सवाद के पक्ष में वक्तव्य देने पर भी, उसे अपनी रचनात्मकता का कभी अंग नहीं बनाया। और अपनी संवेदना को न चाहते हुए भी वे सुररियल संस्पर्श से अछुता नहीं रख सके। लेकिन यह मानना पड़ेगा कि इन तीन काव्यान्दोलनों ने उनकी कविता को समृद्ध किया हैं।[17]

शमशेर के उपर बिम्बवाद और अस्तित्ववाद का भी प्रभाव पड़ा है। उन्होंने अस्तित्ववाद से काफी कुछ प्राप्त किया है। उनकी कविताएँ चेतन से अचेतन की ओर जब भी जाती सी लगती है तब उनमें अस्तित्ववाद ही हावी होता हैं।

व्यक्ति विशेष में शमशेर को कई लोगों ने प्रभावित किया है। शमशेर ने कई लोगों के प्रभाव को स्वीकार भी किया है। पंत, निराला और अंग्रेजी कवि एजरा पाउण्ड के बारे में तो खुद शमशेर ने कईयों स्थानों पर लिखा भी है। निराला के प्रति शमशेर के समर्पित भाव को विष्णु चन्द्र शर्मा ने बताया है कि "निराला से वह अक्सर एकान्त में बात करते समय, अपनी एकनिष्ठ तपस्या और संघर्ष, अपनी अटूट सच्चाई, अपने पूरे जीवन पर बहस करते रहे हैं।"[18] शमशेर ने 'स्वर्गीया रज़िया सज्जाद ज़हीर', 'बाबा हमारे, नागार्जुन बाबा', 'मित्रवर डॉ॰ प्रभाकर माचवे से' जैसी अनेकों कविताएँ लिखी जो उनके उपर व्यक्ति विशेष के प्रभावों को प्रदर्शित करती हैं। कवि शमशेर ने खुद स्वीकारा है कि उन दिनों बहुत से प्रभाव मेरे भावुक व्यक्तित्व को ढाल रहे थे। मगर मैं अपने कवि को मात्र उन प्रभावों का पुंज नहीं मानता। प्रभाव सब कवियों और कलाकारों पर पड़ते हैं। और अब भी कुछ कवियों के गहरे प्रभाव मुझ पर पड़ रहे हैं। मेरी अपनी एकान्त, और शायद गहरी, अनुभूतियाँ और संघर्ष की यातनाएँ भी आखिर कुछ अपनी जमीन कविता में रखेंगी ही।[19]

शमशेर ने मृत्यु को कईयों बार निकट से अपने जीवन में देखा है और उसे अनुभव किया है, परन्तु चाहने पर भी जब उस पर विजय प्राप्त न कर सके तो उससे होड़ लेनी शुरू कर दी लेकिन विधाता को उनका यह संघर्ष रास नहीं आया और वे काल से टकराते, होड़ लेते हुए, उससे अपराजित भी स्वीकार करते हुए लौकिक से अलौकिक में 12 मई, 1993 को हो गए। वे अपने जीवन के अन्तिम दिनों में डॉ॰ रंजना अरगड़े के साथ अहमदाबाद गुजरात में रहते थे। इस बारे में लक्ष्मीधर मालवीय ने लिखा है कि उन्होंने उज्जैन में अपना कार्यकाल पुरा करने के बाद सुश्री रंजनाअरगड़े के साथ रहते हुए 12 मई, 1993 को अहमदाबाद में अपना शरीर त्याग किया है।[20] शमशेर की मृत्यु पर साहित्य जगत में स्तब्धता छा गई। उनकी मृत्यु का समाचार कुछ देर से आकाशवाणी से प्रसारित किया गया, क्योंकि उस समय राज्यसभा की कार्यवाही चल रही थी। उनके ऊपर बहुत सारे संस्मरण लिखे गए हैं, जिनमें रामविलास शर्मा का 'बच्चों सा वह कोमल',

नामवर सिंह ने 'पतझर का अटका हुआ पत्ता' पंक्ति को माध्यम बनाकर – 'शमशेर : वह आखिरी मुलाकात' शीर्षक से संस्मरण लिखा। ये दोनों संस्मरण काफी चर्चित रहे है। अस्तु, शमशेर के व्यक्तित्व निर्माण में एक नहीं अनेकों प्रभावों की प्रतिन्छिाया रही है।

2:2 व्यक्तित्व : बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व

'व्यक्तित्व' शब्द को समझना और परिभाषित किया जाना बहुत कठिन है। इसे व्यक्ति के गुणों तथा प्रवृत्तियों का संगठन कहा जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक जीवन में कार्य करता है, तथा यही व्यक्तित्व है। एन॰एल॰मन के अनुसार– एक व्यक्ति के द्वारा किए कार्य–व्यवहारों के रूपों तथा उसकी रूचियों, सामर्थ्यों, योग्यताओं तथा अभिवृत्तियों के सबसे अधिक लाक्षणिक संकलन को व्यक्तित्व की संज्ञा दी जा सकती हैं।[21] व्यक्ति की मानसिक संज्ञा को भी इसमें शामिल किया जाता हैं। शमशेर के लिए डॉ॰ वीरेन्द्र सिंह ने लिखा है कि– "शमशेर के बारे में अक्सर यह कहा जाता है कि वे मनःस्थितियों (मूड) के कवि हैं। यह सही है कि कवि की सृजन–प्रक्रिया का एक प्रमुख प्रेरणा–स्त्रोत 'मूड' हैं,..."[22]

स्पष्ट है कि कवि के जो काव्यादर्श होते है वे उसके काव्य में मिलते हैं। उसके निर्माण का मूल उसके व्यक्तित्व में होगा। अस्तु, काव्य का केन्द्र बिन्दु कवि का व्यक्तित्व ही होता हैं। उसके अच्छे या बुरे होने पर ही उसकी सफलता और असफलता निर्भर करती हैं। व्यक्तित्व का बैशिष्टय काव्य में दिखाई देता हैं। अतः कवि के व्यक्तित्व का इस दृष्टि से भी अध्ययन होना अतिआवश्यक हैं।

व्यक्तित्व को दो भागो में विभक्त किया जाता है–(क)बाह्य और (ख)आन्तरिक।

बाह्य पक्ष में व्यक्ति के बाहरी आवरण यथाः शारीरिक संगठन, वेशभूषा, रहन–सहन आदि को रखा जाता है तथा आन्तरिक पक्ष में उसके गुणों और मनोवृत्तियों का समावेश होता हैं।

2.2.1 बाह्य व्यक्तित्व :–

शमशेर की बाहरी आकृति का चित्रफलक प्रस्तुत करते हुए प्रसिद्ध हिन्दी कवि हरिवंश राय बच्चन ने लिखा है कि "उन दिनों के शमशेर की मुझे याद है– मझोला कद, इकहरा शरीर, लभछर चेहरा, साँवला रंग, बडी–बडी कटीली आँखे, लम्बी–पतली नाक, बत्तीसी समस्वच्छ, जो हँसने पर खुलकर चमक उठती थी। प्रायः ढीले पाजामें पर शेरवानी पहनते थे– ऊपर के तीन–चार बटन खुले। बाल उनके काले, सीधे थे जिन्हें वे कायदे से काढ़ते थे–"[23]

उनके एक साथी श्रीराम वर्मा ने शमशेर की बाह्य झाँकी कुछ इस प्रकार से प्रस्तुत की है– "मझोला कद। साँवला बदन। पतले किसमिशी होंठ। हल्के से बिखरे बाल – ज्यादा काले, थोड़े से पके। चेहरे पर भाव उड़ते–पहराते। आँखे छोटी चौंधियाई, लेकिन उनमें भी चिडियाँ उडती–सी। वे उस समय मोटी कमानी का मोटा चश्मा साफ कर रहे थे। साफ दाढ़ी भी कण्टकित–सी जान पड़ती थी। होंठ भी रोमांचित से, फरफराते से।"[24]

वस्तुतः, शमशेर शारीरिक रूप से न तो बहुत अधिक पतले थे और न बहुत अधिक मोटे उनका इकहरा शरीर था। देखने में वे बहुत सुन्दर लगते थे। उनका रूप उनकी माता को गया था। उनका माथा बहुत चौड़ा था, जो उनके उज्ज्वल भविष्य का पथ प्रदर्शक था। उनकी स्नेहमयी आँखे हर किसी को अपना बना लेने का सामर्थ्य रखने वाली थी।

शमशेर साफ–सफाई बहुत पसन्द करते थे। वे खुद साफ–सुथरे कपड़े पहना करते थे और दूसरे लोगों से भी यह अपेक्षा रखते थे। घर हो या बाहर सभी जगह उनको साफ–सफाई बहुत पसन्द थी। वे अपनी रसोई की हर चीज को करीने से रखा करते थे। उनका रहने वाला कमरा भी बिल्कुल साफ–सथुरा होता था। वे खाने–पीने में मीठा बहुत पसंद करते थे। इस बारे में उनकी नातिन भाषा सिंह ने लिखा है कि "नानाजी को मीठा बेहद पसन्द था। मिठाइयाँ हो और खूब हों, आम हों और खूब हों, गन्ने हों और खूब हों... ये सब ऐसी चीजें थी। जिन्हें देखकर नानाजी की बाँछे खिल जाती थी।"[25] उनकी एक ओर आदत थी, कि वे या तो अकेले कभी खाना नहीं खाते थे। उनके साथ कोई ना कोई होता था। लेकिन जब कभी वे अकेले होते थे तो, वे अक्सर दो–तीन दिन की बासी रोटियों को उबालकर चटनी के साथ लगाकर खा लेते थे।

अस्तु, शमशेर का बाहरी चित्रफलक देखने में बहुत ही आकर्षक था।

(ख) आन्तरिक व्यक्तित्व :–

शमशेर का आन्तरिक व्यक्तित्व बहुत अधिक विस्तार लिए हुए है। उसे किसी एक परिधि में समेटा नहीं जा सकता है। उनके आंतरिक व्यक्तित्व का विश्लेषण प्रस्तुत है –

शमशेर बहादुर सिंह अपने जीवन में बहुत व्यवहारिक रहे है। उनका साहित्य और कला के प्रति जितना उदार रवैया रहा है उतने ही उदार वे अपनी जिन्दगी में रहे है। वे अपनी जिन्दगी मे सभी के प्रति समभाव रखने वाले व्यक्ति थे। उन्हें इस की कोई चिंता नहीं रहती थी कि दूसरे लोग उनके बारे में क्या सोचते है। वे समान रूप से सभी के प्रति सहिष्णु रहा करते

थे। उनकी उदारता के बारे मे विष्णु चंद शर्मा ने लिखा है कि "अचानक नवागढ़ से दो–तीन आदमी आ जाते हैं। शमशेर उन धार्मिक यात्रियों को संगम ले जाते हैं। मंदिरों, बाजार और अनगिनत स्थानों पर उन्हें घुमातें हैं। बारह–एक तक वे सबके लिए रोटी और दाल बना रहे हैं। किसी परिचित के घर किसी की बीमारी का उन्हें पता लगता है, और वे अस्पताल जाते हैं..."[26] वे अपने व्यवहार में दूसरों से घण्टों वार्तालाप करते रहते थे। दूसरों की बाते अच्छी न लगने पर भी वे उन्हें कईयों घण्टों सुना करते थे। उनका सोचना था कि मेरे आचरण से किसी को किसी प्रकार की ठेस ना पहुँचे।

शमशेर का कोई स्थाई घर नहीं था। उनके भाई तेजबहादुर सिंह के घर परिवार था जो नवागढ़ में रहता था। शमशेर ने अपने व्यवहार से एक नहीं अनेकों घर बनाएं हैं, उनमें निवास किया और उनसे रिश्ते भी निभाए है। प्रेमलता वर्मा, शोभा सिंह, भाषा सिंह, मलयज आदि के परिवारों के साथ उनके कुछ ऐसे ही रिश्ते रहे हैं। सच में उनके ये रिश्ते जितने भी दिन चले है वह सब शमशेर के व्यवहार से ही निभे है।

शमशेर की मूल प्रवृत्ति संकोचीपन की रही है। उनके इस संकोचीपन के बारे में तेजबहादुर सिंह ने लिखा है कि भैया का संकोची स्वभाव बचपन से ही रहा हैं। वे अपने वास्तविक व्यक्तित्व को दुनिया से छुपाकर रखना और प्रमुख काम लेखन, रचना उसी को संसार को देना मानते थे।[27] उनके संकोची स्वभाव के पीछे कईयों कारण भी रहे है। उन्होंने अपने जीवन में एक से बढ़कर एक परिस्थितियों का सामना किया है। वे अपने जीवन की परिस्थितियों में इतने उलझे रहे है कि अपने वास्तविक रूप को दूसरों के सामने प्रकट नहीं कर पाए। उनके इस स्वभाव के पीछे एक दूसरा कारण भी रहा है। वे प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद की तरह उर्दू लेखन से हिन्दी लेखन में आए थे। हिन्दी लेखकों में वे खुद को असहज महसूस करते थे। उनके सामने वे अपनी बात खुलकर रख नहीं पाते थे। वे अक्सर उनसे दूरी बनाकर रखा करते थे। इब्बार रब्बी के अनुसार "शमशेर की शिक्षा–दीक्षा उर्दू में हुई प्रेमचन्द की तरह उर्दू से ही वह हिन्दी में आये।"[28]

शमशेर एक निश्छलहृदयधारी व्यक्ति भी रहे है। वे हर प्रकार की स्थिति में अपना सब कुछ दूसरों के ऊपर निसंकोच भाव से समर्पित करते रहे है। उन्होंने अपने जीवन में मां, पिता और भाई तीनों की भूमिका एक साथ निभाई है। उनके इस समर्पित भाव के पीछे उनका यह रूप देखने को मिलता है। उनके निश्छलपन के बारे में मलयज ने लिखा है कि "जाट–स्वभाव का सीधा–साधा निश्छलपन उनमें था।"[29]

शमशेर के कार्य समर्पण को देखकर कवि मुक्तिबोध और प्रयाग शुक्ल ने उसकी प्रसन्नसा में लिखा भी है। वे किसी भी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझते थे। उनके लिए हर काम बड़ा होता था। कार्य के प्रति समर्पित भाव के बारे में प्रयाग शुक्ल ने लिखा है कि "शमशेर किसी रचना के अध्ययन या लेखन के समय एक–एक शब्द, एक–एक अक्षर पर गौर करते थे। इसके लिये उनको घंटो लग जाते। पर मैंने कभी कोई उकताहट उनके चेहरे पर नहीं देखी।"[30] मुक्तिबोध ने उनको हिन्दी का अद्धितीय कवि माना है साहित्य के प्रति उनके समर्पण के लिए उन्होंने कहा है कि "शमशेर एक समर्पित कवि हैं। उन्होंने अपने जीवन का सर्वोत्तम भाग और प्रदीर्घ काव्य क्षण, काव्यसाधना में बिताये हैं –निःस्वार्थ भाव से, यशः प्रार्थी न होकर। शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का एक प्रभावशाली भवन अपने हाथों तैयार किया। उस भवन में जाने से डर लगता हैं–"[31] शमशेर कोई प्रतिष्ठित कवि या लेखक नहीं रहे है। साहित्य के प्रति उनके इसी समर्पण भाव ने उनकों उच्च पद प्रतिष्ठित किया है।

शमशेर का भावुकता से भी गहरा रिश्ता रहा है। उनका यह रिश्ता उनकी कविताओं में जिनमें– किसानों की दयनीय स्थिति, मध्य वर्ग की सोचनीय स्थिति के अनेकानेक रूप देखने को मिलते हैं। 'बैल' कविता में सामंती व्यवस्था के शोषणवादी रैवये को देखकर वे बहुत भावुक और दुःखी हो जाते है। उनके भावुक एवं उदार रैवये को देखकर रेखा जैन ने लिखा है कि उनको देखकर मुझे लगा वास्तव में वे ऐसे कवि है जिन्हे कीचड़ की दुर्गन्ध उद्वेषित नहीं करती क्योंकि वह कमल को जन्म देती हैं।[32]

शमशेर के भीतर आज के व्यक्ति से अलग हटकर एक ऐसी प्रवृत्ति रही है जो उन्हें अन्य लोगों से अलग करती है। आज का व्यक्ति सरकारी नौकरी के पीछे मारा–मारा फिरता है। शमशेर को अपने जीवन में सरकारी नौकरी के कईयों अवसर प्राप्त हुए है परन्तु वे सरकारी नौकरी के विरोधी व्यक्ति रहे है। उन्होंने अपने जीवन में कभी सरकारी नौकरी की भी नहीं। इसका मूल कारण भी रहा है जिसका उल्लेख तेजबहादुर सिंह ने किया है। उनके अनुसार भैया को कचहरी के अशांत वातावरण से बहुत चिड़ थी, अतः वे सरकारी नौकरी के खिलाफ थे। उन्होंने अपने जीवन में की भी नहीं है। शमशेर लेखन कार्य से जुड़े हुए व्यक्ति रहे है। साहित्य जगत् में अक्सर लेखकगण प्रकाशकों के यहाँ रॉयल्टी आदि के लिए मारे–मारे फिरा करते है परन्तु शमशेर ने अपनी साहित्य साधना में यह आचरण कभी नहीं अपनाया। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ शंखधर, नामवर सिंह, रंजना अरगड़े आदि लोगों के द्वारा प्रकाशित करवाई जाती

रही हैं। वे कविता के प्रकाशन को आवश्यक भी नहीं मानते है। उनकी दृष्टि में कविता से कवि को संतुष्ट भाव का मिल जाना ही पर्याप्त है।

शमशेर के भीतर एक नहीं अनेकों गुण थे। उनके भीतर कोमलता, सरलता, और नम्रता जन्मजात थी। नैतिक दृष्टि से वे श्रेष्ठ थे, उनके भीतर जिजीविषा, जीवटता भी मौजूद थी। वे कबीर की तरह बहुत सीधे थे। उनके इस सीधेपन का बहुत सारे लोगों ने फायदा भी उठाया है। इस कारण से यहाँ हमें कबीर याद आते हैं–

कबीरा आज ठगाइए और न ठगिए कोय

आप ठगे सुख उपजै, और ठगे दुःख होय।

शमशेर का व्यक्तित्व विशेष हैं। उनके यहाँ स्त्री, पुरूष में कोई भेद नहीं हैं वे नारी स्वाधीनता के हमेशा पक्षधर रहे हैं। उनके आदर्श पर जब भी कोई चोट करता था तो वे उदास जरूर हो जाते थे। लेकिन उसके प्रति कड़वे कभी नहीं होते थे। "सच्चा कवि साहित्यिकार दिल से सहज होता हैं, आडंबरो से परे और दंभ तो उसे छूता भी नहीं।"[33]

सारांश रूप में शमशेर एक बहुआयामी व्यक्तित्व को धारण करने वाले कवि थे, वे देखने में बाहर से जितने सुन्दर थे उतने ही अन्दर से शहद की तरह मीठे भी थे। हिन्दी साहित्य जगत् के अनेकों लेखकों से उनसे प्रेरणा लेकर साहित्य रचा है। डॉ॰ रंजना अरगड़े ने शायद इसीलिए उन्हें 'कवियों का कवि शमशेर' कहा है।

हिन्दी काव्य साहित्य में शमशेर का अनुपम योगदान रहा हैं। वे हिन्दी काव्य के अमूल्य निधी है। उनकी कविताएँ उनके व्यक्तित्व की ही तरह आत्मीय भावों से भरपूर है। अपने जीवन में व्याप्त कठिनताओं और दुःखों की कडुवाहट उनकी कविताओं में उपस्थित रही है। उनका व्यक्तित्व वास्तव में व्यक्तिगत पीड़ा में भी समष्टिगत भावों का मेल रूप है।

2:3 शमशेर का कृतित्व

किसी भी साहित्यकार का साहित्य उसके सम्पूर्ण जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति होता हैं। एक कलाकार की कला में उसकी हर कसमसाहट विद्यमान रहती हैं। किसी भी साहित्यकार के साहित्य सृजन का एक प्रयोजन अवश्य रहा होता हैं। इस बारे में सुमित्रानंदन पंत ने लिखा है कि– "चाहे साहित्यकार हों या चित्रकार वह लिखने में, चित्र बनाने में जिस सुख और तन्मयता

का अनुभव करता है वह अनिर्वचनीय हैं। जो आत्मविस्मृति सृजन क्रिया द्वारा सुलभ होती है, वह किसी अन्य रूप से प्राप्त करना संभव नहीं, सृजन प्रवृति मनुष्य के रूप से समाधिस्थ कर लेती है।..."[34] जब भी किसी रचनाकार की रचना पूर्ण होती है तो उसे आत्मतृप्ति मिलती है।

शमशेर का कृतित्व पक्ष अर्थात् उनका रचना–संसार गुणात्मक और भावात्मक दोनों ही दृष्टियों से सम्पन्न हैं। शमशेर ने साहित्यिक जगत में सन् 1932–33 में प्रवेश किया और एक लम्बी अवधि(1993) तक, बिना रूके, बिना थके निरन्तर, अवाधगति से आगे बढ़ते रहे हैं। उस समय हिन्दी कविता संक्रमण के दौर से गुजर रही थी। कविता छायावाद की काल्पनिक दुनिया को छोड़कर मानव जीवन के वास्तविकताओं से टकराती हुई प्रगतिशील चेतना की ओर बढ़ रही थी। इसी समय शमशेर का साहित्य में आगमन हुआ है। सुरेश सलिल ने लिखा भी है कि "शमशेर जी ने अपनी जगह प्रगतिशील और नई कविता के संधि बिंदु पर चुनी।"[35]

शमशेर ने साहित्य लेखन का शुभारम्भ अपने बचपन में ही साहित्यिक पत्रिका के लेखकीय कार्य की चुनौती को स्वीकार करके तथा उसे निभाकर कर दिया था। वे उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी आदि अनेकों भाषाओं के अच्छे जानकार थे। उन्होंने अपना लेखकीय कार्य उर्दु भाषा में आरम्भ करके हिन्दी भाषा में समाप्त किया। वे खुद को हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं का दौआब भी कहते थे। उन्होंने 'बाढ़ 1948' कविता में लिखा भी है कि–

"मैं उर्दू और हिन्दी का दोआब हूँ।

मैं वह आईना हूँ, जिसमें आप हैं।"[36]

अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने गद्य और पद्य दोनों साहित्यिक रूपों को चुना हैं। जिनका विश्लेषण पृथक–पृथक रूप से किया जा रहा हैं–

2.3.1 पद्य साहित्य :–

शमशेर की मूल प्रवृत्ति एक चित्रकार की रही है, लेकिन साहित्य में उन्होंने कविता को मूल केन्द्र बनाकर अपने कवि होने का अहसास वेखूबी कराया हैं। हिन्दी काव्य साहित्य में उनके द्वारा लिखी कविताओं की संख्या लगभग 300 के पार हैं। जो उनके आठ कविता–संग्रहों में संकलित हैं। उनके काव्य–संग्रहों के बारे में विश्लेषण करने से पूर्व कविता के बारे में उनके विचारों को भी जान लेना अनिवार्य हैं।

शमशेर की दृष्टि में कविता कोई बुनावट या गढ़ने की चीज नहीं है वह स्वतः ही आती हैं। वस्तुतः कवि के भीतर अनुभूतियाँ कितनी जीवन्त हैं। इस बात पर यह सब निर्भर करता है। डॉ॰ रंजना अरगड़े से एक भेंट वार्ता में शमशेर ने यह बात स्वीकारी है कि "कविता मेरे सामने एक 'फ्लैश' की तरह आती है। एकदम फोर्स के साथ।... मेरे सामने कोई फ्लैश आता है... उस समय अगर अपने आप को उठाकर लिखने के लिए तैयार किया, तब तो कविता आ गई समझो, बरना वह गई और कभी नहीं आयी और यह सारी बात कुछ मिनटों की होती हैं।..."[37]

शमशेर ने कभी किसी विषय के बंधन को नहीं स्वीकारा है, बस उनके मन में जो कोई भी बात कौंधी उसी पर अपनी लेखनी चला दी। प्रकृति के विविध रूप, कवियों के प्रति उनकी आस्था, जीवनानुभव, प्रणय वेदना की तरलतम पुकार आदि के ऊपर लिखी गई उनकी कविताएँ इसी तरह की हैं। कवि ने लिखा है कि "मेरी कविता के निमार्ण के आस–पास की साधारण सी वस्तु भी या कोई ऐसा व्यक्ति जो एकाएक मेरी कविता के पथ पर खड़ा हो जाता है, मैं उसको भी अपने रंग में लपेटकर अपनी कविता में शामील कर लेता हूँ।"[38] कवि ने कविता के लिए सच्ची भावनाओं का होना भी अनिवार्य माना हैं। कवि की दृष्टि में "कवि का कर्म अपनी भावनाओं में, अपनी प्रेरणाओं में, अपने आन्तरिक संस्कारों में समाज–सत्य के मर्म को अपनी पूरी कलात्मक क्षमता से पूरी सच्चाई के साथ व्यक्त करना है, जहाँ तक वह कर सकता है।"[39]

शमशेर जिस प्रकार से निराले थे, उसी प्रकार से उनकी अनुभूतियाँ, उनकी कविताओं की बुनावट भी निराली थी। वे कविता में कईयों संवेदनाओं को एक साथ लेकर आते है जिसके लिए उनको अतिरिक्त शिल्प भी तैयार करना पड़ता हैं। अतः उनके काव्य में उनका शिल्प भी एक भौतेरा हथियार बनकर उभरा हैं।

वस्तुतः, शमशेर एक समर्पित काव्य–साधक थे। उन्होंने अपना मुकाम खुद हासिल किया है, किसी के रहमो कर्म से प्राप्त नहीं किया। प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह ने लिखा है कि– "शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का जो प्रभावशाली भवन अपने हाथों तैयार किया हैं, उसमें जाने से मुक्ति–बोध को भी डर लगता था।"[40] शमशेर के कविता–संग्रहों का संक्षिप्त मूल्यांकन नीचे प्रस्तावित हैं–

'तार सप्तक'(1951) में शमशेर हिन्दी साहित्य जगत में सबसे पहले एक कवि के रूप में आए है। इससे पूर्व वे 'रूपाभ' व 'सरस्वती' पत्रिकाओं में छपते रहे हैं। उनकी कविताओं को विधिवत् प्रकाशन अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक'(1951) में मिला हैं। इसमें उनकी कुल

इक्कीस कविताओं को शामिल किया गया है, जो इस सप्तक के अन्य कवियों की कविताओं से मेल खाती थी। सप्तक की भूमिका में शमशेर का वक्तव्य आगे चलकर नये काव्य के लिए महत्त्वपूर्ण दस्तावेज भी बना हैं। शमशेर के अतिरिक्त इस सप्तक में शामिल कवियों के नाम इस प्रकार है– भवानी प्रसाद मिश्र, शकुन्त माथुर, हरिनारायण व्यास, नरेश मेहता,' रधुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती।

कुछ कविताएँ :–

यह शमशेर का पहला कविता–संग्रह है। इसको विधिवत प्रकाशन सन् 1959 में मिला है। इसमें उनकी कुल 36 कविताओं का चयन व प्रकाशन जगत शंखधर जी के द्वारा किया गया है। इसमें उनके आरम्भिक दौर की अर्थात सन् 1941 से लेकर सन् 1958 तक की लिखी गई कविताएँ हैं। इन कविताओं में उनके ऊपर छायावादी प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। ये कविताएँ प्रकृति और प्रेम जैसे विषयों को लेकर प्रगतिशील चेतना की और बढ़ने वाली हैं। इनमें उनकी प्रगतिशील चेतना का जन्म काल दिखाई देता है। इस संग्रह के बारे में मधु शर्मा ने लिखा है कि– "पूरा संग्रह शमशेर की सौन्दर्य, चेतना और कलाभिमुखता का परिचय देता हैं। कविताओं की खास शमशेरियन शैली सदा ही महत्वपूर्ण और चर्चा का विषय रही हैं। शमशेरियन कहते ही बात क्लासिकी, प्रायोगात्मक और नवीनता से युक्त हो जाती हैं। कविता उनके यहा रेखाओं और संकेतों से भी आश्रय पा जाती है और रूप ले लेती हैं।..."[41] इस संकलन में उनकी 'घनीभूत पीड़ा', 'चीन' कविताओं को सचित्र प्रकाशन मिला है। 'एक पीलीशाम', 'वह सलोना जिस्म', 'सागर तट' जैसी उनकी प्रसंशनीय कविताए भी इसमें सम्मिलित हैं।

कुछ और कविताएँ :–

वैविध्यपूर्ण विषय और शिल्पगत नवीनता की दृष्टि से यह उनका एक अच्छा कविता संग्रह हैं। इसको विधिवत् प्रकाशन सन् 1961 में मिला हैं। शमशेर के द्वारा सन् 1941–1960 तक लिखी गई कविताओं में से कुल 49 कविताओं का चयन खुद शमशेर ने किया हैं। इसमें उनकी प्रसिद्ध कविताएँ 'वाम वाम वाम दिशा' उनके मार्क्सवादी विचारों को दर्शाने वाली, 'टूटी हुई बिखरी हुई' कविता खण्डित व्यक्ति को चित्रण देने वाली, 'सावन' कविता प्रेम की पीड़ा को अभिव्यक्त करने वाली आदि महत्त्वपूर्ण कविताएँ संकलित हैं। इस संग्रह में शमशेर की कविताएँ प्रगतिशील चेतना की और बढ़ती हुई दिखाई देती हैं। इस संग्रह में शमशेर ने कुछ गजलों, गीतों, सॉनेटों को भी शामील किया हैं। कुछ कविताएँ सुररियल भाव दृष्टि की भी इस संग्रह में संकलित हैं।

चुका भी हूँ नहीं मैं :–

काफी वर्षो के बाद सन् 1975 में यह कविता संग्रह प्रकाशन में आया। यह उनका तीसरा कविता संग्रह हैं। इस संग्रह की कविताओं का चयन जगत शंखघर ने किया था। इसके लिए शमशेर को सन् 1971 में साहित्य अकादमी पुरूस्कार भी मिला हैं। इसमें चयनित कुल 50 कविताएँ शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ हैं। किन्तु इसमें शामिल उनकी 'दो मोती की दो चन्द्रमा होते' रचना शिल्प की दृष्टि से अतिबेजोड़ हैं। इस काव्य की कविताओं में शमशेर की प्रयोगशीलता अपने चर्मोत्कर्ष पर दिखाई देती है।

सन् 1981 में इसी संग्रह को 'चुका भी हूँ नहीं मैं' नाम से दूसरा प्रकाशन मिला है। इसमें पहले संस्करण की समस्त अशुद्धियों को दूर करने के लिए कुछ नोट्स व टिप्पणियाँ परिशिष्ट में दी गई हैं। 'किरण रेखा तिलक', शंख–पंख कविताओं को चित्रांकन भी मिला हैं। अन्य संग्रहों की तुलना में शमशेर की सामाजिक अभिमुख्ता इस संग्रह की कविताओं में अधिक गहराई में मिलती हैं। इस संग्रह के आभार–ज्ञापन में कवि ने स्पष्ट लिखा है कि "काव्यकला– समेत जीवन के सारे व्यापार एक लीला ही हैं –और यह लीला मनुष्य के सामाजिक जीवन उत्कर्ष के लिए निरंतर संघर्ष की ही लीला है।"[42] इसमें शमशेर की कईयों अतिमहत्वपूर्ण कविताएँ संकलित है, जो उनकी प्रगतिशील विचार दृष्टि को दर्शाती हैं।

इतने पास अपने :–

सन् 1980 में उनका चौथा संग्रह 'इतने पास अपने' छपकर बाहर आया है। इसमें शामिल उनकी कुल 33 कविताएँ उनकी प्रयोगधर्मिता को कतई स्पष्ट कर देती हैं। इन कविताओं में कवि की चेतना के विकास को देखा जा सकता है। कवि के प्रिय विषय प्रकृति सौन्दर्य, मनुष्य सौन्दर्य के साथ में उनके कला, साहित्य संबंधी विचार एवं साथी कलाकारों के प्रति हार्दिक आभार आदि को समझने में ये कविताएँ बहुत सहयोग करती हैं। इस संग्रह की कविताओं के बारे में नामवर सिंह ने लिखा हैं कि "शमशेर के लिए तो जैसे हाड़–मासं के जीते–जागते इंसान ही समाज हैं।"[43] स्पष्ट है कि शमशेर इस संग्रह में बहुत मजे हुए नजर आते हैं।

उदिता :–

सन् 1980 में शमशेर का एक ओर कविता संग्रह 'उदिता' प्रकाशित हुआ। इस समय उनके भीतर जो रचनात्मक का तीव्रतर संघर्ष चल रहा था, वह इस कविता संग्रह की कविताओं

के रूप में बाहर आया है। यह उनका पाँचवा कविता संग्रह है। इसको 1949–50 में ही प्रकाशित होना था, लेकिन कुछ कारणों से 1980 में यह बाहर आ पाया है। इस संग्रह में उनकी शैली व सोच का नया रूप देखने में आता है। उत्तरछायावाद से लेकर, प्रगतिशील चेतना के विचारों से, उनके समकालीन विचारों तक की यात्रा को इस कविता संग्रह में देखा जा सका हैं। इस संग्रह की भूमिका में उन्होंन लिखा भी है कि "उदिता की कविताएँ मेरे भावुक और संघर्षशील दौर की कविताएँ हैं और आगे की कविताओं का पाखीमा भी।..."[44] 'मैं भारत गुण–गौरव गाता', 'सहन–सहन बहता है वायु', 'प्रेम', 'कर्म करो' जैसी अनेकों प्रशंसनीय कविताएँ इसमें शामिल हैं।

बात बोलेगी :–

यह उनका छठा कविता–सग्रंह था। इसमें उनकी कुल अड़तालीस कविताएँ हैं। इसके दो भाग हैं– दोनों भागों में सन् 1940 से 1977 तक की कविताएँ संकलित हैं। सभी कविताएँ देश–प्रेम, स्वाधीनता आन्दोलन, और उनका प्रिय विशय मृत्युबोध के ऊपर लिखी गई हैं।

काल तुझ से होड़ है मेरी :–

शमशेर का नवीनतम कविता संग्रह सन् 1988 में प्रकाशित हुआ है। इसकी सम्पादिका डा. रंजना अरगड़े हैं। वे शमशेर को बहुत अच्छी तरह से जानने वालों में भी रही हैं। इसमें कुल 33 रचनाओं का चयन रंजना जी के द्वारा किया गया है, जो शमशेर के द्वारा पिछले 17 बर्षों के दौरान लिखी गई कविताएँ थी। इसमें कवि ने विभिन्न देशों और तत्कालीन महान कवियों जैसे 'मदर टरेसा', 'नागार्जुन', 'प्रभाकर माचवे' आदि पर लिखी गई कविताएँ हैं, जो उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ तो हैं ही, कलाकारों के प्रति श्रद्वा भाव को दर्शाने वाली भी हैं। इस संग्रह की मुख्य विशेषता यह हैं कि 'यूनानी वर्णमाला का कोरस' तथा 'मणिपुरी काव्य साहित्य की नन्हीं सी विहंगम झांकी' को भी इसमें प्रकाशन मिला हैं।

प्रतिनिधि कविताएँ :–

इस कविता संग्रह का सम्पादन डॉ॰ नामवर सिंह ने सन् 1990 में किया है। इसमें कुल 102 कविताएँ हैं। इस संग्रह के बारे में उन्होंने लिखा है कि "इसमें रचनाकाल के क्रमानुसार कविताएँ चुनी हैं, जो हर दौर की हर रंग की हैं। कुल मिलाकर यह काव्य–संग्रह शमशेर की काव्ययात्रा का एक कालक्रमिक पथचिन्ह बन गया है।"[45] इस संग्रह में उनकी हर दौर की श्रेष्ठ रचनाओं को नामवर सिंह ने स्थान दिया है।

टूटी हुई बिखरी हुई :–

इस काव्य–संग्रह में अशोक बाजपेयी ने शमशेर की कुछ महत्त्वपूर्ण कविताओं का संकलन किया हैं। राधाकृष्ण प्रकाशन से सन् 1990 में यह प्रकाशित होकर आया हैं। उनकी सम्पूर्ण कविताओं में से कुल 21 को ही इसमें चयनित किया गया हैं। इस संग्रह की भूमिका में खुद बाजपेयी जी ने लिखा है कि "चुनाव का मुख्य आधार तो कुल मिलाकर हमारी रूचि ही हैः... हमारी काव्य रूचि के निर्माण में शमशेर जी की कविता का बड़ा हाथ रहा है। लेकिन उम्मीद है कि इस चयन में उनकी कविता की दुनिया का विस्तार, उसकी गहनता और उनके सरोकारों के बदलते रूप और बुनियादी अतिजीविता भी जाहिर हो सकेगी।"[46] इसमें शमशेर की 'लेकर सीधा नारा', 'वाम वाम वाम दिशा' कविताएँ मार्क्सवादी विचारधारा की हैं, 'सागर–तट', 'या शाम' उनकी प्रकृति प्रेम की कविताएँ संकलित हैं। इसमें शामिल 'टूटी हुई विखरी हुई', कविता को भी स्थान मिला है जो मानव जीवन के तनाव भरे संत्रास को सहजने को लेकर लिखी गई है।

शमशेर ने अपने सुदीर्घ रचानाकाल में हिन्दी कविता के कई मोड़ देखे हैं। उनकी कविताओं के मुख्य विषय– प्रेम, मृत्यु का सौन्दर्यबोध, मार्क्सवाद के प्रति उदार भाव, स्वाधीनता आन्दोलन, कलाकारों के प्रति उनका आदर भाव आदि रहे हैं। शैली के प्रति उनकी अतिरिक्त सतर्कता जग–जाहिर हैं। शमशेर ने खुद लिखा है कि "मेरे कवि ने कभी किसी फार्म, शैली या विषय का सीमा–बंधन स्वीकार नहीं किया।"[47] उनकी यह स्पष्ट स्वीकारोक्ति ही उनको बड़ा और विशिष्ट कवि बनाती हैं। उनकी अनेकों कविताएँ राष्ट्रीय मुद्दो, वैश्विक स्तर से लेकर ब्रह्माण्ड तक में विचरण करती हैं। प्रकृति प्रेम, प्रणय अनुभूति से लेकर सामाजिक अभिमुख्ता पर भी लिखी गई हैं। वे अपनी कविताओं में खण्डित व्यक्तित्व को जोड़ने का अन्तिम लक्ष्य लेकर भी आगे बढ़े हैं। उपरोक्त कविता संग्रहों की कविताओं में उनके इन विचारों को स्थान मिला हैं।

2.3.2 गद्य साहित्य :–

साहित्य जगत में शमशेर गद्यकार के रूप मे पहले और कवि के रूप में बाद में आये हैं। कवि के रूप में शमशेर का आगमन 'दूसरा सप्तक''के माध्यम से होता हैं। इससे पूर्व उनके दो गद्य संग्रह प्रकाशित हो चुके थे। उनके गद्य की प्रशंसा में रामविलाश शर्मा ने केदारनाथ को बताया है कि "शमशेर गद्य बहुत अच्छा लिखते हैं; मैंने उनके कई पुराने लेखों की तारीफ की। तुम्हारे ऊपर उनका लेख मुझे बहुत पंसद आया। अब भीड़ छँटने लगी है। नयी कविता का नयापन पुराना हो गया। कविता चमकने लगी। शमशेर का लेख उसी का प्रमाण है।"[48]

शमशेर एक निबंधकार के रूप में पहली बार सन् 1948 में पाठकों के सामने आये है। उनका पहला निबंध संग्रह 'दोआब' भी इसी साल प्रकाशित हुआ है। इसमें उनके कुल सत्रह निबंध संकलित हैं। इन आलोचनात्मक निबंधों में उन्होंने हिन्दी और उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकारों की कृतियों का मूल्यांकन किया हैं। ये निबंध पूर्णरूप से समीक्षात्मक निबंधों की श्रेणी में आते हैं। इनके अध्ययन में निरंतर एक रसमयता का बोध होता हैं। रामविलास शर्मा ने लिखा है कि "'दोआब' संग्रह में सबसे दिलचस्प लेख 'सात आधुनिक कवि' है... 'नया साहित्य' उस समय प्रगतिशील साहित्य का प्रतिनिधि पत्र था।"[49] एक निबंधकार के रूप में शमशेर का दूसरा और तीसरा संग्रह भी प्रकाशित हुआ हैं। उनका तीसरा गद्य संग्रह कुछ और 'गद्य रचनाएँ' सन् 1992 में प्रकाशित हुआ है, यह उनका अन्तिम निबंध संग्रह भी था। इसमें शमशेर ने अपने विविध विचारों को तथा कुछ महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों के बारे में अपने विचारों को क्रमबद्धता दी हैं। इसकी सम्पादिका डॉ॰ रंजना अरगड़े ने इस संग्रह की भूमिका में लिखा है कि "शमशेर के ये निबंध... अपने समकालीनों के कृतित्व से जुड़े रहे हैं।... 'दोआब' की ही तरह इस संग्रह में भी उन्होंने अपनी परम्परा के श्रेष्ठ कवियों पर भी लिखा है, जैसे गालिब और रहीम।...यह एक बात गौर करने की है शमशेर के इन निबंधों में लालित्य किस तरह छिपा हैं। एकाध निबंधों को छोड़ प्रायः सभी निबंधों में शमशेर जी के व्यक्तित्व के विविध पहलू नजर आते हैं।"[50] इस निबंध संग्रह में 'एक बिल्कुल पर्सनल एसे', 'किस तरह मैं आखिर हिन्दी में आया', 'नरेन्द्र', 'नामवर', 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' आदि प्रसिद्ध निबंधों को इसमें संकलन मिला है।

कहानी संग्रह में उनका एक मात्र संग्रह 'प्लाट का मोर्चा' है। यह वर्तमान में अप्राप्य है, इसके रचनाकाल के बारे में ठीक तरह से कहा नहीं जा सकता, लेकिन सन् 1950–52 का काल हो सकता है। इसमें उनकी लगभग 23 कहानियाँ और कुछ स्केच हैं। जिनके लेख आज भी विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में उपलब्ध हैं। इन कहानियों के बारे में आनन्द प्रकाश ने लिखा है कि "कहानियों में चित्र देना और टिप्पणी से बचना निरंतर चलता है।... असल में यह शमशेर की कहानियों का तिलिस्म हैं जिसमें 'स्टिल और मूविंग तस्वीर, रंग और रंगहीनता, अतीत और वर्तमान के... रहस्यात्मकता में घिर जाती हैं।"[51] "'प्लाट का मोर्चा' की भूमिका पर प्रकाशन काल 1952 छपा है,"[52]

शमशेर एक अच्छे समीक्षक व अनुवादक भी रहे हैं। उनकी समीक्षाएं बहुत अच्छी थी। वे समीकक्षाओं में बातचीत सी करते हूए दिखाई देते हैं। जे. स्वामीनाथन की पेटिंग को देखकर वे चिड़िया की व्यवहारिकता पर बात करने लगते है कि "मुझे जे. स्वामीनाथन की वह चिड़िया ध्यान

आ रही है जो प्रायः उनके कैनवास पर मिल जायेगी।"[53] उनकी सीधी–सादी समीक्षा में गिनी जाती हैं।

शमशेर ने अनुवाद का कार्य अपने साहित्यिक जीवन के शुरू में ही आरम्भ कर दिया था। प्रायः अपने शुरूआती दिनों में उनका खर्चा इसी अनुवाद कार्य से चलता था। उनके श्रेष्ठ अनुवादों में 'षड्यन्त्र' (1946), 'पृथ्वी और आकाश' (1944) आदि की गिनती होती हैं।

शमशेर के उपरोक्त गद्य लेखन के अतिरिक्त उनके संग्रहों की भूमिकाएँ, उनकी टिप्पणियाँ तथा अनेकों पत्र–पत्रिकाओं में उनके द्वारा लिखे गये सम्पादकीय, लेखों आदि को भी उनके गद्य साहित्य में जगह दी जा सकती हैं।

निष्कर्ष–

सारांश रूप में शमशेर एक कवि व कथाकार के रूप में अपने कृतित्व में सदा उपस्थित रहे हैं। एक कवि के रूप में उन्होंने बहुत सारी कविताएँ लिखी है, जो उनके कविता संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं। साहित्य जगत् में उनकों जो भी ख्याती मिली है वह एक कवि के रूप में ही अधिक मिली हैं। हिन्दी काव्य जगत् में उनका उत्तरछायावाद से समकालीन कविता तक का समय रहा हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति, प्रेम, मानव जीवन के वास्तविक सौंदर्य, सच्ची अनुभूतियाँ की अभिव्यक्ति पर जोर दिया हैं। उनकी ये कविताएँ शिल्प के क्षेत्र में भी बेजोड़ हैं।

शमशेर ने कविताओं के साथ एक अच्छा गद्य भी लिखा है। जिसकी तारीफ माने हुए हिन्दी आलोचकों में नामवर सिंह, रामविलावस शर्मा ने की हैं। शमशेर ने अपने गद्य क्षेत्र में निबंध, कहानी, आलोचना, समीक्षा, स्केच आदि में साहित्य लिखा हैं।

शमशेर के समस्त लेखन साहित्य में उनकी चित्रात्मकता ने भी उपस्थिति दर्ज कराई है क्योंकि उनकी मूल दृष्टि एक चित्रकार की ही थी, जिसके विविध रूप रंग उनके गद्य और पद्य दोनों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहे हैं।

संदर्भ संकेत

1. सिंह, वीरेन्द्र, 'बिम्बों से झाँकता कवि : शमशेर', पृ. 12
2. वशिष्ट, नरेन्द्र, 'शमशेर की कविता', पृ. 13
3. वही, पृ. 17
4. मलयज, 'शमशेर जी', सं. दुधनाथ सिंह, "एक शमशेर भी है", पृ. 77
5. सिंह, तेजबहादुर, 'बड़े भाई शमशेर जी', विष्णु चंद्र शर्मा, "काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व", पृ. 100
6. बच्चन, हरिवंश राय, 'नीड़ का निर्माण फिर' आत्मकथा, पृ. 97
7. मलयज, 'शमशेर जी', सं. दुधनाथ सिंह, "एक शमशेर भी है", पृ. 74
8. सिंह, तेजबहादुर, 'बड़े भाई शमशेर जी', विष्णु चंद्र शर्मा, "काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व", पृ. 105
9. वहीं, पृ. 100
10. उद्धृत, सिंह, शमशेर, हरिवंश राय बच्चन, 'नीड़ का निर्माण फिर' आत्मकथा, पृ. 67
11. बच्चन, हरिवंश राय, 'नीड़ का निर्माण फिर' आत्मकथा, पृ. 69
12. सिंह, तेजबहादुर, ''बड़े भाई शमशेर जी', विष्णु चंद्र शर्मा, "काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व", पृ. 103
13. अरगड़े, रंजना, 'कवियों के कवि शमशेर', पृ. 211
14. उद्धृत, विष्णु चंद्र शर्मा, "काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व", पृ. 18
15. अरगड़े, रंजना, 'कवियों के कवि शमशेर', पृ. 225
16. सिंह, शमशेर बहादुर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ' भूमिका, पृ. 75
17. अरगड़े, रंजना, 'कवियों के कवि शमशेर', पृ. 153

18. शर्मा, विष्णु चंद्र, "काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व", पृ. 45

19. सिंह, शमशेर बहादुर, 'उदिता' भूमिका

20. मालवीय, लक्ष्मीधर, 'मौन पुकार लगाते शमशेर', सं. द्वारिका प्रसाद चारुमित्र, "शमशेर की दुनिया", पृ. 28

21. उद्धृत, डॉ॰ सुषमा अग्रवाल, 'मोहन राकेश का व्यक्तित्व और कृतित्व', पृ. 31

22. सिंह, शमशेर बहादुर, 'बिम्बों से झाँकता कवि : शमशेर', पृ. 25

23. बच्चन, 'नीड़ का निर्माण फिर' (आत्मकथा), पृ. 64

24. वर्मा, श्रीराम, 'जस्ट फिट', सं. दुधनाथ सिंह, "एक शमशेर भी है", पृ. 104

25. सिंह, भाषा, 'चाँद से थोड़ी–सी गप्पें', सं. दुधनाथ सिंह, "एक शमशेर भी है", पृ. 252

26. शर्मा, विष्णु चंद्र, 'काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व', पृ. 17

27. सिंह, तेजबहादुर, ''बड़े भाई शमशेर जी', विष्णु चंद्र शर्मा, "काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व", पृ. 99

28. रब्बी, इब्बार, 'एक निजी और बहुत निजी कवि', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंह : लेख संग्रह," पृ. 33

29. मलयज, 'शमशेर जी', सं. दुधनाथ सिंह, "एक शमशेर भी है", पृ. 44

30. उद्धृत, विष्णु चन्द्र शर्मा, "काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व", पृ. 21

31. मुक्तिबोध : शमशेर मेरी दृष्टि में, सं. नेमीचन्द जैन, "मुक्तिबोध रचनावली", पृ. 433

32. जैन, रेखा, सं. महावीर अग्रवाल, 'कवि से बड़े आदमी', पृ. 198

33. सिंह, भाषा, 'चाँद से थोड़ी–सी गप्पें', सं. दुधनाथ सिंह, "एक शमशेर भी है", पृ. 244

34. पंत, सुमित्रानंदन 'मैं क्यों लिखता हूँ' (निबंध), पंत ग्रंथावली, भाग छः, पृ. 237

35. सलिल, सुरेश, 'शमशेर की कला दृष्टि और कविता', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंह : लेख संग्रह," पृ. 48

36. सिंह, शमशेर बहादुर, 'बाढ़ 1948', "संकलित कविताएं", पृ. 30

37. अरगड़े, रंजना, 'कवियों के कवि शमशेर', पृ. 207

38. रमण, तुसली सं., 'विपाशा', अंक 50, जुलाई–अगस्त, 1993, पृ. 20

39. सिंह, शमशेर बहादुर, 'कछ कविताएं व कुछ और कविताएं', भूमिका पृ. 75

40. सिंह, नामवर, 'शमशेर की शमशेरियत', सं. द्वारिका प्रसाद चारुमित्र, "शमशेर की दुनिया", पृ. 69

41. शर्मा, मधु (कविता के शिखरों से टकराती एक गूँज), सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंह लेख–संग्रह", पृ. 88

42. सिंह, शमशेर बहादुर, 'चुका भी हूँ मैं नहीं!', आभार–ज्ञापन

43. सिंह, शमशेर बहादुर, 'इतने पास अपने', भूमिका

44. सिंह, शमशेर बहादुर, 'उदिता', भूमिका

45. सिंह, शमशेर बहादुर, 'प्रतिनिधि कविताएं', संपादकिय

46. सिंह, शमशेर बहादुर, 'टुटी हुई बिखरी हुई', भूमिका

47. सिंह, शमशेर बहादुर, 'कुछ कविताएं व कुछ और कविताएं', भूमिका पृ. 75

48. शर्मा, विष्णु चंद्र, 'काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व', पृ. 84

49. शर्मा, रामविलास, 'अच्छे गद्य की पहचान' सं. द्वारिका प्रसाद चारुमित्र, "शमशेर की दुनिया", पृ. 62

50. शमशेर बहादुर सिंह, सं. रंजनाअरगड़े, 'कुछ और गद्य–रचनाएं', कुछ संग्रह के बारे में, भूमिका

51. प्रकाश, आनन्द, 'बोलचाल के गद्य की लय', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंह लेख संग्रह", पृ. 69

52. वही, पृ. 69

53. उद्धृत, विष्णु चंद्र शर्मा, "काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व", पृ. 86

तृतीय अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता

तृतीय अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता

शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक हिन्दी कविता में एक बड़े कवि रहे है। उत्तरछायावाद की प्रगतिशील कविताओं में वे कर्ता रहे है तथा अपने साम्यवादी आदर्शों के कारण प्रगतिशील आन्दोलन के अगुवा रहे हैं। हिन्दी की नई कविता के विकास में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी कविताओं में उनकों एक उदारवादी प्रगतिशील कवि का दर्जा प्राप्त है। वे मूलतः वैयक्तिक अनुभूतियों के कवि हैं, किन्तु उनकी कविताओं में उनकी ये अनुभूतियां उत्तरोत्तर रूप से प्रगतिशीलता की ओर बढ़ती रही हैं। उन्होंने भाव पक्ष एवं कला पक्ष दोनों दृष्टियों से हिन्दी कविता को समृद्व किया है। वे अपनी कविताओं में ईमानदारी के हिमायती रहे है। उनकी कविताएँ अतियथार्थवाद से आपूर्ण हैं। कविता में "कम से कम शब्दों का प्रयोग करके एक पूर्ण भाव–चित्र उपस्थित करना उन्हें विशेष रूप से प्रिय है। फलतः उनकी कवितायें पाठक के लिए सर्वत्र सहज संवेद्य नहीं हो पाती। फिर भी उनके भावचित्र प्रभावपूर्ण होते हैं।"[1]

शमशेर निराला से बहुत अधिक प्रभावित रहे हैं। उनकी कविताओं में 'निराला' की कविताओं की तरह से आधुनिक हिन्दी कविता की तमाम उपलब्धियॉ और विकास की सभी सम्भावनाऍ मौजूद हैं। शमशेर के व्यक्तित्व निर्माण में जितना योगदान परम्पराओं का मिला है, उतना ही उनकी खुद सृजनात्म भूमि का भी रहा है। वे एक ओर 'निराला' की 'परिमल' और 'अनामिका' रचनाओं से बहुत प्रेरित रहे हैं, तो दूसरी ओर अंग्रेजी कवियों में एजरा पाउण्ड, कमिंग्ज और हापकिंग्स आदि का भी उनके व्यक्तित्व एवं शैली पर अच्छा खासा प्रभाव पड़ा है। उनकी कविताओं का विषय क्षेत्र बहुत अधिक विस्तारित रहा है। जीवन और जगत की सभी प्रकार की गहरी अनुभूतियाँ उनकी कविताओं के केन्द्र में विद्यमान रही हैं। अपनी रचना–प्रक्रिया के बारे में शमशेर ने खुद लिखा है कि "जो कुछ देखा और पाया उसी की कविता बस, इसी ख्याल के सुर ताल और रंग और नक्श और लहर मेरी कविता हैं। वह फिर जैसी भी हैं। मैं अपने आप से बातें करता हूँ। हम सब एक न एक क्षण में करते हैं, बेमानी बातें–खामख्यालियां–वे सिर–पैर के कुलाबे :– उनका कोई छन्द होता है? उस सब में कहां ठहराव और फैलाव – औंर थाप, और गिराव होता है? कहॉ स्टैंजा बनता और कहॉ पैरा...? हॉं, छन्द होता है, और ठहराव भी और ताल और सुर की चोटें और थाप और गिराव भी होता है। और स्टैंजा बनते और पैरे भी

शुरू होते हैं। ... लम्बे–लम्बे और छोटे–छोटे विरामों पर मौजू छन्दों में : जिनको हमारे दिल की लहर ही नाप सकती है और नापती ही है (आप कबूलें या न कबूलें)"[2]

शमशेर की वैविध्यपूर्ण कविताएँ उनकी अनुभूतियों का केन्द्र रही हैं। उनकी कविताओं पर 'दुरूह' होने के आरोप भी लगते रहे हैं। इन सब का कारण यह है कि वे जीवन की परस्पर विरोधी रही अनेकों अनुभूतियों को एक साथ कविता में लाते रहे है। लेकिन उनकी कविताएं एक सजीव संसार रचने में पूर्णतः समर्थ रही हैं।[3]

शमशेर नई कविता के कवि है। नई कविता आधुनिक हिन्दी काव्य की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसका प्रार्दुभाव कुछ खास सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिस्थतियों के कारण हुआ। प्रयोगवादी कविता नई कविता की पृष्ठभूमि के रूप में निर्विवाद रूप से है। "प्रयोगवादी और नई कविता में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि प्रयोगवाद द्वन्द्व और प्रतिक्रिया का काव्य है। किन्तु नई कविता संश्लेषित और सामंजस्य की कविता हैं।"[4] 'दूसरा सप्तक' की भूमिका में शमशेर के द्वारा सुझाए कुछ बिन्दु नई कविता के लिए खास मायने रखते हैं या यो कहे कि नई कविता के पथ प्रदर्शक बने है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिनका उल्लेख करना यहां अतिआवश्यक है–

कविताओं में हम अपनी भावनाओं की सच्चाई का खास रूप खोजते हैं। ललित कलायें काफी एक दूसरे में संजोई हुई हैं।

कवि के जाति शौक और उसकी अपनी खास दिलचस्पियाँ भी कला को निखारने में सहायक सिद्ध होती हैं, ये कभी–रूकावट भी बन जाती हैं, किन्तु नयी कला ने इनसे फायदा उठाया है।

अन्य दो चार भाषाओं का ज्ञान जितना ही कलाकार को होगा उतना ही वह जीवन और उसको झलकाने वाली कला के अन्दर सौन्दर्य की पहचान और सौन्दर्य की असली कीमत की जानकारी बढ़ा सकेंगे।

भाषा और कला के रूपों का कोई पार नहीं है। हम सबकी मिली–जुली जिन्दगी में कला के रूपों का खजाना हर तरह वे हिसाब बिखरा चला गया है। सुन्दरता का अवतार हमारे सामने पल–छिन होता रहता है। अब यह हम पर है, खास तौर से कवियों पर कि हम अपने सामने और चारों ओर की इस अनन्त अपार लीला को कितना अपने अन्दर बुला सकते हैं।[5]

शमशेर की उपर्युक्त बातें आगे चलकर नई कविता के लिए आधार बनी है। नई कविता में शमशेर के महत्व का अंदाजा इस बात से चलता है कि उनकी कुछ कविताएँ इस प्रकार की रही है जो नई कविता को पूर्णतः संश्लेषित करती हैं। देवी प्रसाद मिश्र ने उनकी कविता 'बात बोलेगी' के बारे में लिखा है कि "नई कविता के अप्रतिहत प्रवक्ता रामस्वरूप चतुर्वेदी ने शमशेर की याद में आयोजित एक सभा में कहा था कि शमशेर की पंक्ति 'बात बोलेगी हम नही' नई कविता का घोषणा पत्र बन गई थी।"[6]

नई कविता नये जीवनमूल्यों को लेकर चलने वाली कविता है। इसके कवियों में –नागार्जुन, मुक्तिबोध, नरेश मेहता, अज्ञेय, भवानी प्रसाद मिश्र, केदारनाथ अग्रवाल, गिरिजाकुमार माथुर आदि प्रमुख हैं। नये कवियों की इस श्रृंखला में शमशेर बहादुर सिंह का नाम भी जुड़ता है। उनके काव्य में सत्य के प्रति आग्रह, मार्क्सवादी रूझान, सामाजिक चेतना आदि अनेकानेक प्रवृत्तियाँ लक्षित हैं जो उनको नई कविता से जोड़ती है। नई कविता की चिन्तन भूमि के आधार पर शमशेर की कविताओं का निम्नांकित बिन्दुओं के आधार पर विश्लेषण किया जा रहा हैः–

3:1 नई कविता में सामाजिक एवं यथार्थ चेतना

हिन्दी काव्य में नई कविता के आगमन से पूर्व कविता में कोरी काल्पनिक और आदर्शवादी मानवतावाद की बातें हुआ करती थी। सही मायने में नई कविता के आने के बाद कविता का मानव जीवन के यथार्थ से सम्बन्ध स्थापित होता है। शमशेर नई कविता के प्रमुख कवि रहे है। उनकी कविताओं में सामाजिक चेतना के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। उनकी कविताओं में दलितों, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति, जन–जन की मुक्ति की अपार चाहत, एकता के प्रति अड़िग विश्वास, मानव व्यक्तित्व पर आस्था, मानवता की आकांक्षा, आशा से ओत–प्रोत क्रान्ति की साफ–सुथरी आवाज आदि विचार बिन्दु उनकी सामाजिकता को दर्शाते हैं। उनकी कविताएं सामाजिकता से गहरा ताल्लुक रखती हैं। शमशेर अपनी स्थिति से भली भाँति परिचित थे। शमशेर प्रायः कहा करते थे कि "जो मैं लिखना चाहता हूँ लिख नहीं पाता और जो लिखता हूँ उससे संतुष्ट नहीं हूँ"[7] कवि का यहां लिखने से तात्पर्य जनसामान्य के सुख–दुःख से ही है। 'अमन् का राग' और 'बैल' उनकी दोनों कविताएँ श्रेष्ठ सामाजिक प्रगतिशीलता को दर्शाने वाली है। इन कविताओं में नई कविता की प्रवृत्तियों के दर्शन होते है।

शमशेर की कविताओं के एक नहीं अनेकों पक्ष हैं। उनकी अधिकांश कविताएँ प्रकृति और प्रेम पर लिखी गई हैं। अतः उनमें सामाजिक चेतना भी अधिकाधिक रूप में मिलती है। उनकी

रचनाओं से ज्ञात होता है कि वे विशुद्ध रूप में मानवतावादी कवि थे। उनकी मानवतावादी दृष्टि सभी को समान अवसर और श्रम का उचित मूल्य मिलने की रही है। उनकी कविताओं में मानव जीवन के बिखराव व उसमें व्याप्त असमानता के प्रति गहरा आक्रोश दिखाई देता है। कवि शमशेर का मानना है कि "कवि का कर्म अपनी भावनाओं, अपनी प्रेरणाओं में, अपने आन्तरिक संस्कारों में, समाज के सत्य मर्म को ढालना–उसमें अपने को पाना है, और उस पाने को पूरी कलात्मक क्षमता से, पूरी सच्चाई के साथ व्यक्त करना है जहाँ तक वह हो सकता हैं।"[8] उनकी सच्ची सामाजिक अनुभूति ही उनको नई कविता से जोड़ती है।

शमशेर की सामाजिक चेतना की कविताओं में यथार्थ के अधिकाधिक दर्शन होते है। उन्होंने जिस सामाजिक यथार्थ को अपनी आंखों से देखा, भोगा और समझा है, उसके बहुआयामी रूप उनकी कविताओं में मौजूद हैं। उनकी कविताएँ में राष्ट्रीयता, राजनीतिक चेतना, पूँजीवाद, सामंतवाद के दुष्परिणाम, साम्प्रदायिकता, समाज सुधार, विश्व युद्ध, विश्व शांति आदि अनेकों सन्देशों से आपूर्ण हैं। 'अमन का राग' उनकी काफी चर्चित व महत्त्वपूर्ण कविता है जिसमें कवि ने सम्पूर्ण विश्व में शांति का राग अलापा हैः–

"मेरी देहली में प्रह्लाद की तपस्याएँ दोनों दुनियाओं की

चौखट पर

युद्ध के हिरण्यकशिप को चीर रही हैं।

यह कौन मेरी धरती की शांति की आत्मा पर कुरबान हो

गया है"[9]

समाज के सभी कलाकार प्रायः साम्यवाद की स्थापना के पक्षधर रहे हैं। शमशेर के समय में भी समाजवाद की स्थापना का लक्ष्य अपने चरम सीमा पर था। समाज के प्रति शमशेर की प्रतिबद्धता ने ही उन्हें मार्क्सवाद से जोडा है तथा उनकी इसी आस्था ने उन्हें साहित्य में स्थान दिलाया है। वे अपनी एक ओजस्वी कविता 'वाम वाम वाम दिशा' में मध्यवर्गीय समाज के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति व्यक्त करते हुए दिखाई दिये हैं–

"अंग–अंग एकनिष्ठ

ध्येय–धीर

सेनानी

वीर युवक

अति बलिष्ठ

वामपंथगामी वह...

समय : साम्यवादी।"[10]

शमशेर ने अपनी कविताओं में धार्मिक दंगो की राजनीति और आतंकवाद से समाज पर पड़ने वाले बुरे असर को व्यक्त किया है। शमशेर अपनी कविता में शुद्ध सहिष्णुता की भावना को लेकर आते हैं, जो उनकी काव्यानुभूति का महत्त्वपूर्ण भाग है–

"देश के शत्रुओं के

घर घी के चराग

जल रहे हैं

उनके दानवीय चेहरे

कैसे दमक रहे हैं

उनमें कोई–कोई कैसा

दानवीय अट्हास

कर रहे हैं :"[11]

शमशेर सभी धर्मों व सम्प्रदायों को एक ही मानते है। वे केवल और केवल शांति को ही सच्चा धर्म मानते है। उनकी दृष्टि में लोग व्यर्थ ही अपनी शक्ति, धन, बल, बुद्धि और मर्यादा को खर्च करते है। हमारे साम्प्रदायिक दंगों से शत्रु देश हमकों परास्त कर देते है और हमारा शत्रु इस कारण से हमसे नफरत भी करता है। इसीलिए हम सभी को एक जुट होकर देश व समाज के कल्याण के लिए काम करना चाहिए। यह बात कवि ने 'आओ, उनकी आत्मा के लिए प्रार्थना करें' कविता में स्पष्ट रूप से कही है। कवि शमशेर अपनी कविताओं में धार्मिक दंगों की राजनीति और आतंकवाद से समाज पर पड़ने वाले बुरे असर से चिन्तित रहे है।

"देश के शत्रु देशों को

हर कोई जानता है

वह पूरे देश के शत्रु हैं

किसी एक जाति

या सम्प्रदाय के

नही

पूरे देश के।"[12]

शमशेर स्वछंदतावादी दृष्टिकोण रखने वाले कवि थे। स्वछंतावाद नई कविता की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति रही है। नई प्रवृत्तियों से मेलजोल रखने वाली उनकी कविताओं ने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह् स्पष्ट रूप से किया है। उनकी रचनाओं में जन विरोधी गतिविधियों पर गहरा कटाक्ष किया गया है। शमशेर पीड़ित जनता को देखकर अत्यन्त भावुक और दुःखी होने वाले कवि थे। वे अपनी कविताओं में जनता के दुःख को दूर करने के लिए जनता को संघर्ष के लिए प्रेरित करते है। लेकिन वे संघर्षशील जनता की दयनीय, सोचनीय स्थिति को देखकर बहुत क्षुब्ध भी होते है। कवि ने 'शाम होने को हुई' कविता में निर्धन की शाम को कभी नहीं भूलने की स्थिति का जीवंत चित्रण किया है।

"छिन्न–दल कर कागजी विस्मय

सत्य के बल शूल हूलूं मैं!

–शाम निर्धन की न भूलूं मैं!"[13]

हमारे देश और समाज में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग की खाई इतनी गहरा गई है कि उसमें धरती और आसमान का फर्क नजर आता है। कवि की दृष्टि में वही शाम निर्धन के लिए बेबशी बनकर आती है, तो शहरी लोगों या धनी लोगों के लिए स्फूर्ति देने वाली होती है। कवि ने इस कविता की ही कुछ पंक्तियों में निर्धन की बेहाल स्थिति को चित्रांकन दिया है–

"तू न चेता। काम से थककर

फटे–मैले वस्त्र में कमकर

लौट आए खोलियों में मौन।

चेतनेवाला न तू–है कौन?"[14]

शमशेर बहादुर प्रगतिशील कविता के अगुवा कवियों में रहे है। प्रगतिशील कविता में साम्यवाद का नारा बुलंद हुआ है। शमशेर कुछ समय के लिए इस विचार से जुड़े रहे है लेकिन उनका यह विचार मार्क्सवाद के नजदीक न होकर जनकल्याण की दिशा की और ही अधिक था। वे 'वाम दिशा' में ही दुःखी जनता के कल्याण का मार्ग देखते है। उनकी दृष्टि में इसी विचार धारा से मेहनतकस लोगों को श्रम का उचित मुल्य मिल सकता है तथा यही वो दिशा है जिससे हीनभाव से भरी सामाजिक दीनता से मुक्ति मिल सकती है।

"वाम वाम वाम दिशा,

समय : साम्यवादी।

पृष्ठभूमि का विरोध अंधकार–लीन। व्यक्ति––

कुहाऽस्पष्ट हृदय–भार, आज हीन।

हीनभाव, हीनभाव

मध्यवर्ग का समाज, दीन।"[15]

शमशेर जनवादी कवि है। उनकी जनवादी कविताएँ साहित्य जगत में चर्चा का विषय रही है। उन्होंने अपने जीवन में जिस सामाजिक यर्थाथ को देखा और भोगा है उसे ही अपनी कविताओं में उतारा है। शमशेर ने लिखा है कि "मैं बिल्कुल ऐसी कविता के पक्ष में हूँ, बशर्ते कि वह सामान्य जनता की वास्तविक समस्याओं से सच्चे भावात्मक धरातल पर, नैसर्गिक प्रतिभा के माध्यम से, जुडती हो।"[16]

शमशेर ने अपने व्यक्तिगत परिवेश को लेकर अधिकतर रचनाएं की है। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने बहुत सारी कविताएँ ऐसी लिखी है जिनमें समाज का सम्पूर्ण ताना बाना परिलक्षित होता है। उन कविताओं में समाज में रहने वाले लोगों की चिन्ताओं व पीड़ाओं का जिक्र हुआ है।

शमशेर ने अपनी कविताओं में देश–प्रेम, आजादी के समय के संघर्ष की महत्त्वपूर्ण घटनाएं, शहीदों को श्रद्धांजलि, किसान–मजूदर एवं मध्य वर्ग की स्थिति का चित्रण, साम्प्रदायिकता का विरोध, पूंजीवादी समाज के मानव–विरोधी दृष्टिकोण का विरोध और समाजवादी समाज की स्थापना आदि विषयों को कविता की विषय वस्तु बनाया है। ये सभी विषय नई कविता के विषय भी रहे है। शमशेर की ऐसी कविताओं में 'फिर वह एक हिलोर उठी', 'भारत की आरती', 'बात बोलेगी', 'वाम वाम वाम दिशा', 'अमन का राग', 'सत्यमेव जयते' आदि का नाम प्रमुख हैं।

शमशेर बहादुर सिंह सामाजिक समस्याओं के प्रति देश के भीतर ही नहीं, अपितु वैश्विक स्तर पर जागरूक और चिंतित दिखाई देते है। उनकी नई कविताओं में उनके ये विचार अनेकों स्थानों पर चित्रित है। मुद्दा चाहे अफ्रीका में 'काले–गोरे' का संघर्ष हो या 'भारत–चीन' का युद्ध हो। बंगाल का भीषण अकाल हो, चाहे फिर कश्मीर का निजामशाही अत्याचार। वे प्रत्येक समस्या के प्रति सजग दिखाई देते है। 'अमन का राग' कविता में यह सब स्पष्ट रूप से दिखाई देता है–

"ये पूरब पश्चिम मेरी आत्मा के ताने–बाने हैं

मैंने एशिया की सतरंगी किरनों को अपनी दिशाओं के गिर्द

लपेट लिया

और मैं यूरोप और अमरीका की नर्म आंच की धूप–छांव पर

बहुत हौले–हौले नाच रहा हूं

सब संस्कृतियां मेरे सरगम में विभोर हैं

क्योंकि मैं ह्रदय की सच्ची सुख–शांति का राग हूं।

बहुत आदिम, बहुत अभिनव।"[17]

शमशेर बहादुर ने मनुष्य की असामाजिक विसंगतियों पर भी अपनी कलम चलाई है। वे मनुष्य की सामाजिकता को बनाये रखने के लिये, उसकी लाज को ढांकने के लिए खुद धूल में मिलने को भी तैयार है। शमशेर ने स्वतंत्रता से पहले की सामाजिक स्थिति को ही कविताओं में चित्रण नहीं दिया है, अपितु बाद की समाजिक स्थिति और उसके भीतर गरीबी और पूँजीवाद की विद्यमानता को देखकर भारत की आजादी को झूठी साबित करते हुये लिखा है–

"शासन के लिजलिजे हाथ

लिजलिजे हाथ आगे आ जाते हैं

मैं क्या करूं ?

और मैं क्या कर सकता?

ये लिजलिजे झीने पर्दे के समान

झीने पर्दों जैसे

आगे फैलाकर सबके आगे

फैलते जाते हैं।"[18]

शमशेर की कविताओं में सामाजिकता की प्रखर चेतना तथा प्रगति के पथ पर अग्रसर होने की प्रबल इच्छा दिखाई देती है। समाजवाद और विश्व शांति के लिये किये गये कवि के संघर्ष निश्चित रूप से एक साहित्यकार के रूप में उनका अतुलनीय योगदान है। शमशेर की कविताओं में देश, समाज, विश्व शांति की बातें मौजूद है। कवि उपरोक्त बातों को अपना कर्म भी समझते हैं। 'बैल' कविता में शमशेर ने समाज के भीतर व्याप्त किसानों का शोषण, गरीबी, भूख, कठिनाईयों से घिरे हुये व्यक्ति, डरे–सहमे हुए आदमी, मूक दृष्टा शोषितों को, गन्दी गलियों में रहने वाले मजदूरों, असहाय व्यक्तियों, झूठ और फरेब, सुख और दुःख के बीच जी रही जनता की स्थिति को चित्रित किया है। कविता में स्पष्ट रूप से दर्शाया है कि– मुझे श्रम में इस तरह निचोड़ा जाता है जैसे घानी में एक–एक बीज को कसकर निचोड़ा जाता है।

"कभी–कभी मैं अपने इसी श्रम में

कहां खो जाता हूं, कुछ पता नहीं चलता

यह सारी दूनिया मुझे बैल मालूम होती है"[19]

हिन्दी साहित्य में यथार्थ चित्रण की व्यवस्था का श्रेय मुन्शी प्रेमचन्द को जाता है। सबसे पहले प्रेमचन्द की रचनाओं में ही सामाजिक स्थितियों का वास्तविक चित्रण हुआ है। गद्य के साथ–साथ पद्य की रचनाओं में भी यथार्थवाद सामने आया है। कवि निराला की 'वह तोडती पत्थर' और 'भिक्षुक' कविताएं इसका ज्वलंत उदाहरण हैं।

यथार्थ में रचनाकार अपने आस–पास घटित सभी विषयों पर निष्पक्ष, ईमानदारी और निडरता के साथ लिखता है। वास्तविक संदर्भो में "यथार्थवाद साहित्य की एक शैली नहीं, बल्कि एक धारा है।"[20]

शमशेर बहादुर की सभी रचनाएं यथार्थचित्रण की कसौटी पर खरी उतरती हैं। शमशेर के काव्य में जनता व समाज की स्थितियों के अनेकानेक यथार्थवादी रूप प्रस्तुत हैं। शमशेर एक संवेदनशील कवि होने के कारण उनके काव्य में यथार्थ का स्वरूप भी बहुत ऊँचा है। उनके इस यथार्थवाद के पीछे उनके जीवन की विभिन्न परिस्थितियां भी रही हैं। अपने आत्मीय जनों की मृत्यु ने शमशेर को भीतर से खोखला कर दिया था, इसी कारण से वे काल्पनिक दुनिया को छोड़कर यथार्थ की दुनिया की और मुड़े है। उनका यह रूप उनकी कविताओं में दिखाई देता है। शमशेर ने खुद लिखा है कि "सन् 1938–39 से 42 तक मेरा रूझान बिल्कुल अपनी ही दुनिया के अंदर खिंचते चले जाने की तरफ रहा।"[21] उन्हें अपने जीवन के अकेलेपन व आन्तरिक घुटन ने संघर्षशील बनाया है। कवि को द्वितीय महायुद्ध के बाद हुए मानवीय मूल्यों के ह्रास ने भी सोचने के लिए विवश किया है। इस महायुद्ध की घटनाओं से ही वे अतियथार्थवाद की ओर आगे बढ़े है। उनकी कविता 'सींग और नाख़ून' व 'लोहे के बख्तर' में आदमी के भीतर कठोरता एवं पशुता का जीवंत चित्रण हुआ है। पंक्तियां द्रष्टव्य है–

"सीने में सुराख़ हड्डी का।

आँखो में : घास–काई की नमी।

एक मुर्दा हाथ

पाँव पर टिका

उल्टी कलमं थामे।"[22]

यहाँ 'मुर्दा हाथ' और 'उल्टी कलम' थामे' जैसे बिम्ब अतार्कित होने पर भी यथार्थ को प्रकट कर रहे हैं।

शमशेर का यथार्थ भावबोध और संवेदना से निर्मित है। उनकी रचनाओं में सत्य व यथार्थ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कवि की रचनाओं में इस गहराई को देखा जा सकता है।

"तब मेरे लिये पहाड़ अरावली के

पुरातन – तम

खोद खोद डाले गये होंगे

सदैव के एक भविष्य में अभी से

नग्नतम बिवाइयाँ दरारें

धरती के सीने में अन्दर तक चली गई हुई"[23]

शमशेर की कविताओं में उनकी छटपटाहट एवं उनके इतिहास बोध के ज्ञान व उसके यथार्थ को देखा जा सकता है। उनकी कविताओं में उल्हास, हर्ष, सुख–समृद्धि के साथ सामाजिक द्वन्दों, विशाद, करूणा और मानवीय प्रेम की गहरी तड़प देखने को मिलती है। यथार्थ के विषय में कवि शमशेर ने लिखा है –"हमारे ही यहाँ की सांस्कृतिक परम्परा में देखिए –'सत्य या यथार्थ की व्यंजना जिस रूप में पाई जाती है उसमें यथार्थ और अयथार्थ मूर्त व अमूर्त का मिश्रण मिलता है।"[24] उनकी कविता में ग्वालियर में हुये मजदूर आंदोलन को इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

"य' शाम है

कि आसमान खेत है पके हुए अनाज का।

लपक उठीं लहू–भरी दरांतियां,

–कि आग है :

धुआं–धुआं

सुलग रहा

गवालियर के मजूर का ह्रदय।"[25]

शमशेर बहादूर की कविताओं को थोडी गहराई से देखने पर पता चलता है कि उनकी कविताओं मे कल्पना को यथार्थ से जोड़ा गया है। कवि का यह यथार्थ संवेदना के स्तर पर

करूणा व प्रेम मे परिवर्तित हो जाता है। यथार्थ से जुडकर कवि की करूणा अधिक प्रभावी लगती है। इससे कवि की व्यथा भी प्रकट होती हैं–

"अगिन व्यथा भर सहसा

कौन भाव

बिखर गया इन सब पर ?"[26]

इन पंक्तियों में कवि का यथार्थ बाह्य जगत सापेक्ष है। इसके अतिरिक्त कवि शमशेर का यथार्थ बोध आत्मसंगत आन्तरिकता भी लिये हुये है–

"समय के

चौराहों के चकित केन्द्रों से

उद्भूत होता है कोईः "उसे–व्यक्ति–कहो":

कि यही काव्य है।

आत्मतम।"[27]

अस्तु, शमशेर के यथार्थ मे मनुष्य के प्रति ऐसा दृष्टिकोण है जो कि निरपेक्ष न रहकर मनुष्य के सापेक्ष हो जाता है। इसमें लोगो की आंकाक्षाओं के प्रति एक व्याकुलता है। यथार्थ के प्रति यह दृष्टिकोण वास्तविकता के धरातल पर है। कवि ने अपनी कविताओं में यथार्थ को दर्शाने के लिये पूरा जोर लगाया है। उन्होंने जिस देश काल और वातावरण को अपने जीवन मे जिया है। उसे ही यथार्थ रूप देकर अपनी रचनाओ में व्यक्त किया है। कवि शमशेर की प्रगतिशील रचनाएँ विशेष रूप से नई कविता में स्वस्थ्य सामाजिक चेतना, शोषितों के प्रति गहरी सहानुभूति, सर्वहारा के प्रति निजताभरा भाव, मानवतावादी भावना, राष्ट्रप्रेम, विश्वास–आस्था और परिवर्तन की क्रान्तिकारी ध्वनि उनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से सुनाई देती है।

3:2 नई कविता में बौद्धिकता की प्रतिष्ठा

आधुनिक हिन्दी काव्य में बुद्धि या तर्क को आधार मानकर विकसित काव्य प्रवृत्तियों में नई कविता का प्रयोगवादी कविता के बाद दूसरा स्थान है। अक्सर नई कविता के कवियों में वे ही

कवि शामिल थे जो प्रयोगवादी कविता के रचियता रहे हैं। इन रचनाकारों ने जनभावना को ध्यान में रखकर, कि अब कोरी भावुकता से ही कविता का काम नहीं चलने वाला भाव संवेदनाओं के साथ कविता में विचार तत्त्व का भी होना जरूरी है के साथ कविता लिखी है। गणपतिचन्द गुप्त ने लिखा भी है कि "नये कवि अनुभूतियों से प्रेरित होकर काव्य–रचना कम करते है; अपने मस्तिष्क को कुरेद–कुरेदकर उसमें से कविता को बाहर खींच लाने का प्रयास अधिक करते हैं। वस्तुतः उनमें रागात्मकता की अपेक्षा विचारात्मकता अपितु अस्पष्ट विचारात्मकता अधिक होती है।"[28] शमशेर नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर है। उनकी कविताओं में बौद्धिकता की प्रतिष्ठा हुई है।

शमशेर बहादुर सिंह की अधिकांश रचनाएँ भावसंवेदना में भी वैयक्तिक अनुभूतियों की रही हैं। उनकी वैयक्तिकता ही उनको बौद्धिक कवि बनाती है। अशोक वाजपेयी ने लिखा भी है कि "उनकी आवाज... एक ऐसे कवि की आवाज है, जिसने अनेक भौतिक कष्ट और यंत्रणाएँ सहकर, बौद्धिक उपेक्षा की परवाह किए बिना, उस आवाज को दबने नहीं दिया, न शोरगुल में शामिल होने दिया।"[29]

शमशेर की कविताओं पर 'दुरूह' होने का अक्सर आरोप लगता रहा है। परन्तु उनकी वैयक्तिक अनुभुतियाँ जब भी मूर्त से अमूर्त की स्थिति में जाती है तब उनकी कविता में बौद्धिकता का समावेश होता है। यह उनके गम्भीर चिन्तन का परिणाम है। उनकी कविता 'यह विवशता' जिसमें कवि ने भावनाओं के खण्डित होने पर अपनी विवशता को मौन होकर झेला है। कवि ने प्रतीकों का सहारा लेकर बिम्ब भी कविता में निर्मित किये है। यही उनकी बौद्धिकता का असली प्रारूप है–

"भावनाओं के सलीब

स्वयं कांधा बन उठे–से हैं

कठिनतम।

हड्डियों के जोड़

खुल रहे हैं।

टूटते हैं बिजलियों के स्वप्न के आंसू:

आंख–सी सूनी पड़ी है भूमि।

क्रांत अंतर मे अपार

मौन।"[30]

कवि शमशेर एक संवेदनशील कलाकार थे। इस कविता में कवि अपनी विवशता को काँधे का बोझ मानकर झेलते है। शरीर के सभी अवयवों के शिथिल हो जाने पर मौन रह जाना ही उनको श्रेष्ठ प्रतीत होता है। कहावत भी है कि 'बुरे दिनों में मौन रहना ही श्रेष्ठ है' उपरोक्त कविता में कवि भावसंवेदना से ज्ञान संवेदना के साथ जुड़ते है।

शमशेर जनवादी कवि थे। उनकी जनवादी काव्य–साधना जनवादी और क्रान्तिकारी शक्तियों के पक्ष में आजीवन चलती रही है।[31] उन्होंने हर स्थिति में श्रमशील किसान, पीड़ितों की आवाज को उठाया है। सभी के लिए मुक्ति की कामना करने वाले कवि साम्प्रदायिक शक्तियों से जहाँ लड़ते हुए दिखाई देते है वहा पर उनकी बौद्धिक चेतना अपने प्रखर रूप में होती है। 'भारत की आरती' कविता में कवि सभी प्रकार से जनता के उन्नत होने की बात करते है–

"साम्राज्य पूंजी का क्षत होवे

उँच–नीच का विद्यान नत होवे

साधिकार जनता उन्नत होवे

जो समाजवाद जय पुकारती।

x x x

यह किसान कमकर की भूमि है

पावन बलिदानों की भूमि है

भव के अरमानों की भूमि है

मानव इतिहास को संवारती।"[32]

शमशरे ने मानव जीवन के विविध विषयों को कविता का केन्द्र बनाया है। जिनमें भिन्न–भिन्न स्थितियों के चित्रण को प्राथमिकता दी है। सत्य कटू होता है कवि ने इसे भी अपने

विवेक से प्रिय लगने वाला बनाया है। "शब्द के कर्म और मर्म को अधीर त्वरा के साथ पकड़ने और पहचानने वाले अद्वितीय कवि शमशेर के यहाँ अन्दर पछाड़ खाता हुआ समुद्र है, तो बाहर प्रशान्त नीला दरिया। उनकी अनुभूतियों में आदिम उर्जा है, तो उनके काव्य–कौशल में अत्यन्त आधुनिक परिष्कार। अन्ततः शमशेर की कविता के केन्द्र में है आदमी, दो कुहनियों से पहाड़ो को ढेलता हुआ, पतझड़ के जरा अटके हुए पत्ते सा, ताक पर अपने हिस्से की धरी होने पर बड़ी रात गये काम से लौटने पर शक करता हुआ, होली के भय, दीवाली और ईद–मुहर्रम के एक ही भाँति के आंतक से त्रस्त, अन्तिम लोरियों के बजाय अँधेरे की तलवारों से जूझता हुआ, गंगा में कीचड़ की तरह सोता हुआ, बीती हुई अनहोनी और होनी की उदास रंगीनियों में फकत उलझा हुआ, शब्द के परिस्कार को स्वयं दिशा मानता हुआ, ह्रदय की सच्ची सुख–शान्ति का बहुत आदिम, बहुत अभिनव राग गाता हुआ आदमी। शमशेर की कविता हमारे वक्त का जतन से सहेज कर रखा गया तिमसालदार आईना है वह आदमीनामा, जो व्यथा और हर्ष के साथ अनेक जीवन छवियों को लेकर अनेक रंगतो में लिखा गया है।"[33]

संतुष्टी और असंतुष्टी मानव जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग है। शमशेर ने अपने आत्मविश्वास को कभी डिगने नहीं दिया। अपने जीवन की विकटतम परिस्थितियों में संघर्ष करते रहे है। 'काल तुझसे होड़ है मेरी' कविता में कवि खुद को अपराजित मानते हुए, अन्तः संघर्ष करते हुए काल को चुनौती देते है। यह कवि शमशेर की अतिबौद्धिकता ही तो है–

"क्रान्तियाँ, कम्यून,

कम्युनिष्ट समाज के

नाना कला विज्ञान और दर्शन के

जीवन वैभव से सम्वित

व्यक्ति मैं।

मैं, जो वह हरेक हूँ

जो, तुझसे, ओ काल, परे है।"[34]

नई कविता का कवि निराशा और नियति के सामने सर्मपण नहीं करता है वह उस स्थिति से टकराता है। कवि शमशेर की एक ओर कविता है 'रेडियो पर युरोपियन संगीत सुनकर' में वे नियति को फटकारते से दिखाई देते है–

"सलाम! ...

मेरे दर्द से हमकलाम

न हो!

जा, अब सो,

न रो।

तू मेरी बेबस बाँहों पर, सर रख कर, ओह,

न रो!"[35]

बौद्धिक कवि तर्कवाद का आश्रय लेकर मन में शंका को स्थान देता है। शमशेर अपनी ऐसी स्थिति में भी सामाजिक वास्तविकता को नहीं भूलते है। 'माई' कविता के कुछ अंश द्रष्टव्य हैं–

"बोलती थी जो उदासी की–

बहन–सी ; मा, थकी :

आज वह चुप है, शान्त है, अति ही ...

शान्त है।

x x x

पूछती है माई/एक बात :

(स्वप्न में वह आयी

हँसी लिये/जागरण की रात)

कौन बात?"[36]

कवि शमशेर ने बौद्धिक कविता लिखने का जो शिलशिला जारी किया उसमें उनकी सक्रिय भागीदारी न होकर जब भी उनकी भावसंवेदनाओं के साथ वैयक्तिक संवेदनाओं ने जोर पकड़ा हैं। तब कवि अपने बुद्धि या विवेक को नहीं रोक पाएं है, उनकी कविता में बौद्धिकता प्रबलतर होती गई है। कवि शमशेर की कविताओं में बुद्धि तत्त्व का भरपूर समावेश मिलता है।

3.3 नई कविता में प्रकृति एवं प्रेम चित्रण

नई कविता में प्रेम और वासना दोनों के रंग सम्मिलित हैं। उनके प्रणय–प्रसंग में कहीं पौराणिक पवित्रता दिखाई देती है तो कहीं मांसल एवं एन्द्रिक प्रेम। प्रेम के सभी रूपों को यहाँ दर्शाया गया है। नयी कविता में प्रेम के साथ प्रकृति चित्रण भी बहुत ही सुन्दरता के साथ किया गया है। बिंब योजना, प्रतीक, नारी बिंब उद्दीपन रूपों, नए–नए उपमानों के माध्यम से प्रकृति का चित्रण किया गया है। शमशेर बहादुर का बाल्यकाल देहरादून जैसी पहाड़ी और सौन्दर्य से भरपूर क्षेत्र में व्यतीत होने के कारण वे सहज रूप से प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति आकर्षित दिखाई देते हैं। प्रकृति के अशेष सौन्दयै को, जीवन में उसके महत्त्व को देखने और पहचानने वाले, उसके रूप, रस, गंध को आत्मसात करने वाले चित्रकार या संगीतकार की तरह अनुभव करने वाले और उसमें डूबने वाले वे इकलौते समर्थ कवि हैं।[37]

कवि शमशेर ने अपनी कविताओं में प्रकृति चित्रण पूरी स्वतंत्रता के साथ किया है, जो पारम्परिक प्रकृति चित्रण से पूरी तरह से अलग हटकर के है। 'उषा', 'एक पीली शाम', 'सूर्यास्त', 'संध्या' इनकी प्रकृति सौन्दर्य पर आधारित प्रमुख कविताएँ है। जिनमें प्रकृति को विविध रूपों में प्रस्तुत किया है।

शमशेर की कविता प्रकृति और उसके विविध आयामों का प्रतिनिधित्व करती है। उनकी कविताओं में प्राकृतिक चित्रों का असीम भण्डार है। मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण प्रकृति चित्रण, कवि शमशेर की अपनी विशेषता है। उनकी कविता 'एक पीली शाम' अनेक अर्थ इच्छाओं को खोलने वाली है। उसमें भाव से साभिप्राय तक की उनकी यात्रा का चित्रण मिलता है। इस कविता में कवि प्रेयसी विरह से उदासीन दिखाई देते है।

"एक पीली शाम

पतझर का जरा अटका हुआ पत्ता

शांत़

मेरी भावनाओं में तुम्हारा मुखकमल

कृश म्लान हारा–सा

(कि मैं हूँ वह/मौन दर्पण में तुम्हारे कहीं?)"[38]

शमशेर के प्रकृति चित्रण में 'शाम' उनका विशेष प्रिय विषय रहा है। 'शाम' उदासी का प्रतीक है और उदासी प्रेमिका विरह से जुड़ी है। कवि ने अपनी कविता में 'शाम' का बार–बार प्रयोग किया है। 'शाम' के क्षण में कवि परम तृप्ति को भी प्राप्त करता है और उदास भी होता है यही समय उनके रचना संसार का क्षण भी होता है। उनकी 'शाम' कविता में यह सब कुछ चित्रित है। शमशेर ने प्रकृति के बहुत प्रभावात्मक चित्र प्रस्तुत किए हैं। प्रकृति के मनोरम दृश्यों में वे अवसाद, पीड़ा, आकांक्षा आदि मानवीय भावनाओं को मिलाकर एक साथ कविता में रखते है। ये कविताएं निश्चित रूप से शमशेर के प्रकृति प्रेम को अभिव्यक्ति करती हैं। 'धूप' कविता कलियों में और फूलों में यौवन के स्वप्नों को कविता में अतिसय भावना के साथ चित्रित करती है। इस कविता में प्रकृति के आल्मबन रूप की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत है–

"नींद–भरी आलस की भोर का

कुंज गदरया है

यौवन के सपनों से

अभी अनजान मानो

x x x

चुम्बन की मीठी पुचकारियाँ

खिला रहीं कलियों को फूलों को हँसा रहीं"[39]

कवि शमशेर ने दैनिक जीवन में काम आने वाले उपादानों को उपमानों के रूप में प्रयुक्त किया है। जिससे वे वास्तविकता के धरातल से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। कवि ने अपनी नैसर्गिक प्रतिभा से प्रकृति के असीम सौन्दर्य को अपनी लेखनी से विस्तृत दायरे में चित्रित किया है। कवि शमशेर ने 'उषा कविता' में पैनी नजर से सूर्योदय से पूर्व के आसमान के विविध रंगों का वर्णन

बड़ी ही खूबसूरती से किया है। इन पंक्तियों में कवि ने सारे क्रियाकलापों की चमत्कारिकता को चरम पर पहुंचा है तथा यही कवि की वास्तविक अभिव्यक्ति भी है।

"और...

जादू टूटता है इस उषा का अब

सूर्योदय हो रहा है।"[40]

कवि शमशेर भारी भरकम उपकरणों को ही कविता को सजाने के लिए काम में नहीं लेते बल्कि वे जीवन के सामान्य उपकरणों से कविता में चार चाँद भी लगाते है–

"हल्की मीठी चा–सा दिन,

मीठी चुस्की सी बातें"[41]

कवि के द्वारा 'सूर्यास्त' शीर्षक कविता में 'किरण' को क्रांति का प्रतीक बताया है। वे सूर्यास्त के समय को अपने जीवन, अपने हृदय के भीतर अनुभव करते है। कवि अपने अतीत की स्मृति में खोया हुआ सूर्यास्त के समय उठने वाले भावों की हिलोर का सजीव वर्णन करते हुए लिखते है–

"आज के दिनमान की परछाइयों में

किरण का मासूम वैभव।

किरण का मासूम वैभव

यह किधर झुकता है?"[42]

'धूप' कविता मे नवजागरण के स्वर भरते हुए कवि शमशेर ने कहा है–

"धूप थपेड़े मारती है थप्–थप्

केले के हातों से पातों से

केले के थंबों पर

x **x** **x**

धूप की चुस्कियाँ

पिये जाय, आँख मीच, सोनीली माटी

कन्–कन् जिये जाय"[43]

शमशेर ने 'सूर्यास्त' कविता में शाम का वर्णन का वर्णन करते हुए अपनी कल्पना शक्ति की तूलिया से पूरे आसमान पर काव्य–रचना करते है पर वही विस्तार, क्रियाकलाप भी उसके भीतर होता है–

"सूर्य मेरी अस्थियों के मौन में डूबा।

गुट्ठल जड़ें

प्रस्तरों के सधन पंजर में

मुड़ गयीं।"[44]

शमशेर ने विरह, पीड़ा, लालसा, निराशा, स्मृति इत्यादि मनोभावों को प्रकृति में प्रतिफलित किया है। उनकी ऐसी कविताओं में प्रकृति की सप्राणता और प्रकृति सौन्दर्य की सहजता भी प्रस्फुटित हुई है। अपनी उदासी को व्यक्त करने के लिए शमशेर ने सूर्यास्त का सहारा लिया है। वास्तव में सूर्यास्त उनकी उदासी को प्रतिबिम्बित करता है। सूर्य बिना किसी उल्लास के मौन में डूब जाता है। और फिर अनेक यादें शाम के साथ उग आती हैं।

"व्योम में फैले हुए महराव के विस्तार

स्तूप औ' मीनार नभ को थामने के लिए

उठते गये।

विकटतम थे अति विकटतम

विगत के सोपान पर्वतश्रृंग।"[45]

कवि की निजी दृष्टि और भावनाएं प्रकृति के सर्व सुलभ सौन्दर्य को उकेरती हैं। सूर्यास्त कविता में तमाम बदलते रंग खूबसूरती से इस कविता में उभरते हैं। "कवि की काव्य प्रेरणा में हमारे आसपास का वातावरण और हमारा अनुभव संवाद महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।"[46] कवि शमशेर ने मानवमन के भावातिरेकों को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया है। 'धूप कोठरी के

आइने में खड़ी होकर', 'मुस्कराने वाली धूप' का कल्पना चित्र प्रस्तुत करते–करते कवि मां के उदास मुख की स्मृति का चित्रण करने लगते हैं।

"पारदर्शी धूप के पर्दे

मुस्कराते

मौन आँगन में

मोम–सा पीला

बहुत कोमल नभ

x x x

आज बचपन का

उदास माँ का मुख

याद आता हैं"[47]

यहाँ माँ की स्मृति छाई हुई होने के कारण नभ को मोम–सा पीला बताया गया है। कवि शमशेर ने जीवन और सागर की विशालता को बड़ी सजीवता के साथ चित्रित किया है। जीवन और सागर की विशद्ता इतनी गहरी है कि इसकी थाह संभव नहीं है –

"फेन–फूलों से गुथी सागर–लटों के बीच–बीच

थाह् लेताविशद/जल विशद।/विशद।"[48]

कवि शमशेर ने प्रकृति का मानवीकरण करते हुए प्रकृति में चेतनता आरोपित कर दी है। 'सागर तट' कविता में लहरों और चांदनी को मानवीय चेष्टाएँ करते बताया है।

"धुन रही थीं सर

व्यर्थ व्याकुल मत्त लहरें

x x x

चांदनी की उँगलियाँ चंचल

क्रोशिये से बुन रही थीं चपल

फेन–झालर बेल, मानो।"[49]

'प्रभात' कविता में कवि शमशेर ने सूर्य को एक एड़ी पर खड़ा हुआ बताया है–

"रवि

कमल के नाल पर बैठा हुआ मानो

एक एड़ी पर टिकाये/मौन।"[50]

शमशेर बहादुर सिंह ने विभिन्न ऋतुओं पर सुन्दर कविताएँ लिखी हैं। ऋतुराज बसंत पर लिखी कविताएँ तो सदैव मादकता से भरी होती हैं। 'वसंत आया' कविता में युवतियों पर आए वसन्त कालीन प्रभाव को चित्रित किया है–

"फिर बाल वसंत आया, फिर बाल वसंत आया।

फिर आया वसंत!

फिर पीले गुलाबों का, रस–भीने गुलाबों का

आया वसंत!"[51]

'सावन' शीर्षक कविता में कवि ने सावन ऋतु के मनोरम वर्णन के साथ–साथ अपनी प्रेम भावना को भी अभिव्यक्ति दी है। विभिन्न ऋतुओं के ऊपर लिखी गई कविताओं में कवि शमशेर ने प्राकृतिक वातावरण में जीने का संदेह भी दिया है। 'सावन' कविता में प्रकृति की बाह्य सुन्दरता का चित्रण बड़ा ही सहज और सुन्दर ढंग से किया गया है–

"मैली मटियाली मिट्टी की चाक

भीगी है पूरब में

–सारे आसमान में।

नीली छाया उसकी चमक रही है

जैसे गीली रेत

(यह जोलाई की पन्द्रह तारीख है;/बादल का है राज)"[52]

'(मिट्टी के चाक यहां भीगने से, एक स्पर्श का) बोध देने से हो सकता है।'

शमशेर ने प्राकृतिक चित्रण को चरमोत्कर्ष पर पहुंचाया है। इनकी कविताऐं गहरे व सूक्ष्म सौन्दर्य के साथ–साथ मानव की भावनाओं को भी व्यक्त करती है। 'एक पीली शाम' कविता जहां प्रकृति के मनोरम दृश्यों में पीड़ा, उदासी, वासना जैसी भावनाओं को व्यक्त करती है, वहीं उनकी 'उषा' कविता पल–पल परिवर्तनशील संसार के सौन्दर्य को उद्घाटित करती है। इनकी सभी कविताओं में प्रकृति के जीवन्त प्रतीकों के दर्शन होते हैं। कवि शमशेर प्रकृति चित्रण में प्रकृति और मानव के अटूट संबंध का मुग्धारी वर्णन करते है। उन्होंने एक सफल चितेरे के समान प्रकृति के नैसर्गिक सौन्दर्य को अपनी कविता के कैनवास पर उतारा कर रख दिया है। इससे शमशेर की प्रकृति से निकटता जाहिर होती है। इनकी कविताओं में प्रकृति की सप्राणता और प्राकृतिक–सौन्दर्य भी सहज रूप में दिखाई देता है। प्रेम मानव की एक विशिष्ट प्रवृत्ति है। सृष्टि प्रक्रिया को निरन्तर बनाए रखने में प्रेम अति आवश्यक है। प्रेम के द्वारा ही मानव ह्रदय पवित्र और कोमल बनता है। प्रेमचन्द के अनुसार "प्रेम ह्रदय के समस्त सद्भावों का शान्त, स्थिर, उदारहीन समावेश है।"[53]

साहित्य में प्रेम के विविध रूप सामने आए हैं। यथा प्रकृति प्रेम, देश प्रेम, नारी प्रेम, लौकिक–अलौकिक प्रेम, ईश्वर प्रेम इत्यादि। हिन्दी साहित्य के सभी कालों में प्रेम का वर्चस्व रहा है। लेकिन उसके रूप भिन्न भिन्न रहे। प्राचीन काल में नारी देह और वासना को प्रेम की संज्ञा दी गई। छायावादी युग में प्रेम और सौन्दर्य का उन्नत और स्वस्थ रूप देखने को मिलता है। नई कविता में प्रेम को एक अनूठी देह वासना के रूप में स्वीकार किया गया। नए कवियों ने प्रणय चित्रण में मिलन आकांक्षा विरह की यथार्थता, व्याकुलता आदि को चित्रित किया है। नई कविता में स्वतंत्र प्रेम को स्वीकृति मिली है जिसमें मर्यादा और संकोच की कमी है। शमशेर ने प्रेम के बारे में एक बार मलयज से कहा था कि "कविता के माध्यम से मैंने प्यार करना अधिक से अधिक चीजों को प्यार करना सीखा है।"[54] विजय देव नारायण साही ने भी बहुत पहले शमशेर की काव्यानुभूति के बारे में निष्कर्ष निकाला था कि, "तात्विक रूप में शमशेर की काव्यानुभूति सौंदर्य की ही अनुभूति है। जिन लोगों का ख्याल है कि छायावाद के बाद हिन्दी कविता नें सौंदर्य का दामन छोड़ दिया है, उन्होंने शायद शमशेर की कविताओं का आस्वादन करने का कष्ट कभी नहीं किया। मैं एक कदम और आगे बढ़कर कहना चाहूँगा कि आज हिन्दी में विशुद्ध सौन्दर्य का कवि यदि कोई हुआ है तो वह शमशेर है... शमशेर की सारी कविताएँ यदि शीर्षकहीन छपे, या उन

सबका एक ही शीर्षक हो सौंदर्य, शुद्ध सौंदर्य तो कोई अंतर नहीं पड़ेगा।"[55] कवि का यह विशुद्ध सौंदर्य उनके प्रेम की पराकास्ठा भी है।

रूसी साहित्यकार बोरिस पास्तरनाक ने सुन्दर स्त्री की प्रशंसा करते उसके सौंदर्य की थाह पाने को, जीवन की गुत्थी सुलझाने के समाने माना है।[56] इस प्रकार सौंदर्य का रहस्य जीवन का रहस्य है इसका मूल प्रेम में है। अपनी प्रेमिका के प्रति पूर्णतः समर्पित कवि शमशेर ने सहज प्रेम और रोमानी संवेदनाओं के काल्पनिक चित्र बनाए हैं। विरह के क्षणो मे उन्हें प्रेमिका की याद आती है, लेकिन इसमें भी उन्हें आनन्द की अनुभूति होती है। शमशेर की कविताएं मांसल और एन्द्रिय प्रेम के साथ–साथ सामाजिक प्रेम व विश्व प्रेम तक चली जाती हैं। 'तुमको पाना है अविराम' कविता में शमशेर ने युवावस्था की भावाभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। वे प्रेम को सत्य और शाश्वत मानते है। प्रेयसी के अलावा सबकुछ मिथ्या है। उससे मिलने के लिए वे कुछ भी करने को तैयार है। इस प्रकार यह कविता उनके प्रेयसी के प्रति समर्पण भाव को व्यक्त करती है।

"तुमको पाना है, अविराम

सब मिथ्याओं मे,

ओ मेरी सत्य!

मुझसे दुर अलग न जाओ।

मुझको छोड़ न दो

कहीं मुझको छोड़ न दो

तुम्हें मेरे प्राणों की सैगंध।"[57]

शमशेर प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। प्रेम उनके लिए अनिवार्य है। प्रेम का रंग उनकी कविताओं में गहराई से समाया हुआ है। यह प्रेम अनेक स्तरों पर दिखाई देता है। उनकी चेतना में सौन्दर्य की सृष्टि करने में प्रेम महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनका प्रेम समर्पण में ही निवास करता है।

"ओ मेरी ही केवल तुम

मेरे साथ रहो

मुझको छोड़ो नहीं

स्वप्न में भी,

x x x

मधुरतम सुवास बन

उच्च से उच्चतर मैं हूंगा तुम्हारे ब्रह्मांड में–

तुम्हारे हृदय में–

तुम्हारा ही बनूंगा मैं, केवल तुम्हारा।"[58]

कवि शमशेर प्रेम को हृदय के अन्दर बजने वाली घण्टी मानते है। उन्होंने प्रेम की अतिशयता को व्यक्त करते हुए 'सौन्दर्य' कविता में लिखा है–

"वह जो तुम्हारे हृदय में बज रहा है

मैं उस साज में एक चांद

देखता हूँ:

उसको पकड़ना चाहता हूँ:

मेरी अपनी इस चाह के अलावा मैं कुछ नहीं

कुछ नहीं!"[59]

शमशेर के प्रेम में तीव्रता है और जोश भी है। वे प्रेम में अहं का विगलन तो चाहते हैं, लेकिन व्यक्तित्व का नहीं। अर्थात वे अपने बजूद को बनाएं रखना चाहते हैं–

"हां, तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मछलियां लहरों से करती है

...जिनमे वह फंसने नही आतीं,

जैसे हवाएं मेरे सीने से करती हैं

जिसको वह गहराई तक दबा नहीं पातीं,

तुम मुझसे प्रेम करो जैसे मैं तुमसे करता हूं।"[60]

कवि शमशेर अपनी प्रियतमा के लिए इंतजार में सभी सीमाएं तोड़ते हुए दिखाई देते हैं। वे उसकी प्रतीक्षा अगले जन्म तक भी कर सकते हैं वे प्रियतमा के न होने पर भी उसकी अनुभूति करते हैं–

"खुश हूँ कि अकेला हूँ,

कोई पास नहीं है–

बजुज एक सुराही के,

बजुज एक चटाई के,

बजुज एक जरा–से आकाश के,

जो मेरा पड़ोसी है मेरी छत पर

(बजूज उसके, जो तुम होतीं–मगर हो फिर भी

यहीं कही अजब तौर से।"[61]

शमशेर की प्रेम अभिव्यक्ति में मर्यादा व संकोच की न्यूनता दिखाई देती है। उनका प्रेम मांसलता के उन्माद से भरा दिखाई देता है। वे यौवनमय प्रेमिका पर अपनी प्रेम वर्षा करना चाहते हैं–

"अंकित कर विकल हृदय–पंकज के अंकुर पर

चर चिह्न,

अंकित कर अंतर आरक्त स्नेह से नभ, कर पुष्ट,

बढ़ूं

सत्वर , चिरयौवन वर ,सुन्दर!–

उठाओ निज वक्ष : और और कस, उभर!"[62]

शमशेर अपने एक 'गीत' में प्रेम को उपभोग का रूप देते हुए, अपनी प्रियतमा को प्रेमाग्नि से सुहाग देना चाहते हैं –

"धरो शिर

हृदय पर

वक्ष–वह्नि से, –तुम्हें

मैं सुहाग दूँ–

चिर सुहाग दूँ!"[63]

कवि ने 'वह सलोना जिस्म' कविता में प्रकृति के सुन्दर रंगों को वैयक्तिक अनुभूति के साथ मिलाकर प्रेम की स्वप्नमयी अभिव्यक्ति की है–

"चांदनी से भरी भारी बदलियां हैं,

खाब में गीत पेंग लेते हैं

प्रेम की गुइयाँ झुलाती हैं उन्हें;"[64]

शमशेर संसार के सभी लुभाव ने विषयों से बढ़कर यथाः सांसारिक द्रव्यों, रूप, यौवन आदि से बढ़कर प्रेम को मानते हैं–

"द्रव्य नहीं कुछ मेरे पास

फिर भी मैं करता हूँ प्यार

रूप नहीं कुछ मेरे पास

फिर भी मैं करता हूँ प्यार

सांसारिक व्यवहार न ज्ञान

फिर भी मैं करता हूँ प्यार

शक्ति न यौवन पर अभिमान

फिर भी मैं करता हूँ प्यार"[65]

शमशेर की कविताओं में प्रेम की पराकाष्ठा प्रदर्शित होती है। प्रेम कवि के लिए पवित्र भावना हैं जिसमें द्वेष, ईर्ष्या का कोई स्थान नहीं हैं। वस्तुतः यही उनके प्रेम को समृद्ध और ऊँचा बनाता है। 'टुटी हुई बिखरी हुई' कविता में शमशेर ने प्रेम को जीवन के लिए बरकत माना है–

"अगर मुझे किसी से ईर्ष्या होती तो मैं

दूसरा जन्म बार–बार हर घंटे लेता जाताः

पर मैं तो जैसे इसी शरीर से अमर हूँ–

तुम्हारी बरकत!"[66]

नई कविता के प्रसिद्ध आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी ने शमशेर के काव्य की उपलब्धि को बताते हुए लिखा है कि उन्होंने प्रेम और सौंदर्य को पूर्व–निर्धारित उदात्तता के घेरे में से निकाला है। उनके प्रेम और प्रणय–निवेदन में कहीं कोई नाटकीयता नहीं है[67] शमशेर की कविताओं में प्रेम वैयक्तिक स्तर पर होने के अतिरिक्त समष्टि के रूप में भी दिखाई देता है, जो प्रेम, पीड़ा, वेदना उनकी प्रियतमा के लिए दिखाई देती है, वही देश, समाज, शोषित वर्ग के लिए भी है। 'मैं भारत गुण गौरव गाता', 'भारत की आरती', जैसी कविताएं देश–प्रेम को व्यक्त करती हैं। यद्यपि वैयक्तिक प्रेम पर वे उच्च कोटि के हैं, परन्तु उनकी रचनाएँ उनके देश और समाज के प्रति प्रेम की व्यापकता को दर्शाने में समर्थ हैं–

"भारत की आरती

देश–देश की स्वतंत्रता देवी

आज अमित प्रेमी से उतारती।"[68]

शमशेर की प्रेमपरक कविताओं में हार्दिकता और संसक्ति इतनी सघन है कि कई बार यह तय करपाना कठिन हो जाता है कि हम कोई कविता पढ़ रहे हैं या कोई हृदय लेख। उनकी कविताओं में हृदयगत प्रेम और वेदनाओं का भावप्रणव संयोजन है।

"गन्दुमी गुलाब की पंखुडियाँ

खुली हुई हैं

आँख की शबनम

दूर चारों तरफ

हंस रही है

यह मीठी हँसी

जो मेरे अन्दर धुलती जा रही है/तुम हो।"[69]

शमशेर की कविताओं में प्रेम एक भाव की तरह नहीं, बल्कि जीवन के अस्वाद की तरह आता है। 'वे मकई से वे लाल गेहूँए तलवे' शीर्षक कविता में अपनी एन्द्रिय चेतना को जगाते हैं और 'मर्याना रानों की चमक' को 'सूरज की आईना जैसे नदियाँ कहते हैं। इस प्रकार शमशेर की रचनाओं में एन्द्रिय प्रेम शुद्ध रूप में दिखाई देता है। उनकी प्रेम भरी कविताओं में अधिकांशतः अतृप्ति, असन्तोष और चाह की प्रबलता हैं। शमशेर की कविताओं में प्रेम ही जीवन का कारण दिखाई देता हैं। इन प्रेमाधारित कविताओं में प्रेम की कामना, अपने को कहीं विलीन कर देने की निश्छल व्याकुलता, समर्पण भाव दिखाई देता हैं। शमशेर की कविताओं में प्रेम की एन्द्रियता की सघनता है जिसे वे दरिया, गुलाब, सूर्य, शाम, सुबह, आंख, झरना, भंवर, इत्रपाश, केला, स्तम्भ प्रेम, सौन्दर्य से पूरित ऐन्द्रिय सघनता और वेदना की मानवीय उदात्तता की समन्विति है। कवि प्रेम के लिए प्यासे है। इस संदर्भ में उनकी 'टूटी हुई बिखरी हुई' कविता की पंक्तियां द्रष्टव्य है–

"मुझको प्यास के पहाड़ों पर लिटा दो जहां मैं

एक झरने की तरह तड़प रहा हूं।

मुझको सूरज की किरनों में जलने दो–

ताकि उसकी आंच और लपट में तुम

फौवारे की तरह नाचो।"[70]

प्रेम वेदना का यह मानवीय उदात्तीकरण शमशेर की इन्द्रियानुभूति की उत्कटता का प्रमाण है।

शमशेर प्रेम और कविता में डूबे हुए कवि हैं जो अपनी प्रियतमा को सदैव ही अपने से लिपटा हुआ पाते हैं और उसके मुख में आनन्द का स्थायी ग्रास बनकर खुश हैं–

"ऐसा लगता है जैसे

तुम चारों तरफ से मुझसे लिपटी हुई हो

मैं तुम्हारे व्यक्तित्व के मुख में

आनंद का स्थायी ग्रास... ग्रास हूं"[71]

शमशेर का प्रेम वृहद्तर मानवीय प्रेम है जो विराट् स्वरूप लेकर मनुष्य की आत्मा तक पहुंचता है। कवि के प्रेम में जड़–चेतन सभी शामिल हैं और यह प्रेम सहजता से समझ नहीं आता है। कवि कहते हैं–

"सरल से भी गूढ़, गूढ़तर

तत्त्व निकलेंगे

अमित विषमय

जब मथेगा प्रेम सागर

ह्रदय।"[72]

कवि शमशेर ने प्रेम के स्वरूप एवं गहराई का अत्यंत सटीक वर्णन किया है क्योंकि प्रेम से दूर होना अत्यन्त कठिन है–

"मैंने कितने किए उपाय

किंतु न मुझसे छूटा प्रेम

सब विधि था जीवन असहाय

किंतु न मुझसे छूटा प्रेम

सब कुछ साधा, जप, तप, मौन,

किन्तु न मुझसे छूटा प्रेम"[73]

इस प्रकार शमशेर ने प्रकृति के एसे किसी पक्ष को नहीं छोड़ा जिसका चित्रण उन्होंने नहीं किया हो। बैसे भी वे प्रकृति से बहुत स्नेह करते थे। वस्तुतः प्रकृति को ही उन्होंने अपने प्रेम की पीड़ा की आग में खूब तपाया भी है। मूल रूप से वे प्रकृति और प्रेम दोनों के कवि हैं। कवि शमशेर ने निजी संदर्भों में प्रेम, समष्टि के संदर्भों में प्रेम, देश प्रेम के संदर्भ प्रेम आदि विषयों को लेकर कविताएं लिखी है। शमशेर ने प्रेम को जीवन की अनिर्वाय शर्त माना है। शमशेर के लिए प्रेम ही सत्य है, बाकी सब मिथ्या (तुमको पाना है अविराम/काल तुझसे होड़ है मेरी) यह सत्य दैहिक बोध में उतना नहीं है जितना आत्मिक अनुमति में विमूल रूप से एक रोमानी कवि हैं।

3.4 नई कविता में आधुनिक भावबोध

नई कविता में वैचारिक स्तर पर आधुनिक भावबोध को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है, क्योंकि आधुनिक भावबोध काव्य निर्माण के लिए विशिष्ट स्थितियों का संकलन करता है। नये कवियों के अनुसार आधुनिक भावबोध एक प्रक्रिया है। वह प्रक्रिया जो परम्परा, इतिहास और रूढ़ि से विशिष्ट अर्थों से भिन्न है। यह जड़ता विरोधी है। काल की चेतना है और यह चेतना किसी का भी अन्धानुकरण न करके नये सत्य की खोज में लगी रहती है। यह वह अन्तःदृष्टि है, जो हमें जीवन के वास्तविक धरातल से जोड़ती है। "आधुनिकता बोध कोई रूढ़ धारणा या पराम्परिक नहीं है, बल्कि वह सही जीवन स्थिति को समझने की महत्त्वपूर्ण दशा है। जिसके बिना कविता और जीवन दोनों की यात्रा का सही–सही जायजा लेना सम्भव नहीं है।"[74] इस आधुनिक भावबोध को हम परिवेश के प्रति व्यक्ति की जागरूकता, जीवन को समझने की सामर्थ्य की संज्ञा भी दे सकते हैं। क्योंकि इस सामर्थ्य के बिना अपने काल को कोई भी आत्मसात् नहीं कर सकता ।

नई कविता में आधुनिक भावबोध के जिस दृष्टिकोण को ग्रहण किया गया है, वह परम्परा से आ रहे उन मूल्यों, उन स्थितियों का विरोध करती है जो व्यक्ति के विकास में बाधक है। व्यक्ति की स्वतंत्रता नई कविता की जान है। नई कविता जीवन के उन मूल्यों की स्थापना करना चाहती है जो उचित, सार्थक और व्यक्ति में निहित सर्जनात्मक क्षमता का उत्तरोत्तर विकास कर सके। वास्तविक अर्थों में यही दृष्टिकोण आधुनिक भावबोध है।

इतिहास के नाम पर संजोकर रखी गई सड़ी–गली रूढ़िवादी परम्पराएँ नई कविता में कदापि स्वीकार नहीं है। आधुनिक भावबोध कोई निरपेक्ष अवधारणा नहीं है, जिससे ऐसा प्रतीत होता हो कि अमुक–अमुक वस्तु या वृत्ति से सम्बन्ध विच्छेद कर लेना आधुनिक हो जाने का लक्षण है वरन् यह गतिशील जीवन की गुणात्मक और गत्यात्मक धारणा है। इसमें व्यक्ति के

विवेक की संगति है तथा युग और यथार्थ को समेटकर चलने की शक्ति है क्योंकि वह एक जीवन दृष्टि है जीवनरूढ़ि नहीं। डॉ॰ नरेन्द्र मोहन के अनुसार "आधुनिकता कोई निरपेक्ष धारणा या निरंकुश सिद्धान्त नहीं है। यह गतिशील आधुनिक स्थिति है, जिसका स्वभाव ठहरना नहीं, निरन्तर बदलना है।"[75] "आधुनिकता बोध एक निन्तर ऐतिहासिक वर्तमान है, जो वस्तुओं और स्थितियों के प्रति निष्ठवान है, जिसके मूल में एक ऐसी संघर्षशील दृष्टि है, जो जीवन–मूल्यों के निष्प्राण या रूढ़ हो जाने का विरोध करती है और नये सार्थक प्रतिमानों की स्थापना करना चाहती है।"[76]

आधुनिक भावबाध हमे वर्तमान स्थिति तक ही नहीं अपितु भविष्य तक भी पहुंचाता है। ऐसी ही विवेक शक्ति, परिवेश के प्रति सजगता, गत्यात्मक धारणा, युग का सत्य नई कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इसमें केवल शाब्दिक स्वतंत्रता नहीं बल्कि व्यवस्थामूलक मुक्ति की भावना प्रधान होती है। आधुनिक भावबोध ने शमशेर की कविताओं में युग चेतना को जोड़ दिया है। शमशेर की रचनाओं की मौलिकता और नवीनता उनके आधुनिक भावबोध में दिखाई देती है। मूलतः यथार्थ जीवन को काव्य में सम्प्रेषित करने की क्षमता कवि के आधुनिक भावबोध पर आश्रित होती है। शमशेर के विषय में यह बात खरी उतरती है। आधुनिक भावबोध के कारण ही शमशेर की कविता में युग चेतना सप्राण हो गई है। उनकी आधुनिक भावबोध की सजगता अत्यन्त समृद्ध और व्यापक है। 'भारत की आरती', 'सभ्य साम्यवादी', 'स्वतन्त्रता दिवस पर', 'घिर गया है समय का रथ' आदि कविताएँ शमशेर के आधुनिक भाव बोध के अच्छे उदाहरण हैं। शमशेर ने युग सत्य को स्वीकारते हुए भारत की सामाजिक व्यवस्था के सुचारू संचालन में साम्यवाद की भूमिका को महत्त्वपूर्ण माना है। अपनी रचनाओं में शमशेर मार्क्सवाद के प्रबल समर्थक दिखाई देते हैं। वस्तुतः मार्क्सवाद एक आधुनिक विचारधारा है जो वर्ग विषमता के कारण अस्तित्व में आयी। मानव–मन से भेदभाव को पूर्ण रूप से मिटा देना ही मार्क्सवाद का लक्ष्य हैं–

"किन्तु उधर

पथ–प्रदर्शिका मशाल

कमकर की मुट्ठी में –किन्तु उधर :

आगे–आगे जलती चलती है

लाल–लाल

वज्र–कठिन कमकर की मुट्ठी में

पथ–प्रदर्शिका मशाल।"[77]

शमशेर अपनी काव्य–विषयक जागरूकता मार्क्सवाद विचारधारा के अनुसार स्थापित करने के पक्ष में है। दूसरा सप्तक में कवि ने कहा है– "अपने चारों तरफ की जिंदगी में दिलचस्पी लेना, उसकी ठीक–ठाक यानि वैज्ञानिक आधार पर (मेरे नजदीक यह वैज्ञानिक आधार मार्क्सवाद है) समझना और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर स्पष्ट करके पुष्ट करके अपनी कला भावना को जगाना।"[78] वे समसामयिक समस्याओं, सामाजिक स्थिति, गरीबी एवं अमीरी को 'शाम होने को हुई' कविता में लिखते हैं जिससे कविता का भाव प्रभावी और संवेदनीय हुआ है। समाज में व्याप्त भयंकर दीनता तथा राजनैतिक दाव–पेचों को प्रस्तुत करते हुए कवि ने लिखा है–

"भूल के मंदिर सुधर बहुमूल्य

ह्रदय को विश्वास देते दान :

प्राप्य श्लाघा से अयाचित मान;

स्पप्न भावि, द्रव्य से अनुकूल।

दीन का व्यापार श्लाघामय!"[79]

मध्यमवर्ग के जीवन की विडंबना का कवि शमशेर ने मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया है। क्योंकि मध्यम वर्ग न मध्यम वर्ग बनकर रह सकता है और न निम्न वर्ग बन सकता है। बाजारी सभ्यता के सर्वत्र व्याप्त होने के कारण यह वर्ग लुट गया है।

"ओ मध्य वर्ग

तू क्यों क्यों कैसे लुट गया

दशों दिशाओं की भी दशों दिशाओं की भी...

दशों दि...शा...ओं

में/तू कहाँ है कहीं भी तो नहीं"[80]

आधुनिक युग में मानव की चेतना का ह्रास हुआ है। मनुष्यता प्रायः समाप्त सी होती जा रही है। सर्वत्र छल–कपट युक्त वातावरण है। सांस्कृतिक मर्यादाएँ ही आधुनिकता के महासागर में डूबती गई तो कला को बचाना नामुमकिन होगा। 'सारनाथ की शाम' कविता में शमशेर ने त्रिलोचन के लिए लिखा है–

"क्योंकि व्यभिचार ही आधुनिकतम

काव्य कला है और आज

x x x

आधुनिकता आधुनिकता

डूब रही है महासागर में

डूब रही है"[81]

यांत्रिकीकरण के दुष्प्रभाव से मानव आज केवल जड़ बनकर रह गया है। इस यांत्रिकता से प्रभावित संस्कृति में शोषण और युद्ध की भयानक स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, वे हर वर्ग को किसी न किसी रूप मे प्रताड़ित करती हैं और यह शोषण चक्र चलता रहता है। पाश्चात्य संस्कृति से आकर्षण के कारण भारत में भौतिकता की जड़े जम गई हैं। मानवीय मूल्यों के उच्च आदर्शों का ह्रास हो गया है। कवि शमशेर इस युगीन अवास्तविकता को ललकारते हुए कहते हैं–

"नैसर्गिक स्वर में जब ऐसी गूढ़ अगमता

स्वयं बोलती हो जो युग की अवास्तविकता

को मानो ललकार रही हो, तब निःसंशय

अंतस्तल खिल–खिल जाता चट्टाने भीतर"[82]

मनुष्य प्रेम को लेकर शमशेर बहादुर सिंह ने एक स्वस्थ विचारधारा प्रस्तुत की है। यह उनके आधुनिक विचार पक्ष को उजागर करती है। आदमी के अन्दर 'स्त्री' आसक्ति रूप में रहती है। उस आसक्ति को भली भांति जानकर उसी में रूक जाना अधिक श्रेयस्कर है। यहाँ यह अभिप्राय कदापि नहीं लगाना चाहिए कि 'यह वासना की चरम सीमा है।' इस दृष्टिकोण से तो मनुष्य अपनी अतृप्त वासनाओं से बच सकता है। वासनाओं की तृप्ति से ही मनुष्य स्वस्थ और

जीवन सारवान बनता है। अतृप्त जीवन कभी भी खुशहाल नहीं बन सकता। अपनी इसी विचारधारा को प्रकट करते हुए कवि शमशेर ने लिखा है–

"मैं तुम्हारा थका मादक गान

दो मुझे आसक्ति में विश्राम।"[83]

आज के परिप्रेक्ष्य में मानव जीवन अस्त–व्यस्त सा प्रतीत होता है। आर्थिक विषमता से मजदूरों के घर चूल्हे नहीं जल पाते। प्रेम, सहानुभूति, दया, परोपकार इत्यादि भावनाएँ आज अपना रूप बदल चुकी हैं। ऐसी स्थिति में इनका व्यर्थ में प्रलाप नहीं करना चाहिए। शमशेर अपने इसी आधुनिक दृष्टिकोण को उजागर करते हुए अपनी कविता में लिखते हैं–

"छोड़ दो सम्पूर्ण–प्रेम,

त्याग दो सब दया–सब घृणा।

खत्म हमदर्दी।

खत्म साथियों का साथ।

रात आएगी

मूँदने सबको।"[84]

आधुनिक युग में लोगों में विश्वास प्रायः समाप्त सा लगता है। स्वयं तक सीमित लोग केवल अपने आप को सुरक्षित रखने में लगे रहकर स्वार्थी प्रवृत्ति के हो गए हैं। यह प्रवृत्ति शहरी लोगों में अधिक व्याप्त है। लोगों में आत्मीयता का अभाव होता जा रहा है। लोग अपनी वास्तविकता को छिपाकर बनावटी दिनचर्या अपना रहे हैं और निरन्तर समस्याओं से घिरे हुए होने के कारण उनका विश्वास क्षीण होता जा रहा है। बनावटी शैली और बाजारीकरण के दुष्प्रभाव से मनुष्य चालाक और ठगी प्रवृत्ति का हो गया है। कवि शमशेर ने आधुनिक मानव को बखूबी अपनी कविताओं में दिखाया है–

"मुझे मिलते हैं अदीब और कलाकार बहुत

लेकिन इंसान के दर्शन हैं मुहाल"[85]

शमशेर बहादुर सिंह अपनी कविताओं में ऐसे नवयुग और नवमानव की कल्पना करते हैं, जहाँ कर्मवाद का चलन हो। उनकी यह कल्पना जनता को जनता से मिलाने की एक कड़ी है। कवि भाग्यवाद के स्थान पर कर्मवाद पर विश्वास करता है इसे ही उसने जीवन के आनंद की संज्ञा दी है–

"कर्म करो!

दर्प–दाप बचाकर,

जीवन में कल्पना जन्य मौन

आलस्य भरो नहीं।

x x x

चमक उठे जीवन का अपनाव

प्रतिक्षण स्वतः।"[86]

इस प्रकार कवि शमशेर ने आधुनिक भाव–बोध को बड़ी संवेदनशीलता और वैचारिकता के साथ अपने काव्य में उतारा है। अन्य अर्थों में हम इस आधुनिक भावबोध को नई कविता की जान भी कह सकते हैं। क्योंकि यह भावबोध हीन समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम है।

3.5 नयी कविता में वर्ग संघर्ष

समाज में एक साथ रहने वाले सदस्यों में किसी कारणवश होने वाले विरोध, संघर्ष प्राचीनकाल से चले आ रहे हैं। केवल समयानुसार उनका प्रकार बदल जाता है। वास्तव में सामाजिक जीवन अन्तर्विरोधों से परिपूर्ण होता है। साहित्य में भी इन्हीं वर्ग संघर्षों, जन संघर्षों, वर्ग भेद इत्यादि बिन्दुओं को वर्ण्य–विषय बनाया गया है। समाज में कुछ वर्ग तो ऐसे हैं जो बहुत मेहनत करने के बाद भी लाभ प्राप्त नहीं कर रहे हैं। ऐसे वर्ग को सर्वहारा वर्ग की संज्ञा दी गई है। यह वर्ग जीविकोपार्जन हेतु श्रम करता है। पूंजीपति वर्ग हमेशा से समर्थ और शक्तिमान रहा है।

सामन्ती व्यवस्था के उद्‌भव के साथ ही पूंजीपति और सर्वहारा वर्ग अस्तित्व में आए। पूँजीपति वर्ग द्वारा सर्वहारा वर्ग का हमेशा से ही शोषण किया गया है। इस पूँजीपति वर्ग द्वारा

मजदूरों, श्रमिकों का, जमींदारों व साहूकारों द्वारा किसानों का, सरकार व प्रशासन द्वारा सामान्य जनता का शोषण सदैव होता ही रहा है और ऐसी स्थिति में लेखक या कवि ही अपनी लेखनी से जागृति की चेतना लाते हैं। शमशेर के बारे में रामविलास शर्मा ने लिखा है कि "शमशेर दूसरे कई लेखकों से अलग पार्टी और कम्युनिस्ट आन्दोलन से गहरे जुड़े थे। यह सम्बन्ध अन्त तक बना रहा। उनकी बहुत सी कविताएँ ऐसी हैं, जिनमें प्रेम, सौंदर्य, रोमांस आदि है, जिससे लोग भूल जाते हैं कि ये मूलतः वामपंथी थे और कम्युनिस्ट आन्दोलन से उनका रिश्ता उनकी कविताओं में आखिर तक व्यक्त होता रहा।"[87]

शमशेर के काव्य में प्रगतिशील क्रांति–चेतना मौजूद है। शमशेर की अनेक कविताएँ मार्क्सवाद, जनवाद, वामपंथ तथा मजदूर आंदोलन से सम्बन्धित है। 'बात बोलेगी' संग्रह में संघर्ष व जनक्रान्ति को विषय–वस्तु के रूप में चुना है। शमशेर ने वर्ग संघर्ष को अपनी कविताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। मध्यम वर्ग के लिए शमशेर के मन में करूणा की अधिकता देखने को मिलती है। साथ ही मजदूरों के लिए उनके मन में विशेष सहानुभूति है।

भारत जैसे विकासशील देश में यह वर्ग–संघर्ष गहरी पैठ जमाए हुए है। धनिक वर्ग और धनिक होता जा रहा है तथा निर्धन की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। भारत की गरीब जनता जो कि अभी संगठित नहीं है और उसमें वर्ग चेतना नहीं है, उसे संगठित होना है, चेतना प्राप्त करनी है।

धनिक वर्ग के धन एकत्रीकरण से गरीब जनता को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मध्यम वर्ग की स्थिति तो बहुत बुरी है क्योंकि वह न तो गरीब बनकर रह सकता है और न ही धनिक बन सकता है। इस तरह मध्यम वर्ग टूटन का शिकार हो गया है। इस टूटन से वे अपने समाज से दूर होकर दीन स्थिति में जीवन यापन करते है। और दूसरी ओर वे नए समाज में मिलने के लिए व्याकुल प्रतीत होते हैं। ऐसे में बड़ी ही संघर्षमयी स्थिति उत्पन्न होती है।

कवि शमशेर ने इस कड़ी में यथार्थ व प्रगतिशील कविताओं में वर्ग संघर्ष पर कई कविताएँ लिखी हैं। शमशेर में वर्ग संघर्ष के प्रति जो चेतना जगी है, वह मध्यम वर्ग के जीवन की त्रासदियों से उपजी है। परिश्रमी लोगों के संघर्ष से जन्मी हैं। मेहनत करने वाले इस वर्ग की मध्यमवर्गीय कुंठाओं एवं विडंबनाओं को यथार्थता के साथ शमशेर ने अपनी कविता में प्रस्तुत

किया है। शमशेर के अनुसार "हम सबकी मिली–जुली जिन्दगी में कला के रूपों का खजाना हर तरह बेहिसाब बिखरा हुआ है।"[88] उनकी कला का एक रूप वर्ग संघर्ष की निरूपति भी है।

शमशेर की कविताओं में सर्वहारा नाम से कहे जाने वाले श्रमिकों, क्रान्तिकारियों, मजदूरों, किसानों के शोषित स्वरूप को दिखाया है। इस वर्ग के संघर्ष पर शमशेर ने 'य शाम' कविता लिखी। कवि शमशेर ने भाव–चित्र के माध्यम से मजदूरों की पीड़ा दर्शायी है। लाल झण्डे पर रोटियाँ टंगी हैं। वे झण्डे मजदूरों के हाथ में हैं। शान्त जुलूस चल रहा था। इसके बदले में अत्याचारी, क्रूर शोषण कर्त्ताओं ने ग्वालियर की सामन्ती सरकार ने उन पर गोलियाँ बरसाई।

"गरीब के हृदय

टँगे हुए

कि रोटियाँ लिए हुए निशान

लाल–लाल

जा रहे

कि चल रहा

लहु–भरे ग्वालियर के बाजार में जुलूस :

जल रहा

धुआँ धुआँ

गवालियर के मजूर का हृदय।"[89]

'एक प्रभातफेरी' कविता में कवि ने कृषक वर्ग की यथार्थता को व्यक्त करते हुए मूकहीन, अर्थहीन आवाज को नवीन प्राण संचरण के साथ उठाने के लिए आह्वान किया है–

"वह मजदूर किसानों के स्वर कठिन हठी!

कवि हे, उनमें अपना हृदय मिलाओ!"[90]

कवि शमशेर की कविताओं में काव्यात्मक रूप में शोषित वर्ग की विषमता और विपन्नता के प्रति अपनी सहानुभूति अभिव्यक्ति की है। सरकारी तंत्र की लापरवाही से भी कवि शमशेर को गहरी पीड़ा है। उन्होंने अपनी कविता 'दुःख नहीं मिटा' में वर्ग संघर्ष को दर्शाते हुए श्रमिक वर्ग की पीड़ा को व्यक्त किया है। इस कविता में वे स्पष्ट रूप से कहते है कि जिन्हें दो वक्त की रोटी चाहिए, वह वर्ग विषम परिस्थितियों में हिंसक तो होगा ही।

"अपनी ही हड्डी बक्तर जिनका

मदिरा जिनकी अपना खून

रोटी का सपना अंतर जिनका

प्यासे शोले दोनों जून

बरसाएंगे जिनके सर पर

प्रतिहिंसा का खून!"[91]

बम्बई में धनिक वर्ग के शोषण से तृस्त किसानों, आदिवासीयों ने सन् 1945–46 में बम्बई के थाणे के भीतर उग्र आन्दोलन किया जिससे जमीदारों और अधिकारी वर्ग को हिलाकर रख दिया था। शमशेर ने इसे अपनी कविता में आबद्ध किया है। चन्द्रकान्त सिंह ने उनके सर्वहारा चिन्तन पर लिखा है कि उन्होंने सर्वहारा के ऊपर एक के बाद एक अच्छी कविताएं लिखी है कवि ने वैचारिक पक्षधरता को समझा और केवल न समझा, बल्कि बड़ी साफगोई के साथ शोषण को खोलकर सामने रखने का काम भी किया।[92]

शमशेर ने आरम्भ से लेकर अन्त तक सभी बुराईयों का जबरदस्त विरोध किया। उनका आत्म–संघर्ष ऐसा ही था। वे बम्बई में 'नये साहित्य' के सम्पादन के समय मार्क्सवाद की ओर मुड़े। उनका यह संघर्ष उतरछायावादी, जूलियट, एजरा पाउण्ड वाले काव्य बोध का सा संघर्ष है।[93]

शमशेर का वर्ग संघर्ष मूक नहीं है। वे मनुष्यता को चुनौती देने वाले काले–गोरे के रंग संस्कारों पर करारा प्रहार करते हैं। उन्होंने काले और सफेद पत्थरों के प्रतिकों के द्वारा 'अफ्रिका' कविता में लिखा है कि–

"–ना ऽऽऽ ई

तुम सफेद हम

काला!

तुम्हें अब नाई

छोड़ सकता!

नाई छोड़ सकता!

नेपथ्य में ढोल बजता है

डमाडम! डमाडमा! डमाडम!"[94]

शमशेर के हृदय के दया, करणा की भावना विद्यमान थी। वे समाज की करुण स्थिति को देखकर व्यक्ति की संकुचित विचार धारा पर करारा व्यंग्य करते हैं। मनुष्य को प्रेम और समन्वय के आधार पर पारस्परिक सहयोग का वातावरण सृजित करना चाहिये के लिए कहते हैं। कवि ने एक मुक्त में लिखा है–

"संकुचित है आज जीवन का हृदय

व्यक्ति मन रोता है, जन–मन के लिए।"[95]

शमशेर की वर्ग संघर्ष की काव्यानुभूति के सम्बन्ध में नारायण साही ने लिखा है– "शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट जैविक है जिसमें इस पक्ष का अपना विशेष योगदान है। शमशेर के लिए कोई भी विचार दर्शन (चाहे वह प्रभाववाद, अतियथार्थवाद, साम्यवाद) मात्र वह नहीं है जो वह मूलतः हैं।"[96]

शमशेर धनिक वर्ग और राजनीतिक तंत्र दोनों को ही शोषक वर्ग मानते है। दानों को ही ललकारते हुए शमशेर ने लिखा है– जनता जब उठ खड़ी होगी तो तुम्हारा ये किला ढह जायेगा।

अन्त में, शमशेर काफी दिनों तक सर्वहारा वर्ग से प्रभावित रहे है, लेकिन उन्होंने इसे अपनी मूल प्रवृति कभी नहीं बनने दिया। उन्होंने अपने प्रगतिशील विचारों को कविता में स्थापित

करने के लिए मार्क्सवाद का सहारा लिया है। वे दलितों, शोषितों के हिमायति रहे है। उनकी कविताओं में भी उनके इन विचारों का अक्स अवतरित हुआ है।

3.6 नई कविता में मानवतावाद एवं देश प्रेम

समाज में मानव मूल्यों को बनाए रखने में एक साहित्यकार का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। साहित्यकार का मूल्यबोध सबसे गम्भीर मानव–मूल्य है तथा यथार्थ साहित्यकार की मानवीयता का अमूर्त जिन्दा रूप होती है।

शमशेर बहादुर सिंह मानव मूल्य के कवि माने गए हैं। मार्क्सवादी आदर्शों से प्रभावित, मार्क्सवादी आदर्शधारा में मानवीयता के अंश तथा उसमें निहित मूल्यों की तलाश को शमशेर ने अपनी कविता में अपनाया है। आधुनिक समाज अमानवीयता के कारण अंधकारपूर्ण दिखाई देता है। शमशेर ऐसे युग में लुप्त हुए मानवीय मूल्यों को तलाशते हैं। कवि शमशेर 'रात्रि' कविता में उस मानव–आत्मा की तलाश में है। जिनके मन में मानवीय मूल्य विद्यमान है–

"ओ हमारे साँस के सूर्य!/साँ की गंगा

अनवरत बह रही है।/तुम कहाँ डुबे हुए ?"[97]

शमशेर बहादुर की कविताओं में व्यक्ति एवं व्यष्टि के सम्बन्धों को चित्रित किया गया है। उनकी कविताओं ने आस्था, अनास्था, संकल्प, विकल्प, अनिश्चय आदि स्थितियों में मानव का स्वरूप प्रस्तुत किया है। मानव अपने समूचे परिवेश में जीवन को जीने के विश्वास को लिए हुए अपने अस्तित्व और दायित्व के प्रति जागरूक रहता है। अपने परिवेश के प्रति सचेत रहते हुए वह राष्ट्रीयता की सीमा से अन्तर्राष्टीय सीमाओं में प्रवेश करने लगा है। मानव पूर्णरूपेण सामाजिक है। सभी मनुष्यों को मिल जुलकर रहना चाहिए क्योंकि अपने तक सीमित व्यक्ति का मान हमेशा संकीर्ण रहता है। शमशेर के कुछ मुक्तक द्रष्टव्य–

"धूल में हमको मिला दो, किंतु, आह,

चालते हैं धूल कन–कन के लिए।

x x x

संकुचित है आज जीवन का हृदय,

व्यक्ति–मन रोता है जन–मन के लिए।"[98]

कवि शमशेर की कविताओं में मानवीय प्रेम की गहरी तड़प देखने को मिलती है। वे सामाजिक स्तर पर सभी की एकता के पक्ष में है उनकी दृष्टि में एकता के द्वारा लोगों का भविष्य स्वर्णिम बन सकता है। 'सूर्य उगाया जाता है' कविता में कवि कहते है–

"सूरज/उगाया जाता/फूलों में:

यदि हम/एक साथ/हँस पड़ते।"[99]

शमशेर बहादुर वामपक्ष के समर्थक होने के कारण जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधान वामपक्ष में ही खोजते है। उनके कथनानुसार–"'मानवता का उज्जवल भविष्य और समय की गति की दिशा एक ही है' और वह दिशा है वाम दिशा। वहीं हमारी एकता और हमारी मुक्ति काल–मान, विज्ञ मार्क्स–मान में तुला हुआ।"[100]

शमशेर बहादुर मार्क्सवाद से लगाव रखने के कारण प्रेम को देश प्रेम व मानव प्रेम से जोड़कर देखते हैं। देश–प्रेम की कविताओं में वे सत्य की शक्ति को उभारने की बात करते हैं। उनकी आस्था भारत की जनशक्ति पर है–

"जन का विश्वास ही हिमालय है

भारत का जनमन ही गंगा है

हिन्द महासागर लोकाशय है

यही शक्ति को उभारती।"[101]

शमशेर के भीतर मनुष्यता के प्रति सरोकर उनमें गहराई तक समाए हुए है। वे प्रत्येक घर में, प्रत्येक युग में शांति चाहते हैं। 'अमन का राग' उनकी एक ऐसी कविता है जिसमें उन्होंने शांति का राग अलापा है–

"हर घर में सुख
शान्ति का युग

हर छोटा–बडा हर नया पुराना हर आज–कल परसों के

आगे और पीछे का युग

शान्ति की स्निग्ध कला में डूबा हुआ

क्योंकि इसी कला का नाम जीवन की भरी–पुरी गति है।"[102]

शमशेर बहादुर की आस्था शान्ति में ही है। मानवमात्र की भलाई, उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति सब इसी शांति में निहित है। वे शांति को मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता मानते हैं। उनका मानवतावादी दृष्टिकोण भाईचारे, सद्भाव एवं मानवीय संवेदनाओं के विकास के लिए शांति, सहयोग और एकता को परमआवश्यक मानता है। 'सूरज उगाया जाता है' कविता में कवि ने लिखा है–

"सार हम होते/काव्य के/अनुपम भूत–भविष्य के:

यदि हम/व र्त मा न/में/एक साथ

हँसते रोते गाते/एक साथ!/एक साथ!

एक साथ!"[103]

शमशेर बहादुर सिंह की कवितांए मानवीयता का संदेश देती है। 'अमन का राग' उनकी श्रेष्ठ कविता है।

शमशेर की कविता का जगत, ह्रदय का जगत् है जिसमें करूणा का झरना है और सहानुभूति की पवित्रता का ताप भी है। शमशेर बहादुर के काव्य में मानवतावादी दृष्टिकोण व्यापक रूप में निहित है। उनकी कविताओं में सम्पूर्ण विश्व में शांति, समृद्धि और सुख की कल्पना की गई है। शमशेर बहादुर के काव्य में प्रेम वैयक्तिक अनुभूति के स्तर पर ही नहीं बल्कि समष्टि के सन्दर्भ में भी दिखाई देता है। उनकी मानवता और देश–प्रेम की कविताएं इसी कोटि मे आती है। शमशेर की देश भक्ति युक्त रचनाओं 'मैं भारत गुण गौरव गाता', 'भारत की आरती' में देश प्रेम स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। भारत का गौरव गान करते हुए कवि ने लिखा है–

"मैं भारत का गुण–गौरव गाता!

श्रद्धा से उसके कण–कण को

उन्नत माथ नवाता।

x x x

वह भविष्य का प्रेम–सेतु है,

इतिहासों का मर्म पूत है,

अखिल राष्ट्र का श्रम, संयम, तप :

कर्मजयी, युग त्राता!

मैं भारत गुण गौरव गाता।"[104]

देश प्रेम से सम्बन्धित अन्य कविता 'भारत की आरती' में उनका देश–प्रेम दृष्टिगोचर होता है–

"भारत की आरती

देश–देश की स्वतंत्रता देवी

आज अमित प्रेम से उतारती।"[105]

कवि ने देश के लोगों को सचेत करते हुए भारत राष्ट्र को जीत नहीं पाने के लिए, साम्प्रदायिक घटनाओं पर आक्रोश व्यक्त करते हुए देशभक्ति की भावना कश्मीर के प्रति तथा अपने देश के प्रति अनन्य भक्ति भाव को भी कविताओं में व्यक्त किया है।

इस प्रकार हम देखते है कि शमशेर ने मानव जीवन के विविध पक्षों का स्पर्श किया है जिनमें मानवता और देश–प्रेम भी सम्मिलित है जो पूर्णतः मौलिकता, सजीवता व वैचारिक ओजस्विता लिए हुए है।

निष्कर्ष :–

शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं के ऊपर जटिलता का आरोप लगता रहा है। आलोचकों ने उन्हें एक दुरूह कवि माना है लेकिन उनके ऊपर यह आरोप सरासर गलत है। इस प्रकार की बातें करने वाले लोगों में वे ही लोग शामिल है जो उनकी कुछ कविताओं का अध्ययन करके उन्हें समझने की कोशिश करते है। वस्तुत वे भावसंवेदना से विचार संवेदना की ओर बढ़ने वाले कवि है। डॉ॰ रंजना अरगड़े ने उनसे प्रभावित होकर एक पुस्तक लिखी है जिसका शीर्षक ही 'कवियों का कवि शमशेर' रखा गया है। उनकी दृष्टि में कवि शमशेर जटिल काव्य संवेदन

और सुक्ष्म शिल्प संभार वाले श्रेष्ठ और विशिष्ठ कवि है। वास्तव में शमशेर के काव्य का अभी पुरी तरह से आंकलन नहीं हो पाया है यद्धपि साहित्य जगत में उनके नाम की चर्चा होती रहती है। उनकी कविताओं का संसार असीम है। उनकी कथा वस्तु का कैनवास बहुत अधिक विस्तार लिये हुए है। वे प्रगतिवाद और प्रतीकवाद के समन्वित मापदंडों के कवि है। वे साम्यवाद से भी दुर नहीं है। उनकी कविताओं में समकालीन देश और वातावरण का समुचित संयोजन मिलता है। उनकी सामाजिक दृष्टिपरक कविताएं समाज के दलित वर्ग, शोषित वर्ग, श्रमिक वर्ग पर लिखी गई है। उन कविताओं में इन वर्गों को संगठित होकर, समन्वित भाव से संघर्ष करने के लिए भी प्रेरित किया है। उनका यह दृष्टिकोण उन्हें साम्यवाद के अधिक नजदीक ले जाता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनके द्वारा लिखी गई कुछ कविताओं में उग्र राष्ट्रवाद भी मिलता है। कवि 1944 में गवालियर में मजदुरों पर हुए गोली कांड पर भी द्रवित होकर कविता लिखते है तो दुसरी ओर 1946 मुम्बई के दंगों पर भी कविता लिखते हैं। कवि ने कश्मीर के निजाम साहिब के अत्याचारों से लेकर अफ्रिका में गोरे–काले के रंग भेद पर भी काफी मुखरता दिखाई है। कवि शमशेर बहस और स्पष्टीकरण सदा बचते रहे है। वे मानव धर्म, एकता, प्रेम, शांति, सौंदर्य और आशावाद को लेकर कविता लेखन में रत रहे है। कवि ने 'चुका भी हूँ मैं नहीं' के आभार ज्ञापन में अपनी कविताओं को सामाजिक दृष्टि से मूल्यवान नहीं माना है। लेकिन कवि की कविताओं में सामाजिक दृष्टि धुंधली ही सही उसकी रेख मिलती है। कवि की यथार्थवादी दृष्टि इस बात का उदाहरण है। वे प्रकृति प्रेम और सौंदर्य के कवि होने के साथ–साथ एक प्रगतिशील चिन्तक भी रहे है। उन्होंने अपनी कविताओं में खास तौर से मध्य वर्ग की समस्याओं को अधिकाधिक रूप में मुखरित किया है। अस्तु यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि कवि शमशेर नई कविताओं में सामाजिक यथार्थ देखने को मिलता है। वे विशुद्ध सौंदर्यवादी कवि होने के साथ–साथ एक सामाजिक यथार्थ चित्रण के कवि भी है। 'अमन का राग', 'वाम वाम वाम दिशा', 'बात बोलेगी', 'सौंदर्य', 'बैल', 'मैं भारत गौरव–गुण गाता' आदि उनकी कुछ महत्त्वपूर्ण कविताएं है जिनमें सामाजिक यर्थाथ के साथ–साथ देश और दुनिया की शांति की बात की गई है। प्रकृति और प्रेम का यथार्थ चित्रण हुआ है। मानव मुल्यों व वर्ग संघर्ष का चिन्तन भी इनमें मिलता है।

संदर्भ संकेत

1. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, 'हिन्दी नव लेखन', पृ. 53
2. सिंह, शमशेर बहादुर, 'उदिता', पृ. 104
3. सिंह, शम्भूनाथ, 'प्रयोगवादी और नई कविता', पृ. 85
4. वहीं, पृ. 85
5. उद्धृत, अज्ञेय, 'दुसरा सप्तक की भूमिका'
6. मिश्र, देवी प्रसाद, 'मैं वो आईना हूँ जिसमें आप हैं', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंहः लेख संग्रह",पृ. 44
7. उद्धृत, सं. कैलाश दहिया, 'शमशेर बहादुर सिंहः लेख संग्रह', पृ. 22
8. सिंह, शमशेर, 'कुछ और कविताएं' (वक्तव्य)
9. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 100
10. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई' पृ. 79
11. सिंह, शमशेर, 'काल तुझ से होड़ है मेरी' पृ. 35
12. वहीं, पृ. 37
13. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 18
14. वहीं, पृ. 17
15. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 88
16. उद्धृत, शर्मा, विष्णुचन्द, 'काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व', पृ. 39
17. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 23,24
18. वहीं, पृ. 57

19. वहीं, पृ. 55

20. सिंह, त्रिभुवन, 'हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद', पृ. 7

21. अज्ञेय, 'दूसरा सप्तक', पृ. 86

22. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई' पृ. 27

23. सिंह, शमशेर, 'चुका भी हूं नहीं मैं', पृ. 19

24. सिंह, शमशेर, 'सापेक्ष', जनवरी–मार्च, पृ. 81

25. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 15

26. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 151

27. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई' पृ. 61

28. गुप्त, गणपतिचन्द्र, 'प्रयोगवाद और नई कविता', पृ. 529

29. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई', भूमिका से

30. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 20

31. गुंजन, रामनिहाल, 'शमशेरः कुछ यादें; कुछ रचना प्रसंग', सं. चारूमित्र, "शमशेर की दुनिया", पृ. 129

32. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 37

33. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई', भूमिका

34. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 63

35. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 27

36. वहीं, पृ. 94

37. शमशेर, सं. नामवर, 'प्रतिनिधि कविताएं', पृ. 130

38. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 29

39. वहीं, पृ. 62

40. वहीं, पृ. 23,24

41. वहीं, पृ. 36

42. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 120

43. वहीं, पृ. 142,143

44. वहीं, पृ. 119

45. वहीं, पृ. 119

46. शमशेर : कवि से बड़े आदमी, पृ. 328

47. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 150

48. वहीं, पृ. 119

49. वहीं, पृ. 67

50. वहीं, पृ. 118

51. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 108

52. वहीं, पृ. 102

53. पेठाकर, सुभद्रा, 'आधुनिक हिन्दी काव्य : युगीन संदर्भ', पृ. 26

54. मलयज से साक्षात्कार, पृ. 24

55. साही, विजय देव नारायण, 'छठवाँ दशक', पृ. 200

56. बोरिस, पास्तरनाक, 'द मार्श आफ गोल्ड', भुमिका

57. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 143

58. वहीं, पृ. 143

59. वहीं, पृ. 118

60. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 112

61. वहीं, पृ. 148

62. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 91

63. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 158

64. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 120

65. वहीं, पृ. 86

66. वहीं, पृ. 114

67. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, 'नई कविताएँ : एक साक्ष्य', पृ. 88

68. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 37

69. वहीं, पृ. 127,128

70. वहीं, पृ. 112

71. वहीं, पृ. 129

72. वहीं, पृ. 91,92

73. वहीं, पृ. 86

74. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद, 'नई कविता की संघर्षशील चेतना कल्पना', पृ. 31

75. मोहन, नरेन्द्र, 'आधुनिकता और समकालीन कविता सप्तसिन्धु', पृ. 22

76. सेठ, राजी, 'शाश्वत साहित्य और आधुनिकता नया प्रतीक' पृ. 23

77. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 88

78. अज्ञेय, 'दुसरा सप्तक' पृ. 80

79. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 18

80. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 90

81. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 46

82. वहीं, पृ. 36

83. अज्ञेय, 'दुसरा सप्तक' पृ. 89

84. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 19

85. शमशेर, सं. वाजपेयी, अशोक, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 88

86. सिंह, शमशेर, 'उदिता' पृ. 65

87. उद्धृत, सं. चारूमित्र, 'शमशेर की दुनिया' पृ. 128

88. उद्धृत, मिश्रा, पवन कुमार, 'प्रयोगवादी काव्य', पृ. 68

89. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 41

90. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 67

91. वहीं, पृ. 14

92. सिंह, चन्द्रकान्त, 'फिर भी मैं करता हूँ प्यार', सं. चारूमित्र, "शमशेर की दुनिया" पृ. 191,192

93. शर्मा, रामविलास, 'नई कविता और अस्तित्ववाद', पृ. 92

94. सिंह, शमशेर, 'काल तुझ से होड़ है मेरी' पृ. 25

95. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 96

96. सर्वेश्वर, 'शमशेर', पृ. 26,27

97. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 45

98. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 10

99. वहीं, पृ. 107

100. सिंह, शमशेर, 'सापेक्ष', जनवरी–मार्च, 1994

101. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 37

102. वहीं, पृ. 25

103. सिंह, शमशेर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 85

104. शमशेर, सं., सिंह, गोपेश्वर, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं', पृ. 3

105. वहीं, पृ. 37

चतुर्थ अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में शिल्पगत नवीनता

चतुर्थ अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में शिल्पगत नवीनता

कविता मानवता का संयोजन है। कवि जब भी अपने भावों के आकाश में उड़ता है, तब उसकी भावनाएं सही रूप में कविता के माध्यम से अभिव्यक्त होती है और कविता कवि के भाव तथा विचारों की पीठिका पर बैठकर सामने आती है। कवि को कविता की रचना प्रक्रिया के लिए शिल्प की आवश्यकता पड़ती है। शिल्प में भाषा, शब्द, छन्द, प्रतीक, बिम्ब आदि तत्त्वों का समावेश होता है।

वस्तुतः कविता के लिए जितना महत्त्व भाव पक्ष का होता है, उतना ही कला पक्ष का। भाव पक्ष में कवि के भाव और विचार निहित होते है तथा कला पक्ष में शिल्प के अन्यान्य उपकरणों को गिना जाता है। एक अच्छी कविता के लिए इन दोनों का होना अतिआवश्यक है। कविता में भाव, कल्पना और विचार के बारे में डॉ॰ हरिचरण शर्मा ने लिखा है कि "कविता अनुभूति की आत्मजा है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि विचार से उसका कोई विरोध है। हो भी नहीं सकता, क्योंकि अनुभवों की कोई ऐसी सीमा नहीं होती है कि वे भाव के धरातल से आगे जा पायेंगे। अनुभव मात्र भाव नहीं होते हैं, न हो सकते हैं। वे तो विचारों के समानान्तर ही जी सकते हैं। कोरे भाव आवेग मात्र होते हैं, किन्तु विचारों की अर्गला से बँधकर वे उस अनुभूति का रूप धारण कर लेते हैं जो अधिक प्रभावी, कुछ अधिक शक्तिमय और अमिट प्रभाव छोड़ने में सक्षम होती है। वैसे भाव और विचार में उतना विरोध भी नहीं है। ये तो एक सहयात्री की भाँति कविता–पथ पर चलते–चलते जीवन को अर्थ भी देते हैं, गति भी देते हैं और वह क्षमता भी देते हैं जिसे पाकर कविता और कवि दोनों का एक वैचारिक धरातल स्वयमेव बनता चला जाता है। मुझे बराबर यह लगता रहा है कि बुद्धि से हृदय तक के सभी स्तर परस्पर सम्बद्ध, अन्तरावलंबित और सम्बद्ध, अन्तरावलंबित और मिले–जूले होते हैं। अनेक बार तो यह तय कर पाना भी कठिन हो जाता है कि कविता से स्पंदित धड़कनों में कौन–सी धड़कन रागप्रेरित है और कौनसी विचार प्रेरित। अतः भाव, कल्पना और विचार तीनों ही कविता के शरीर के शरीर का निर्माण करते हैं। यदि भाव हमें डुबोता है–बहाता है तो कल्पना उस पर रंग चढ़ाती है और विचार बहाव को नियन्त्रित करता है और उस ऊँचाई पर जाने में मदद करता है जहाँ पहुँचकर जीवनानुभव विश्वसनीय सत्ता प्राप्त कर लेते हैं।"[1] कवि शमशेर नई कविता के महत्त्वपूर्ण कवि है। उनकी भाव

संवेदनाएं उनके शिल्प में आबद्ध होकर उनकी कविता में अवतरित हुई है। अतः उनकी कविताओं के सही मूल्यांकन के लिए उनके शिल्प को जानना बहुत जरूरी है।

शिल्प शब्द हिन्दी भाषा में अंग्रेजी भाषा के 'टेकनीक' शब्द का रूपान्तरण है जिसका अर्थ "कलात्मक कार्यविधि की वह रीति जो संगीत अथवा चित्रकला में प्राप्त है।"[2] से है। वृहद हिन्दी कोश के अनुसार–शिल्प से अभिप्राय किसी वस्तु को तैयार करने या उसकी दस्तकारी अथवा कारीगरी से होता है।[3] कई विद्ववानों ने शिल्प को परिभाषित भी किया हैं, किन्तु किसी भी परिभाषा में पूर्णता प्राप्त नहीं होती। वस्तुतः शिल्प कविता का वह प्राण तत्त्व होता है जिसके सहारे कवि उसकों आकार देता है।

कवि शमशेर आधुनिक हिन्दी कविता में नई कविता के महत्त्वपूर्ण कवि है। नई कविता अपने शिल्प के प्रति बहुत साबचेत है। शमशेर ने भी नई कविता के शिल्प में अनेकों कविताएं लिखी है। वे मूल रूप से रोमानी अनुभूति–संवेदनाओं के कवि है। अपनी अनुभूति को 'क्लासिकल' शिल्प में ढालकर प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविताओं की शिल्प–संरचना कथ्य से अधिक कथन–शैली को महत्त्व देती हैं। उनकी कविताओं के शिल्प की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी शिल्प संरचना का सम्बन्ध सीधे कवि के व्यक्तित्व से होता है। जो विद्वान बफो की उक्ति ' जैलसम पे जीम उंद' को पूर्णतः चरित्रार्थ करती है। उदाहरण के लिए उनकी कविता 'बात बोलेगी' की पंक्तियां द्रष्टव्य है–

"बात बोलेगी हम नहीं

भेद खोलेगी बात ही"[4]

कवि शमशेर ने अपनी अनुभूतियों को सजाने के लिए अच्छे शिल्प का होना बहुत जरूरी माना है। वे अपनी उलझन भरी संवेदनाओं को कविता में लाने के लिए शब्दों के साथ छेड़–छाड़ करने तथा शिल्प में परम्परागत उपकरणों की जगह नए उपकरणों के सहारे कविता को सजाने या गढ़ने में भी नहीं हिचकिचाते है। उनका शिल्प बेहद स्टायलिश है। वे कविता में शिल्प के स्वभाविक होने के पक्षधर कवि है।

नई कविता में शिल्प की दृष्टि से 'अज्ञेय' और 'शमशेर बहादुर सिंह' बेजोड़ कवि हैं। किन्तु अपनी निजी अनुभूतियों को चित्रात्मकता देना और उसके अनुरूप शिल्प को गढ़ना केवल और केवल शमशेर जानते है। शिल्प के क्षेत्र में वे कवि 'एजरा पाउण्ड' से बहुत प्रभावित रहे है।

कवि 'निराला' का भी उनके ऊपर काफी प्रभाव रहा है। उनकी एक स्वीकारोक्ति भी है "मैं अपने शिल्प के लिए निराला, पन्त और अंग्रेजी के कवियों के प्रति बहुत आभारी हूँ।"[5] 'उदिता' में सीधे अपने पाठक से–भूमिका में उन्होंने लिखा है कि "अजीब तरह कुछ नहीं है। शमशेर साहब अव्वल तो शागिर्द निराला के हैं।–वह अस्ल में निराला और पन्त की ही टेकनीक का जरा खास ढंग से 'निखारा' और 'आगे बढ़ाया हुआ' रूप है। हाँ, और कुछ अंग्रेजी से भी खोशा–चीनी की गयी है। वस्तुगत प्रयोग और रूपगत प्रयोग दोनों–जो कि हर अच्छी रचना में अन्योन्याश्रित रूप से ही सफल होते हैं–"[6] नई कविता से सम्बन्ध रखने वाली उनकी अधिकतर कविताएं कवि निराला, पन्त और अंग्रेजी कवियों की कविताओं की तरह मूर्त से अमूर्त की स्थिति में, अपने शिल्प में प्रवाह्मान होती रही हैं।

कवि शमशेर ने अपने कथ्य और अभिव्यक्ति के लिए अतिनूतन शिल्प का निमार्ण किया है। उनकी कविताएं इसी में होकर अपना आकार ग्रहण करती है। उनकी अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने वाले शिल्प तत्त्वों में भाषा, प्रतीक, बिम्ब–योजना, शब्द–चयन, शब्द–संयोजन, पंक्तियों का विशिष्ट आकार आदि प्रमुख हैं। उन्होंने अपनी कविताओं में भाषा को नवीनतम अभिव्यक्ति देने, उसे सार्थक बनाने के लिए उसको ईमानदारी के साथ सम्प्रेषित किया हैं।

4:1 भाषा एवं शब्दगत नवीनता

भोलानाथ तिवारी के अनुसार "भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित मूलतः यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।"[7] भाषा शब्द संस्कृत की भाष् धातु से बना है जिसका अर्थ है– बोलना या कहना, अर्थात भाषा वह है जिसे बोला जाए।

यह सत्य है कि रचनाकार भाषा के द्वारा ही अपने विचारों को अभिव्यक्ति देता है। भाषिक संरचना को समझने के लिए उसकी गहराई में जाना अतिआवश्यक है। भारतीय स्वाधीनता के बाद हिन्दी कविता में जैसे विषय बदले है उसी प्रकार से उसकी विषय वस्तु भी बदली है तो उसी प्रकार से कवि की जीवन दृष्टि भी बदली हैं। कविता भी अपने शिल्प क्षेत्र में नानाविध रूप लेकर सामने आई है। इसके लिए कवियों ने कविता के शिल्प पक्ष में पुराने मानदण्ड़ो में भारी परिवर्तन लाकर नए मानदण्ड़ स्थापित किये है। जिसके लिए उन्हे शब्द–चयन, शब्द–संयोजन, बिम्ब–योजना, प्रतीक आदि में काफी सतर्कता बरतनी पड़ीं है। सामान्य रूप से नये कवियों ने रोज–बेरोज, हमारी दिनचर्या में काम आने वाले सामान्य शब्दों को भी नये संदर्भ देकर नए अर्थ में

प्रस्तुत किया है और पुराने शब्दों को नए रूप में प्रकाशन दिया है। इसीलिए नई कविता भाषिक दृष्टि से नित–नूतन प्रतीत होती है। शमशेर बहादुर सिंह ने भी अपनी भाव संवेदनाओं को कविता के भीतर लाने के लिए भाषा तथा शब्दों के साथ काफी खिलवाड़ की है। वे भाषा को अपने अनुकूल बनाये जाने के लिए मसहूर भी है तथा समर्थ भी। उनकी कविताओं में हिन्दी भाषा का नवीनतम रूप दृष्टिगोचर होता है।

शमशेर बहादुर ने हमेशा ही कविता के सच्ची होने की बात कही है। वह कवि की सच्ची अनुभूतियों का अवलंब बने, इसी में कवि और कविता दोनों का भला मानते है। कविता को कभी किसी दबाब या आग्रह का शिकार न होना चाहिए वरना वह नष्ट हो जाती है। वे उसमें कृत्रिमता को कभी स्वीकार नहीं करते उनकी कविता अपने शिल्प में इतनी सतर्कता और सावधानी रखती है कि उनकी कविता उनकी सहज सी लगने वाली अनुभूतियों में भी विशेष चमत्कार उत्पन्न करती है। उनके शिल्प की सबसे बड़ी शक्ति काव्य भाषा है। कवि के लिए कविता एक मौलिक चिन्तन, अनुभव और अनुभूतियों की उपज होती है, उसी प्रकार से वे अपनी भाषा को भी अपनी निजी सम्पदा मानते है। उनकी यह सम्पदा बिल्कुल उनकी ही तरह की है। ज्योतिष जोशी के अनुसार–"शमशेर के लिए भाषा कविता को व्यक्त करने का माध्यम भर नहीं है, वह उनकी कविता का मर्म है और काव्य वितान भी। वे भाषा पर बहुत भरोसा करने वाले कवि है और अक्सर भाषा से वे जो काम लेते हैं, वैसी समता अन्यों में नहीं दिखती–"[8] कवि ने 'सागर–तट' कविता में वर्षा का जो दृश्य उपस्थित किया है उसमें उनका यह रूप देखने को मिलता है–

"पी गया हूँ दृश्य वर्षा का :

हर्ष बादल का

हृदय में भरकर हुआ हूँ हवा–सा हलका।"[9]

नये कवियों ने अपनी कविताओं में विषय वस्तु के परिवर्तन और परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए नयी शब्द योजना और नयी भाषा को स्वीकारा है तथा पुराने शब्द एवं भाषा को समर्थन नहीं किया है। शमशेर ने भी अपनी कविताओं में इसकी पुनरावृत्ति की है। वे 'एक प्रभातफेरी' में पुराने के स्थान पर नूतनता का आह्वान करते हुए दिखाई देते है –

"सड़े–पुराने अन्ध कूप गीतों के

अर्थहीन हैं भाव, मूक मीतों के :–

उन्हें अपरिचय का लांछन दे बिल्कुल आज भुलाओ!

नूतन प्राण–हिलोर उठी!

तुम, जिस ओर उठी, उठ जाओ!

कवि हे!..."[10]

भाषा ही वह बिन्दु है जहाँ शमशेर ने काव्य जगत में अपना विशेष स्थान बनाया है। शमशेर की कविताओं में रचनात्मक और संरचनात्मक स्तर पर भाषा का महत्त्व हैं।

कवि के शब्द उनकी कविताओं में बहुत पारदर्शी होते है जो पाठक को घटना– संघटना से परे और भीतर तक ले जाते हैं। अप्रचलित शब्द संयोजन शमशेर की कविता की विशेषता है। उन्होंने चाँदनी को बेठोस है, सँवलाती लाई है, और नीलाहटें पारदर्शी है। सूरज अधरों की मिठास में डूबता है, उनकी बाँसुरी के स्वर गीले है, शिला अथाह है, उनके यहाँ अन्धकार का विस्तार गहराई में हैं जैसे शब्द–संयोजन काम में लिये हैं।

कवि शमशेर ने अपनी भाषा में संज्ञा शब्दों से अधिक महत्त्व सर्वमानों, क्रिया–पदों तथा अव्ययों को दिया है। कवि ने संज्ञा शब्दों का भी प्रयोग किया है, परन्तु क्रिया प्रधान भाषा पर उनका विशेष आग्रह रहा है शमशेर ने व्यक्तिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा पर अनेक बार काम किया है। 'अमन का राग' कविता में अपने छोटे भाई तेजबहादुर सिंह को और 'राग' कविता में अपने मित्र त्रिलोचन को वे क्रमशः प्रतिभा और सरलता की भाववाचक संज्ञा में बदलते नजर आए हैं।

संज्ञा पदों के द्वारा कवि यर्थाथ के प्रति संवेदना के प्रतीकात्मक अर्थों के साथ प्रस्तुत होते है। 'शिला का खू न पीती थी' कविता की पंक्तियां द्रष्टव्य है–

"और वह पक्का चबूतरा,

ढाल में चिकना :

सुतल था

आत्मा के कल्पतरु का?"[11]

शमशेर की रचनाओं में क्रिया पदों का प्रयोग वार्तालाप की आत्मीयता को दर्शाने में प्रयुक्त हुआ है। उनके प्रकृति चित्रण की कविताओं में क्रियापदों का प्रयोग अधिक किया गया है। इनके प्रयोग से प्रकृति की गत्यात्मकता दिखाई देती है। कवि के काव्य में शब्दों का प्रयोग ध्वनि और चित्र के प्रभाव को दिखाने के लिए भी प्रयुक्त हुए है। शमशेर के काव्य में भाषा प्रायः हिन्दी और उर्दू शैलियों का अनुगमन करती है। कवि ने 'हमारे सिवा इनका रस कौन जाने!' कविता में स्पष्ट लिखा है–

"वो अपनों की बातें, वो अपनों की खू–बू[1]

हमारी ही हिन्दी, हमारी ही उर्दू!

ये कोयल–ओ–बुलबुल के मीठे तराने :

हमारे सिवा इनका रस कौन जाने!"[12]

शमशेर की काव्यभाषा के अनेकों रूपों में एक उनकी भाषा में समन्वयता भी है। वे अपनी भाषा में बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग करते है तो दूसरी तरफ हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी आदि के सीमा बंधन को भी तोड़ते है। उनकी रचना प्रक्रिया ऐसी है कि कौनसा शब्द किस भाषा का है यह पहचानना मुश्किल होता है। इसीलिए उनकी भाषा अभेद्य दिखाई देती है। उनकी भाषा का यह रूप कबीरदास की सुधक्कड़ी भाषा के बहुत अधिक नजदीक है। काव्य भाषा के बारे में शमशेर के विचार है "भाषा के सम्बन्ध मे हरेक का अपना आदर्श होता है, मेरा भी एक है... मेरा आग्रह जन–बोलियों के संस्कार–ग्रहण पर है, उनके अनुकरण पर नहीं–ज्यों का त्यों प्रयोग करने पर भाषा सपाट हो जाएगी। एक सच्चा कवि जन–भाषा की बुनियादी बनावट की रक्षा करते हुए उस सपाटजा से बच सकता है।"[13] शमशेर की भाषिक संरचना में 'संस्कृत की क्लासिक परम्परा का लालित्य और गाम्भीर्य; उर्दू की खानगी और नजाकत, अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों का सौन्दर्य बोध और आधुनिक विश्व कविता की बौद्धिकता एक साथ पाई जाती हैं।[14]

कवि शमशेर की भाषा की एक और विशेषता यह है कि उसमें संवाद धर्मिता पायी जाती है। यह संवाद धर्मिता बड़े ही अद्‌भूत ढंग से प्रयुक्त हुई है। उनकी कविता में कहीं स्वागत, कहीं आत्मलाप, तो कहीं एकालाप संवाद धर्मिता दृष्टिगोचर होती है–

"आज मेरे लिए तुम

उसकी हद हो।

उस बात की हद हो

जो मेरे लिए हो– तुम

वह मेरी

हद हो"[15]

कवि शमशेर ने गद्यात्मक भाषा का प्रयोग करके चित्रात्मक शैली को कविताओं में प्रयुक्त किया है। भाषाई सरलता और सहजता उनकी कविताओं की विशेषता है। गद्यात्मक भाषा का प्रयोग करके भी वे कविता का ऐसा चित्र प्रस्तुत करते हैं कि पाठक का हृदय स्वयं उसकी अनुभूति कर बैठता है। 'पथरीली घास भरी इस पहाड़ी के ढाल पर' शीर्षक कविता में यह सब कुछ देखने को मिलता है। कवि ने भाषा में ध्वन्यात्मकता व चित्रात्मकता को भी उद्‌भूत किया है। 'मणिपुरी काव्य साहित्य पर विहंगमः हल्की सी झांकी' में मणिपुरी भाषा के ध्वन्यात्मक सौन्दर्य की रेख दिखाई पड़ती है। कवि का कहना है कि–"विशिष्ट नामों का जो छनित सौन्दर्य है उसे मैं देना या प्रदर्शित करना चाहता था (I wanted to give ther flavor of the original pronounciation of names.)[16] उनकी भाषा की यही चित्रात्मकता उनके काव्य सृजन का हेतु होती है।

कवि की 'पथरीली घास–भरी इस पहाड़ी के ढाल पर' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ भी इस प्रंसग में विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं–

"पथरीली घास–भरी इस पहाड़ी के ढाल पर, टॉप्सी और मैं।

बगल में सचेत बैठी स्पैनियल की तेज–तेज साँस।

एक अनमना–सा आधा स्केच ;

धुप में चमकती, मेरी गोद में एक सफेद कापी खुली।

हिलते–चमकते बहुत–हरे छोटे–बड़े पेड़ मेरे चारों ओर खड़े।"[17]

कवि शमशेर ने अपनी भाषा के माध्यम से पाठकगणों को कविता अनुभूत करायी है। 'सारनाथ की एक शाम' शीर्षक कविता में प्रयुक्त भाषा के द्वारा कवि की भाषिक क्षमता को समझा जा सकता है–

"तु किस

गहरे सागर के नीचे

के गहरे सागर

के नीचे का

गहरा सागर हेाकर"[18]

शमशेर की रचनाओं में विभिन्न प्रकार से पदों को प्रयोग मिलता है। काव्य जगत में अन्य कोई और ऐसा कवि नहीं मिलता जिसने पद्य रचनाओं में पद योजना को अपनाया हो। इन पदों का प्रयोग कवि अपनी मनोदशा एवं भावों की तीव्र अनुभूति एवं अर्थ गाम्भीर्यता के लिए करता है। "शमशेर कविता में शब्दों की अर्थ परंपरा के कायल हैं।"[19] कवि की भाषा में अव्यय पदों का प्रयोग अतुलनीय है। इन अव्ययों का प्रयोग काव्य को विशिष्ट बनाने के लिए किया है। शमशेर के अतिरिक्त शायर–मोमिन, गालिब एवं निराला की रचनाओं में अव्ययों का ऐसा प्रयोग देखा जा सकता है। कवि निराला ने लिखा है कि–

"अबे, सुन वे गुलाब

भूल मत गर पाई, खुशबू रंगोआब

खुन चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल पर इतरा रहा है कैपीटलिस्ट।"[20]

शमशेर ने अबे, ओ, आह, आप, आह कि, तो भी, और इत्यादि ऐसे अव्ययों का कई कविताओं में प्रयोग किया है। अपनी रचनाओं में स्वसंवेदना और व्यथा को व्यक्त करने के लिए आह! अव्यय का प्रयोग किया है–

"पढ़ लेते आप? यदि लिखता मैं

बार–बार बार–बार केवल वह एक नाम,

एक नाम, एक नाम...

आह!"[21]

कवि शमशेर की रचनाओं में छायावाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भाषा की सजगता के बारे में कहें तो संभवतः शमशेर निराला से अत्यंत प्रभावित दिखाई देते हैं। उनकी यह सजगता रचनात्मक और संरचनात्मक दोनों स्तरों के प्रति थी। शमशेर की कविताओं की भाषा–व्याकरण मुख्य रूप से दर्शनीय है। अव्ययों का सार्थक प्रयोग भी उनकी कविताओं में चमत्कार पैदा कर देता है। उदाहरण के लिए 'कि' अव्यय का प्रयोग कवि परम आश्चर्य के लिए कर रहा है–

"अजब बेअदवी है जमाने की–कि

कि

अक्स है इन्तिहाई गहरा

वही दरिया..."[22]

कवि शमशेर ने भाषा की अनेक संभावनाओं को दर्शाते हुए अपनी कविताओं में ध्वनियों से, टूटते वाक्यों से, शब्दों के विरामों से, अनगढ़ लगने वाले नए रचे हुए अक्षरों से तथा असामान्य कथनों से अपने अलग–अलग भावों को अभिव्यक्त किया है। कवि शमशेर को प्रयोगधर्मी स्वभाव वाला कवि माना गया है। इसलिए उन्होंने कविता संसार में भाषा को तोड़ फोड़कर प्रयोग किया है।

शमशेर बहादुर की कविताओं में संरचनात्मक स्तर पर भाषा का प्रयोग द्रष्टव्य है। कवि ने भाषा को माध्यम की तरह प्रयोग न करके भाषा को ही कविता बना डाला है। उनकी कविता में मनुष्यता की चूक होने के बाद भी भाषा रचनात्मकता की ओर ले जाती हुई दिखाई देती है वह सभी सीमाओं और दिशाओं को बाँधे रखती है–

"मुझे दो मगर पैमाना हो

फोनिमिक्स उन भाषाओं का पश्चिम और पूर्व की जो

मिलन सीमा का अर्गनित करती है।"[23]

कवि शमशेर के लिए भाषा भी एक कविता ही है। उनके लिए यह अभिव्यक्ति का साधन मात्र न होकर संस्कृतियों को जानने, समाज की धड़कन को पहचानने, भावनाओं, संवेदनाओं अनुभूतियों को जगाने की शक्ति है। मलयज के अनुसार उनकी भाषा में एक व्यक्तित्व की छाप है, भाषा का रूप परिष्कृत तथा नया आयाम झलकाने वाला है।[24]

शमशेर भाषा की दृष्टि से अत्यन्त सवृद्ध कवि माने जाते हैं। उनकी भाषा में कहीं पर शारीरिक स्तर दिखाई देता है, तो कहीं पर काव्यत्व और कहीं रहस्यात्मकता दृष्टि गोचर दिखाई देती है। उदाहरण के लिए कवि की कविताओं में कहीं जंगलों, जालियों और स्तम्भों की बात मिलती है तो कहीं गुलाब बाड़ियां, खिड़की दरवाजे, पर्दे–धूल, वक्ष केश से होकर कविता देशकाल की सीमाओं को पार करती है।

शब्द की अर्थवत्ता और जीवन्ता कवि की रचनात्मकता पर आधारित होती है। अर्थवत्ता से यहाँ अभिप्राय शब्द का प्रत्येक स्थान पर होने की अनिवार्यता से है। कविता में शब्द अपने सन्दर्भ के साथ सार्थक होता है। भाषा का अर्थ पाठकगण की संवेदना पर निर्भर करता है और वह जितनी बार उसे पढ़ता है, वह उतना ही नया लगता है। कवि शमशेर ने भी शब्दों की जड़ों तक घुसकर उसके सभी भावों को पकड़ने का प्रयास किया है। 'अचानक' जैसे साधारण शब्द की काव्यात्मकता और जीवन्तता एक कविता के अंश से उल्लेखनीय है–

"मौत हमारी आँखों में अचानक

देखती है–अचानक देखने लगती है

वह दृष्टि कितनी खरी होती है

अचानक

मोहन राकेश"[25]

कवि शमशेर की रचनाओं में व्यंजना, अध्याहार शैली और शब्दों को 'कितनी खरी' प्रयोग शमशेर की भाषिक क्षमता को प्रकट करती है। उनकी कविताओं में अन्य भाषा के शब्दों में उर्दु और अंग्रेजी के शब्द प्रमुख रूप से प्रयुक्त हुए हैं। उर्दू में हकीकत, मक्का मदीना[26], मोहब्बत, मंजर, ऐशो–मंसर्रत, खामोश, शोरे–कयामत, नफरत[27] अक्स, दरिया, बेअदवी[28], स्टैच्यू, पेकिंग, पोस्ट ऑफिस, ब्रॉडकास्ट, स्काईस्केपरों, फेक्टरी–मशीनों, टैक्टर–कम्बाइ(अमन का राग)[29], पिकनिक, स्पेलिंग, पॉइजन, इंजेक्शन, लेवल (टूटी हुई बिखरी हुई)[30] इत्यादि अंग्रेजी शब्दों का कुशल प्रयोग हुआ है। कवि ने अपनी कविताओं में डाट्स(...) का भी प्रयोग बहुत किया है जो उनकी भाषा को अर्थवत्ता देती है। इस बारे में हरिशंकर परसाई ने लिखा भी है कि "शमशेर जी... अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, फारसी, फ्रेंच के विद्वान् हैं।... जिस अदा से वे धीरे डाट्स(...) हाईफन डैश(–) के साथ सोचते हैं, वैसे ही लिखते ओर बोलते हैं। 'एबसेंट माइंडेउ' हो जाना उनकी आदत है।"[31]

अस्तुः शमशेर भाषा की दृष्टि से बहुत सवृद्ध कवि है। वे अपनी कविताओं में जिस तरह की भाषा का प्रयोग करना चाहते है उनकी भाषा उसी प्रकार की हो जाती है। उन्होंने अपनी भाषा को अपने भावों के अनुकूल बनाया है। यही उनकी भाषा की नवीनता है।

4:2 छन्दगत नवीनता

किसी भी भाषा के दो रूप होते हैं– गद्य रूप और पद्य रूप। गद्य रचना को आकर्षक बनाने हेतु रचनाकार को अधिक श्रम की आवश्यकता नहीं होती, पद्य रचना को विशिष्ट बनाने में छन्द, अलंकार, गुण, रस आदि तत्त्वों का प्रयोग अपेक्षित रहता है। पद्य साहित्य को विशेष रूप देने में छन्दों का प्रयोग आवश्यक होता है। छन्दशास्त्र के अनुसार छन्द दो प्रकार के माने गए हैं– 1. वार्णिक छन्द, 2. मात्रिक छन्द। इस प्रकार 'छन्दों में वर्णों या मात्राओं की गणना का ध्यान रखा जाता है। छन्द में इन वर्णों और मात्राओं का निश्चित क्रम होता है। 'आधुनिक काल में नये कवियों ने छन्द विद्यान के प्रति उपेक्षा का दृष्टिकोण अपनाया है। कुँवर नारायण ने लिखा है "कुछ विषय ऐसे होते है जो कविता से एक स्वतन्त्र संगठन की माँग करते हैं, जिन्हें कोई बना–बनाया छन्द "रेडीमेड" कपड़ों की तरह नहीं पहनाया जा सकता, बल्कि जिसके लिए भाषा और शब्दों को दूसरी तरह से काटना–छाँटना पड़ता है। .....छन्द जिन्हें कविता का व्याकरण कहना शायद गलत न होगा, कविता के विकास में कुछ उसी तरह टूटते और बनते चलते हैं, जैसे भाषा के विकास में व्याकरण।"[32]

शमशेर छन्दों के आचार्य थे। उनके छन्दों को समझ पाना इतना आसान नहीं है। उन्होंने छन्द हो या व्यंजना सभी के लिए नया दृष्टि कोण अपनाया है। इस बारे में डॉ॰ रंजना अरगड़े ने लिखा है कि "'छन्द' अर्थात् निश्चित व नियमित आवर्तन मात्राओं का या फिर अक्षरों का। इन निश्चित एवं नियमित आवर्तनों में संख्यातीत भावों की अनिश्चित गति को बांध पाना इतना सरल नहीं है।"[33]

छंद की बात करें तो शमशेर की कविताएं विविधता से भरी होती हैं। उनके अनुसार प्रकृति की प्रत्येक वस्तु की अपनी एक लय है। पद्य साहित्य की प्रमुख विशेषता उसकी लयात्मकता ही है। शमशेर की रचनाएं छंद मुक्त होने पर लय से समृद्ध होती हैं। उनमें एक नवीनता और ताजगी दिखाई देती है। शमशेर का कहना है–हर चीज जो मेरे चारों तरफ है वो हर एक कलाकार से और मुझसे अपनी भाषा में बात करते हैं, मैं चाहता हूँ कि उन चीजों की भाषा, उनकी बातें मैं उन्हीं के ढंग में रख सकूं। एक नया प्रकार, नई रिद्म पैदा हुई। मैं यह देखता था कि जिस तरह ये पेड़ हैं– बरगद है, पीपल है, ताड़ है, आम है व पपीता है– कोई भी तमाम इनके पत्तें का, इनकी डालियों का हिलना एक सा नहीं है, अलग–अलग है यानि इन सबके छंद, रिद्म अलग अलग हैं। अगर में उनका चित्रण करता हूँ उन्हें छंद में बाँधता हूँ तो मुझे छंद को लेना चाहिए जिसमें वो हिलते डुलते हैं। जिसमें वे बौने लेते हैं यही चीज दुनिया की हर वस्तु के सिलसिले में है।[34] इस प्रकार शमशेर अपनी लय में लिखते रहते हैं–

"ओ युग आ, मुझे और लिये चल, जरा–सा

और गा

ताकि मैं सुनूँ और झूमूँ

और उन नए मानों को आत्मा से चूमूँ।

जो मेरे होंगे–और मैं जिनमें हूँगा"[35]

शमशेर बहादुर सिंह की कुछ रचनाओं में संस्कृत के वृत्तों (छन्द) का प्रयोग द्रष्टव्य है। शमशेर ने 'सन्ध्या' और 'प्रेम की पाती' कविताओं में छन्दों का प्रयोग किया है। 'सन्ध्या' कविता में विद्युन्माला छन्द और 'प्रेम की पाती' कविता में पांकी छन्द (वर्णिक) का प्रयोग किया गया है। यह छन्द खड़ी बोली के उच्चारण के अनुरूप प्रयुक्त हुए हैं। शमशेर का कथन है–"मैंने पुराने छन्द के

जीवित रूप को रखना चाहा है। जीवित रूप से मेरा मतलब है, छन्द का जो संस्कृत में निश्चित रूप है वही नहीं, पर वैसा जिससे उसके रूप एवं अर्थ संभावनाएँ ज्यादा खुलें।[36]

'पांकी छन्द' में रचित कविता 'प्रेम की पाती'। कविता की काव्यात्मकमता और नवीनता देखते ही बनती है–

"कौन के पीतम, कौन की पाती!

आस लगाए, दीया न बाती!

ओ मेरे साईं, ओ मेरे ईश्वर

तेरा ही नाम अब प्रानों की थाती!"[37]

'विद्युन्माला' छन्दोबद्ध कविता 'संध्या' का वैशिष्ट्य कुछ इस प्रकार है–

"संध्या दीर्घात्मीया

उच्छ्वा सांगी प्रीया

स्वर्गंगा अपनों की

इतनी पास अपने?"[38]

पद्य में हरिगीतिका छन्द का विशेष महत्त्व है। कवि शमशेर के द्वारा रचित कविता भी बड़ी खूबसूरत लगती है–

"कर्म कठोर बनेगा मन;

बरसेगा घिर कर गुरु घन,

विहर–विहर वन–वन मानी :–

वन–वन देश–देश घिर कर,

घन बरसाएगा पानी!"[39]

शमशेर की कविताओं की रचना अधिकांश रूप से मुक्त छन्द में की गई है। छन्दोबद्ध पंक्ति को भी कवि शमशेर मुक्त छन्द में लिखने का प्रयास करते है। शमशेर ने सममात्रिक छन्द की पंक्तियों को तोड़कर मुक्त छन्द बनाए हैं। उनकी कविताओं में मुक्तछन्द का रूप विशिष्ट और बातचीत की शैली में मिलता है। उनकी 'टूटी हुई बिखरी हुई', 'राग', 'आओ', 'नीला दरिया बरस रहा' ऐसी ही कविताएँ है जो बातचीत की शैली पर आधारित हैं–

"मेरी रक्षा कहां होती है? मेरी साँसे तो–

तुम्हारी कविताएं हैंः उसने कहा। पर–

इन सांसों की रक्षा कैसे होती आई?"[40]

कवि ने अपने भावों को छन्दों में आबद्ध करने के लिए प्रचलित छन्दों से हट कर नये छन्दों का निमार्ण किया है। उन्होंने खुद 'काल तुझसे होड़ है' मेरी' काव्य संग्रह के 'एकान्त संघर्ष : एक मूल्यांकन' में स्वीकारा है कि "उन दिनों मैं कुछ छन्द विधाओं को समझने का सफल–असफल प्रयास कर रहा था। कौतुकवश देखना चाहता था कि आधुनिक खड़ीबोली पुराने, मसलन्, संस्कृत छन्दों को कँहा तक बोलचाल के अपने सहज लहजे में सँभाल सकती है... यह एकान्त प्रयोग–प्रयास चल ही रहा था– कि नेमिजी का 'एकान्त' सामने आया।"[41] –उन्होंने मुक्त छंद में जो कविताएं लिखी है वे वार्तालाप की लयाश्रित पद्धति में लिखी गई है। उदाहरण –

"चौखटे/द्वार/खिड़कियाँ :

सघन/ पर्दे /गगन के–से :

हमीं हैं वो/ हिल रहे हैं/एक विस्मय से :

अलग/हर एक/ अपने आप :"[42]

शमशेर की कविताओं को पढ़कर कभी ऐसा प्रतीत नहीं होता। उनकी कविताओं में लयात्मकता इतनी मुखर होती है कि उनमें छन्दमुक्त का आभास ही नहीं होता। यही उनके कविकर्म की सफलता का प्रमाण है। यथाः –

"अद्भुत ये चिह्न, ये रक्तिम प्रतिबिम्ब,

जीवन के भूखे समरांगण के राग।

लय होना ही इनकी गति।

लय हो कर ही अपनी गति को समूझँगा

मैं भी इस प्रलय में!"[43]

शमशेर के काव्य में उनके भाव, विचार, अनुभूतियाँ, संवेदनाएँ धीरे–धीरे खुलती है, गति पकड़ती हैं और लय बन जाती हैं। इसी लय में सुख, दुःख, प्रेम, प्रणय, संयोग, वियोग, मानवीयता सभी कुछ घुल मिल जाते है। इनके मुक्तछंदों में काव्य लय अपने अंदर से उत्पन्न होती है, जो पाठक के हृदय में भाव की निष्पत्ति करने में समर्थ होती है। छंदों के प्रयोग में उन्होंने नवीनता और विविधता अपनाई है। कवि शमशेर ने गद्यात्मकता लयाश्रित कर अत्यंत छोटी–छोटी पंक्तियों वाले छंद सिद्ध किये हैं। और डैश(–) और पूर्णविराम (।) का बहुधा प्रयोग किया है–

"धरो शिर/ हृदय पर

वक्ष–वह्नि से, –तुम्हें

मैं सुहाग दूँ–/चिर सुहाग दूँ!

'प्रेम–अग्नि से –तुम्हें

मैं सुहाग दूँ!"[44]

'बात बोलेगी', 'मुझे न मिलेंगे आप' आदि ऐसी कविताएँ हैं जिसमें कवि शमशेर ने सममात्रिक छन्द की पंक्तियों को तोड़ मुक्त छन्द बनाया है–

"मुझे/ न मिलेंगे आप,

आपका/ एकाकी क्षण हूँ मैं:

आपका/ भय और पाप,

आपका/ एकाकीपन हूँ मैं।"[45]

शमशेर की रचनाएं, बिम्बों, भावों, अनुभुतियों से सरावोर हैं। इन भावों की अभिव्यक्ति मुक्तछंदों में प्रभावी तौर पर हो सकती है। इसी कारण अधिकांश कविताएँ मुक्त छन्द में विशिष्ट संरचना में लिखी गई हैं।

अस्तुः शमशेर नई कविता के एक ऐसे कवि है जिनके छन्दों में नवीनता दिखाई देती है। उनके छन्द उनके भावों, विचारों और संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में पूर्णतः सफल रहे है।

4:3 प्रतीकात्मक नवीनता एवं उपमागत नवीनता

प्रतीकों का प्रयोग काव्य में सौन्दर्य और लक्षणात्मक वैशिष्ट्य लाने के लिए किया जाता है। 'प्रतीक' शब्द अत्यधिक व्यापक है और इसका क्षेत्र अपरिमित है। इसका प्रयोग केवल साहित्य के ही क्षेत्र में नहीं होता है बल्कि राजनीति, धर्म, समाज, ज्योतिष, गणित, मनोविज्ञान, तर्कशास्त्र आदि क्षेत्रों में भी होता है। लेकिन इन सभी क्षेत्रों में प्रयुक्त प्रतीक एक जैसे नहीं होते है। साहित्य में केवल वे ही प्रतीक काम में लिये जाते है–"जिन्हें हम अनुभव अथवा अनुभूति की अवस्था विशेष का शाब्दिक प्रतिरूप कह सकते है।"[46]

नई कविता में प्रतीकों का जन्म कम शब्दों में सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करने के फलस्वरूप हुआ। कवि शमशेर की कविता में प्रतीकों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शमशेर ने जीवन के विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित अर्थों को व्यक्त करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग किया है। उदाहरणस्वरूप उन्होंने 'मछलियाँ', जीवन के संघर्ष, 'दरिया' आदि जीवन की गतिशीलता का प्रतीक स्वरूप प्रयोग में लिए हैं। उनकी कविताओं में विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग है जैसे प्राकृतिक प्रतीक, सांस्कृतिक प्रतीक, वैचारिक प्रतीक, व्यंग्यात्मक प्रतीक, पौराणिक प्रतीक इत्यादि।

प्राकृतिक नवीन प्रतीकों का प्रयोग बड़ी कुशलता के साथ किया गया है। शाम, दरिया, पहाड़, आसमान, तरु जैसे प्राकृतिक प्रतीकों को कवि शमशेर ने नवीनता के साथ प्रयुक्त किया है। 'तरु' का प्रतीक बड़ा ही सुन्दरता के साथ कवि ने किया है–

"तरु गिरा

जो,

झुक गया था गहन

छायाएँ लिए।"[47]

प्राकृतिक प्रतीकों का अतिशय प्रयोग शमशेर की रचनाओं में दिखता है। शोषण, अन्याय, उदासी, जड़ता, रूढता, साम्राज्यवाद एवं पूंजीवाद के स्वरूप को दर्शाने के लिए रात्रि, कोहरा, तमस आदि प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। नव–जागरण एवं क्रान्ति की चेतना को उद्घटित करने के

लिए सूरज, किरण, नई फसल, लहरें, धूप आदि प्राकृतिक प्रतीक प्रयोग में लिए गए हैं। 'एक पीली शाम' कविता में 'पतझर' उदासी का प्रतीक है–

"एक पीली शाम

पतझर का जरा अटका हुआ पत्ता

शान्त

मेरी भावनाओं में तुम्हारा मुखकमल

कृश, म्लान हारा–सा"[48]

'वाम वाम वाम दिशा' कविता कवि शमशेर की बहुत प्रसिद्ध कविता है।इसके द्वारा कवि ने अपने वामपंथी विचारों का प्रणयन किया है। इन विचारों के लिए कवि ने 'मशाल' को क्रान्ति के रूप में चित्रित करते हुए लिखा है–

"किन्तु उधर

पथ–प्रदर्शिका मशाल

कमकर की मुट्ठी में–किन्तु उधर :

आगे–आगे जलती चलती है

लाल लाल"[49]

सामाजिक संस्कृति के विभिन्न चेहरों को उद्घटित करने के लिए कवि शमशेर ने संस्कृति से सम्बन्धित प्रतीकों का प्रयोग नवीनता के साथ किया है। उदाहरण के लिए कवि ने 'ईश्वर अगर मैंने अरबी में प्रार्थना की' कविता में अपनी सफलता के लिए प्रार्थना करते हुए कहा है–

"ईश्वर अगर मैंने अरबी में

प्रार्थना की तू मुझसे

नाराज हो जाएगा?

अल्लमह आज मैंने संस्कृत में

संध्या कर ली तो तू

मुझे दोजख में डालेगा?"[50]

कवि शमशेर ने अपनी कविताओं में पौराणिक प्रतीकों का भी नवीनता के साथ प्रयोग किया है। इन्द्र, अपोलो, हिरण्यकश्यप आदि पौराणिक ग्रन्थों के पात्र हैं जिन्हें शमशेर ने प्रतीकार्थ में लिया है। इन प्रतीकों के द्वारा राजनीति के कुचक्रों और युद्ध की विभीषिकाओं को दर्शाया गया है। कवि की सामाजिक समस्याओं से भरपूर कविताओं में इस प्रकार के प्रतीकों के अनेकों उदाहरण द्रष्टव्य है–

"जहाँ इन्द्र और विष्णु एक हो

अभूतपूर्व!–

यूनानी अपोलो के स्वरपंखी कोमल बरबत से

धरती का हिया कँपा रहे हैं

–और भी अभूतपूर्व !–" [51]

वैचारिक प्रतीकों का प्रयोग शमशेर की कविताओं में द्रष्टव्य है। शमशेर ने शासन व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था के प्रति अपना विरोध प्रकट करने के लिए प्रतीकों को नवीनता के साथ अनेकों कविताओं में प्रयुक्त किया है। कवि ने जीवन के अहंम विषय मृत्यु को भी मृत्तिका पिंड, पत्रविहीन, धूम्र–वृक्ष–सा जड़ तम, जैसे प्रतीकों में दर्शाया है–

"मृत्यु का प्रस्तर खण्ड–काला

मौन मृत्तिका पिंड एक, मैं–

पत्रविहीन धूम्र–वृक्ष–सा जड़ तम, अमर खड़ा हूँ

कहीं।" [52]

चुँकि कवि शमशेर प्रयोगवादी कविता के कवि भी रहे है। उनकी कविताओं पर प्रतीकवादी कविताओं का भी प्रभाव है। उनकी कविता मन की गहरी पर्तों को सांकेतिक शैली में प्रतीकों की सहायता से खोलती है। उनके प्रतीकों में आतंरिक भावों का गहरा रंग होता है। 'एक नीला दरिया

बरस रहा है' उनकी पूरी तरह प्रतीकात्मक कविता है। शमशेर अपने सबसे पसन्दीदा रंग नीला को भी प्रतीक के रूप मे काम में लेते है। डॉ॰ रंजना अरगड़े ने भी माना है कि प्रतीक रहस्यात्मकता को जन्म देता है। शमशेर प्रतीकवादी आंदोलन से प्रभावित रहे है। उनके प्रतीक भी रहस्यात्मकता लिये हुए है।[53]

अस्तुः शमशेर की नई कविताएँ विभिन्न प्रकार के प्रतीकों से सम्बन्ध रखती है। ये प्रतीक बिल्कुल नये प्रकार के है जो मानव जीवन के विषयों को नये रूप में प्रकृटित करते है।

4:4 व्यंग्यात्मक नवीनता

व्यंग्य मानव मस्तिष्क में स्थित कुंठा और कटुता का प्रकटीकरण है। व्यंग्य जीवन के कटु यथार्थ पर अपना प्रतिकार दिखाने का अप्रत्यक्ष साधन है। किसी हथियार से अधिक गहरी मानसिक चोट पहुँचाता है। आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों के ह्रास से नई कविता के कवि अपनी वेदना, असफलता, अभाव और उपेक्षा से पीड़ित होने से कटुता से पूर्ण हो गए और यही कटुता उनके कुंठाग्रस्त मन से व्यंग्य के रूप में सामने आई। नई कविता में देश में व्याप्त अराजकता, शहरी जीवन, राजनीति, वर्ग भेद, युद्ध की विभीषिका, गरीबी इत्यादि विषयों पर खुलकर व्यंग्य किया है। इस संदर्भ में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने कहा है "आज की दुनिया में विवशता, भूख, मृत्यु सब सजाने के बाद ही पहचानी जा सकती है।"[54]

प्रत्येक साहित्यकार ने अपने साहित्य में अपने तरीके से समाज में व्याप्त असंगत स्थितियों को अपनी लेखनी से लिखा है। शमशेर के समकालीनों में नागार्जुन, अज्ञेय, मुक्तिबोध, त्रिलोचन व सर्वेश्वर दयाल सक्सेना प्रमुख कवि हैं जिन्होंने सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक काव्य लिखे हैं। शमशेर ने भी चरमराति हुई शासन व्यवस्था, अकाल पीड़ितों के माध्यम से नवीनतम व्यंग्य किये है। उनकी कविताओं में यर्थाथ अपने काव्य सौन्दर्य के साथ आता है। राजनैतिक परिस्थितियों को उजागर करते हुए व्यंग्यात्मक तौर पर अपने तीखे स्वर में कवि शमशेर ने 'शकून की तलाश' कविता में लिखा हैं–

"कैसा सियासत का तूफान कि आग की लपटों में इंसान।

अपनों पर अपनों की ही बेदादागरी क्यों बाकी।"[55]

राजनैतिक व्यवस्था पर भी उन्होंने एक ओर चोट करते हुए लिखा है–

"किस लीला–युग में आ पहुँचे,

अपनी सदी के अन्त में हम।

नेता, जैसे घास फूस के,

रावन खड़े कराए गये।"[56]

अभाव के व्यंग्य से' कविता में कुत्ते के माध्यम से उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो सभी सुविधाओं के बाद भी अपनी मूल प्रवृत्ति नहीं त्यागते है–

"अभाव के व्यंग्य से

जूते चबाता हुआ–सा मानो

कुत्ता था जब मैं

टकराता बार–बार अपने हवाई दाँत

नोकिले।"[57]

शमशेर ने समाज में व्याप्त असंगतियों, विसंगतियों, गरीबों, दलीतों आदि विषयों को लेकर कविताएं लिखी है तथा उनमें व्यंग्य उपस्थित किए है। शोध कार्य के तृतीय अध्याय में उन पर विस्तार से उल्लेख हो चुका है। कवि शमशेर ने भारत में नेताओं की दोगलेपन और फूट के कारण हुए भारत विभाजन और असफल लोकतंत्र पर कटुक्ति के माध्यम से लिखा है–

"शिमला और दिल्ली :

कांग्रेस औ लीग...

क्रिप्स की वह कूटनीतिक विजय...

माउंटबैटन की सफलता...

हिन्द के दो खण्ड...खंग राज्य!

देश में शरणार्थियों का जन्म :

धर्म संस्कृति लोकतन्त्र परम्परा की आत्महत्या :

भारतीय चरित्र की इतिश्री :

एक हरिजन महात्मा गांधी शहीद...

एक हिन्दू गोड्से का न्याय!..."[58]

कवि ने इस कविता में भारत की राजनीति, नेता, धर्म और महात्मा पुरूष गांधी आदि के माध्यम से करारे व्यंग्य उपस्थित किए है। धार्मिक आधार पर होने वाले दंगों पर शमशेर ने गंभीर कटाक्ष करते हुए लिखा है कि–

"जय हिंद!" ये पीछे से हमला!

"अल्लाह अकबर!" बुजदिल चाकू!

यह "धर्म" था हत्यारा पहला!

या "मजहब" था कातिल डाकू?!

–जो भी हो, हिंदू या मुस्लिम :

ये "धर्म" औ "मजहब" वाले हैं!"[59]

सामाजिकता की अधिकता होने से शमशेर को ये साम्प्रदायिक दंगे गहरी पीड़ा देते हैं। उन्होंने साम्प्रदायिक दंगों के खिलाफ चुनौती भरे व्यंग्य मुखरित किए हैं। ये साम्प्रदायिक के नाम पर होने वाले दंगे विश्व में भारत के नाम को डुबोते हैं–

"अन्धकार–संकीर्ण साम्प्रदायिक गलियों में

मृत्यु खेलती सट्टा जहाँ मनुज प्राणों से,–

मुक्त आज गुण्डों का राज!

डूब रही है जहाँ सभ्य भारत की लाज!"[60]

कवि ने अवसरवादी और दोहरी मानसिकता वाले लोगों पर, प्रकृति और उसकी कार्य–शैली पर, समाज की विकृत और मूल्यहीन स्थिति पर, कला के क्षेत्र में आए परिवर्तनों, स्त्रि

देह की भंगिमाओं आदि विषयों पर करारे व्यंग्य किये है। ये व्यंग्य बड़े ही सटीक, स्पष्ट और संवेदना युक्त है। अतः स्पष्ट है कि कवि के शिल्प पक्ष में उनका व्यंग्य गहरी नवीनता लिए हुए हैं।

4:5 संगीतात्मक नवीनता

शमशेर बहादुर सिंह ने कई स्तरों पर बिंबों व रंगों की गहनतम अर्थ छटाओं से हिंदी और उर्दू साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। जीवन के कटुतम संघर्षों को लेकर उन्हें कविता में एकदम तरल बना सकना शमशेर के ही काव्य–व्यक्तित्व की पहचान है। शमशेर की कविताओं में संगीत की मनः स्थिति बराबर चलती रहती है। एक और चित्रकला की मूर्तता उभरती है और फिर वह संगीत की अमूर्तता में डूब जाती है। गद्य में उन्होंने बोलचाल के लहजे को अपनाया व कविता की लय में संगीत के चरम अमूर्तन को। अतः वे दोनों परस्पर विरोध मनः स्थितियों को कला रूप में साधते है। यही कारण है कि शमशेर में एक संपूर्ण रचना संसार दिखाई देता है। शमशेर की कविताओं में वातावरण संवेदन में संक्रमित हो जाता है। इस संदर्भ में 'राग' कविता का अंश द्रष्टव्य है–

"तब छंदों के तार खिंचे–खिंचे थे, राग बंधा–बंधा था,

प्यास उंगलियों में विकल थी–

कि मेघ गरजे;

और मोर दूर और कई दिशाओं से

बोलने लगे––पीयूअ्! पीयूअ्! उनकी

हीरे–नीलम की गर्दनें बिजलियों की तरह

हरियाली के आगे चमक रही थीं।

कहीं छिपा हुआ बहता पानी

बोल रहा था : अपने स्पष्ट मधुर

प्रवाहित बोल।"[61]

यहाँ प्रतीकात्मक रूप में मनुष्य और प्रकृति के बीच में यर्थाथ की खोज है। यहाँ राग के अंतर्गत मनोभाव, व्यक्तित्व, संगीतात्मक आकर्षण आदि अर्थ–छायाएँ संश्लिष्ट हैं। राग का एक कोई निश्चित अर्थ नहीं है वह अपने में समुचा संवेदन है। इस कविता में कवि का गहरा आत्मालाप मौजूद है। प्यास उंगलियों में विकल, मोर की पीयूअ्! पीयूअ्!, बिजलियों की गरज कविता का दर्शन है जो संगीतात्मकता में व्यक्त होता है।

कवि शमशेर की कविता कला संगीतात्मकता की दृष्टि से बेजोड़ है उसमें संघर्ष, संगीत, समाज का सापेक्ष सम्बन्ध व्यंजित होता है। कला मानव की आत्मा के संघर्ष के नये अर्थ संदर्भों में रूपायित होती है। ये नये अर्थ संगीतात्मकता को जन्म देते हैं–

"कला सबसे बड़ा संघर्ष बन जाती है–

मनुष्य की आत्मा का

प्रेम का केवल कितना विशाल हो जाता है

आकाश जितना

और केवल उसी दूसरे अर्थ सौंदर्य हो जाते हैं

मनुष्य की आत्मा में।

सायस एक धड़कन हो जाती है ज्ञानस्वरूप,

और मनूष्य का समाज एक हो जाता है

संगीत से।"[62]

डॉ॰ वीरेन्द्र सिंह ने शमशेर की संगीतात्मकता के बारे में लिखा है कि–"यदि गहराई से देखा जाए तो कवि की ये पंक्तियां सामाजिक सत्य को संगीत (रागतत्त्व) से जोड़कर, एक प्रकार से राग तत्त्व और ज्ञान तत्त्व को समाज सापेक्ष बनाकर एक सुक्ष्म प्रगति चेतना की और इशारा करती है।"[63]

कवि की संगीतात्मकता उसकी 'सौन्दर्य' कविता में भी देखने में आती है। कवि अपनी छोटी–छोटी मनः स्थितियों को अन्धकार में भी चमके हुए देखते है। यह उनके स्पंदित हृदय की तीखी पुकार है। स्पंदन संगीत का एक प्रमुख लक्षण होता है।

"एक अंधकार के चमकीले निर्झर में

तुम्हारे स्वर चमकते हैं :

एक इंतजार के झुरमुट में

वह फल है

जिसका अंतर एक तीखी पुकार है"[64]

कवि शमशेर की 'सावन' और 'उषा' दोनों कवितायें संगीतात्मक दृष्टि से उच्च कोटी की है। शमशेर मूड्स के कवि है परंतु उनका भाव संवेदन भी संपूजित होकर उनकी कविता में जीवन दृष्टि बन जाता है। उनकी छोटी–छोटी मनः स्थितियां उनके उदात्त रूप को दर्शाता है। शमशेर के यहाँ सदैव जीवन अबाध गति से प्रभावित होता है, उनका यही मूड्स उन्हें उभारता है और नयी कविता के समूचे परिदृश्य से जोड़ता है। उनकी संगीतात्मक परख के बारे में मलयज ने लिखा है "काव्य की सुक्ष्म प्रक्रियाओं का उनका ज्ञान–छन्द, संगीत, लय, अर्थ छवियों की परख–उनकी अद्‌भूत है।"[65]

अस्तु, शमशेर की कविताएं संगीतात्मकता से आबद्ध रही है। उनका आत्मालाप कविता में संगीतात्मकता लेकर मुखरित हुआ है।

4:6 बिम्बात्मक नवीनता

ललित कलाओं के प्रमुख तत्त्वों में बिम्ब महत्त्वपूर्ण स्थान रखता हैं। बिम्ब विधान कला का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। जिससे कलाकार की भावनयन(एब्स्ट्रेक्शन) से श्लिष्ट सौन्दर्यानुभूति को वस्तु सत्य का संस्पर्श या तदगत सम्पृक्त आधार के साथ सादृश्याभास मिल जाता है। बिम्ब विधान कला का क्रिया पक्ष हैं जो कल्पना से उद्‌भूत होता है। जब कल्पना मूर्त रूप धारण करती है, तब बिम्बों की सृष्टि होती हैं।[66] काव्य के संदर्भ में बिम्ब का प्रयोग आधुनिक ही है। यह अंग्रेजी शब्द 'इमेज' का हिन्दी में पर्याय है। पश्चिम का आधुनिक काव्यशास्त्र बिम्ब को काव्य का अनिवार्य माध्यम–उपकरण मानता है।[67] डॉ॰ नामवर सिंह के अनुसार "कविता यदि रचना है तो बिम्बधर्मी कवि ही सच्चा रचयिता है।"[68] कविता में बिम्ब अनेकों रूपों में आते है। इनकों दृश्य और अदृश्य दो रूपों में विभाजित किया गया है। नई कविता में इनकी उपस्थिति मूर्त और अमूर्त दोनों स्थितियों में रही है। बिम्बों का वर्गीकरण निम्न आधार पर किया गया है– वस्तु बिम्ब,

वस्तु–व्यापार विषयक बिम्ब, भाव परक बिम्ब, वैचारिक बिम्ब, पौराणिक व वैज्ञानिक बिम्ब, प्राकृतिक बिम्ब, संवेद्य बिम्ब, मनोवैज्ञानिक बिम्ब आदि।

आधुनिक हिन्दी कविता पश्चिमी काव्य आंदोलनों से काफी प्रभावित रही है, खास तौर से नई कविता। पश्चिम के बिम्बवादी आंदोलन से नई कविता ने बिम्ब को ग्रहण किया। "1912 में एजरा पाउण्ड'(1885) ने सर्वप्रथम इस आन्दोलन का पुरस्कार किया। सन् 1912 में सन् 1917 तक चला यह आन्दोलन वास्तव में शिथिल और अमूर्त भाषा और रूप के विरोध में खड़ा हुआ। यह कविता की भाषा को नवजीवन देने का एक प्रयोग था। कुल मिलाकर यह आन्दोलन एक रूपात्मक प्रयोग के स्तर पर ही विशेष उल्लेखनीय बनता है।"[69] 20वीं सदी में नई कविता ने इस बिम्बवाद को ग्रहण किया। इसके रचियता कवियों में अज्ञेय, शमशेर, नरेश, केदारनाथ सिंह, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि का नाम प्रमुख है। वास्तव में देखा जाएं तो "काव्य बिम्ब उद्दीपक पदार्थ की अनुपस्थिति में कल्पना के द्वारा उद्‌बुद्ध होते हैं जिनमें एन्द्रिय तत्व परोक्ष रूप से विद्यमान रहता है।"[70] सी. डे. लेविस के अनुसार –किसी भी कविता का आद्यन्त सम्बन्ध–सूत्रों से जुड़ता है, उस स्थिति में बिम्ब एक वस्तु–मात्र की ही पुनर्रचना नहीं करता, बल्कि वह वस्तु को भी संदर्भों के साथ रचता है, और इस तरह से वह बिम्ब कविता के सम्बन्ध–सूत्रों में एकाकार हो जाता हैं।[71]

शमशेर की कविताओं में बिम्बों की बहुलता मौजूद है। वे उनकी कविताओं के अर्थ विकास में योग देते है। उन्हीं के अनुसार "छोटे–से–छोटा भी कालखंड किसी अखंड काल–प्रवाह को इंगित करता है और कलाकार, वह किसी भी क्षेत्र का हो उसी का एक खण्ड पकड़ता है। ना पकड़ना नहीं है, अनुबिंबित करता है।"[72]

शमशेर की बहुत सारी कविताएं है जिनमें बिम्ब अनेकानेक रूपों में उपस्थित हुए है। नई कविताओं के आधार पर उनकी बिम्बात्मक नवीनता को देखा जा रहा है–

शमशेर के बिम्ब सतरंगी है, वे 'मूड्‌स' के कवि है। उनका कोई विजन नहीं होता है। 'धूप कोठरी के आइने में खड़ी' कविता के निम्नांश में बिम्ब विधान कुछ इस प्रकृति का है कि उसमें प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत दोनों मिलकर एकवर्गी हो गये हैं। सम्पूर्ण कविता में जहाँ एक स्थिति का सीधा वर्णन क्रम है, वहीं अलग–अलग टुकड़ों के जोड़ में बिम्ब का रूप भी झलकता है। हल्की प्रकृति और वैसा ही हल्का अवसाद कविता में घुल–मिल गया हैं–

"धूप कोठरी के आइने में खड़ी

हँस रही है।

x x x

एक मधुमक्खी हिलाकर फूल को

बहुत नन्हा फूल

उड़ गई

आज बचपन का

उदास माँ का मुख

याद आता है।"[73]

शमशेर सौन्दर्य वादी कवि है। उनकी कविताओं में सौन्दर्य का असीम क्षेत्र भरा पड़ा है। कवि ने उसे बिम्बों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। कवि ने शाम, समुद्र, दिवस, सूर्य, क्षितिज, नदी, धूप, लहरें, किरणें, बादल, शंख आदि को बिम्बात्मक अभिव्यक्ति दी हैं। कवि ने 'उषा' कविता में सूर्य उदय से पूर्व आकाश की स्थिति के रंग को मटमैला होता है, नीला शंख जैसा या किसी बालक ने अपनी स्लेट पर लाल रंग की चाख–खड़िया मल दी हो, रंगों में परिर्वतन को लाल केसर जैसा कहकर बिम्बों का सजृन किया है। रंगों की बारिक पहचान की चाक्षुष दृष्टि शमशेर के पास ही है जो उनकी बिम्ब धर्मिता को दर्शाती है। :–

"प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे

भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका

अभी गीला पड़ा है,

बहुत काली सिल जरा–से लाल केसर से

कि जैसे धुल गयी हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक

मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो।"[74]

शमशेर के बिम्ब अकसर घुले मिले से प्रतीत होते है। कवि की कल्पना का क्षितिज उभरता है और वह बिम्ब में फैल जाता है। यह उनके अंतर्मन के बिम्ब होते है। उनके भीतर सूर्य के अस्त होते ही तीव्रता नष्ट हो जाती है। इस प्रकार से उनके यहाँ अग्नि के ताप से तृण वनस्पति की उत्पत्ति होती है। अतः उनके बिम्बों में कार्य–कारण का सम्बन्ध गूँजता है।

"मौन ही विलास; मृत्यु मुक्ति!

सूनी है जीवन–पल–शुक्ति!

त्रास आज फूलों को देता है मधुमास!"[75]

शमशेर की रचना प्रक्रिया का आधार संघन और जैविक है। उनकी कविताओं में बिम्ब इन्द्रधनुषी आकार में आते है। यह सब उनकी अनेकों परिस्थितियों के रहे होने के कारण होता है उनके बिम्बों में मासलता और कठोरता का समावेश है। उनकी चित्रात्मक अनुभूतियाँ भी उनके बिम्बों की सृजनात्मकता में योग देती है। उनकी रचना प्रक्रिया के बारे में मुक्तिबोध ने लिखा है–"इनके सृजन बोध में वास्तविकता के उलझे प्रसंग होते हैं, और ये प्रसंग विशिष्ट भाव–प्रसंग के कहे जा सकते है।"[76] उनके 'एक ठोस बदन अष्टधातु का–सा' कविता में उद्दिप्त रूप का बिम्ब द्रष्टव्य है–

"एक ठोस बदन अष्टधातु का–सा

सचमुच ?

जंघाएँ दो ठोस दरिया

ठै रे हुए–से

मगर जानता हूँ कि वो

बराबर–बराबर बहुत तेज

रौ में हैं

ठै रा हुआ–सा मैं हूँ मेरी

दृष्टि एकटक्"[77]

नीला दरिया शमशेर की एक ऐसी कविता है जिसमें क्रियात्मक शब्दों के द्वारा बिम्ब अपनी उपस्थिति दर्ज कराते है। कविता में कवि आकाश और बादलों की बात करते–करते झागदार लहरों का अहसास कराते है, दरिया का नहीं। इस कविता में बिम्ब आगे मैदान और मकानों की उबड़ खाबड़ स्थिति तक फैल जाता है।–

"एक नीला दरिया बरस रहा है

और बहुत चौड़ी हवाएँ हैं

मकानात हैं मैदान

किस कदर ऊबड़–खाबड़

मगर

एक दरिया"[78]

"बिम्ब कविता की रचना–प्रक्रिया का अंग है, ऐसा मान लेने पर, जब शमशेर की कविता की बात करते हैं, तब ये चीजें इतनी घुली–मिली लगती हैं कि उनकी रचना–प्रक्रिया बिम्बों में से उद्‌भूत होती प्रतीत होती है। अनेक कविताएँ इसका साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं।"[79]

कवि शमशेर की कविताओं में अतियार्थाथवाद के स्वप्न बिम्बों से भरे पड़े है जिनमें असमय माँ, पत्नि, पिता की मृत्यु, विपरित परिस्थितियों के कारण एकाकीपन और अंतर्मुखी बिम्बों की भर मार है। कवि शमशेर की 'शिला का खून पीती थी' कविता में सारे बिम्ब सुररियलिज्म प्रभाव के बिम्ब है।

"सींग और नाखून

लोहे के बख्तर कंधों पर।

सीने में सुराख हड्डी का

आँखों में घास–काई की नमी।"[80]

शमशेर के बिम्ब लोक का आईना काफी मजबूत है। वह समृद्ध और विशिष्ट है। चुँकि शमशेर संवेदनाओं के कवि है उनकी संवेदनाएं कल्पना लोक से होकर यर्थाथ और पारदर्शी बिम्ब सृष्टि करती है। मधु शर्मा के अनुसार "शमशेर अक्सर अपनी कल्पना में ही समाधिस्थ हो जाते हैं। समाधि में ही जैसे कविता का कास्मिक संसार खुलता है। किसी दूरस्थ स्मृति में उनकी चेतना विस्तार पाती है और उस विस्तारित चेतना में कोई बृहद बिंब उभरता है, जिसके भीतर शमशेर चल रहे हैं। किसी महातल के मौर में।"[81] वस्तुतः शमशेर के कविता संसार में उनके बिम्ब अनेकों आकारों को ग्रहण करते हुए मानवीय मुल्यों का अहसास भी कराते है।

अस्तुः शमशेर बिम्ब रचना धर्मिता में वेजोड़ कवि है। इसके पीछे उनकी अंतर्मुखी स्थिति का होना रहा है उनकी संवेदनाएं उलझी हुई होती है उनकी कविताओं में बिम्ब के रूप में नयापन लेकर आती है।

निष्कर्ष–

शमशेर बहादुर सिंह की रचनाओं में निजी व वैश्विक संदर्भों के दो भिन्न छोरों को देखा जा सकता है। असल में जहाँ वे एक ओर अत्यंत आत्मकेन्द्रित हैं तो वहीं दूसरी ओर अत्यंत वैश्विक संदर्भों से भी सहज में जुड़ जाते हैं। उनके काव्य व्यक्तित्व का यह विरोधाभास स्वयं ही उन्हें अद्वैत की सिद्धि प्रदान कर देता है। कवि का निजपन इतना सूक्ष्म व गहरा है कि बाहर आते ही एक विराट रूप धारण कर लेता है। शमशेर को समझने के लिए किसी विचार, वाद को जानने की आश्यकता नहीं है बल्कि उनकी भाषा में पिरोए गए शब्दों की जड़ों और उसके प्रस्तुत शिल्प को सहज ढंग से लोक–संस्कृति व परम्परा से जोड़कर देखने की जरूरत है। शमशेर बहादूर सिंह ने कई स्तरों पर बिंबों व रंगों की गहनतम अर्थ छटाओं से हिंदी और उर्दू साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। जीवन के कटुतम संघर्षों को लेकर उन्हें कविता में एकदम तरल बना सकना शमशेर के ही काव्य–व्यक्तित्व की पहचान है। शमशेर की कविताओं में संगीत की मनः स्थिति बराबर चलती रहती है। एक और चित्रकला की मूर्तता उभरती है और फिर वह संगीत की अमूर्तता में डूब जाती है। गद्य में उन्होंने बोलचाल के लहजे को अपनाया व कविता की

लय में संगीत के चरम को। अतः वे दोनों परस्पर विरोधी मनः स्थितियों को कला रूप में साधते है। यही कारण है कि शमशेर में एक संपूर्ण रचना संसार दिखाई देता है। शमशेर ने रंगों की कई छटाओं का अपने मन के भावों की लय को अभिव्यक्त करने के लिए प्रयोग किया है। जैसे उनकी कविताओं में 'लोहे के खंजर', 'बख्तर', 'सींग' के साथ उभर कर आये है। शमशेर की समूची काव्य–प्रकृति उनके वर्ण्य, बिंब और लय से जुदा नहीं हैं। शमशेर ने जो कुछ लिखा वह सीधे उन्हें ही खोलता है। उनके वर्ण्य सामान्य–अकिंचन हैं, भाषा बोलचाल की है, बिंब आत्मीय हैं, लय असीम है। उनकी कविता में जीवन–मात्र के प्रति कृतज्ञता है। उनकी रचना के खुलेपन का एक कारण और प्रमाण यह है कि उनकी काव्यभाषा में संज्ञा शब्दों से कुछ अधिक महत्त्व सर्वनामों, क्रियापदों और अव्ययों का है। उनकी भाषा हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी की खिचड़ी है। वे आधुनिक काल के कबीरदास जी है। उनके प्रकृति–चित्रण में अतियथार्थवाद की झलक भी बार–बार मिलती है। शमशेर बहादुर सिंह हिन्दी साहित्य में कोमल और माँसल सौन्दर्य के लिए पारखी नजर रखते हैं। या यूं कहें कि वह आजीवन प्रगतिवादी विचारधारा के समर्थक रहे हैं। प्रेम और सौन्दर्य की उपासना शांति के लिए उनका शगल है। उन्होंने स्वाधीनता और क्रांति को अपनी निजी चीज की तरह अपनाया हैं। शमशेर के विरह गहरे और स्थायी थे। एकांत पथिक की झलक उनमें दिखती हैं। वह अवसरवादी नहीं है। वह विचारों को छोड़ते नही ंना ही उनको जल्दी से पकड़ते, बल्कि वह तो उन कवियों में से थे जिनके लिए मार्क्सवाद और भारत की सांस्कृतिक परंपरा में कोई विरोध नहीं था। यह एक ही प्रारूप के दो फलक हैं। इन सभी विषय क्षेत्रों में उनका शिल्प नवीनतम रूप लेकर आया हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शमशेर अपने शिल्प में नवीनता लाने में सफल रहे है। उनका शिल्प बिल्कुल नयेपन को लेकर चलता है।

संदर्भ संकेत

1. उद्धृत, अनुरागी, अजय, 'नयी कविता गिरिजा कुमार माथुर', पृ. 151
2. उद्धृत, वहीं, पृ. 152
3. उद्धृत, वहीं, पृ. 152
4. शमशेर, 'बात बोलेगी' कविता, सं. अशोक वाजपेयी, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 76
5. अरगड़े, रंजना, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 209
6. सिंह, शमशेर बहादुर, 'उदिता', पृ. 105
7. उद्धृत, मिश्रा, महेन्द्र कुमार, 'आधुनिक भाषा और भाषा विज्ञान', पृ. 01
8. जोशी, ज्योतिष, 'शमशेर की भाषा', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंहः लेख संग्रह", पृ. 55
9. शमशेर, सागर–तट, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 37
10. शमशेर, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं पृ. 67
11. सिंह, शमशेर बहादुर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 155
12. सिंह, शमशेर बहादुर, 'उदिता', पृ. 91
13. उद्धृत, सं. द्वारिका प्रसाद चारुमित्र, 'शमशेर की दुनिया', पृ. 175
14. सिंह, शमशेर बहादुर जी, 'सापेक्ष', जनवरी–मार्च, 1994, पृ. 333
15. सिंह, शमशेर बहादुर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 144,145
16. अरगड़े, रंजना, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 76
17. सिंह, शमशेर बहादुर, 'चुका भी हूँ मैं नहीं!', पृ. 85
18. शमशेर, सं. अशोक वाजपेयी, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 43

19. पाठक, गजेन्द्र, 'शमशेर की आलोचना दृष्टि', पृ. 86

20. उद्धृत, डॉ॰ शशि शर्मा, 'प्रगतिशील कविताओं में लोकतत्त्व', पृ. 18

21. सिंह, शमशेर बहादुर, उत्तर कविता, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 146

22. सिंह, शमशेर बहादुर, एक नीला दरिया बरस रहा है, 'चुका भी हूँ मैं नहीं!', पृ. 18

23. शमशेर, सं. नामवर सिंह, 'प्रतिनिधि कविताएँ', पृ. 162

24. मलयज, 'शमशेर जी', सं. दूधनाथ सिंह, 'एक शमशेर भी है', पृ. 32

25. सिंह, शमशेर बहादुर, मोहन राकेश के साथ एक तटस्थ बातचीत, 'चुका भी हूँ मैं नहीं!', पृ. 41

26. शमशेर, सं. अशोक वाजपेयी, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 84,85

27. सिंह, शमशेर बहादुर, 'चुका भी हूँ मैं नहीं!', पृ. 102,103

28. वही पृ. 17,18

29. शमशेर, सं. अशोक वाजपेयी, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 85,86,87

30. वही, पृ. 154,158

31. परसाई, हरिशंकर, 'है काम ये शायर का नहीं दिल शमशेर', सं.द्वारिका प्रसाद चारुमित्र, 'शमशेर की दुनिया', पृ. 15

32. उद्धृत, जोशी, मृदुला, 'नयी कविता मैं बिम्ब–विधान', पृ. 31

33. अरगड़े, रंजना, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 92

34. सिंह, शमशेर बहादुर जी, 'सापेक्ष', जनवरी–मार्च, 1994, पृ. 23

35. सिंह, शमशेर बहादुर, ओ युग आ, 'चुका भी हूँ मैं नहीं!', पृ. 25

36. उद्धृत, तिवारी, अनन्त कीर्ति, 'समकालीन प्रतिनिधि कवि', पृ. 127

37. शमशेर, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं पृ. 80

38. शमशेर, संध्या, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं पृ. 142

39. सिंह, शमशेर बहादुर, वाणी, 'उदिता', पृ. 28

40. शमशेर, राग, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं पृ. 22

41. सिंह, शमशेर बहादुर, 'काल तुझसे होड़ है मेरी' पृ. 66

42. सिंह, शमशेर बहादुर, होलीः रंग दिशाएं, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 114

43. सिंह, शमशेर बहादुर, बार–बार मन चाहता है, 'उदिता', पृ. 67

44. शमशेर, गीत, सं. अशोक वाजपेयी, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 159

45. सिंह, शमशेर बहादुर, मुझे–न–मिलगें–आप, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 30

46. उद्वत, जैन, प्रतिभा, 'दिवकर काव्य कला और दर्शन', पृ. 396

47. शमशेर, माई, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं, पृ. 28

48. सिंह, शमशेर बहादुर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 29

49. वही, पृ. 88

50. शमशेर, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं, पृ. 50

51. शमशेर, नपलट ना उधर, सं. अशोक वाजपेयी, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 152

52. सिंह, शमशेर बहादुर, मृत्यु का प्रस्तर खण्ड़, 'उदिता', पृ. 50

53. अरगड़े, रंजना, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 127–134

54. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, 'सौन्दर्य बोध', पृ. 34

55. शमशेर, सं. रंजना अरगड़े, 'सुकून की तलाश', पृ. 36

56. वही, पृ. 33

57. शमशेर, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं, पृ. 57

58. सिंह, शमशेर, एक पत्र, 'उदिता' पृ. 16

59. शमशेर, धर्म और 'मजहब' वाले, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं, पृ. 69

60. सिंह, शमशेर, शशि बकाया की याद में, 'उदिता' पृ. 90

61. शमशेर, सं. अशोक वाजपेयी, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 127

62. सिंह, शमशेर, 'इतने पास अपने', पृ. 44

63. सिंह, वीरेन्द्र, बिम्बों में झांकता कवि शमशेर, पृ. 63

64. शमशेर, सौन्दर्य, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं, पृ. 117

65. मलयज, 'शमशेर जी', सं. दूधनाथ सिंह, 'एक शमशेर भी है', पृ. 29

66. कुमार, विमल, 'सौन्दर्य शास्त्र के तत्त्व', पृ. 217

67. नगेन्द्र, 'काव्य बिम्ब', पृ. 01 (1990)

68. सिंह, नामवर, 'नयी कविता उपलब्धियाँ और बिम्ब विधान' पृ. 43

69. अरगड़े, रंजना, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 45

70. नगेन्द्र, 'काव्य बिम्ब', पृ. 03 (1990)

71. उद्धृत, रंजना अरगड़े, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 46

72. पाठक, गजेन्द्र, 'शमशेर की आलोचना दृष्टि', पृ. 81

73. सिंह, शमशेर बहादुर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 117

74. शमशेर, सौन्दर्य, चयन और भूमिकाः गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह संकलित कविताएं, पृ. 130

75. सिंह, शमशेर, 'बोलो,—आकाश... क्यों मलिन', 'उदिता' पृ. 78

76. सक्सेना, सर्वेश्वर दयाल, 'शमशेर', पृ. 14

77. शमशेर, सं. अशोक वाजपेयी, 'टुटी हुई बिखरी हुई', पृ. 66

78. सिंह, शमशेर बहादुर, ओ युग आ, 'चुका भी हूँ मैं नहीं!', पृ. 17

79. अरगड़े, रंजना, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 50

80. सिंह, शमशेर बहादुर, 'कुछ कविताएँ व कुछ और कविताएँ', पृ. 154

81. शर्मा, मधु, 'कविता के शिखरों से टकराती एक गूँज', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंहःलेख संग्रह", पृ. 87

पंचम अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं का परवर्ती काव्य पर प्रभाव

पंचम अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं का परवर्ती काव्य पर प्रभाव

साहित्य सृजन मानव जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना है इसमें स्वयं साहित्यकार अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति देता है। यह उसकी सम्पूर्ण कलापूँजी भी होती है। प्रत्येक रचनाकार अपने समय की सामाजिक, राजनीति, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों के परिवर्तनों से प्रभावित रहता है। यही कारण है कि रचनाकार समष्टि का एक महत्त्वपूर्ण अंग होता है। डॉ॰ श्यामसुंदरदास के अनुसार "काव्य को हम मानव जाति के अनुभवों, कार्यों अथवा उसकी अंतर्वृत्तियों की समष्टि भी कह सकते हैं।"[1]

हिन्दी काव्य अनादिकाल से लेकर आज तक युग की प्रवृत्तियों के अनुसार परिवर्तित होता रहा है। आदिकाल का काव्य विदेशी शासकों के अत्याचार और शोषण पर लिखा गया है, तो भक्तिकाल का भक्ति और श्रृंगार के सामंजस्य पर आधारित है। इसमें यदा–कदा देशभक्ति का स्वर भी देखने को मिलता है। आधुनिककाल विशेष परिर्वतनों का युग रहा है। हिन्दी कविता ने सन् 1936 के बाद प्रगतिशील चेतना को धारण किया है। इसमें विकसित काव्य प्रवृत्तियों में प्रगतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता, नई कविता, समकालीन कविता आदि का नाम प्रमुख है। इन धाराओं की कविताओं को लिखने वाले कवियों ने निरन्तर कविता को समाज सापेक्ष बनाया है। नई कविता के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षरों में अज्ञेय, मुक्तिबोध, भवानी प्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर आदि का नाम शामिल है। नामवर सिंह ने लिखा है कि "1951–1959 के बीच नई कविता के रूप में सर्जनात्मक संभावनाओं का जो अभूतपूर्व आवेश दिखाई पड़ता है उसका श्रेय समकालीन परिवेश के साथ कवि की इस रागात्मक संगति को देना अनुचित न होगा।"[2]

जैसा कि परिर्वतन प्रकृति का नियम है। हिन्दी कविता ने भी सन् 1960 के बाद एक महत्त्वपूर्ण मोड़ लिया है। विद्ववानों ने इसे साठोत्तरी पीढ़ी की कविता नाम दिया है। इस काल में अनेकों काव्य आन्दोलनों से प्रेरित कविता पत्रिकाओं में छपी है। उन्हें कई नाम भी मिले, जिनमें कुछ जिन्दा रही और कुछ मृत हो गई है। डॉ॰ हरदयाल ने इनके नामों की श्रृंखला को इस प्रकार क्रमबद्ध किया है। "सनातन, सूर्योदयी कविता, सीमान्तक कविता, युयुत्सावादी कविता, अकविता, अन्यथावादी कविता, विद्रोही कविता, क्षुत्कातर कविता, कबीरपंथी कविता, अभिनव कविता, अधुनातन कविता, निर्दिशायामी कविता, लिंग्वादलमोतवादी कविता, एब्सर्ड(ऊलजलूल) कविता, नवगीत, अगीत, नवप्रगतिवादी कविता, साम्प्रतिक कविता, ठोस(कांकीट) कविता, कोलाज

कविता ताजी कविता, गलत कविता, साम्प्रतिक कविता, श्मशानी कविता इत्यादी कविता–संज्ञाएँ सातवें दशक की देन हैं।"[3] वस्तुत ये कविता की स्थापित धाराएँ नहीं है, अपितु ये विविध काव्यान्दोलन थे। सन् 60 के बाद के आन्दोलनों के बहुत सारे कवि नई दिशाओं की खोज की ओर प्रवृत्त हुए है। डॉ॰ हरदयाल के अनुसार "'नयी कविता' के ये सरोकार जल्दी ही पुराने पड़ गये। 'तारसप्तक' के एक कवि गिरिजाकुमार माथुर ने अनुभव किया कि 1960 तक आते–आते 'नयी कविता' में एक नये प्रकार की रूढ़ि तथा पैटर्न स्थिर हो गया।... अधिकतर कविताओं के प्रतीक, उपमान, शब्दावली, कथ्यशैली, आटोमैटिक(स्वचालित) ढ़ग से प्रयुक्त, प्रचलित सत्य वचन, जैसे दर्द, कुण्ठा, प्रभू आदि पौराणिक या महाभारतकालीन संदर्भ, यहाँ तक कि शीर्षक छपाने का ढंग और पढ़ने का दर्द–भरा अफअर्दी, रोमानी तरीका एक–सा हो गया।"[4] साठोत्तरी कविता में अकविता, समकालिन कविता बहुत अधिक चर्चित रही है।

5:1 साठोत्तरी पीढ़ी की कविता पर प्रभाव

कोई भी काव्य प्रवृत्ति अचानक से उद्‌भूत नहीं होती उसके पीछे कोई ना कोई कारण या परिस्थितियाँ रही होती है और युगीन कवि इन सब से प्रेरणा लेकर अपने पूर्ववर्ती कवियों के काव्य से भी प्रेरित होकर काव्य रचना करते हैं। सन् साठ के बाद की कविता के ऊपर भी यह बात लागू होती है।

भारतीय स्वाधीनता के बाद देश में जिस परिवर्तन और विकास की आशा देशवासीयों ने की थी, वह पूरी नहीं हो पाई। आम जनता बेरोजगारी भूखमरी, महंगाई से परेशान हो रही थी। शासनतंत्र के भीतर भ्रष्टाचार और खोखलेवादों का आधिपत्य था। इस कारण जनता का प्रजातन्त्र से मोहभंग हुआ और वह आक्रोशित होती गई। विश्वनाथ तिवारी ने तात्कालिक परिवेश और हिन्दी कविता की स्थिति को रेखांकित करते हुए लिखा है कि भारतीय स्वाधीनता से आम जनता का मोहभंग हो चुका था। आजादी के कुछ वर्षों बाद का साहित्य मोहभंग का साहित्य है। गांधी की हत्या वास्तव में जनाकांक्षा की हत्या थी। गांधी के बाद भारतीय जनता के सपने बिखर गये। सन् 1960 के बाद की हिन्दी कविता में भारत में लोकतंत्र की अव्यवस्था, असमानता, उत्पीड़न, लोलूपता, पाखंड और अहंकार आदि के हजारों चित्र मिलेंगे।[5]

देश के भीतर सामाजिक स्तर पर भेदभाव, छुआछुत, जादु–टोना, धार्मिक उन्माद आदि ने समाज के भीतर दरारे और गहरी कर दी थी। नारी अब श्रद्धा नहीं, मनोरंजन का साधन थी।

उच्छृंखल प्रेम निम्न, मध्यम और उच्च सभी वर्गों में व्याप्त होता जा रहा था। इन कारणों ने कवि को उद्वेलित किया है।

भारत–विभाजन तथा शरणार्थी – सन् 1972 में चीनी आक्रमण और उसके विश्वासघात ने भारतीय जनमानस तथा युग कवियों के भीतर विद्रोह के स्वर उत्पन्न किए हैं। इन सबके कारण सन् साठ के बाद की कविता अस्तित्व में आती है।

शमशेर की कविता के मूल स्वर :–

संक्षिप्त में शमशेर की कविता के उन स्वरों का यहाँ उल्लेख किया जा रहा, जिन्होंने साठोत्तर कविता की प्रवृत्ति को प्रभावित किया है। इनका विस्तार से अध्ययन शोध कार्य के पूर्व अध्यायों में किया जा चुका है। शमशेर की सामाजिक चेतना से भरी हुई कविताओं में 'बैल' और 'य शाम' जैसी कविताओं ने सामाजिक विषमता व श्रम के ह्रास को दिखाया हैं।

जिस प्रकार शमशेर को अनेकों विशेषण प्राप्त हुए है उसी प्रकार साठोत्तरी कविता में उनकी नई कविता के अनेकों स्वर गुंजते है। शमशेर स्वच्छंद काव्य धारा के कवि रहे है।'बात बोलेगी' कविता इसका प्रमाण है। 'मेरे समय को...' कविता में शमशेर ने खुलकर लिखा है कि वे शतरंज का मोहरा बनने को तैयार नहीं है–

"शतरंज का एक खाना है

जिसमें तुम मुझे उपर उठाकर रखते हो।"[6]

शमशेर ने राजनीतिक परख रखने वाली अपनी कविताओं में शासन की तानाशाही पर करारे व्यंग्य करने वाली अनेकों कविताएँ लिखी है। उनकी एक कविता 'तुर्कमान गेट' ने उस जमाने में संजय गांधी की बर्बरता को दिखाया है। उस समय कांग्रेस का मतलब संजय गांधी ही था। दिल्ली को नये सिरे से बसाने का कथ्य इस कविता में है। तुर्कमान गेट पर तमाम मकान जो कदीम थे, गिराये गए और बाद में कत्लेआम, गोलीकांड, पुलिस की बर्बरता बहुत सारे संकेतात्मक ढंग से यह कविता लिखी गई है :

"ओस टपकी है कँसी जहरआलूद!

जख्म–ता–जख्म

बाग में है जमूद

जो भी गुंचा खिला

वो जख्मी था :

सुर्ख बेशक बहार का था बुजूद!"[7]

नारी देह का चित्रण शमशेर को बहुत प्रिय रहा है। उनकी इन कविताओं के बारे में विश्वनाथ त्रिपाठी की पंक्तियां द्रष्टव्य है। *"नारी देह का प्रभाव–चित्रण शमशेर बेसुध होकर करते हैं।... (जो बकौल रघुवीर सहाय शमशेर के लिए आक्सीजन थी) इस ठंड से उन्हें उबारते हैं, लगभग नारी देह की भांति।[8] कवि ने 'एक ठोस बदन अष्टधातु का–सा' कविता में नये कवियों की तरह नारी शरीर के अंगों का चित्रण प्रस्तुत किया है।*

यथार्थ का चित्रण करना शमशेर की शैली रही है। वे अतियथार्थ वादी कवि भी है। उनके यथार्थ के बारे में रमाकान्त शर्मा ने लिखा है कि "...उनका यथार्थ बोध एक परिष्कृत यथार्थ बोध है। उनकी विशेष मनोरचना के अतिरिक्त ताप से परिशुद्ध हुआ।"[9] है।

शमशेर की नई कविताओं की एक और विशेषता रही है कि उनमें आज की कविताओं की तरह खुलकर भ्रष्ट–शासन व्यवस्था, समाज की विद्रुपताओं पर करारा व्यंग्य हुआ है। उनकी 'धारीदार जाँघिया पीला' कविता में लोगों के दोहरे चरित्र पर कटाक्ष किया गया है। भ्रष्ट हो चुकी व्यवस्था को उजागर किया है। जहाँ लोग अपने फायदे के लिए कैसा भी व्यवहार करने के लिए तैयार हैं–

"धारीदार जाँघिया पीला

और धारीदार बनयान पहले

धीरे–धीरे बेआवाज पंजों के बल

चलता हुआ हल्के अंधेरे से

निकलकर अल्के अंधेरे में

लोप हो गया।"[10]

शमशेर ने अपने शिल्प संभार को भी अपने हिसाब से गढ़ा है। उनके शिल्प पक्ष में बिम्बों की स्थिति के बारे में विजयदेव नारायण साही ने कहा है कि "शमशेर के बिम्बों का अस्तित्व लगभग खुलकर रिक्त होते जाने के क्षण में है।"[11]

शमशेर की कविता में उपरोक्त सभी बिन्दु सन् साठ के बाद की कविता की वानगी में मिलतें है। इस काल के बाद की कविताओं को साठोत्तरी कविता कहा जाता है। वस्तुतः साठोत्तरी कोई काव्य धारा नहीं है। साठोत्तर शब्द साठ के बाद की कविताओं के लिए प्रयुक्ति प्राप्त है। इसकी कोई स्पष्ट विशेषताएँ भी नहीं है। आगे की सभी काव्य प्रवृत्तियों की विशेषताएँ इसमें समाहित है।

5:1:1 साठोत्तरी / अकविता

अकविता का जनक डॉ॰ जगदीश चतुर्वेदी को माना जाता है। सर्वप्रथम उन्होंने इस प्रकार की कविताएँ नई कविता में शामिल होने के लिए लिखी तथा नई कविता की उपलब्धियों को अकविता के खातें में लाने का प्रयास किया। किन्तु यह बात नहीं बनने पर उन्होंने रमेश कुंतल द्वारा सम्पादित 'अभिव्यक्ति' में इस काव्य आन्दोलन का नाम 'अकविता' स्पष्ट कर दिया। सन् 1965 में श्याम परमार ने 'अकविता' नाम से पत्रिका प्रकाशन कर विधिवत् शुभारम्भ किया जिससे इस नाम की कविता ने स्थिरता पाई। विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार "अकविता का आशय ऐसी काव्य–प्रवृत्ति से था जैसी कविता अब तक नही हुई है। इसके लिए उसके नाम में ही परम्परा को पूरी तरह नकारने का भाव था। वस्तुतः यह विवेक पक्ष की उपेक्षा करके विद्रोह या व्यवस्था विरोध की काव्य प्रवृत्ति थी।"[12]

अकविता के प्रादुर्भाव के कारणों में मुल कारण था, सन् 1972 में चीनी आक्रमण का होना। अकविता लिखने वाले कवियों में कुछ महत्त्वपूर्ण नाम इस प्रकार है। धूमिल, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, त्रिनेत्र जोशी, लीलाधर जगूड़ी आदि।

धूमिल अकविता के महत्त्वपूर्ण कवि है। उन्होंने उस समय की भ्रष्ट–शासन व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश अपनी कविताओं में दिखाया है। वे समाज में समानता स्थापित करना चाहते थे। इसलिए उनकों शोषकों का विरोधी और शोषितों का पक्षधर कवि माना जाता है। कवि ने अपनी कविता 'संसद से सड़क तक' में वे भूख और गरीबी से तड़पति हुई जनता के लिए बार–बार राजनीति से तथा संसद से टकराते हैं। उनका दुःख निराला के जीवन की कथा के समान है। वे अपने 'स्व' का विस्तार करके आम जनता का स्वर बनाते है। "धूमिल की दुनिया

जितनी ठोस है उतनी ही ठेठ और बेबाक भी।"[13] धूमिल की 'संसद से सड़क तक' कविता में देखे–

"अपने यहाँ संसद

तेली की वह घाणी है

जिसमें आधा तेल है

और आधा पानी है

और यदि यह सब सच नहीं है

तो वहाँ एक ईमानदार आदमी को

अपनी ईमानदारी का मलाल क्यों ?

जिसने सत्य कह दिया

उसका बुरा हाल क्यों।"[14]

राजनेताओं के दोहरे चरित्र पर अकविता के एक ओर कवि त्रिनेत्र जोशी ने मतदान के समय उसके बनाबटी पर व्यग्ंय करते हुए लिखा है कि–

मंत्री

खिलखिल"ात

कर बढ़ाता

भत्ते बनाता

पूँछ हिलाता

फिर आ रहा

मतदान पेटी के पास।"[15]

साठोत्तरी कविता या अकविता के कवि की दृष्टि अपनी पूर्ववर्ती काव्य धाराओं की दृष्टि से बिल्कुल भिन्न है। वे कोई भी विषय हो उससे सीधा साक्षात्कार करते है। वे आंशिक परिवर्तन में नहीं अपितु सम्पूर्ण परिवर्तन में विश्वास रखने वाले कवि है। कवि मनोज सोनकर ने शोषक के रूप में तबदिल व्यवस्था के छोटे मोटे परिवर्तनों पर करारा व्यंग्य करते हुए लिखा है कि– "इस मुल्क का इतिहास––शोषक का इतिहास है। इस मुल्क की सभ्यता––शोषण की सभ्यता है। इस मुल्क की संस्कृति––शोषण की परम्परा है। इस मुल्क की सभ्यता शोषण की सभ्यता है। इस मुल्क की संस्कृति शोषण की संस्कृति है।"[16]

अकविता के कवियों में लीलाधर जगूड़ी का नाम प्रमुख है। उन्होंने सभी प्रकार की समस्याओं की कविता लिखी है। उनका मध्यम वर्गीय चेतना से सम्बन्ध होने के कारण उसमें व्याप्त रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, लचर मान्यताओं और अवैज्ञानिक अवधारणाओं को वैशाखियों की इमारत माना हैं। अगतिशील, प्रतिक्रियावादी और जन व्यवस्था के प्रति उनके मन में गहरा आक्रोश था। उनकी कविताएँ बड़बोलेपन की जगह सपाटबयानी पर जोर देती है। "लीलाधर जगूड़ी अकविता के दौर से उभरे हमलावर युवा कविता के बहुचर्चित लेखक है।"[17]

जगूड़ी की कविता संघर्ष की कविता है, विपक्ष की कविता है, विरोध की कविता है और विद्रोह की कविता है। कवि व्यवस्था की अव्यवस्था पर, वास्तविकता और व्यवस्था के बीच फर्क के लिए व्यवस्था से जुड़ हुए क्लर्क को मानते है। उन्होंने उसे भी नहीं बख्शा–

"वह जानता है

वास्तविकता और व्यवस्था में

जो फर्क है

उसके बीच

कहीं न कहीं एक क्लर्क है

वह जानता है

फाइल दर फाइल

नम्बर दर नम्बर

देश ऊँचाा उठ रहा है

रेडियो रोज खबर दे रहा है

देश आत्मनिर्भर हो रहा है

बाकी क्या नहीं हो रहा है

खाक हो रहा है। कूड़ा हो रहा है

देश धक्के खाता है

टामा पीता है

अकाल की तरह भी मिलता है

नक्शों और आँकड़ों से बाहर मिलता है।"[18]

अकविता की एक ओर दुसरी प्रवृत्ति है मांसलदेह का नग्न चित्रण। धूमिल जैसे कवियों के द्वारा अकविता का शास्त्र लिखने की कोशिश की गई थी, लेकिन वे इसमें असफल ही रहे है। इस कविता के कवियों ने मोहभंग और विद्रोह की स्थिति में उच्छृंखल यौन सम्बन्धों को खुले रूप में अभिव्यक्ति दी है। एक कवि ने लिखा है–

"नंगी सी नारियों के

उधरे हुए अंगों के

विभित्र पोजों में

लेटी थी चाँदनी।"[19]

कवियों ने नारी की जांघों के बीच भूगोल का खूब चित्रण किया है। लक्ष्मीकांत वर्मा ने अपनी कविताओं में 'कुल वधु को वैश्या हो गई' है। श्रीकातं वर्मा ने नावों को 'वैश्या की तरह थकी' जैसे प्रतीक काम में लिए है।

वस्तुतः शमशेर बहादुर की कविताओं पर पश्चिमी काव्यान्दोलनों का गहरा प्रभाव रहा है। अकविता या साठोत्तरी कविता ने बदली हुई परिस्थतियों का कार्य बड़ी कुशलता से किया है।

अकविता की जड़े भी पश्चिमी काव्यान्दोलन से जुड़ी होने के कारण शमशेर की कविताओं से साम्य रखती है। अकविता ने शमशेर की उस हर प्रवृत्ति को आत्मसात किया है जो उसके मुख चित्रण में सहयोगी बनी है।

5:1:2 विचार कविता

विचार कविता सन् 1973 में 'संचेतना' पत्रिका के माध्यम से प्रकटी है। इस काव्यान्दोलन के बारे में रामेश्वरलाल खण्डेलवाल ने लिखा है कि "विचार कविता के उत्साहि रचनाकार डॉ॰ बलदेव वंशी ने इस काव्यान्दोलन को ऊँचा उठाया है। विचार में शक्ति, तेज, प्रेरणा और दिशा–निर्देशन की क्षमता होती है किन्तु वह अनुभूति, अनुभव का स्थानापन्न होकर किसी भी प्रकार स्थायी काव्य–प्रकार को जन्म नहीं दे सकती।[20]

विचार कविता में आस्था मूलक दृष्टिकोण, विचार तत्त्व की प्रधानता, परिवेश के प्रति जागरूकता, जीवन की विद्रूपताओं का विश्लेषण, वर्तमान व्यवस्था एवं राजनीति के प्रति गहरा आक्रोश और अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता पर जोर दिया गया है। शमशेर की कविता में लगभग इन सभी रूपों का लेखन कार्य हुआ है।

5:1:3 समकालीन कविता

'समकालीन' शब्द अंग्रेजी के 'कन्टैम्परेरी' का पर्याय है जिसका अर्थ बोध या बोधक से है। साहित्यिक जगत् में जिसका सम्बन्ध सातवें और आठवें दोनों दशकों में लिखे गए काव्य से है। यह कविता वर्तमान का सीधा–साधा खुलासा भी है। हिन्दी कविता की इस धारा में उपहास, व्यंग्य, लताड़, मार–धाड़, सिंह गर्जन का चित्रण है, जीवन और मूल्यों के स्थान पर सताएँ हुए लोगों का विवेचन और विद्रोह भी इस कविता की मुख्य धारा में है। डॉ॰ कुसुम राय के अनुसार "समकालीन जन–चेतनावादी काव्यधारा के अन्तर्गत वामपंथी, जनवादी विचार कविता के बाह्य स्वरूप में अन्तर होने के बावजूद 'जन–चेतना' के प्रति प्रतिबद्धता दोनों को एक सूत्र में पिरोती है।"[21] डॉ॰ गीता पंत ने समकालीन शब्द का अर्थ समझाते हुए लिखा है कि समकालीन शब्द नाम तथा गुण वाली कहावत को चरितार्थ करता है। अर्थात् जो समकालीन ज्वलंत मुद्दे हैं, वे सब इसमें शामिल होते है। 'समकालीन कविता' विचार कविता का ही पर्याय है। इसमें 'विचार कविता' की विशिष्ट प्रवृत्तियों के संकेत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।[22] विचार शमशेर बहादुर सिंह की नई कविताओं की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। उनकी प्रत्येक कविता जो मूर्त से अमूर्त की ओर जाती

हूई प्रतीत होती है वे सब विचार तत्त्व की पुष्टि में लिखी गई कविताएँ है। शमशेर ने खुद लिखा है कि अगर "इन विरोधों को... हम नैतिक और राजनीतिक समस्याओं के आधार पर समझेंगे, तो हमारी नैतिक और राजनीतिक समझ ... जरूर बढ़ सकती है।"[23] कवि का यही दृष्टिकोण उनको समकालीन कविता के नजदीक लाता है।

आज का युग मानव जीवन में संघर्ष और समस्याओं का युग है। समकालीन कविता चारों तरफ से घिरे हुए मानवीय जीवन को रेखांकित करती है। समकालीन कवियों में जहाँ छोटी–छोटी आवश्यकताओं को भी अपनी कविता का विषय बनाया है। उन्होंने सदीयों के सन्ताप झेल रहे समाज के उस दलित वर्ग को भी अपनी कविताओं में सम्मिलित किया है। ओमप्रकाश वाल्मिकी ने 'सदीयों का संताप, बस्स! बहुत हो चुका' कविता संग्रह में दलितों की सशक्त अनुभूतियों को अभिव्यक्तियाँ दी है। ऐसा लगता है कि इस संग्रह की कविताएँ ज्वालामुखी बनकर सदीयों का संताप उगल रही है। कविताओं में भावाकुलता, शब्द तथा भावना का एकाकार दर्द, प्रतिशब्दों की पहचान, सामाजिक परिवर्तन की जिजीविषा, दलितों की संतप्तता को दर्शाने वाली कविताएँ है।

"चूहड़े या डोम की आत्मा

बाह्म का अंश क्यों नहीं है

मैं नही जानता

शायद आप जानते हों।"[24]

कवि ने शोषितों की पीड़ा को 'मुट्टी भर चावल' कविता में –ओ मेरे अज्ञात अनाम पुरखों/तुम्हारे मूक शब्द जल रहे है/दहकती राख की तरह/राख जो लगातार काँप रही है/रोष से भरी हुई। शब्दों में व्यक्त किया है।

कवि मंगलेश डबराल की समकालीन कविताएँ निम्न वर्ग तथा निम्न मध्य वर्ग की विसंगतियों व निराशाओं की तह तक जाने की चेष्टा करती है। इनके संग्रह 'पहाड़ पर लालटेन' में वर्गीय समझ व कवि संकल्प का परिचय है समकालीन समस्याओं की पहचान और उससे संघर्ष द्वारा मुक्ति पाने की सांकेतिक अभिव्यक्ति इस संग्रह की कविताओं में है। एक नये मनुष्य की गंध इन कविताओं का परिचय है। पहाड़ पर लालटेन कविता शीर्षक में ही कवि ने जंगल में औरतों के होने, जंगल में रक्त होने का संकेत, बेबसी, विवशता, जटिलता, चूल्हों के पास में बिखरे पारिवारिक लाचार शब्द, अकाल में बटोरे गये दानों आदि का संयोजन किया गया है–

"दूर एक लालटेन जलती है पहाड़/एक तेज आँख की तरह/टिमटिमाती धीरे–धीरे आग बनती हुई/देखो अपनी गिरवी रखे हुए खेत/बिलखती स्त्रियों के उतारे गये गहनें/देखो भूख से बाढ़ से, महामारी से/मरे हुए सारे लोग उभर आये है/चट्टानों से/दोनों हाथों से बेशुमार बर्फ पाकर/अपनी भूख को देखो/जो एक मुस्तेद पंजे में बदल रही है– जंगल में लगातार एक पहाड़ आ रहा है/और इच्छाएँ दाँत पेने कर रही है/पत्थरों पर।"[25] कवि ने अपनी सपाटबयानी में यह यथार्थ अभिव्यक्ति दी है।

शमशेर "मानव–धर्म के पक्षधर हैं। मानव मात्र के लिए शांति, एकता और प्रेम की कामना करते है।"[26] आज मानवीय मुल्यों का ह्रास होता जा रहा है। समकालीन कवि ऋतुराज को मानवीय मूल्यों की गहरी समझ है तथा व्यापक चिन्तन भी है। वह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक संदर्भों की पहचान व्यापक धरातल पर करते है। उनकी मूल चेतना बहुआयामी है। कवि ने खामोशी के संकेत से वस्तु स्थिति का परिचय कराते हुए लिखा है–

"खामोशी किसी चीज का नाम है

खामोशी किसी दुर्घटनाग्रस्त शोर की दलील है

खामोशी किसी केंसर से मारती हुई

लड़की का ढका चेहरा है,

लेकिन– जब खूब मेहनत के बाद थककर

हम उसे नींद में चलते हुए सुनते हैं

वह एक गीत है

खिले सफेद कलमों से भरी झील का।"[27]

समकालीन कविता के दिनों में कवियों ने घर–संसार और छोटे–छोटे आस–पास के प्रति निजी अनुभूतियों को कविता में बड़ी नजाकत और आर्द्रता के साथ सजाया है। कवि विष्णु खरे ने 'खुद अपनी आँख से' कविता में साधारण तथ्यों, ब्यौरों के भीतर तनाव रेखा से आज के आदमी के गुजरने की स्थिति को बताया है। टेबिल कविता में पीढ़ियों का कथानक स्मृतियों और अनूभवों के दृश्य लेख ने करूणा और स्पर्श, मानवीय ट्रेजेडी की दृश्यावली, उलझनों की प्रस्तुति, आदमी

की नियति का बयान करती है। वे अपने कारगर अन्दाज से दूर से आती हूई आवाजें, व्यक्ति और समय के तनाव, पाठकों में विश्वसनीयता का रिश्ता कायम करते है–

"यही समय हैं जब/एक मास्टर का, एक वकील का/एक डाक्टर का, और/एक साईकिल वाले सेठ का/चार लड़के दूसरी क्लास से निकलते है/घूमने के लिए।"[28]

उनकी समकालीन कविताएँ, सीधे और व्यंग्यात्मक अन्तर्विरोध की एक सधी हुई भंगिमा का सहारा लेती है, व्यापक अनूभवों की दुनिया का बचाव करती है। भावनात्मकता, लयात्मकता, आवेग, बहाव, लगाव और आत्मीयता, सहानूभूति, करूणा का बारीक वर्णन सर्वव्यास आयामों से जोड़ती है। अन्तर्विरोध की यह स्थिति शमशेर बहादुर सिंह की नई कविताओं में देखने में आती है। शमशेर की कविता में समकालीनता विद्यमान है। इसलिए ही अशोक बाजपेयी ने उनकी आवाज के बारे में लिखा है कि "शमशेर की आवाज सिर्फ बोलती ही नहीं, देखती हुई आवाज भी है।"[29] उन्होंने उनकी समकालीनता से प्रभावित होकर उनकी कविताओं का एक संग्रह भी निकाला है जिसका नाम 'टूटी हुई बिखरी हूई' रखा गया है। इस संग्रह का शीर्षक शमशेर की जिन्दगी के समान समकालीन व्यक्ति के जीवन को चरितार्थ करता है।

5:1:4 और अन्य काव्यधाराएँ

(1) सनातन सूर्योदयी नूतन कविता :–

सन् 1962 में वीरेन्द्र कुमार जैन ने 'भारती' पत्रिका के माध्यम से 'सनातन सूर्योदयी' आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन प्रयोगवाद एवं नई कविता की अतियथार्थवादी, ह्वासोन्मुखी प्रवृत्तियों के खिलाफ खड़ा किया गया काव्यान्दोलन था। इसमें दिशाहीन काव्यधारा को आत्मपीड़न, कुण्ठा, आत्मघात की दिशा से। अर्थात् मृत्यु से अमृत की दिशा को ले जाने वाली आगामी कल की अनिवार्यता पर जोर दिया गया। यह काव्यान्दोलन सैद्धान्तिक और व्यवहारिक रूप से सफल नहीं हो पाया और दो–तीन वर्षों के भीतर ही बिखरकर खत्म हो गया। इसमें नई कविता में व्यक्तिवाद व भोगवाद और अनास्थावाद का वर्तमान स्थितियों के हिसाब से घोर विरोध किया गया है। शमशेर की नई कविताओं में भी यह प्रवृत्ति दिखाई देती है।

(2) सहज कविता :–

सन् 1967 में डॉ॰ रवीन्द्र भ्रमर ने सहज कविता आन्दोलन चलाया। इसका उद्देश्य काव्य के क्षेत्र में आस्थामूलक प्रवृत्तियों को प्रतिष्ठापित करने का रहा है। यह कविता समाज सापेक्ष रही है। आधुनिकता के नाम पर अनास्था, पराजय, उच्छृंखलता और दिशाहीनता की प्रबल विरोधी रही है। इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में नारी और पुरूष का सहज आकर्षण और उनके भावात्मक सम्बन्धों का स्वाभाविक वर्णन है। कवि शमशेर ने भी इस प्रकार के वर्णन कविताओं में किए है। विश्वनाथ त्रिपाठी के शब्दों में "शमशेर ने नारी की अप्राप्ति में जो भाव–प्राप्ति की है, वह हिन्दी में अन्यत्र दुर्लभ है।"[30] अतः सिद्ध है कि सहज कविता के ऊपर शमशेर की कविता का प्रभाव पड़ा है।

इन सब काव्यान्दोलनों या प्रवृत्तियों के अतिरिक्त अस्वीकृत कविता, बीट कविता, युवा कविता, गीत या नवगीत श्मशानी पीढ़ी की कविता आदि अनेकों नामों से कविता का प्रकटिकरण हुआ। लेकिन ये बहुत अधिक दिनों या लम्बे समय तक न चलकर लुप्त हो गए। परन्तु यह सर्वमान्य है कि इन सब के भीतर मानव जीवन को बहूआयामी रूप मिलते है।

5.1.5 नई कविता सम्भावना और भविष्य

शमशेर की नई कविता की काव्य–दृष्टि, काव्याभिव्यक्तियों एवं प्रवृत्तियों का विवेचन एवं मूल्यांकन करने के पश्चात् नई काव्यधारा की कुछ आधारभूत समस्याएँ, सहज ही स्पष्ट हो उठती है। ये समस्याएँ बुनियादी तौर पर काव्य के प्रयोजन, काव्य की प्रेषणीयता और कवि के दायित्व से सम्बन्ध रखती हैं।

नये काव्य की आत्मा में, काव्य–वस्तु और काव्य–दृष्टि की कुछ समस्याएँ है। इन पर काफी विवाद भी रहा है। व्यक्ति–स्वातन्त्र्यवादी जीवन–दर्शन के आधार पर नई कविता सामाजिक प्रयोजन से सम्बन्ध रखती है। इसके लिए काव्य–कला एक स्वतंत्र वस्तु है। किसी प्रयोजन के साथ जोड़कर उसे देखना –इस पर बाह्यारोपण कर उसे कृत्रिम बना देना है। काव्य–कला किसी बाह्यारोपण से मर्यादित नहीं होती, बल्कि इसकी अपनी आन्तरिक मर्यादा है, अतः उसकी श्रेष्ठा की परख किसी सामाजिक प्रयोजन को स्पष्ट करने वाली होनी चाहिए। नई कविता अपनी समाजमूलक मर्यादा में इसे स्वीकार करती है। कवि शमशेर की कविताओं में काव्य प्रयोजन, जहाँ व्यक्ति के अन्दर ही समाज और विश्व का व्यापक दृष्टिकोण होता है। कवि शमशेर ने लिखा है–

"मैं समाज तो नहीं, न मैं कुल जीवन,

कण समूह में हूँ मैं केवल

एक कण"[31]

कवि के दायित्व की स्वीकृति ही समस्या को जन्म देती है। अतः नई कविता व्यक्ति–स्वतंत्रता को साधिकार मानती है। उसने ना कथ्य का, ना शिल्प का किसी का भी अधिकार स्वीकार नहीं किया है, वह मूलभूत समस्याओं के लिए, मानव–विकृतियों की अस्तव्यस्त मनमानी चेष्टाओं को ही अपना मर्म समझी है। इस कविता के कवि इसे अपना कर्म समझते है। अतः इस कविता को लिखने वाले कवियों ने वर्तमान हिन्दी–काव्यधारा में 'कला कला के लिए' और 'स्वान्तः सुखाय' जैसे पुराने प्रश्नों को खारिज करते हूए, नये सिरे से कविता को प्रेषणीय समर्थन किया है। नई कविता भारतीय स्वाधीनता के बाद एक नई उभरती हुई चेतना से काव्य सृजन में आई है तथा नये मोड़ का काव्य विवेचन प्रस्तुत करती है। यह हिन्दी काव्य की नवीन उपलब्धियों का विषय भी रही है। इसके समर्थ कवियों में शमशेर बहादुर का नाम अग्रण्य है। उनकी कविताओं की अनेको उपलब्धियाँ रही है। उनकी नई कविताओं का भविष्य उज्ज्वल है।

(1) नवीन उपलब्धियाँ :–

शमशेर बहादुर सिंह की नई कविता का विवेचन करने के उपरान्त उसकी उपलब्धियाँ सहज ही स्पष्ट हो जाती है।उनकी कविता छायावादोत्तर जीवनधर्मी संस्कारों को आत्मसात् करते हुए कविता के संवेदनात्मक जटिल, समकालीन, संघर्षों और दबावों से जूझकर काव्याभिव्यक्ति की और अग्रसर हुई है। उनकी कविता ने छायावादी कविता की काल्पनिक अतेन्द्रिय लोक की प्रवृत्ति को छोड़कर मानव–जीवन से अधिक निकटता प्राप्त की है। उनकी नई चेतना दृष्टि की कविताएँ जन–मानस के नये जीवन सत्यों के प्रति अधिक बौद्धिक जागरूकता सम्पन्न नये भाव–बोधों को राग की मार्मिक गहराई तक पहुँचाने में समर्थ रही है –यह उनकी पहली उपलब्धि है।

वर्तमान हिन्दी कविता के लिए शमशेर की कविता की दूसरी उपलब्धि है –काव्य–कला के प्रति उनका दृष्टि कोण। शमशेर ने माना है कि जो चीज जिस रूप में हमारे सामने आती है वह रूप हमारे मन और मस्तिष्क के लिए ज्यादा अर्थपूर्ण होता है। सच्ची अनुभूति की एक किरण उधार और अनुकरण की कला से कहीं अधिक मूल्यवान् होती है –चाहे वह अटपटी शैली और साधारण–सी विषय–वस्तु से ही क्यों न झलकती हो।[32] शमशेर ने अपनी प्रगतिशील कविताओं में

नई कविता को कला की उपेक्षा कर कला के अनगढपन को बढ़ावा दिया है। इस स्थिति में उनकी कविताएँ जहाँ युग की केन्द्रिय समस्याओं से संघर्ष कर मानव जीवन को अधिक सुखी, सुन्दर और सम्पन्न बनाने के लिए आत्मा का नया संस्कार कर रही है, वहीं वह शैली–शिल्प और भाषा के सार्थक प्रयोगों से अपनी रूप–सज्जा भी कर रही है।

आज की कविता में उनके गीतों की लोक–धुनों को अपनाकर जीवन से आत्मिक निकटता प्राप्त करने की ओर प्रवृत्ति बढ़ रही है, वहीं उनमें संगीत के नये तत्त्वों का समावेश भी हो रहा है। आज का कवि वस्तु तथा कला –दोनों के प्रति समान रूप से सचेत होता जा रहा है। वर्तमान हिन्दी कविता अब तक की अनकही अरूप भाव–स्थितियों को भी मूर्त रूप देकर मानव के भाव–बोध का विषय बनाने में अपनी सामर्थ्य का परिष्कार करती जा रही है। कविता को मूर्त से अमूर्त स्थिति की ओर ले जाना कवि शमशेर की मुख्य खासियतों में रही है। उनकी कविता के स्वर अन्य भाषाओं की कविता के स्वरों में गुंजायमान होकर देश और विदेश की सीमाओं में भावात्मक एकता का ठोस आधार प्रस्तुत कर रही है –यह उनकी तीसरी उपलब्धि है।

(1) नवीन सम्भावनाएँ/भविष्य :–

शमशेर की कविता की उपलब्धियों से ही हिन्दी काव्य के भावी सम्भावनाएँ स्पष्ट हो उठती हैं, जिसे हिन्दी के एक उदीयमान कवि के शब्दों में प्रस्तुत किया जा सकता है–

"जब हम खोज रहे होंगे/वापस लौटने के रास्ते

जो कभी छूट गये थे भूल से

तब चाँद काला पड़ रहा होगा

और सूरज अपने अश्वों के शव रूप में लिए

अंतरिम के सन्नाटे में यात्रा करने का उद्यत

किसी और पृथ्वी की ओर–/ठीक तभी मलबे पर उगी

हरी घास का छोटा सा पौधा/अपने नन्हे हाथ बढ़ा

पोंछ देगा चाँद का चेहरा

उसकी डरी, सहमी, धीमी आवाज में

गुनगुनाया गीत भर देगा/अन्तरिक्ष का शून्य

लौटा लायेगा सूरज को/आकाश गंगा का जल छिड़क

पुनर्जीवित करना उसके अश्वों को"[33]

हिन्दी कवि उपेन्द्र कुमार ने अपने दशक की कविता में लौकिक सामाजिक सम्बन्धों की पहचान, मनुष्य मन की उपेक्षा, स्थितियों को समझने–देखन की पद्धतियाँ, प्रकृति व मानवीय सम्बन्धों की व्याख्याएं आत्मिक व आत्मबोधी स्वरूप, काव्य जगत में काम चलाऊ मानसिकता आदि स्थितियों से संघर्ष करने के लिए ताकत को पुनः आस्था व आशाओं के साथ पुनजीर्वित करना चाहते है। उनकी यही आशा हिन्दी काव्य की सम्भावना और भविष्य हो सकता है।

निष्कर्ष :–

शमशेर बहादुर सिंह नई कविता के उन कवियों में रहे है जो लगातार अपनी कविता के प्रति समर्पित और सजग रहे है। उनकी कविताएँ राजनीति, सामाजिक दृष्टि से बहुत ज्यादा सक्रियपन में तो नहीं रही है, लेकिन उनकी कविता में निहित मूल दृष्टि, उन्हें एक सामाजिक दृष्टिकोण रखना वाला कवि बनाती है। उनकी राजनीति दृष्टि में एक विरोधाभास सा रहा है, लेकिन उनके प्रगतिशील विचारों में वह कभी अड़ंगा बनकर उपस्थित नहीं होता। कवि का दृष्टिकोण रूमानी और बिम्बवादी रहा है, लेकिन वे अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने वाले कभी नहीं रहे है।

लगभग सन् 1960 के बाद हिन्दी की नई कविता अवसान की ओर थी, साठोत्तरी पीढ़ी में अनेकों काव्य चेतना का उदय हो रहा था। इन काव्य चेतनाओं में अकविता, समकालीन कविता का नाम प्रमुख है। इन्होंने शमशेर की नई कविता अर्थात् उनकी चिन्तन धारा को बहुआयामी रूप में धारण किया है। शमशेर को इसलिए अतिसंवेदनशील कवि माना गया है। उनकी कविताएँ आज भी कवियों की प्रेरणा स्रोत है।

संदर्भ संकेत

1. श्याम, सुन्दरदास, 'साहित्यालोचन', पृ. 18
2. सिंह, नामवर, 'कविता के नए प्रतिमान', पृ. 91
3. हरदयाल, 'आधुनिक हिन्दी कविता', पृ. 177
4. वहीं, पृ. 177
5. तिवारी, विश्वनाथ, 'आलोचना के हाशिए पर', पृ. 95
6. सिंह, शमशेर, 'इतने पास अपने', पृ. 41
7. शमशेर, सं. गोपेश्वर सिंह, 'शमशेर बहादुर सिंह : संकलित कविताएँ', पृ. 64
8. त्रिपाठी, विश्वनाथ, 'शमशेर का काव्य लोक', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंह लेख संग्रह", पृ. 9
9. शर्मा, रमाकान्त, 'कविता का स्वभाव', पृ. 81
10. शमशेर, सं. अशोक वाजपेयी, 'टूटी हुई बिखरी हुई', पृ. 104
11. उद्धृत, शर्मा, रमाकान्त, 'कविता का स्वभाव', पृ. 80
12. उद्धृत, शर्मा, शशि, 'प्रगतिशील कविता में लोकतत्त्व', पृ. 24
13. उद्धृत, वहीं, पृ. 25
14. उद्धृत, डॉ॰ हेतु भारद्वाज, 'आधुनिक हिन्दी कविता का विकास' पृ. 167
15. उद्धृत, वहीं, पृ. 168
16. उद्धृत, डॉ॰ कुसुम राय, 'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास', पृ. 575
17. जगुड़ी, लीलाधर, 'नाटक जारी है', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, फलैस से
18. उद्धृत, डॉ॰ शेरगंज गर्ग, 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य' पृ. 396

19. उद्धृत, डॉ॰ हेतु भारद्वाज, 'आधुनिक हिन्दी कविता का विकास' पृ. 164

20. खण्डेलवाल, रामेश्वर लाल, 'आधुनिक हिन्दी कविता विकास : सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ', पृ. 203,204

21. राय, डॉ॰ कुसुम, 'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास', पृ. 571

22. पन्त, डॉ॰ गीता, 'समकालीन साहित्य समाचार पत्रिका', अंक 7, जुलाई, 2009, पृ. 4

23. सिंह, शमशेर, 'अमूर्त कला', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंह : लेख संग्रह", पृ. 73

24. वाल्मिकी, ओम प्रकाश, 'बस्स, बहुत हो चुका', पृ. 13

25. उद्धृत, डॉ॰ हुकुमचन्द राजपाल, 'समकालीन कविता चर्चित परिचित चेहरे', पृ. 63

26. अरगड़े, डॉ॰ रंजना, 'कवियों का कवि शमशेर', पृ. 22

27. उद्धृत, डबराल, डॉ॰ हुकुमचन्द राजपाल, 'समकालीन कविता चर्चित परिचित चेहरे', पृ . 68

28. खरे, विष्णुचन्द, 'पिछला बाकी', पृ. 20

29. वाजपेयी, अशोक, 'तीन सहचर कवि', सं. चारूमित्र, "शमशेर की दुनिया", पृ. 93

30. त्रिपाठी, विश्वनाथ, 'जो कि है का है' : शमशेर का काव्य–लोक', सं. चारूमित्र, शमशेर की दुनिया, पृ. 84

31. उद्धृत, डॉ॰ कुसुम राय, 'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास', पृ. 531

32. सिंह, शमशेर, 'अमूर्त कला', सं. कैलाश दहिया, "शमशेर बहादुर सिंह : लेख संग्रह", पृ. 71 से 73

33. कुमार, उपेन्द्र, 'अभिशप्त है चाँद', पृ. 47,48

षष्ठम अध्याय

उपसंहार

षष्ठम अध्याय

उपसंहार :–

शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक हिन्दी कविता के विरले कवि रत्न है जिन्होंने इस युग में कविता के प्रत्येक चरण के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। आधुनिक युग की तमाम काव्य प्रवृत्तियों में अगर किसी एक कवि की छंटनी की जाए जिनमें सभी प्रवृत्तियों के दर्शन होते हो तो वे कवि है शमशेर बहादुर सिंह।

आधुनिक हिन्दी कविता में नई कविता एक महत्त्वपूर्ण काव्यधारा रही है। शमशेर जी उसके समर्थ कवि रहे है। उनकी कविताओं में एक साथ प्रेम और प्रकृति के साथ–साथ जीवन के असली तत्त्व मृत्युबोध के भी रूप शामिल है।

शमशेर की काव्य यात्रा का समय सन् 1932–33 से 1993 के बीच का रहा है। एक लम्बी समयावधि तक उन्होंने साहित्य साधना की है। उनकी साहित्य रचना भी उन्हीं की तरह बिल्कुल समर्पित भाव की रही है। मुक्तिबोध ने उनकों हिन्दी का एक अद्वितीय कवि माना है।

आधुनिक हिन्दी कविता ने अपना विकास कईयों पड़ावों को पार करते हुए किया है। शमशेर जी एक खास बात ये भी रही है कि वे कभी किसी वाद या काव्यान्दोलनों के चक्कर में नहीं पड़े है। उनका लेखनकार्य स्वतंत्र रूप का रहा है। वे साहित्य में सच्ची अनुभूतियों को रखने वाले कवियों में शामिल रहे है। उन्होंने खुद भी इसकी पालना की है। उनकी अधिकतर रचनाएँ वैयक्तिक अनुभूतियों की रही है लेकिन उनमें समष्टि भाव के दर्शन स्वतः ही होते है। शमशेर की शमशेरियत की यह खास विषेशता है।

नई कविता के कवि रामस्वरूप चतुर्वेदी ने उनके रचना काल के बारे में लिखते हुए कहा भी है कि शमशेर का रचना बिंदु प्रयोगवाद और नई कविता का संधि काल है। शमशेर जी ने सन् खुद 'तार सप्तक'(1953) की भूमिका में नई कविता के लिए सुझाए गए उपाय ही आगे चलकर नई कविता के लिए महत्त्वपूर्ण बन गए थे।

वस्तुतः शमशेर नई कविता के महत्त्वपूर्ण कवि रहे है। उनका नई कविता के विकास में पर्याप्त योगदान रहा है। इस शोध कार्य में उनके नई कविता में योगदान को पांच अध्यायों में विभक्त करके चर्चा की गई है।

प्रथम अध्याय में नई कविता उद्‌भव और विकास से लेकर साठोत्तरी कविता के बाद की कविताओं पर भी पड़ने वाले प्रभावों तक को विवेचित किया है। नई कविता के उदय की परिवेशगत परिस्थितियों के साथ–साथ उस पर पड़ने वाले विविध पाश्चात प्रभावों को मूल्यांकित किया गया है। नई कविता के नामकरण और परिभाषाओं को भी विवेचन का आधार बनाया है। नई कविता की प्रवृत्तियों में यथार्थ चित्रण, कुण्ठा, भय, संत्रास, आधुनिक भावबोध आदि को विवेचित किया है। नई कविता के नवीन कथ्य और शिल्प पर विस्तार से चर्चा कि गई है। इस कविता का पूर्ववर्ती काव्य पर पड़ने वाले प्रभाव को भी विवेचना दी गई है।

द्वितीय अध्याय में शमशेर बहादुर सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पक्षों की विवेचना हुई है। शमशेर कवि और कथाकार के रूप में अपने कृतित्व में सदा उपस्थित रहे हैं। एक कवि के रूप में उन्होंने लगभग तीन सौ कविताओं की रचना की है जो उनके काव्य–संग्रहों में प्रकाशित हुई है। साहित्य जगत् में उनको जो भी नाम प्राप्ति मिली है वह एक कवि के रूप में ही अधिक मिली है। शमशेर जी अपने बाह्य व्यक्तित्व में देखने में बहुत सुन्दर थे। उतने ही वे आंतरिक व्यक्तित्व में भी रसमय थे। उनके भीतर भावुकता और उदारता बड़े पैमाने पर मिलती है। वे निश्छ्लहृदयधारी एक सच्चे समर्पित साहित्यकार रहे है। उनके व्यक्तित्व की एक नहीं अनेकों विशेषताओं का मूल्यांकन इस अध्याय में किया गया है।

शमशेर के कृतित्व पक्ष में उनके गद्य और पद्य दोनों को पृथक–पृथक रूप से मूल्यांकन किया है। शमशेर जितने कवि के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त थे उतने वे अपने गद्य में भी रहे है। प्रसिद्ध आलोचक रामविलास शर्मा ने उनके अच्छे गद्य की प्रशंसा कईयों बार की है। उन्होंने निबंध, कहानीयाँ, आलोचना, समीक्षा और स्केच आदि लिखे है।

शमशेर का समस्त साहित्य लेखन उनकी चित्रात्मकता से भी ओत–प्रोत रहा है क्योंकि उनकी मूल दृष्टि एक चित्रकार की ही रही है। जिसके विविध रूप–रंग उनके गद्य और पद्य दोनों में उपस्थिति दर्ज कराते रहे है।

तृतीय अध्याय में शमशेर जी की नई कविताओं के विविध पक्षों को विश्लेषित किया गया है। उनकी कविताओं पर जटिल होने के आरोप लगते रहे है। उनको एक दुरूह कवि माना जाता है। वे भाव संवेदना से विचार संवेदना की ओर बढ़ने वाले कवि रहे है। उनकी कविताओं का संसार असीम है। उनकी कथा वस्तु और उनका कैनवास बहुत अधिक विस्तारित है। वे प्रगतिवाद और प्रतीकवाद के मापदण्ड़कों के कवि रहे है। अतः उनकी कविताओं में सामाजिक दृष्टि परख

कविताएँ समाज के दलित वर्ग, शोषित वर्ग, श्रमिक वर्ग पर लिखी गई है। उनकी ये कविताएँ इन वर्गों को संगठित होकर, समन्वित भाव से संघर्ष करने के लिए भी प्रेरित भी करती है। उनकी इस प्रकार की कविताएँ साम्यवाद के अधिक नजदीक रही है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनकी लिखी गई कविताओं में सन् 1944 में ग्वालियर में हुए गोली कांड पर द्रवित होकर उन्होंने कविता लिखी है। सन् 1946 में मुम्बई के दंगों पर भी वे कविता लिखते है। शमशेर ने ऐसा कोई विषय नहीं छोड़ा जिन पर कविताएँ नहीं लिखी है। गोरे–काले रंग भेदी अफ्रिकी चेहरे को भी उन्होंने वेनकाब किया है। शमशेर बहस से बचते रहे है लेकिन वे मानव धर्म, एकता, प्रेम, शांति, सौन्दर्य और आशावाद को लेकर कविताएँ लिखते रहे है। उनकी सामाजिक दृष्टि धुंधली अवश्य रही है लेकिन उसमें रेख अवश्य मिलती है। कवि की यथार्थवादी दृष्टि इस बात का उदाहरण है। कवि ने प्रकृति प्रेम और सौन्दर्य के साथ–साथ विशुद्ध रूप में सामाजिक यथार्थ को अपनी कविताओं में चित्रण दिया है। 'अमन का राग', 'वाम वाम वाम दिशा', 'बात बोलेगी', 'सौन्दर्य', 'बैल', और 'मैं भारत गौरव–गुण गाता', आदि उकनी कुछ उनकी महत्त्वपूर्ण कविताएँ रही है जो उकने सामाजिक यथार्थपन के साथ–साथ देश और दुनिया की शांति की बात करती है।

चतुर्थ अध्याय में शमशेर बहादुर सिंह की शिल्प के विविध पक्षों में नवीनता को मूल्यांकित किया गया है। शमशेर को समझने के लिए किसी भी विचार या वाद की आवश्यकता नहीं है अपितु उनकी भाषा में पिरोए गए शब्दों की जड़ों और उसके प्रस्तुत शिल्प को सहज ढंग से लोक–संस्कृति व परम्परा से जोड़कर इस अध्याय में देखा गया है। उनकी भाषा में अनेकों भाषाओं के शब्द शामिल है। वे खुद अंग्रेजी, उर्दू, फारसी और हिन्दी के ज्ञाता रहे है। अतः भाषा पर उनका बहुत जोर रहा है। वे अपनी कविता में बिम्ब और प्रतीकों को लाने के लिए नए छंद का निर्माण भी करते है। उनके बिम्ब, प्रतीक और छंद सभी नवीनता लिए हुए है। उनकी कविताओं में गद्य की प्रचुरता है। उन्होंने बोलचाल के लहजे में कविता की लय को संगीत के चरम तक पहुंचाया है। शमशेर का शिल्प बहुत बेजोड़ है। इस अध्याय में इसकी चर्चा की गई है।

और पंचम अध्याय में शमशेर जी की नई कविताएँ जो सामाजिक, राजनीतिक दृष्टि से सक्रियपन में रही है। उनकी कविताएँ शिल्प में ही नवीनता रखती है ऐसी कविताओं का परवर्ती काव्य पर पड़ने वाले प्रभाव को विवेचना दी गई है। सन् साठ के बाद हिन्दी कविता में जो काव्य प्रवृत्तियाँ विकसित हुई वे नई कविता का विकास रूप ही है। उनमें अकविता, समकालीन कविता, विचार कविता आदि महत्त्वपूर्ण है। इन सभी ने शमशेर की कविताओं से कुछ न कुछ प्रवृत्ति ग्रहण की है। इस की विशद् चर्चा इस अध्याय में की गई है। नई कविता की सम्भावनाएँ और भविष्य को भी मूल्यांकन का आधार बनाया है।

शोध –सारांश

हिन्दी काव्य साहित्य ने समय के परिवर्तनों के साथ कदम–ताल करते हुए मानव जीवन की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी है। आदिकाल में कविता वीर रस में लिखी गई तथा मध्यकाल में भक्ति और श्रृंगार में लिखी गई थी। आधुनिक काल मानव जीवन के इतिहास में सर्वाधिक वर्जनाओं और पीड़ाओं का समय रहा है। हिन्दी कविता ने आधुनिक भावबोध को अपने विविध प्रारूपों में व्यक्त किया है। हिन्दी कविता ने इसके लिए कई नाम भी प्राप्त किए है जिनमें प्रगतिशील, प्रयोगवाद, नई कविता और समकालीन कविता का नाम प्रमुख रूप में है। विवेच्य कवि शमशेर बहादुर सिंह ने कविता के इन सभी प्रारूपों में अपना लेखन कार्य किया है।

नई कविता भारतीय स्वाधीनता के बाद लिखी गई उन कविताओं को कहा गया है जो वस्तु–छवि और रूप–छवि दोनों में अपनी पूर्व काव्य प्रवृत्तियों से भिन्नता अपनाते हुए विकास रूप में विशिष्ट है। इस कविता ने काव्य के क्षेत्र में नये–नये प्रयोग कर हिन्दी कवियों के लिए नया मार्ग प्रशस्त किया है तथा नवीन मूल्यों की प्रस्थापना भी की है। इस कविता के संस्थापकों में डॉ॰ जगदीश गुप्त, विजयदेव नारायण साही और रामस्वरूप चतुर्वेदी का नाम आता हैं। किन्तु अज्ञेय के द्वारा सन् 1953 में आकाशवाणी के प्रसारण में भिन्न प्रवृत्तियों वाली कविता को नई कविता नाम दिया। इस कविता को नई कविता नाम विधिवत् रूप से सन् 1954 में डॉ॰ जगदीश गुप्त के द्वारा दिया गया है।

कोई भी कविता नई या पुरानी नहीं होती। काल विशेष की प्रवृत्तियों के आधार पर हर कविता की धारा अपने समय में नई हुआ करती है। नई कविता के लिए नया शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्ति प्राप्त है। नई कविता आज की कुक्षि से निकली हुई एक महत्त्वपूर्ण काव्यधारा है। इस ने समाज के ढांचे में पर्याप्त परिवर्तन किया है और आज का नया कवि उससे सम्बन्ध जोड़ता हुआ दिखाई देता है। इस जोड़–तोड़ के हिसाब में नए कवियों ने यथार्थ एवं स्थूल समस्याओं को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं किया है। कवियों ने यह अनुभव किया कि कविता के माध्यम से ही वह पाठक के लिए विश्वसनीय होता है। इसलिए नए कवियों ने नए विषयों को, प्रश्नों को, कथन को जन्म देकर उसे नूतन शिल्प में व्यक्त किया हैं। शमशेर नई कविता के समर्थ कवि रहे है। उनकी कविताओं में नया चिन्तन मिलता है।

नई कविता एकाएक अस्तित्त्व में नहीं आई है। उसने अपना विकास कईयों वर्षों में पूरा किया है। चूँकि शमशेर जी नई कविता के विकास के साक्षी कवियों में रहे है। अतः नई कविता

के विकास क्रम को भी संक्षिप्त में देखना जरूरी है। छायावादी कविता के अवसान के साथ ही हिन्दी कविता में प्रगतिशील चेतना का विकास दिखाई देता है। प्रगतिशील कविता में पहली बार व्यक्ति की सामाजिकता को लेकर कविताएँ लिखी गई लेकिन ये कविताएँ भी मार्क्सवादी विचार से प्रभावित होकर कालकवलित हो गई। इससे पूर्व पंत और निराला की कविताओं में प्रगतिशील चेतना के बीज मिलते है। 'रूपाभ' पत्रिका में इस प्रकार की कविताओं को प्रकाशन मिला। निराला की 'वह तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता' कविता इसका उदाहरण है।

प्रगतिशील कविता के पत्तन के साथ–ही प्रयोगवादी कविता का शुभारम्भ होता है। इसके महत्त्वपूर्ण कवि अज्ञेय अगवा रहे है। लेकिन प्रयोगों के भार के तले दबकर यह कविता भी बहुत कम समय में अपना अस्तित्त्व खो देती है। वस्तु–स्थिति ये रही कि इस कविता की धारा में ना तो व्यक्ति की वैयक्तिकता और ना सामाजिकता किसी को भी खुलकर अभिव्यक्ति नहीं मिली। अतः इस कविता के कुछ कवियों ने ही कविता के प्रारूप में नये भावबोध को व्यक्त करने वाले परिवर्तनों में कविता लिखने की माँग की और कुछ समय बाद नई कविता के अंकुर फूटने लगे जो आजादी के बाद अपना विकास पाकर स्वरूप में आई।

विवेच्य कवि शमशेर बहादुर सिंह का रचनाकार सन् 1932 से 1992 तक की लम्बी समयावधि में फैला हुआ है। नई कविता के विकास काल के लगभग सभी प्रारूपों में उन्होंने कविताएँ की है। वे अपनी साहित्यिक यात्रा में किसी वाद या काव्यान्दोलनों में आबद्ध नहीं हुए। उन्होंने स्वतंत्र रूप में कविताएँ लिखी है। वे कविता में सच्ची अनुभूतियों को लाने के हिमायती कवियों में रहे है। उनकी दृष्टि में अगर सच्चाई को कविता में रखने के लिए शिल्प में भी परिवर्तन लाना पड़े तो वह करना चाहिए। शिल्प के क्षेत्र में अतिरिक्त सावधानी के लिए वे जाने जाते है। उनकी कविताओं में एक साथ कईयों अनुभूतियाँ शामिल होती है। इसलिए भी उनकों शिल्प में परिवर्तन करना जरूरी होता है।

शमशेर जी का जीवन संघषों में व्यतीत हुआ है। उनकी कविताएँ उनके निजी जीवन की अनुभूतियों का दस्तावेज भी है। लेकिन उनकी अनुभूतियाँ मानव जीवन की अनुभूतियाँ में परिवर्तित होकर मानव जीवन की सच्चाई को व्यक्त करती रही है। उन्होंने अपनी कविताओं में सामाजिकता, प्रकृति और प्रेम, वर्ग संघर्ष, देश प्रेम आदि विषयों को लेकर कविताएँ लिखी है। अनेकों व्यक्तियों के ऊपर भी उन्होंने कविताएँ लिखी है। उनकी कविताएँ नई कविता के विकास में और भावी कवियों के अनुसरण का केन्द्र भी रही है।

इस विषय ने शोध–प्रबन्ध को छः भागों में विभक्त किया गया है। शोध का प्रथम अध्याय नई कविता की अवधारणा–एक दृष्टि (पूर्वपीठिका) से सम्बन्धित है, जिसमें नई कविता की पृष्टभूमि और स्वरूप की गणबेषणा की गई है इसमें नई कविता के नामकरण और परिभाषाओं, नया चिन्तन, परिस्थितियाँ और विकास पर खुलकर चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय शमशेर बहादुर सिंह के व्यक्तिव और कृतित्व पक्ष पर आधारित है। इसमें उनके जीवन और व्यक्तित्व निर्माण की यात्रा का जीवन्त चित्रण किया गया है। व्यक्तित्व के अर्थ को भी समझाया गया है। शमशेर जी के व्यक्तित्व के बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व का सांगोपांग वर्णन इस अध्याय में किया गया है। उनके कृतित्व पक्ष में पद्य भाग में उनके काव्य–संग्रहों की विवेचना की गई है तथा गद्य साहित्य में उनके द्वारा लिखे गए विविध निबंधों, कहानियों, आलोचना और समालोचना आदि पक्षों पर प्रकाश ड़ाला गया है।

तृतीय अध्याय शमशेर बहादुर सिंह और नई कविता नाम से है जिसमें शमशेर जी की सामाजिक एवं यथार्थ चेतना, उनकी कविताओं में बौद्धिकता की प्रतिष्ठा, प्रकृति एवं प्रेम चित्रण, आधुनिक भावबोध, वर्ग संघर्ष और मानवतावाद एवं देश प्रेम आदि बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत शमशेर बहादुर के काव्य में शिल्पगत नवीनता को रूपायित किया गया है। उनकी कविताओं में भाषा एवं शब्दगत नवीनता, छंदगत नवीनता, उपमागत नवीनता, प्रतीकात्मक नवीनता, बिम्बात्मक नवीनता, व्यंग्यात्मक नवीनता और संगीतात्मक नवीनता की अभिव्यक्ति हुई है। कवि शमशेर ने अपने कथ्य को रूप देने के लिए शिल्प क्षेत्र में नूतन परिवर्तन किए है। उन परिवर्तनों में उनकी ईमानदारी भी मौजूद है।

पंचम अध्याय में शमशेर की कविताओं का परवर्ती काव्य पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। नई कविता के बाद साठोत्तरी कविता में आने वाली अकविता, समसामयिक कविता, विचार कविता आदि काव्य प्रवृत्तियों पर शमशेर की नई कविताओं के प्रभाव को इस अध्याय में रेखांकित किया गया है।

षष्टम अध्याय के अतंर्गत उपसंहार का जिक्र किया गया है।

अंत में सहायक ग्रंथ एवं आधार ग्रंथो की सूची व विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं की सूची संलग्न की गई है।

शमशेर बहादुर सिंह की नई कविताएँ एक तात्कालिक समय को सच्चाई के साथ रखने वाली कविताएँ रही है, उनकी इन कविताओं ने मानवीय जीवन को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित करके मानव जीवन को तथा साहित्य को एक नया मार्ग प्रशस्त किया है। इस शोध कार्य में उनके नए चिन्तन को रखने वाली सभी कविताओं का शामिल किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार–ग्रन्थ :–

1. रंजना अरगड़े (संपा.), 'कुछ और गद्य रचनाएँ', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1992

2. गजेन्द्र पाठक, 'शमशेर की आलोचना दृष्टि', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2011

3. नामवर सिंह (संपा.), 'प्रतिनिधि कविताएँ', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2003

4. रंजना अरगड़े (संपा.), 'सुकून की तलाश', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1998

5. गोपेश्वर सिंह (संपा.), 'शमशेर बहादुर सिंह : संकलित कविताएँ', राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2011

6. अशोक वाजपेयी (संपा.), 'टूटी हुई बिखरी हुई', राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण 1990

7. दूधनाथ सिंह (संपा.), 'एक शमशेर भी है', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2011

8. कैलाश दहिया (संपा.), 'शमशेर बहादुर सिंह : लेख संग्रह', प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1996

9. रंजना अरगड़े, 'कवियों का कवि शमशेर', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1988

10. विष्णु चंद्र शर्मा, 'काल से होड़ लेता कवि शमशेर का व्यक्तित्व', हंसा प्रकाशन, जयपुर(राज.), पहला संस्करण 1994

11. द्वारिका प्रसाद चारुमित्र (संपा.), 'शमशेर की दुनिया', अनन्य प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण 2016

12. हेमंत जोशी (संपा.), 'अर्थात्', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1994

13. नरेन्द्र वशिष्ट, 'शमशेर की कविता', वाराणासी प्रकाशन, दिल्ली 1980

14. महावीर अग्रवाल (संपा.), 'शमशेर : कवि के बड़े आदमी', मुद्रक : सुपरफाइन प्रिंटर्स, इलाहाबाद (up)

15. जगदीश कुमार, 'शमशेर कवितालोक', राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 1960

16. सर्वेश्वर एवं मलयज(संपा.), 'शमशेर', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 1981

17. डॉ॰ वीरेन्द्र कुमार, 'बिम्बों में झाँकता कवि शमशेर का व्यक्तित्व', पंचशील प्रकाशन, जयपुर(राज.), संस्करण 1983

सहायक ग्रन्थः–

1. डॉ॰ हेतु भारद्वाज, डॉ॰ सुमनलता, 'आधुनिक हिन्दी कविता का विकास', पंचशील प्रकाशन, जयपुर(राज.), पहला संस्करण 2006

2. डॉ॰ जगदीश गुप्त, विजयदेव नारायण साही(संपा.), 'नयी कविता', किताब महल, इलाहाबाद, पहला संस्करण 1960–1961

3. डॉ॰ उमाकान्त गुप्त, 'नयी कविता के प्रबन्ध काव्य शिल्प और जीवन दर्शन', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1985

4. गजानन्द माधव मुक्तिबोध, 'नई कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबंध', विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर(up) 1964

5. डॉ॰ चातक, प्रो. राजकुमार शर्मा, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर(राज.)

6. गिरिजाकुमार माथुर, 'नयी कविता : सीमाएँ और सम्भावनाएँ', अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण 1966

7. शशि सहगल, 'नयी कविता में मूल्य बोध', अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण 1976

8. गजानन्द माधव मुक्तिबोध, 'नये साहित्य का सौन्दर्य–शास्त्र', राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण 1971

9. डॉ॰ दीपिका विजयर्गीय, 'डॉ॰ धर्मवीर भारती का काव्य : संवेदना के धरातल एवं शिल्प', अरिहन्त पब्लिशर्स एण्ड हिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर(राज.), संस्करण 2006

10. डॉ॰ ऊषा कुमारी, 'नयी कविता की चिन्तन भूमि', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2008

11. रामविलास शर्मा, 'नयी कविता और अस्तित्ववाद', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1978

12. नामवर सिंह, 'छायावाद', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1979

13. डॉ॰ कमलेश कमल, 'आधुनिक मानव और नयी हिन्दी कविता', युनिस्टार बुक, प्रा. चंडीगढ़ 2006

14. डॉ॰ यश गुलाटी, 'वृहद साहित्यिक निबन्ध', सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण 1987

15. गणपति चंद्र गुप्त, 'साहित्यिक निबंध', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद(up), संशोधित चतुर्थ संस्करण

16. श्याम कुमार मिश्र, 'नई कविता के सर्जनात्मक संदर्भ', इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली 1986

17. आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, 'नई कविता', दि मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1:1976

18. डॉ॰ लक्ष्मीनारायण 'चातक', 'आधुनिक हिन्दी कविता का इतिहास', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर(राज.), 2009

19. डॉ॰ नगेन्द्र, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', दिल्ली

20. डॉ॰ रामवचन राय, 'नई कविता : उद्‌भव और विकास', बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना(बिहार), 1974

21. रमेश मेद्य कुंतल, आधुनिकता और आधुनिकरण, दिल्ली, 1969

22. डॉ॰ हरदयाल, 'आधुनिक हिन्दी कविता', शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 1993

23. बलभीम गोरे, 'हिन्दी के बहुचर्चित काव्य : नये संदर्भ', अनुभव प्रकाशन, श्रीनगर, कानपुर, 1980

24. नामवर सिंह, 'कविता के नए प्रतिमान', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौहदवाँ संस्करण 2018

25. राजनाथ शर्मा, 'साहित्यिक निबंध', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–3, नवीनत्म संस्करण

26. डॉ॰ शशि शर्मा, 'प्रगतिशील कविता में लोकतत्त्व', संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2007

27. देवराज, 'नई कविता', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1994

28. डॉ॰ प्रतिभा जैन, 'दिनकर कला और दर्शन', ग्रन्थम रामवाग कानपुर(up), 1980

29. शम्भूनाथ सिंह, 'प्रयोगवाद और नई कविता', समकालीन प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1966

30. अज्ञेय, 'दूसरा सप्तक', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण, 1970

31. विजयदेव नारायण साही, 'छठवाँ दशक', हिन्दुस्तानी अकेडमी, इलाहाबाद, पहला संस्करण

32. बोरिस पास्तरनाक, 'द मार्श ऑफ गोल्ड', एकडमिक स्टेडीज प्रेस, यू.एस.ए

33. रामस्वरूप चतुर्वेदी, 'नई कविताएँ : एक साक्ष्य', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद(यू.पी.)

34. डॉ॰ पवन मिश्रा, 'प्रयोगवादी काव्य', सन् 1977

35. डॉ॰ अजय अनुरागी, 'नई कविता गिरिजाकुमार माथुर', पंचशील प्रकाशन, जयपुर(राज.), संस्करण 2007

36. डॉ॰ महेन्द्र कुमार मिश्र, 'आधुनिक भाषा और भाषा विज्ञान', राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर(राज.), पहला संस्करण 2008

37. मृदुला जोशी, 'नयी कविता में बिम्ब–विधान', कुसुम प्रकाशन, मुजफ्फरनगर(उ.प्र.), पहला संस्करण 1992

38. डॉ॰ श्यामसुंदरदास, 'साहित्यालोचन', मलिक एवड कम्पनी, जयपुर (राज), संस्करण 2016

39. विश्वनाथ तिवारी, 'आलोचना के हाशिए पर', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

40. रमाकान्त शर्मा, 'कविता का स्वभाव', पंचशील प्रकाशन, जयपुर(राज.), संस्करण 2008

41. डॉ॰ कुसुम राय, 'हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी(उ.प्र.), संस्करण 2016

42. लीलाधर जगुड़ी, 'नाटक जारी है', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1960

43. डॉ॰ शेरगंज गर्ग, 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य', साहित्य भारती, दिल्ली, संस्करण 1973

44. रामेश्वर लाल खण्डेलवाल, 'आधुनिक हिन्दी कविता का विकास : सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ', यतीन्द्र साहित्य सदन, भीलवाड़ा(राज.), संस्करण 1998

45. ओमप्रकाश वाल्मिकी, 'बस्स बहुत हो चुका', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 1997

46. डॉ॰ हुकुमचन्द राजपाल, 'समकालीन हिन्दी कविता चर्चित परिचित चेहरे', नालन्दा प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1997

47. विष्णुखरे, 'पिछला बाकी', राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1998

48. उपेन्द्र कुमार, 'प्रतीक्षा में पहाड़', नेशनल प.हा., दिल्ली, संस्करण 1998

49. सुधीर रंजन सिंह, 'कविता के प्रस्थान', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2016

50. हरिवंश राय बच्चन, 'नीड़ का निर्माण फिर (आत्म कथा दूसरा भाग)', राजपाल एवड सन्ज, कश्मीरी गेट, अशोका आफसैट बर्क्स, दिल्ली, चौथा सस्करण 1976

51. डॉ॰ सुषमा अग्रवाल, 'मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व', पंचशील प्रकाशन, जयपुर(राज.), पहला संस्करण 1986

52. पीयूष गुलेरी, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, नई दिल्ली

53. अज्ञेय, 'बावरा अहेरी', नई दिल्ली,

54. डॉ॰ नामवर सिंह, 'इतिहास और आलोचना', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 1978

55. लक्ष्मीकान्त वर्मा, 'नई कविता के प्रतिमान', नई दिल्ली

56. त्रिभुवन सिंह, 'हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद', इलाहाबाद, नई दिल्ली से प्रकाशित

57. गणपति चन्द्र गुप्त, 'प्रयोगवाद और नई कविता', दिल्ली से प्रकाशित

58. सुभद्रा पेठाकर, 'आधुनिक हिन्दी काव्य : युगीन संदर्भ', बम्बई से प्रकाशित

59. अनन्त कीर्ति तिवारी, 'समकालीन प्रतिनिधि कवि', अक्षर प्रकाशन, दिल्ली 2008

60. विमल कुमार, 'सौन्दर्य–शास्त्र के तत्त्व', नई दिल्ली

61. नगेन्द्र, 'काव्य बिम्ब', नेशनल प.हा., नई दिल्ली, संस्करण 1979

62. मलयज से साक्षात्कार, सम्भावना प्रकाशन हापुड़, पहला संस्करण 1979

63. धनंजय वर्मा, शमशेर की सौन्दर्य दृष्टि(सापेक्ष में प्रकाशित)

64. सुमित्रानंदन पंत, 'पतं ग्रन्थावली भाग छः

पत्र–पत्रिकाएँः–

(दिनमान, सापेक्ष, कल्पना, सप्त सिन्धु, नया प्रतीक, आजकल, पूर्वग्रह, समकालीन कविता आदि विविध अंक)

International Journal of Management, Administration, Leadership & Education

A Bi-Annual Refereed Journal

ACADEMIC AVENUE
(Publisher & Distributors)

International Journal of Management, Administration, Leadership & Education

A Refereed, Multidisciplinary, International Journal

Edition: Vol. 4 (No. 2), July - December, 2018

ISSN: 2394-661X

Periodicity: Bi Annual

Publisher:

Academic Avenue
C-13, Shop No. 2/GF, East Uttam Nagar, New Delhi - 110059
Mobile: +91- 9999133242, 9999918067
e-mail : academicavenue76@gmail.com
website: www.academicavenuepub.com

Copyright © Publisher.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, electrostatic, magnetic tape, mechanical, photocopying, recording, or otherwise without permission from the copyright holder.

Permission for other use: The copyright owner's consent does not extend to copying for general distribution, for promotions, for creating new works, or for resale. Specific written permission must be obtained from the publisher for such copying.

International Journal of Management, Administration, Leadership & Education is published bi-annually by the **Harish Narang.**

Contents

The Role of the Marathas During The Later Mughal Period
Mohd Sameel Naseem & Prof. (Dr) Archana Verma 1

चंदलो की सामाजिक स्थिति का संक्षिप्त अवलोकन
वाजिद हुसैन 9

Freedom of Religion - A Judicial Interpretation
Dr. Avinash Kumar and Krishna Kant Singh 19

Role of Political Parties in Egypt's Transformation: Problems and Potentials
Yogesh Kumar 30

Education Supervision
Mipu Sora Ori 42

Need for Refugee Law in India: A Legal Analysis
Rubina Grewal and Prof (Dr.) R. L. Kaul 48

भारत में सकारात्मक मानव मूल्य
राजीव कुमार 55

शमशेर बहादुरसिंह की कविताओं में परंपरा और आधुनिकबोध
दामोदर लाल मीना 60

शमशेर बहादुरसिंह की कविताओं में परंपरा और आधुनिकबोध

दामोदर लाल मीना

शोधार्थी, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, करौली, राजस्थान

समकालीन कविता के सन्दर्भ में शमशेर एक खास सोच और तेवर वाले कवि के रूप में उभर कर आते है। शमशेर जी काव्य वस्तु के चयन और उसके शिल्प-संगठन में बेहद सजग है। वस्तुत: आधुनिकबोध शमशेर की सजगता एवं उनकी बौद्धिकता को इतिहास के सन्दर्भ में जोड़ती हैं। वास्तव में शमशेर की कविता सीधो सरल तरीके से सामाजिक संघर्ष की कविता नहीं है। उनकी कविता तो उनकी काव्य-भाषा की बहुस्तरीयता को भेदकर ही समझी जा सकती है। यह नवीनता एवं मौलिकता उनकी आधुनिकबोध की परिचायक है। शमशेर की काव्यानुभूति हमेशा नवीन दिशा की ओर गतिशील होती है। कवि यहाँ रचनाशिल्प की जड़ता से स्वतंत्र होना चाहते है।

मूलत: यथार्थ जीवन को काव्य में संबोधित करने की क्षमता कवि के अधुनिकबोध पर निर्भर रहती है। शमशेर की कविताओं में यथार्थ जीवन से जुड़ी हुई घटनाओं को विशेष महत्त्व दिया गया है। यह बात विस्मृत नहीं की जा सकती है कि आधुनिकबोध से शमशेर की कविता में सुनाई पड़ता है। सामान्यत: शमशेर की रचनाएँ रचनात्मक स्तर पर कवि के आधुनिकताबोध की सजगता को प्रमाणित करती है। उनकी रचनात्मक परिबद्धता किसी एक वाद या सिद्धांत के प्रति नहीं है। फिर भी युगीन चेतना की अनुभूति बहुत तीव्रता के साथ रचनाओं में व्यक्त हुई है। शमशेर के दृष्टिकोण में समभावी वैज्ञानिक दृष्टि का पुट स्पष्ट परिलक्षित है। इससे उनके आधुनिकबोध की भावना समृद्ध होती है।

'घिर गया है समय का रथ', 'बातबोलेगी', 'स्वतंत्रता दिवस पर', 'भारत की आरती', 'समय ाम्यवादी' आदि रचनाएँ शमशेर की आधुनिक दृष्टि की परिचायक है। शमशेर ने युग सत्य को गते हुए भारत के लिए योग्य व्यवस्था के रूप में साम्यवाद को स्वीकार किया है। मार्क्सवाद ो कवि वैज्ञानिक दृष्टिकोण में आंकते है। वस्तुतः मार्क्सवाद एक आधुनिक दृष्टिकोण अथवा चारधारा है मार्क्सवाद का उद्‌भव वर्ग-विषमता से है। भौतिक दृष्टि से असमत्व को मिटाने की ोशिश है मार्क्सवाद। भीतरी भेद-भाव को मिटाना हमारी सांस्कृतिक परंपरा के द्वारा ही संभव है। मारी संस्कृति असमत्व से समत्व और एकजुटता की ओर इशारा करती है। भेद-भाव पहले मन में ंकुरित होता है और अगर मन से एकात्मक दृष्टि को अपनाया जा सकता है तो इससे बड़ा कार्य ुछ नहीं होगा। मानव-मन से भेद-भाव की छाया मिटाना कवि का लक्ष्य है। इस दृष्टि से कवि ाधुनिक है और उनकी विचारधाारा में मार्क्सवाद में निहित आधुनिक भावबोधा का प्रभाव मात्र है। ानव-मानव में एकजुटता, स्नेह और भाईचारे की भावना बढाना कवि का ध्येय रहा है। वैज्ञानिक ष्टि से वर्ग विषमता केवल खोखली बात है। मानव, मन से ही भेदभाव अगर अप्रत्यक्ष हो जाये । वही मार्क्सवाद की प्रासंगिकता है। कवि मार्क्सवाद को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देखते परखते है। ार्क्सवाद की अन्तर्धारा में कवि आधुनिकता और वैज्ञानिकता का समावेश देखते है। मार्क्सवाद को वि केवल राजनैतिक दृष्टि से नहीं आँकते है। आधुनिक दृष्टि में कवि ने मार्क्सवाद का मूल्यांकन या है। कवि का विचार है कि मध्यवर्ग का समाज दीन एवं हीन है। इसलिए कमकर की मुट्ठी में थ-प्रदर्शिका मशाल आ गई है। मार्क्सवाद के प्रति शमशेर की आस्था इन पंक्तियों में दृष्टिगोचर है।

हीन भाव, हीन भाव
मध्यवर्ग का समाज-दीन।
किंतु उधार
पथ प्रदर्शिका मशाल
कमकर की मुट्ठी में -
किंतु उधार
आगे-आगे जलती चरती है
लाल-लाल
वज्र कठिन कमकर की मुट्ठी में
पथ-प्रदर्शिका मशाल।[1]

कई रचनाओं में शमशेर की साम्यवाद के प्रति प्रतिबद्ध दृष्टि व्यक्त हुई हैं। 'दूसरा सप्तक' में कवि का कथन है - अपने चारों तरु की जिंदगी में दिलचस्पी लेना, उसकी ठीक ठीक यानि वैज्ञानिक आधार पर (मेरे नजदीक यह वैज्ञानिक आधार मार्क्सवाद है) समझना और अपने अनुभव को इसी समझ और जानकारी से सुलझाकर कर स्पष्ट करके-पुष्ट करके अपनी कला भावना को जगाना।''[2] शमशेर अपनी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर कविता को पाठक के समक्ष प्रस्तुत करना चाहते हैं शमशेर अपनी काव्य-विषयक जागरूकता मार्क्सवादी विचाराधारा के अनुसार स्थापित करने के पक्ष में है। वे समसामयिक जीवन की विसंगतियों एवं विडंबनाओं को कविता की विषयवस्तु के रूप में निवेशित करके उचित स्थानों पर प्रयोग करते है। इस प्रकार की अधिकतर प्रस्तुति सामाजिक स्थिति, गरीबी एवं अमीरी को तथा प्रणय प्रसंगों की विसंगतियों को लेकर हुए हैं। इनसे कविता का भाव संप्रेषण प्रभावशाली तथा संवेदनीय हुआ है। वर्तमान युग में गरीबी की भीषण स्थिति तथा राजनैतिज्ञों की चालों को प्रस्तुत करते हुए कवि कहते हैं -

भूल के मंदिर सुघर बहुमूल्य
हृदय को विश्वास देते दान
प्राप्य श्लाघा से अयाचित मान
स्वप्न भावि, द्रव्य से अनुकूल
दीन का व्यापार श्लाघामय।
छिन्न-दल कर कागजी विस्मय
सत्य के बल शूल हूलूं मैं।
शाम निर्धन की न भूलूँ मैं।[3]

समसामयिक जिंदगी के चारों तरु टूटन एवं कमी है। मजदूर लोगों के घरों में चूल्हे ठंडे पड़े है। आर्थिक कठिनाई से सामान्य जनों का जीवन ही मिट गया है। प्रेम, त्याग, दया, हमदर्दी आदि मानवीय भावनाओं का आज अर्थ ही बदल गया है। कवि का कहना है कि इस स्थिति में शोर मचाने से कोई फायदा नहीं है। शमशेर की इसी आधुनिक दृष्टिकोण को उजागर करने वाली कविता है 'मूँद लो आँखें' देखिए-

छोड दो सम्पूर्ण प्रेम
त्याग दो सब दया - सब घृणा
खत्म हमदर्दी।
खत्म -

साथियों का साथ।

रात आयेगी[4]

शमशेर की वैज्ञानिक दृष्टि भी उनके आधुनिकबोध को प्रमाणित करती हैं। प्रणय से सम्बन्धित रचनाओं का समावेश भी इसी दृष्टि का परिणाम है। इसे उनकी रचनात्मक ईमानदारी कहना अधिक सार्थक होगा। प्रणय की यह अदमनीय तथा ईमानदार अभिव्यक्ति एक विशिष्ट उपलब्धि है। शमशेर के भीतर सौन्दर्य के उपभोग की अपूर्व लालसा दृष्टव्य है। इस अगाध वासना से वे वियोग में भी मांसल भोग की कामना प्रकट करते है। 'बले दीप' शीर्षक कविता में देह-राग का खुला आह्वान दृष्टिगत है। देखिए -

नव रस सनी नारि
निज तन आँचल संवार उर
अपने प्यारे को अगेरती
यौवन द्वारे
बले दीप रे
चतुर नारी ने
प्रिय आगमन के[5]

आदमी के प्रणय पक्ष को लेकर एक स्वस्थ दृष्टिकोण शमशेर की रचनाओं में दृष्टिगोचर है। वस्तुत: यह शमशेर की आधुनिक दृष्टिकोण का ही परिचायक हैं आदमी के भीतर 'नारी' आसक्ति रूप में विद्यमान है। उस आसक्ति को पहचानकर उसी में विश्राम पाना ज्यादा सुरूचिपूर्ण है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह वासना का शिकार हो गया है बल्कि अतृप्त वासना के शिकार होने से बच गया है। आसक्ति से कवि का मन बेचैन हैं, परेशान है। परंतु इस अपरिमित वासना में ही कवि अपना थकान मिटाना चाहते है। स्वस्थ रहने से ही जिंदगी अर्थपूर्ण होती है। इसलिए कवि का यह दृष्टिकोण है कि अतृप्त रहना अर्थविहीन है। 'हे वसन्तवती' शीर्षक कविता में शमशेर का यह आधुनिक दृष्टिकोण स्पष्ट परिलक्षित है।

मैं तुम्हारा थका मादक गान
दो मुझे आसक्ति में विश्राम।
कौन किस का। मौन भाव सरल
थका परदेशी यहाँ मैं दीन,
हास अर्थ-विहीन

लिये फेरता हूँ अकेला
मूक अपना आज
स्वप्न साज।[6]

आधुनिक सभ्यता में अमानवीयता, अविश्वास और शत्रुता का बोलबाला देखा जा सकता है। अपने आपको सुरक्षित रखने की चिंता से सभी विशेषत: शहरी लोग स्वार्थी बन गये है। इसीलिए आधुनिक युग के व्यक्ति आत्मीयता का अनुभव नहीं कर पाते जो हमारी सभ्यता का एक अंश है। व्यक्ति आज समाज के सामने एक मुखौडा के सहारे उपस्थित होता है। अपने दैनिक समस्याओं से जूझते जूझते व्यक्ति के दिल में अविश्वास की भावना पैदा होती हैं व्यक्ति को हर समस्या का समाधान अकेले ही ढूँढना पड़ता है। साथियों का साथ और सामाजिक भागीदारी के सिवा बाजारी सभ्यता के फलस्वरूप आधुनिक समाज में असली इंसानजन का दर्शन ही बहुत कम हो गया है। सब कहीं बनावटी चेहरा मात्र विद्यमान है। लोगों की बात बात में छद्म की छाया है।

मुझे मिलते हैं अदीब
और कलाकार बहुत
लेकिन इंसान के दर्शन हैं मुहाल।[7]

आज व्यक्ति के अन्दर दर्द की तड़प है। लेकिन वह खामोश है तत्काल। उसके दिल में अजीब सी दहशत है। वह हताश है और हाथ में हथेली युक्त है। इसीलिए वह इंसानियत को खो बैठा हैं। कलाकार वह है जो सहजीवियों के दर्द के दृष्टा है तथा इंसानियत का संदेश फैलाता हैं -

दर्द की एक तड़प -
हल्के से दर्द की तड़प
मैं ने अगलों के यहाँ देखी है।[8]

मधयवर्ग के लोगों की जिंदगी आज असहनीय रूप से दयनीय है। वे न तो निम्न वर्ग बन सकते और न ही मधयवर्ग होकर रह सकते। दसों दिशाओं की बाजारी सभ्यता से मध्यवर्ग लूट गया हैं। समकालीन परिस्थिति को कवि अपने में छाया हुआ अँधेरे के समान देखता है। उनका कहना है कि कविताएँ केवल ब्लैंक हैं और उसमें कवि तक नहीं। आधुनिक कविता को कवि सूना मैदान कहते हैं जिसमें अक्षर तक भी नहीं रहता। शताब्दी के अन्त तें छटता घोर अंधकार में कवि स्वयं घुटता हुआ दिखता है।

ओ मध्यवर्ग
तू क्यों कैसे लुट गया

दसों दिशाओं की भी दसों दिशाओं की भी
मैं/उसी का छाया हुआ
अंधेरा हूँ
शताब्दी के
अन्त में छटता हुआ[9]

शमशेर की कविताओं में यदि एक तरु आधुनिक व्यक्ति-मानव का मूल्यबोध सामाजिक समस्याओं में विलीन करके प्रस्तुत किया गया है तो दूसरी ओर व्यक्ति अपने आस्तित्व के प्रति आशंकित दिखाई पडता है। व्यक्ति अहं को अपनाना जरूरी समझता हैं किंतु अवसर अपने पर समाज में विसर्जित भी कर देता है। अपने अहमियत को समाज में विसर्जित करने से व्यक्ति मानसिक स्तर पर उच्च स्थिति हासिल करता है तथा उसके उजले अहं से समाज का कल्याण होता हैं इसी तथ्य की ओर इशारा किया है, शमशेर ने अपने अंतिम शब्दांकित कविता 'विसर्जित एक दिया' में –

सर्वोच्च लहर
आकाश गंगा में
आकाश गंगा में
सिर्जित
एक दिया[10]

शमशेरजी अपनी कविताओं में आधुनिक युग के व्यक्ति एवं व्यष्टि-समष्टि के संबन्ध को रेखांकित करते हैं। उन्होंने आस्था-अनास्था, संकल्प-विकल्प, निश्चय-अनिश्चय, विवशता-परवशता आदि सभी स्थितियों में मानव का चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। मानव अपने समूचे परिवेश में जीवन जीने का विश्वास लिये हुए अपने अस्तित्व और दायित्व के प्रति जागरूक रहता हैं।

साहित्य में सजीव तथा विकासशील परंपरा का महत्त्व होता है। नयी कविता हमेशा परंपरा से अविच्छिन्न होकर नहीं चल रही है बल्कि रूढि से हटकर चल रहीं है। परंपरा प्रगति को प्रोत्साहित करने वाली है। अत: नये नये प्रयोगों का विकास केवल परंपरा से ही संभव है। परंपरा वस्तुत: हमारा दायित्व है। इतिहास ने हमेशा नयी परंपराओं को प्रोत्साहित किया है। नया कवि परंपरा का बोध रखता हैं और उस बोध को विकास के सिरे से जोड़ने के लिए प्रयास भी करता हैं।

नयी कविता की वैयक्तिकता में एकरसता का दोष बिल्कुल नहीं हैं। यहाँ प्रेम और नारी सौन्दर्य को यथार्थ के बटवारों में तोला जाता है। आदर्श के स्थान पर यथार्थ की ओर यह झुकाव परंपरा का विकास ही हैं। नयी कविता में जो नव मानव की कल्पना हुई है वह परंपरागत दृष्टि का युगीन

संदर्भ में विकास ही है। वैदिक वातावरण और लोक साहित्य के प्रति झुकाव भी नयी कविता में दृष्टिगत होती है।

निष्कर्ष

आधुनिकताबोध ने शमशेर की कविताओं में युग चेतना से जोड़ दिया है। शमशेर की रचनात्मकता की नवीनता एवं मौलिकता उनके आधुनिकताबोध मं परिलक्षित होती है। उनकी रचनात्मक प्रतिबद्धता किसी एक वाद या सिद्धांत के प्रति नहीं हैं। युगीन चेतना की अनुभूति से उनके आधुनिकताबोध की सजगता समृद्ध होती हैं। शमशेर ने मार्क्सवाद का मूल्यांकन एक नई दृष्टि से किया है। कवि का मत है कि जहाँ मार्क्सवाद मानव मन से भेदभाव मिटा दें वहीं उसकी प्रासंगिकता है। मानव मन में एक जुटता, स्नेह और भाईचारे की भावना बढाना कवि का ध्येय रहा है।

आधुनिक शहरी व्यक्ति पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भागदौड़ करते है। इससे वास्तव में व्यक्ति की अस्मिता ही नष्ट हो जाती है। कवि का मानना है कि पाश्चात्य भौतिक संस्कृति के अदम्य प्रभाव से भारतीय जनता आज अपनी ही भाषा व व्यक्तित्व भूल बैठी है। शमशेर की कविता नयी जीवन दृष्टि को पेश करती है। उन्होनें कविताओं में समाज को महत्त्व तो दिया, परंतु जीवन के उद्धार और नवनिर्माण की प्रचारात्मक बात को ही अधिक स्थान दिया है। समसामयिक चिंतन से उद्‌भूत क्षणबोध वर्तमान में जीने की अटूट लालसा, मानव महत्ता और दैनिक जीवन के क्रिया-कलाप आदि का विस्तृत विचार शमशेर की कविताओं में दृष्टव्य है।

शमशेर की कविताएँ मानव मन की विशिष्ट उर्जा और आत्मविश्वास की परिचायक है। सभी प्रकार के जीवन-मूल्य मानव महत्ता पर निर्भर रहता है। विवके, प्रेम, त्याग, सेवा, संवेदना, दया, समर्पण आदि चिरंतन मूल्यों के अभाव से आधुनिक मशीनी संस्कृति बफेायदेमंद सिद्ध हो रही है। मशीनी संस्कृति व यान्त्रिक मूल्यों का प्रभाव आधुनिक मानव जीवन पर जबर्दस्त रूप से छा गयी है। आज मानवीयता एक खोखला आदर्श बन गया हे। इससे दूर रहकर भी मानव वैज्ञानिक उपलब्धियों के सहारे जीने की कोशिश करता है, पर वह व्यर्थताबोध से ग्रस्त हो जाता है। यान्त्रिक संस्कृति की दुष्प्रवृत्तियाँ से सुपरिचित होकर भी दुद्धिजीवी वर्ग और साहित्यकार छद्‌म दार्शनिकता की निर्वेदपरक भावमुद्राएँ लेकर समाज के सामने उपस्थित होते है। बुद्धिजीवियों की तटस्थता शासकों के लिए सुविधाजनक बन गई है। परंतु यांत्रिक संस्कृति में युद्ध और शोषण की जो भयानक स्थितियाँ हैं वे किसी भी वर्ग को नहीं छोड़ती । अत: शमशेर का कहना है कि यान्त्रिक सभ्यता में सभी वर्ग किसी न किसी तरह शोषण चक्र का शिकार बनता है।

शमशेर की कविताओं में औद्योगीकरण की वजह से किसानों की हुई दुर्दशा और उनकी आर्थिक अराजकता की ओर इंगित किया गया है। भारत किसानों का देश है। यहाँ धारती को सबसे पूजनीय मानी जाती है। शमशेर कि कविता किसान के श्रम की महत्ता को उजागर करती है। किसान वर्ग आज भी पूँजीपतियों के शोषण का शिकार बनता हैं सामाजिक विघटन की बेला में कवि हमारे पुराने परंपरिक मूल्यों की ओर इशारा करते हैं। इसका समाधान केवल गाँवों में ही विद्यमान है। ग्रामीण जीवन के प्रति एक गहन आस्था शमशेर की कविताओं में मौजूद है। कवि किसानों के आत्मबल को गहराई से समझने वाले है।

शमशेर की कवितओं में परंपराबोध की लकीरे स्पष्ट दिखाई पड़ती है। शमशेर ने हमारी संस्कृति की भूखी आत्मा को कविता में प्रस्तुत करने की कोशिश की है। आधुनिक युग सांस्कृतिक संकट में फँस गये है। वर्तमान काल में सांस्कृतिक मर्यादाओं तथा मान्यताओं का ह्रास हो रहा है। कवि आधुनिक युग में भी अपने इतिहास और कला को अद्वितीय कहते हुए भारतीयता की गरिमा को उद्घाटित करते है। 'पिकासोई' कला जैसी कविताओं में भारतीय दृष्टि का समावेश दृष्टव्य है। 'अम्न का राग' आदि कविताओं में कवि शांति भावना पर आधारित भारत की सांस्कृतिक परंपरा को विश्व प्रेम में फैलाव देने का प्रयास करते है। उन्होनें भारतीयता को एक चिरंता सत्य के रूप में प्रस्तुत किया है। सभी वैज्ञानिक उपलब्धियाँ इस अखिल सत्य के सामने नही के बराबर है। 'सत्यमेव जयते' शीर्षक कविता में कवि समसामयिक युग में सत्य जैसे एक चिरंतन मानव मूल्य के महत्त्व को उद्घाटित करते हैं। मानवीयता भारत की पुरातन परंपरा है। कवि ने मानवीय मूल्यों के अभाव में आज की वैज्ञानिक प्रगति को 'कीड़े का अन्न' के समान बताया है। अत: संस्कृति के अभाव में हमारी सारी वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अधूरी ही रह जाएगी।

आधुनिक साहित्यिक मूल्याभिव्यक्ति कवि की बौद्धिक-क्षुधा का शमन-ताल है। कवि भावनाओं की यथार्थ अभिव्यक्ति पर बल देते है। शमशेर कवि या कलाकार को सच्चे समाजधर्मी व मानवधर्मी होने पर जोर देते हैं। शमशेर का मानना है कि व्यक्ति आज मानव धर्म भूलकर स्वार्थी बन गया है। व्यक्ति आज मानवीय गुणें के अभाव में राक्षस बन गया हे। इसलिए कवि एक नव मानव की कल्पना कर उसकी आत्मा को जनता की आत्मा से मिलाने के लिए बेचैन हैं।

ग्रंथ सूची

1. प्रतिनिधि कविताएँ, पृ. 47

2. दूसरा सप्तक, पृ. 80

3. प्रतिनिधि कविताएँ, पृ. 46
4. प्रतिनिधि कविताएँ, पृ. 52
5. दूसरा सप्तक, पृ. 12
6. दूसरा सप्तक, पृ. 89
7. टूटी हुई बिखरी हुई, पृ. 89
8. वही, पृ. 89
9. टूटी हुई बिखरी हुई, पृ. 91
10. कहीं बहुत दूर से, पृ. 72

वाद संवाद

आई. एस. एस. एन.
2348 – 8662

शोध विषयक अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक

अंक-20
अक्टूबर-दिसम्बर, 2018

स्वाक्षर

नई दिल्ली (भारत)

अंक - 20
अक्टूबर-दिसम्बर, 2018

वाद संवाद

आई एस एस एन : 2348-8662
त्रैमासिक

संरक्षक
प्रोफ़ेसर गोबिन्द प्रसाद
अध्यक्ष
भारतीय भाषा केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रधान संपादक
डॉ. राम रतन प्रसाद
ए. आर.एस.डी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रबंध संपादक
डॉ. अनिल कुमार सिंह
पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक
डॉ. अनिल कुमार
ए. आर.एस.डी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सहायक सम्पादक
डॉ. अभय कुमार
देशबंधु कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

उप संपादक
डॉ. सुधांशु कुमार
डूटा उपाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, (उच्चतर शिक्षा विभाग), नई दिल्ली द्वारा चयनित

सम्पादकीय प्रभारी
डॉ. बृजेश कुमार
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

वित्त सहायता
श्रीमति अंजली

संपादक मण्डल
एस. एन. मंडल, स्वास्थ्य प्रशिक्षक, बिहार
डॉ. सुधीर कुमार हेम्ब्रम, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुमार कालिदास मेमोरियल महाविद्यालय, पाकुड़, झारखण्ड
डॉ. अमित कुमार, सहायक प्रोफ़ेसर, आर. वी. एस. कॉलेज ऑफ ऐजुकेशन, रिवाड़ी, हरियाणा
डॉ. सीमा शर्मा, सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
रामरूप मीणा, सहायक प्रोफ़ेसर, श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
डॉ. अंजली कायस्था, सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, दयालसिंह महाविद्यालय (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
रवि कुमार गौंड़, कार्यकारी अध्यक्ष, पल्लव काव्य मंच, रामपुर, उत्तरप्रदेश
डॉ. रमेश कुमारी, स्वतंत्र लेखन, पूर्व छात्रा, जे. एन. यू., नई दिल्ली
डॉ. संगीता वर्मा, सदस्या, संत कबीर अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली
नागेन्द्र मिश्र, शोधार्थी, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
प्रियंका मिश्रा, शोधार्थी, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
राजेश्वर पराशर, शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सीमा देवी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा
श्रीमति विजय, स्वतंत्र लेखन, नई दिल्ली

प्रकाशक, मुद्रक एवं वितरक
स्वाक्षर
103, मनोकामना भवन, गली नं-2 कैलाशपुरी
पालम, नई दिल्ली - 110045 भारत
दूरभाष : +09871423939, 9711950086
ई-मेल : vaadsamvaad@gmail.com

इस पत्रिका में व्यक्त लेख एवं विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं तथा आवश्यक नहीं कि यह विचार अनिवार्य रूप से प्रमाणित पत्रिका की नीतियों के द्योतक हों। इसमें संपादक एवं प्रकाशक की सहमति/प्रमाणिकता आवश्यक नहीं है।
समस्त न्याय पत्रिका से संबंधित दिल्ली क्षेत्र में होगा। इस पत्रिका के सभी सदस्य अपनी सहमति से अवैतनिक हैं।

NSL/ ISSN/ INF/2014/864 /Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133

अनुक्रम

	संपादकीय	(iii)
1.	*रघुनंदन त्रिवेदी जी के रचना–संसार में मानवेत्तर प्रेम* – वर्षा पुरोहित	7
2.	*कथाकार रेणु का स्त्रीजनित राजनैतिक अपराधीकरण* – डॉ. राम रतन प्रसाद	13
3.	*स्त्री संवेदना की अनुपम कृति-स्त्री-गाथा* – डॉ. रवि कुमार गोंड	18
4.	*मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी पक्षधरता* – डॉ. शेख अब्दुल वहाब	23
5.	*भारतीय सामाजिक संस्थाएँ और स्त्री* – डॉ. रमेश कुमारी	28
6.	*स्त्री के बारे में तुलसी की समझ* – डॉ. विजय शंकर मिश्र	32
7.	*21वीं सदी और भारतीय विकलांग नारी* – डॉ. वन्दना	43
8.	*नारी विमर्श और भारतीय समाज* – डॉ. अंजली कायस्था	50
9.	*नारी-विमर्श की आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण (8वीं एवं 9वीं दशक उपन्यासों के संदर्भ में)* – डॉ. के. सुमित्रा	54
10.	*भक्तिकाल : रचनाएँ और स्त्री विमर्श* – डॉ. कल्पना मिश्रा	57
11.	*स्त्री प्रश्न और 21वीं सदी* – डॉ. बृजेश कुमार	62

NSL/ ISSN/ INF/ 2014/ 864/Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133
वाद संवाद, अंक-20 अक्टूबर-दिसम्बर, 2018

12.	*स्त्री चरित्र और मीडिया* – अनिल कुमार जयंत	70
13.	*चाक पर स्त्री* – डॉ. राम किशोर यादव	74
14.	*भोजपुरी कथा साहित्य में नारी* – शशांक भारद्वाज	77
15.	*बदबू : एक दलित महिला की त्रासदी* – आशा मीना	84
16.	*भारतीय सिनेमा और नारी* *(दलित स्त्री के विशेष सन्दर्भ में)* – मनीषा	87
17.	*अम्बेडकर : नारी विषयक दृष्टिकोण* – मनोज कुमार सिंह	91
18.	*आस्ट्रेलिया की समृद्ध प्रकृति पर्यटन-स्थल और हिन्दी की उपस्थिति* – डॉ. विजय कुमार संदेश	98
19.	*अंधेरे के विरुद्ध : किसिम किसिम की कविताएँ* – डॉ. (प्रो.) ए. अच्युतन	102
20.	*स्त्री-चेतना की वैचारिकता और महादेवी वर्मा* – अजीत कुमार राय	107
21.	*शमशेर बहादुरसिंह की कविताओं में अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव* – दामोदर लाल मीना	112

NSL/ ISSN/ INF/ 2014/ 864/Refered by NSL/ISSN/CERT/2016/133

वाद संवाद, अंक-20 अक्टूबर-दिसम्बर, 2018

शमशेर बहादुरसिंह की कविताओं में अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव

– दामोदर लाल मीना

शमशेर प्रयोगवादी कविता के सशक्त कवि हैं। उन्होने जो तमाम विवशताएँ भोगी है, उदास एवं निराशापूर्ण क्षणों को जिया है उन सब का सत्याभिव्यक्त किया है। इसके लिए उन्होने वैविध्यपूर्ण नवीन उपमानों का भी प्रयोग किया है। शमशेर की प्रयोगवादी कविताओं में पराजय, विवशता, विषाद, घुटन, अकेलापन और मृत्युबोध की भावनाएँ स्पष्ट परिलक्षित होती हैं।

अस्तित्ववाद एक पाश्चात्य दार्शनिक चिंतन प्रणाली है और इसके मुख्य प्रवर्तक किर्केगार्ड और हीगल। हीगल का अस्तित्ववादी दर्शन समष्टिवाद पर आधारित है जिसके अनुसार व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा उसके प्रयत्नों का कोई मूल्य नहीं रहता। इसकी एक प्रतिक्रिया के रूप में किर्केगार्ड का अस्तित्ववाद सामने आता है। अस्तित्वाद के दो प्रवक्ता किर्केगार्ड और डेडगर दोनों ने मिलकर आस्तिक एवं नास्तिक अस्तित्ववादियों की दोशाखाओं का सूत्रपात किया। इस परंपरा में आने वाले अन्य प्रमुख विचारक हैं यास्पर्श, काफ्का, ज्याँपाल सार्त्र आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान है। आत्मोन्मुखता, असामाजिक्ता और घोर व्यक्तिवादिता अस्तित्ववादी दर्शन का मूलभूत अंश हैं। इसका मुख्य लक्ष्य एवं प्रधान तत्व मनुष्य का अस्तित्व है। किर्केगार्ड, बौद्धिक्ता की तुलना में आध्यात्मिक्ता का विशेष महत्त्व देनेवाला अस्तित्वादी है।

आधुनिक हिंदी कविता मानव समाज की भावात्मक और गतिशील चेतना की मुख्य अभिव्यक्ति है। नये कवि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक चेतना को आत्मसात कर कविता में जीवन सत्य को अनावृष्त करते हैं। कविता में आध्यात्मिक उत्कर्ष और आत्मिक औदात्य, अस्मिताबोध की ओर इंगित करते हैं। कविता में आत्मसत्ता का प्रतिष्ठापन और राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का स्वर अस्तित्वबोध को सूचित करते हैं।

नये कवियों ने व्यक्तिवादी पीड़ा, अहं, कुंठा, निराशा, संत्रास और विद्रोह को अपनी कविताओं में स्वर दिये हैं। किंतु अंतत व्यक्ति की अस्मिता की परिणति विश्व-मानव की अस्मिता होती है। फलतः सामाजिक चेतना का उन्मेष और मानवीय अस्मिता की रक्षा समकालीन हिंदी कविताओं से प्राप्त होती है। इन कविताओं में व्यक्ति के दर्द से जीवन की तडप मुखरित होती है। यहाँ कविता मात्रशब्दों से नहीं, भूखे नंगे की आहो से रो मिलकर बनती है। नयी कविता में पारिवारिक और वैयक्तिक टूटन, कुंठा, एवं संत्रास को यथार्थ-रूप में प्रस्तुत किया जाता हैं।

अस्मिताबोध से युक्त रचनाकार रचनाधर्मिता को जीवन से जोड़ने का उपक्रम करते है। ये रचनाकार ग्रामीण और शहरी जीवन के अभाव, दर्द और आवेग को भी अपनी कविता में व्यक्त

• एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, करौली, राजस्थान

करते है। मानवीय अस्मिता के कवि मानवीय मूल्यों के ह्रास आतंकवाद और मानव की प्रतिक्रिया-शून्यता पर कविता करते हैं। आज का मानव जीवन अस्तित्व की रक्षा करने में पूरी तरह समर्थ नहीं है। चूँकि आज मानव संवेदना-शून्य हो गया है इसलिए मानवीय अस्मिता के कवि मानव-जीवन में व्याप्त आतंक-जन्य निराशा, कुंठा, निष्क्रियता और जड़ता पर तीव्र प्रहार करता है।

जीवन के इर्द-गिर्द फैला परिवेश, अस्मिताबोध से युक्त कवियों की कविताओं में उसकी भाषा, अन्तर्छवियों और अन्तर्ध्वनियों के साथ दृष्टिगोचर होती है। परिणामत: इन कविताओं में प्रयुक्त भाषा के चमत्कार और हाहाकर को सम्मानित किया जाता हैं। कविता का अस्तित्व मानव-मूल्य और अस्मिता के बल पर खड़ा है। अतएव इसके बिना कविता का अस्तित्व भीशाश्वत लक्ष्य पथ से विचलित हो जाएगा।

शमशेर की प्राय: सभी कविताएँ आंतरिक एकालाप है। वे अपने आप को बहुत अकेले महसूस करते है। यद्यपि पारिवारिक दु:ख दर्द था तथापि वे अपने अकेलेपन की अनुभूति में सारे सुख-दु:ख को विस्मृति में डालकर मूक जीवन बिताना ही बेहतर समझते हैं।

कोई अपने सुख दु:ख भूले
सूने पथ पर राग विहीन
विस्मृति के बिखराता फूल
फिर आया है मूक-मलीन।[1]

शमशेर की कविताओं में दर्द की सच्ची तड़प पाई जाती है। उनके अजीब इस दर्द में मानवीय व्यक्तित्व का विघटन और अकेलेपन का अवसाद दर्शनीय है। शमशेर के अन्तर्मन का यह मानवीय संकट उनके वैयक्तिक दायित्वबोध की ओर इशारा करते हैं-

वह स्वप्नों की ओट
निश्चल आँखें देख रही हैं।
ठिठुरे काले पेड़ खडे हैं मिलकर।
सूख रहे हैं मेरे होट।[2]

शमशेर के अन्दर अपार दर्द दिखाई देता हैं। कवि का कहना है कि मानव-मन का प्रेम अभी ठंडा पडा है। काल भी बिल्कुल निश्चेष्ट हैं जैसे अंधा-

पंगुशमशेर प्रेम और मृत्यु के समान दर्द को भी एक अनुभूति के रूप में स्वीकार करते है। उनका मानना है कि दर्द का कोई अंत नहीं हैं -

इश्क की इन्तहा होती है
दर्द की इन्तहा नहीं होती।[3]

उदासी के क्षणों में कवि को प्रकृति भी धुँधली दिखती है। सूनेपन में कवि को अपनी प्रेयसी भी एक 'काली युवती' मालूम पडती हैं। उनकी अनुभूति में इतनी नैसर्गिक्ता है कि वे प्रकृति में, अपनी प्रेयसी की ही झलक पाते हैं-

सूना - सूना पथ है, उदास झरना
एक धुँधली बादल - रेखा पार
टिका हुआ आसमान
जहाँ वह काली युवती
हँसी थी[1]

शमशेर की कविता में जगत की विषमता और जीवन की विडंबना का भाव-भीनी झांकी है। कभी कभी कवि की आत्मा सामाजिक यथार्थ में अपनी अस्मिता खो जाती है। क्षण भर में कवि की अन्तरात्मा पूरे बिंब में व्याप्त प्रतीत होता है।

एक पल के ओट में कुल जहान।
आत्मा है
अखिल की हठ-सी।
चाँदनी में धुल गये हैं
बहुत से तारे
बहुत कुछ
गया हूँ मैं
बहुत कुछ अर्ब[2]

समाज से मानवीय अस्तित्व को अलग न समझते हुए भी कवि अपने दु:ख-दर्द में अकेले हैं। जीवन की यह विडंबना है कि जगत की कठिनाइयों को झेलते समय मित्र-बन्धुओं का साथ अक्सर नहीं पड़ता हैं। जीवन यथार्थ से संघर्ष करते रहना हर व्यक्ति की नियति है। अत: जीवन संघर्ष ही व्यक्ति को अस्मितबोध प्रदान करता है।शमशेर जीवन की संपूर्णता की ओर आकृष्ट हैं यथार्थ जीवन और मानवीय संघर्षों से अवगत होते हुए भी उस मंजिल तक पहुँच न जाने का एहसास कवि मन को बार-बार प्रश्नाकुलता में डालता रहता हैं।

कहाँ जगतीतल ?
कहाँ नभ अमल ?
कल ? आज ? कल ?

.....

सिर्फ दो ममियाँ
हम तुम[3]

जीवन उतार-चढाव की कवायद है। केवल कर्मठ व्यक्ति ही कठोर प्रयास करते हुए इस वज्रगिरि के ऊपर पहुँच सक्ता है। वह शिव का स्थान हैं। फिर भी मानवीय दायित्वबोध के बिना वहीं केवल अनंत सूनापन ही सूनापनशेष रह जाता हैं।

वज्रगिरि। कर्मठ कठोर
सीधा चढता, ऊर्ध्व दिशा की ओर
शेष नीला सूनापन की[4]

जीवन में व्याप्त सूनापन ही अनंत अनुभूतियों की परिचायक है प्रस्तुत पंक्तियाँ। नीला रंग अनंतता की ओर इंगित करता है

ामशेर के मन मेंशहरी सभ्यता के प्रति उदार भाव नहीं है। नागरिक जन के हृदय में ेसर्गिक प्रेम का अभाव हैशहरी परिवेश में एक तरह का सूनापन ही छाया हुआ हैंशहरी व्यक्ति के मन में भी निराशा और उदासी का अंधकारशेष रहता है। चाँद डूबा कविता की पंक्तियाँ हैं –

शहर सूना है...
बहुत रेतीला उदास
हृदय है
घिर रहा हैं
अन्धकार[6]

वर्तमान यांत्रिक युग में संवेदनशील व्यक्ति आतंक्ति और मनुष्य जाति के भविष्य के म्बन्ध मेंशंकालु हो गया है। कवि को यह तीव्र वेदना है कि मानव के भीतर कुछ अविवेकी जीव शुवत छिपा है जो पूरी तरह जिया नहीं जाता। प्रेम अथवा स्नेह ही सबसे प्रथम मानवीय धर्म है जो जीवन में सुख एवंशांति प्रदान करता है। आज लोगों का प्रेम भी केवल भ्रांत एवं कलांत हो ाया है। परिणामगत: परिस्थितियों के फलस्वरूप मानव जीवन में निरर्थक्ता, मानसिक पराधीनता और अपराधबोध की भारी मानसिक्ता उत्पाद हो रही है–

शिथिल दु:ख भार से दब.....पिस.....
शिथिल दु:ख भार....
मानो
जाता,
इन्ही युगल अंतर में
सुख विरल मौन बन
कहीं[7]

जीवन की वैविध्यपूर्ण अनुभूतियों नेशमशेर की कल्प-कृति को गहराई तक प्रभावित किया है। जीवन में सुख एवं दु:ख को सहना व्यक्ति की नियति है। यह सुख एवं दु:ख ही व्यक्ति को स्मितबोध प्रदान करते हैशमशेर का कवित्व इस बात पर है कि वे जीवन की समस्त अनुभूतियों को कविता में प्रस्तुत करते हैं। वे जीवन की अनुभूतियों को मानवीय अस्मिता के धरातल पर खकर आकलन करते हैं, बौ)क धरातल पर नहीं। उनका मानना है कि जीवन में ठोस कुछ रखा ी नहीं है। जिंदगी केवल अनुभूतियों का अभूतपूर्व आयाम है जहाँ जीव बेबसी में पडकर अपने जीवन को भरे मौन से जी रहा है। इन पंक्तियों में वर्तमान जीवन की पूरी त्रासदी मुखर रहती है। जीवन अगर सावधान है तो सुधार हो सक्ता है जबकि नही तो जीवन दूभर हो जाता हैं। कवि का कहना है जिंदगी कि एक नदी है जो बहती रहती है। यह नदी अपने आर-पार की सभी भले-बुरे को अपने में संजोकर परिमार्जित करते हुए मौन आगे बहता रहता है

मौन बर रहा है जीवन में

कौन कह रहा है
कौन सह रहा है
जीवन में
सब कुछ
मानो वह सब कुछ भी नहीं कहीं
जीवन में कुछ भी
मौन बह रहा है जीवन में[10]

शमशेर की आत्मपरक कविताओं में संघर्ष का कटुतम अनुभव विद्यमान है। इनमें विडंबना-वि) करूणा भाव भी दर्शनीय है। इन सब के मूल में जीवन के प्रति कवि की उात आशा दृष्टिगोचर है। फिर भी अभावात्मक सर्वमान्य सामाजिक सत्य है। अभाव की परख की कोई जरूरत नहीं। यह पीडा अक्सर मानव को मौन बना देता है। 'घनीभूत पीडा' श्लेना मानव-समाज की नियति ही अभाव में अन्तर्लीन व्यथा, मानवीय पीडा है। इसे लेकर जानेशीर्षक कविता में कवि ने मानव मन की निराशा, वेदना, प्रश्नाकुलता और मृत्युबोध को समस्वरता दिलाने की कोशिश की है।

है अगोरती विभा
जोहती विभावरी
हे उमा उमामयी
भावलीन बावरी।
मौन मौन मानसी
मानवी व्यथा भरी
लजाओ गत अभाव की परेख ले
समाज आँख भर तुम्हे न देख ले।[12]

शमशेर आत्मग्लानि को कविता में जोर देकर प्रस्तुत करते है। उनका आत्मान्वेक्षण कविता में भावदीप्ति के साथ देखा जा सकता है। अधुनिक युग के व्यक्ति वर्तमान जीवन मूल्यों के प्रति अनजान नहीं है। आज मानव की निगाहें प्रबल हो गयी हैं। यद्यपि जीवन की कठिनाइयों से जूझना अत्यंत मुश्किल है जिससे कुंठित होना भी स्वाभाविक है। इस स्थिति से लोगों में अनास्था का भाव अधिाक प्रस्फुटित होते है। कवि का मानना है कि जीवन में अब घुटन की व्यापकता बढ़ती जा रही है। 'कठिन प्रस्तर में' शीर्षक कविता जीवन की कठिनाइयों एवं जटिलताओं का चित्रण है।

संदर्भ

1. प्रतिनिधि कविताएँ, पृ. 11
2. प्रतिनिधि कविताएँ, पृ. 14
3. कुछ कविताएँ और कुछ और कविताएँ, पृ. 171
4. प्रतिनिधि कविताएँ, पृ. 20
5. टूटी हुई बिखरी हुई...पृ. 16
6. टूटी हुई बिखरी हुई...पृ. 24
7. कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ...पृ. 12

8. प्रतिनिधि कविताएँ पृ. 67
9. प्रतिनिधिा कविताएँ, पृ. 26
10. कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ...पृ. 22
11. कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ..पृ. 12
12. प्रतिनिधि कविताएँ पृ. 67

○○